रमल गुलजार

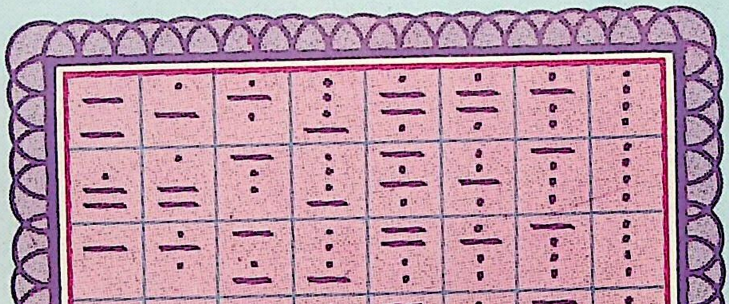

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन बम्बई

रमलगुलजार

यवनाचार्य निर्मित

इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) में द्विजवर्य
श्रीबीरबल द्वारा अनूवादित

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन बम्बई

संस्करण : अगस्त २०१९, संवत् २०७६

मूल्य : २०० रुपये मात्र ।

© सर्वाधिकार : प्रकाशक द्वारा सुरक्षित

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers
Khemraj Shrikrishnadass
Prop: Shri Venkateshwar Press
Khemraj Shrikrishnadass Marg,
7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.khe-shri.com
E-mail : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj for M/s Khemraj Shrikrishnadass
Prop. Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400004,
at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate,
Pune -411 013.

प्रस्तावना

भूत भविष्य वर्तमान विषयोंका प्रत्यक्ष करके लोगों को चमत्कृत करनेवाली ज्योतिष विद्या का महत्त्व किसीसे अविदित नहीं है इस विद्या में मुख्य दो विषय हैं। गणित और फलित, गणित की रीति में विशेष परिवर्तन न होने से वह अपनी स्थिति में यथावत् नियत है। परंतु फलित में लोगों का विश्वास हट जाता है; इसका मुख्य कारण विचाराजाय तो वह गणितहीसे संबंध रखता है। सूर्य्यचन्द्र आदि की गति से ही सूक्ष्मकालका परिज्ञान होता है, उनकी गति में जो सदा अंतर पड़ता जाता है उसका शोधन जबतक ठीक प्रकार से नहीं किया जायगा तबतक यह दोष दूर होना कठिन है। परंतु लग्न के नवांश द्वादशांश आदि सूक्ष्म विषयों को छोड़ लग्न में अंतर नहीं पड़ सकता क्योंकि सूर्य्योदयास्त में अपने देशों के अक्षांश, देशांतर में आदिके ठीक करनेसे लग्न ठीक हो सकता है; बस लग्न के निश्चित्त होने से अभीष्ट विषय को ज्योतिर्विद लोग यथार्थ कह सकते हैं।

यह "रमलगुलजार" नामक प्रश्नग्रंथ जिसमें केवल लग्नमात्रका ही ठीक ज्ञान चाहिये वह प्रसिद्ध घटी (घड़ी) यंत्रसे हो सकता है।

कहा जाता है कि यह ग्रंथ यवनाचार्य्योंने बनाया था और यूनान से श्रीमहाराज विक्रमार्क देवके समय में यहां आया था और अकबर बादशाहके समयमें विद्यानुरागी ब्राह्मणकुलतिलक श्रीबीरबलने देवनागरी अक्षर तथा हिंदुस्तानी भाषा में इसका अनुवाद कराया इसमें लह्यान इत्यादि १६ शकलोंके नामोंसे यह निर्विवाद सिद्ध होता है कि ये संज्ञायें यावनी हैं तदनुसार अवश्य ही यवनोंकी रचना है। जो कुछ हो प्रतिपाद्य विषयके उपयोगी होनेसे उसके ग्रहण करनेमें आग्रह ही क्या है?

संवत् १९५४ में वेरी निवासी पण्डित श्रीरामरक्षपालजीने इस ग्रंथ को कलकत्ते में छपवाकर रजिष्टरी करनेसे इसका पुर्नमुद्रणाधिकार रक्खा था परंतु रजिष्टरी हक सहित इस पुस्तक को लेकर इसका पुनर्मुद्रण अपने श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेसमें किया है प्राचीन भाषा की जो २ अशुद्धियां थीं उनको शुद्धकराकर उत्तम टाइपमें छपवाया है।

प्रकाशक—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

प्रोप्राइटर "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, बंबई.

श्रीगणेशाय नमः

अथ रमलगुलजार

श्रीयवनाचार्य्यने अपने सब रमल ग्रंथों का सार निकाल कर रमलगुलजार नामक ग्रंथ रचा था उसीको श्रीबीरबल साहिवने इष्टदेवता सरस्वतीका ध्यान करके अपनी देश भाषामें अनुवादित किया उसमें नाना प्रकारके १०४१ प्रश्न हैं जिनके देखने की विधि कहते हैं। पहले मीनकी संक्रान्तिमें जिसदिन दिनरात्रि बराबर हो उस दिन ७ धातु लेकर पासे बनवाना उसी दिन ढलावे फिर ८ टुकड़े करवाय चौरस करवावे फिर चार २ शून्य ऊपर करें दो २ शून्य नीचे करवावे और बराबरमें तीन २ शून्य करावे फिर सबमें छिद्र कराय दो कीलों मे पोवे फिर उनसे शुभ दिन प्रथम प्रश्न करे प्रश्न कहने का प्रकार प्रथम पूछनेवाला चावल पुष्प फल द्रव्य करके पुस्तक का पूजन करें पीछे प्रश्न कहनेवाला उक्त पृच्छक का हाथ पांसोंमें रखवाकर "ॐनमो भगवति कूष्मांडिनि सर्वकार्य्यप्रसाधिनि सर्वनिमित्तप्रकाशिनि एहि २ त्वर २ वरं देहि देहि लिहि २ मातं गिनि सत्यं ब्रूहि २ स्वाहा" इस मंत्रको ७ बार जपैं और उसके कह देवे कि तुम अपने प्रश्नको दिलमें विचार लेओ फिर उन पासें को तखतीमें डालैं उससे जाईचा बनावैं इस प्रकार चार शकल वाम क्रमसे बनावै इस प्रकारसे शून्यकी शून्य लिखैं दो शून्यों की तिरछी रेखा लिखें फिर पांचवें से लेकर चार खंड तिरछे क्रम से बनावे इस प्रकार से चार और शकल बनावें फिर दो रेखा और दो शून्योंकी रेखा बनावें शून्य रेखाओं के योगसे शून्य इस प्रकार से पहिली दूसरी से नवमी शकल बनावें और तीसरी चौथी से दशवीं शकल बनावें फिर पांचवी छठी से ग्यारहवीं शकल बनावें और सातवीं आठवीं शकल से बारहवीं शकल बनावें फिर नवमी दसवीं करके तेरहवीं शकल बनावें और ग्यारहवीं बारहवीं करके चौदहवीं शकल बनाले फिर तेरहवीं चौदहवीं पन्द्रहवीं शकल बनावें और पन्द्रहवीं पहली से सोलहवीं शकल बनावें फिर पृच्छक से कहै कि किसी पुष्प या फल या नदी या देवताका नाम लो वह जिन अक्षरोंको उच्चारण करे उन अक्षरोंको ठीक २ लिख ले फिर अकचटतपयश वर्ग करके स्वरों की अलग संख्या लिखले और हलोंकी अलग संख्या लिखें फिर स्वर संख्या से हल संख्या को गुणाकरे फिर इष्टका निश्चय करके लग्न को निश्चय करें फिर उक्त संख्या में लग्न संख्या को मिला देवें फिर जाईचा में १६ घर में जो शकल है उसकी विजदहपंक्ति की जो शेषांक संज्ञा है उस करके उक्त जो लब्धांक है उसको गुणा करें फिर १०४१ का भाग दे जो शेष बचे वह पिण्ड का अंक जानना और इसी शेषांक में १६ का भाग देने से जो शेष बचे उसको शकुनपंक्तिके क्रमसे उतनी संख्या वाली शकल जाननी उक्त पिण्ड के आगे वही शकल मिलेगी और पिण्ड के आगे पृच्छक का वही प्रश्न मिलेगा।

अथ अष्टवर्गांक

अथ अष्टवर्गांक संख्या

अ	१	ऊ	६	ए	११	क	२	च	३	ट	४	त	५	प	६	य	७	श	८
आ	२	ऋ	७	ऐ	१२	ख	३	छ	४	ठ	५	थ	६	फ	७	र	८	व	९
इ	३	ॠ	८	ओ	१३	ग	४	ज	५	ड	६	द	७	ब	८	ल	९	स	१०
ई	४	लृ	९	औ	१४	घ	५	झ	६	ढ	७	ध	८	भ	९	व	१०	ह	११
उ	५	ॡ	१०	०	०	ङ	६	ञ	७	ण	८	न	९	म	१०	०	००	००	००

अथ उदाहरणम् । किसीने प्रश्न किया फिर यह जाईचा बनाया पूछनेवाले ने फलका नाम आम कहा तब आकार की संख्या २ अ कारकी संख्या १ अष्टवर्ग के क्रमसे हुई दोनों संख्या मिलाने से ३ हुई यह स्वरसंख्या है मकार की संख्या १० हुई फिर ३ से १० को गुणा किया ३० हुए फिर इष्ट को देखके लग्न निश्चय किया कि मकर है इसकी संख्या १० हुई सो उक्त संख्या में मिलाई सब मिलके ४० हुये फिर देखा कि जाईचे में १६ है घर शकल लह्यान है सो विजदह पंक्ति में दूसरे स्थान पर है जिसकी संख्या १२२ की है सो ४० से गुणा किया तब ४८८० हुए फिर १०४१ जो मूल अंक है उसका ४८८० में भाग दिया बाकी ७१६ रहा यह पिण्ड संख्या है फिर इसमें १६ का भाग दिया १२ बचे सो शकुन पंक्ति में १२ वें स्थान में अतवेखारिज है सो इस पिण्डके पास यही शकल मिलेगी और इसके आगे पृच्छक का प्रश्न मिलेगा यह उदाहरण है।

इति उदाहरणम् ।

लग्नम्	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुंभ	मीन				
लग्नसंख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२				
विजदहपंक्ति	··—·	·———	—···	——·—	····	·—·—	—·——	———·	··——	·——·	—··—	——··	···—	·—··	—·—·	————
विजवहशेष संज्ञा	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	१३६
शकुनपंक्ति	———·	—·—·	·—·—	————	··—·	·——·	·———	—·——	——·—	··——	——··	···—	·—··	—···	—··—	····
शकुनपंक्ति शकल संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१२	१४	१५	१६

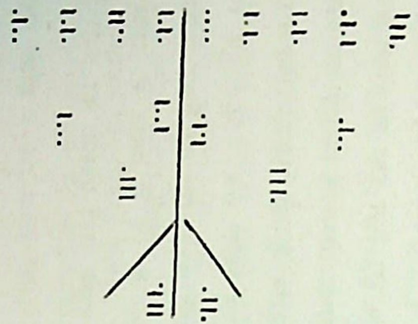

श्रीः

अथ रमलगुलजारकी विषयानुक्रमणिका

पिण्ड.	विषय.	पृष्ठ.
१	भाग्योदय कब होगा ...	२५
२	लड़के का भाग्योदय ...	,,
३	आयु और बीमारीका ...	,,
४	आयुका अव्वल दिन ..	,,
५	शरीर सुखका प्र. ...	२६
६	शरीरका सुख, तकलीफ ...	,,
७	जन्मभूमिकी कुशलता है ..	,,
	बीमारी है	,,
८	जन्मभूमिकी कुशलता कुशल है	,,
९	चोट कब अच्छी होगी ...	,,
१०	अङ्गमें वायुपित्त की बीमारी ...	२७
११	पुस्तोंकी पैदा बंद हुई ..	,,
१२	पुस्तोंकी राजधानी छूट गई ...	,,
१३	तेरा पुत्र नाकिश है ...	२८
१४	जीव को अबतक सुख न हुआ	,,
१५	शरीर से उद्योग किया लाभ न हुआ ...	,,
१६	उद्योग कर लाभ होगा ...	,,
१७	शरीर में बल बढ़ने का ...	,,
१८	अपनी सेना के पराक्रमका	,,
१९	राजनीति क्या अच्छी है ...	२९
२०	झगड़े को जीतेगा ...	,,
२१	गृहस्थ से उपरामका ...	,,
२२	चित्त की शांति का है ...	,,
	इति प्रथमस्थानम।	
२३	द्रव्य के आने का ...	३०
२४	रकम साहूकारने दबाई ...	,,
२५	धन कब होगा ...	,,
२६	विद्या पढ़ने और नौकरी से लाभ का ...	३१
२७	यावनी विद्या से नौकरी का ...	,,
२८	नौकरी बढ़ने का ...	,,
२९	तू जोर से धन दबाया चाहता है ...	,,
३०	और का रोजगार लिया चाहता है ...	३२
३१	समीप के लाभ का है ...	,,
३२	किसी के लाभ का है ...	,,
३३	तेरे धन बहुत हैं अपने शरीर से लाभ का है ...	,,
३४	उद्यम किया लाभ न हुआ ...	३३
३५	इजारा लेने का है ...	,,
३६	इजारा में लाभ का ...	,,
३७	मकान के लाभ का ...	,,
३८	मकान से सुख न हुआ ...	३४
३९	जमीन से लाभ है ...	,,
४०	जमीन दिया चाहता है ...	,,
४१	काली वस्तु से लाभ का ...	,,
४२	दूसरी काली वस्तु से लाभ का...	३५
४३	अव्वल वस्त्रमें कुफायदा ...	,,
४४	वस्तु में कायदा	,,
४५	राज से प्रथम ठेकाका ...	३६
४६	राज से फिर ठेका का ...	
४७	घरमें से धन काढ़ने का ...	,,
४८	खान में कुफायदा	
४९	मृत पिता के धन का ...	,,
५०	जीवित पिता के धन का ...	
५१	मृत माता के धन का ...	३७
५२	जीवित माता के धन का	,,
५३	मृत ताऊ के धन का	,,
५४	जीवित ताऊ के धन का ...	,,
५५	मृत चचा के धन का	,,
५६	जीवित चचा के धन का ...	,,
५७	मृत भाई से लाभ का ...	३८
५८	जीवित भाई से लाभ का ...	,,
५९	जीवित सास से लाभ का ...	३९
६०	मृत सास से लाभ का ...	,,
६१	स्त्री को सासू के धन का ...	,,

पिण्ड.	विषय.	पृष्ठ.
६२	ससुर के धन का ...	४०
६३	मित्र से लाभ का ...	,,
६४	बड़े मित्र से लाभ का ...	,,
६५	बड़े शत्रु से लाभ का ...	,,
६६	शत्रु से लाभ का ...	,,
६७	व्याज के व्यापार से लाभ का ...	४१
६८	धातु के व्यापार से लाभ का ...	,,
६९	काष्ठ के व्यापार से लाभ का ...	४२
७०	काष्ठ के व्यापार से लाभ है...	,,
	इति द्वितीयस्थानम् ।	
७१	समीप गमन का ...	,,
७२	समीप गमन मित्रमेल ...	,,
७३	मित्र के सुख की बीमारी है ..	,,
७४	मित्र को सुख विदेश में है ..	,,
७५	मित्र कब आवेगा ...	४३
७६	मित्र को कब मिलेगा ...	,,
७७	मित्र कब मिलेगा, रोजगार ...	,,
७८	मित्र का खत ...	४४
७९	नौकरी दो जगह होने वाली है ...	,,
८०	नौकरी शुभ है ...	,,
८१	नौकरी या घरके पेशाका है ...	,,
८२	नौकरी घर दोनों शुभ हैं ...	,,
८३	नौकर के आने का ...	४५
८४	नौकर न खर्च भेजता न आता है	,,
८५	नौकरों से लाभ है ...	,,
८६	तुझको नौकर से लाभ ...	४६
८७	मुनीम से लाभ है ...	,,
८८	मुनीम से कुफायदा है ...	,,
८९	मुनीम से धन खाया है ...	,,
९०	मुनीम ने धन नहीं खाया साहुकार ही बेईमान है ...	,,
९१	मुनीम से सुलझने का है ...	४७
९२	मुनीम से अच्छा सुलझने का	,,
९३	भाई के विदेश में कुशलता का है	,,
९४	भाई की विदेश से कुशलता ...	,,
९५	भाई विदेशी के मेल का ...	,,
९६	भाई का मिलाप का ...	४८
९७	भाई की बीमारी विदेश में ...	,,
९८	भाई की बीमारी घरमें ...	४९
९९	भाई की संतान अवतक न.	,,
१००	भाई की स्त्रीको गर्भ कब होगा	,,
१०१	भाई से धन लेनेका है ...	५०
१०२	भाई से लाभ होगा या नहीं	,,
१०३	बहन के सुखका ...	,,
१०४	बहन को पति से सुख नहीं ...	,,
१०५	बहन की बीमारी माफिक नहीं	,,
१०६	बहन के पतिकी बीमारी ...	५१
१०७	भानजे की सगाई का है .	,,
१०८	भानजे के फिर संबंध का...	,,
१०९	भानजे को निहायत बीमारी है	५२
११०	भानजा विदेशमें है ...	,,
१११	स्वप्न शुभ है ...	,,
११२	स्वप्न अशुभ है ...	५३
	इति तृतीयस्थानम् ।	
११३	खेती अशुभ है ...	,,
११४	खेती से लाभ है ...	,,
११५	बैल में कुफायदा है ...	,,
११६	बैल में फायदा है .	,,
११७	बैल बेचनेका है ...	,,
११८	बैल में क्या फायदा होगा ...	,,
११९	माता पिताका गड़ा धन काढने का ...	५४
१२०	माता पिता का गडा धन न मिले ...	,,
१२१	जागीर दूसरे ने दबाई ...	५५
१२२	जागीर की सीमा के भ्रम में ...	,,
१२३	सामणु से फायदा का ...	,,
१२४	दोनों शाख से फायदा का ...	,,
१२५	खेती के सीरमें फायदा ..	,,
१२६	खेती में अकेले को फायदा ...	,,

पिण्ड.	विषय.	पृष्ठ.
१२७	बटाई के देने में फायदा ...	,,
१२८	बटाई किरावा दोनों में फायदा	,,
१२९	बगीचा लगेगा ...	५६
१३०	जंगल जमीन मोल लेनेका ...	,,
१३१	जमीन लेने का फायदा है ...	,,
१३२	कुआ बनवाने में जल कैसा नि.	५७
१३३	तलाव बनवाने का ...	,,
१३४	बावडी बनवाने का ...	,,
	इति चतुर्थस्थानम् ।	
१३५	विद्या शुभ है ...	,,
१३६	परीक्षा में देर है, अच्छी होगी	,,
१३७	विद्या मंद आवेगी ..	,,
१३८	विद्या अच्छी आवेगी ...	,,
१३९	वेदांत विद्या का है ...	५८
१४०	वेदांत सत्य है	,,
१४१	व्याकरण विद्या अच्छी आवेगी ...	५९
१४२	व्याकरण विद्या नहीं आवेगी	,,
१४३	ज्योतिष विद्यासे लाभ वे पढ़ा है पढ़ ...	,,
१४४	ज्योतिष विद्या पढ़ी लाभ न हुआ	
१४५	न्यायविद्या आवेगी लाभ है	६०
१४६	न्यायविद्या पढ़ा है लाभ न हुआ ...	,,
१४७	मीमांसाविद्या आवेगी लाभ होगा	,,
१४८	पुराणविद्या से लाभ यत्न से है	,,
१४९	कथा विद्या होने की कुछ ढील है ...	६१
१५०	सांख्य विद्या पढ़ लाभ होगा	,,
१५१	वेदविद्या अच्छी आती है लाभ होगा ...	,,
१५२	वैद्यविद्या पढ लाभ होगा ...	,,
१५३	वैद्यविद्या कुटुंबी है ...	६२
१५४	यावनी विद्या आवेगी लाभ है	,,
१५५	यावनी विद्या पढ़ी रोजगार न हुआ ...	,,
१५६	राजविद्या अच्छी आवेगी लाभ होगा ...	,,
१५७	राजविद्या पढी रोजगार न हुआ ...	६३
१५८	राजविद्या पढी नौकरी छूटी फिकर हो रही है ...	,,
१५९	मंत्रविद्या सिद्ध होगी ...	,,
१६०	मंत्र विद्या सिद्ध है ...	,,
१६१	उज्ज्वल संतान का सुख नहीं है सो यत्न कर ...	,,
१६२	संतान हुई जीई नहीं यत्न कर	६४
१६३	लड़की होती हैं लड़का न हुआ ...	,,
१६४	एक संतान होके फिर न हुई	६५
१६५	एक लड़का एक लड़की हो के मर गई फिर न हुई ...	६६
१६६	गर्भ है क्या होगा ...	,,
१६७	कुशल पत्र आया चाहता है	६७
१६८	पत्र के आने में देर है	,,
१६९	गोदके पुत्रसे लाभ है	,,
१७०	पुत्र गोदमें कब आवेगा ...	६८
१७१	दूत कार्य करके आनेवाला है	,,
१७२	दूत आया चाहता है कार्य होगा ...	,,
१७३	दूत भेज तेरा कार्य होगा ...	,,
१७४	दूत मत भेज कार्य न होगा	६९
	इति पञ्चमस्थानम् ।	
१७५	शत्रु से तुझको शुभ है ...	,,
१७६	शत्रु जबर है ...	,,
१७७	शत्रु जीतेगा यतन कर ...	,,
१७८	झगडा ज्यादे दिनों का है शत्रु जबर है ...	७०
१७९	संबंध और जगह किया है उसका झगड़ा है ...	,,

पिण्ड.	विषय.	पृष्ठ.
१८०	संबंध पहले ओर से किया था पीछे तेरे साथ कर दिया यही झगढ़ा है ...	,,
१८१	झगड़ा जमीन का ज्यादे दिनों से है शत्रु जबर है ...	,,
१८२	जमीन का झगड़ा ज्यादे दिनों का है ...	,,
१८३	सीर के धन के झगड़े का कुछ भाग मिलेगा ...	,,
१८४	राजा की दी हुई जमीन के झगड़े का है ...	७१
१८५	झगड़ा करजा लेकर नटने का है	,,
१८६	करजे की पेशी साहूकार ने की	,,
१८७	झगड़ा दासी और ने रखली है	,,
१८८	और की दासी रखी है ...	,,
१८९	सीर के मकान के झगड़े का	७२
१९०	दुश्मन से मकान का झगड़ा	,,
१९१	दादा इलाही का राज्य शत्रु ने दवाया है उसका झगड़े का	७३
१९२	राज्य जबर शत्रु ने दवाया है	,,
१९३	राज्यपर भाई का झगड़ा है...	,,
१९४	राज्यपर बादशाह नया हुक्म करता है ...	७४
१९५	लडके को गोद लेकर नटता है	,,
१९६	लडके को गोद लेने को कहकर नटता है ...	,,
१९७	वृथा झगड़े का है ...	,,
१९८	वृथा झगड़ा कब दूर होगा ...	७५
१९९	राज्य संबंधी कार्य लेने का है	,,
२००	राज्य के किसी जबर कार्य में झगड़े का है ...	,,
२०१	माल बदला गया झगड़ा है	७५
२०२	बदले में अच्छा माल आया सो पचेगा या नहीं ...	७६
२०३	जहाज के झगड़े का ...	,,
२०४	डूबते माल में लिया अब दावा करता है ...	,,
२०५	लडका गोद लिया इसको रखेगा या नहीं ...	,,
२०६	ज्यादे बीमारी का ...	७७
२०७	ताप की बीमारी ज्यादे है ...	,,
२०८	विषम ज्वर की बीमारी ...	,,
२०९	वायु की बीमारी का ..	,,
२१०	ज्यादे दिनोसे वायुपित्त की बीमारी ...	७८
२११	पित्त की बीमारी कब अच्छी होगी ...	,,
२१२	जल की बीमारी दस्त है ...	,,
२१३	गुजराती रोग की बीमारी है	७९
२१४	कफ की बीमारी है ...	,,
२१५	श्वास की बीमारी ...	,,
२१६	ज्यादे श्वास की बीमारी ...	,,
२१७	शोष की बीमारी ...	,,
२१८	ज्यादे शोष की बीमारी ...	८०
२१९	फोड़ा की बीमारी ...	,,
२२०	ज्यादे फोड़े की बीमारी ...	.
२२१	आतिश की बीमारी ...	,,
२२२	ज्यादे दिनों की आतिश ...	८१
२२३	कभी २ शिर दरद ...	,,
२२४	शिर दरद की बीमारी ...	,,
२२५	निरंतर पेट में दरद ...	८२
२२६	पेट में दरद ज्यादे दिनों से ...	,,
२२७	ज्यादे चोट का है ...	,,
२२८	चोट कब अच्छी होगी ...	,,
२२९	नेत्रफूला की बीमारी ...	,,
२३०	नेत्रों में फूला ज्यादे है ...	,,
२३१	दस्त की बीमारी ...	८३
२३२	ज्यादा दस्त की बीमारी ...	,,
२३३	मूत्रकृच्छ की बीमारी ...	,,
२३४	ज्यादा मूत्रकृच्छ की	

पिण्ड.	विषय.	पृष्ठ
	बीमारी ...	,,
२३५	मन्दाग्नि की बीमारी ...	,,
२३६	ज्यादा मन्दाग्नि की बीमारी	,,
२३७	धातुक्षीण बीमारी ...	,,
२३८	ज्यादे दिनों से धातुक्षीण ...	८५
२३९	ज्यादे कान की बीमारी ...	,,
२४०	कानशोफ की बीमारी ...	,,
२४१	सुजाक की बीमारी ...	,,
२४२	ज्यादे सुजाक की बीमारी ...	,,
२४३	भगंदर की बीमारी ...	८६
२४४	बवासीर की बीमारी ...	,,
२४५	श्वित्रकुष्ठ की बीमारी ...	,,
२४६	कुष्ठ की बीमारी ...	,,
२४७	दस्त साफसहित बुखार की बीमारी ...	८७
२४८	शोफ सहित दस्तों की बीमारी	,,
	इति षष्ठस्थानम् ।	
२४९	विवाह होगा या नहीं	,,
२५०	बड़ी जगह संबंध होगा या नहीं	८८
२५१	फिर विवाह का है	,,
२५२	स्त्री जीती रहेगी या नहीं ...	,,
२५३	कौन जगह से संबंध होगा ...	,,
२५४	फिर विवाह होगा या नहीं ...	,,
२५५	चाचा के विवाह का ...	८९
२५६	संबंधी का विवाह कब होगा ...	,,
२५७	संबंध हो रहा है विवाह कब होगा ...	,,
२५८	ज्यादे दिनों में संबंध हुआ है विवाह कब होगा ...	,,
२५९	बहनका संबंध (विवाह) कब होगा ...	,,
२६०	बहन का विवाह कब होगा घर में दरिद्र है ...	९०
२६१	लड़की का संबंध (विवाह) कब होगा ...	,,
२६२	लड़की का विवाह कब होगा घर में दरिद्र है ...	,,
२६३	भाई का विवाह होगा या नहीं	,,
२६४	फिर भाई का विवाह होगा या नहीं ...	९१
२६५	धन लेकर संबंध को नाटता है ...	,,
२६६	जेवर देकर संबंध को नाटे है	,,
२६७	स्त्रीसुख कम है ...	,,
२६८	अनेक विवाह किये सुख न हुआ ...	९२
२६९	मुझको मेरी औरत से और पुरुष का शक है ...	,,
२७०	मेरी औरत का पर पुरुष से विश्वास ...	,,
२७१	स्त्री नाकिश है ऐसा संदेह है	९३
२७२	यह संतान मेरी है या और की ...	,,
२७३	स्त्री लाने का ...	,,
२७४	यह स्त्री रहेगी या नहीं ...	९४
२७५	औरत के मेल का मेल है ...	,,
२७६	स्त्री का मेल कब होगा ...	,,
२७७	चोरी का है ...	९५
२७८	चोरीधन पूर्व से आवेगा ...	,,
२७९	चोरी का धन नहीं आवेगा दक्षिण में है ...	,,
२८०	चोर घरभेदी है धन नहीं आवे पश्चिम में गया ...	,,
२८१	पशु की चोरी शत्रु ने कराई ...	९६
२८२	शत्रु ने पशु चुराया ...	,,
२८३	वस्त्रकी चोरी का ...	,,
२८४	वस्त्र की चोरी की खबर नहीं लगेगी ...	९७
२८५	स्त्री की चोरी न आवे ...	,,

पिण्ड.	विषय.	पृष्ठ.
२८६	स्त्री नहीं चोरी गई आवेगी	,,
२८७	लड़का की चोरी नहीं मिलेगी	,,
२८८	लड़काकी चोरी आवेगी ..	,,
२८९	धनवस्त्र की चोरी नहीं मिलेगी	९८
२९०	ज्यादा धनवस्त्र की चोरी नहीं मिलेगी ...	,,
२९१	जेवरकी चोरी हुई चोर घरका है ...	,,
२९२	जेवर की चोरी नहीं हुई घर की घर में है ...	९९
२९३	बरतन की चोरी न मिलेगी	,,
२९४	बरतन की चोरी मिलेगी ...	,,
२९५	माल दिनमें उठाया पश्चिम उत्तर में है ...	,,
२९६	वस्तु ठगने उठाई कुछ मिलेगी	१००
	इति सप्तमस्थानं समाप्तम् ।	
२९७	करजा न मिलेगा ...	,,
२९८	हुंडी से करजा मिलेगा ...	,,
२९९	साहूकार का करजा मिलेगा या नही ...	,,
३००	करजा कब उतरेगा ...	१०१
३०१	करजा बहुत दिनों का है कब उतरेगा ...	,,
३०२	करजा लेनेमें सबर नहीं है...	,,
३०३	विदेशीका ज्यादे रोजगार ... नहीं है ...	,,
३०४	विदेशीका बीमारी का खत आया ...	१०२
३०५	दान कब होगा ...	,,
३०६	दान का क्या फल है ...	,,
३०७	सर्प सामने होता है ...	,,
३०८	सर्प के भय का है ...	,,
३०९	मकान में गुहेरा है ...	१०३
३१०	गुहेरा सामने भागता है ...	,,
३११	ग्राम में सिंहका भय ...	,,
३१२	वन में सिंहका भय ...	,,
३१३	ग्राम में व्याघ्र का भय ...	,,
३१४	वन में व्याघ्र का भय ...	,,
३१५	शत्रु जालसाज है ...	१०४
३१६	शत्रुने जालसाजी की ...	,,
३१७	घर में विच्छूके भयका ...	,,
३१८	ग्राममें तथा ...	,,
३१९	रात्रि में प्रेतभय का ...	१०५
३२०	मकानमें प्रेतभय है ...	,,
३२१	पुरुषको औपरी बीमारी है	,,
३२२	पुरुषमें जिद है ...	,,
३२३	औरत को ज्याने औपरी बीमारी ...	१०६
३२४	स्त्री को पितृदोष से औपरी ...	,,
३२५	कुटुंब को क्लेश पितृदोष है...	,,
३२६	कुटुंबमें क्लेश पितृदोष है ...	,,
३२७	दुःस्वप्नका है ...	१०७
३२८	ज्यादे दुःस्वप्नका है ...	,,
३२९	वन के कटाने का दोष ...	,,
३३०	वन के कटाने का अच्छा ...	,,
३३१	राजा के खजानची होने का शुभ ...	१०८
३३२	राजा का खजानची अशुभ	,,
३३३	पोजदारी शुभ ...	,,
३३४	पोजदारी छूटेगी या नहीं ...	,,
३३५	पोजदारीमें लाभ है ...	१०९
२३६	पोजदारीमें लाभ न० ...	,,
	इति अष्टमस्थानम् ।	
३३७	पुण्य कब होगा ...	,,
३३८	पुण्य नहीं होता ...	,,
३३९	जमीन के दान का ...	११०
३४०	गोदान बनेगा या नहीं ...	,,
३४१	ज्यादे गोदान कर ...	,,
३४२	द्रव्यदान कर ...	१११
३४३	सर्वस्व दान कर ...	,,

पिण्ड.	विषय.	पृष्ठ.
३४४	संन्यासाश्रम का ...	,,
३४५	ग्रहोंका दान कब होगा ...	,,
३४६	ग्रहों का दान का ...	,,
३४७	सूर्यग्रहण में दान का क्या फल है ...	११२
३४८	चन्द्रग्रहण में दान होगा या नहीं	,,
३४९	कन्यादान होगा या नहीं ...	,,
३५०	ब्राह्मण की कन्या के विवाह का	,,
३५१	ब्राह्मण जिमाने का ...	११३
३५२	चित्रयज्ञ पार पड़ेगा या नहीं	,,
३५३	दिन कब सुधरे ...	,,
३५४	करज कब दूर होगा ...	११४
	इति नवमस्थानम्।	
३५५	शिवजी प्रसन्न होवेंगे ...	,,
३५६	शिवभक्ति रहेगी या नहीं	,,
३५७	विष्णु प्रसन्न होवेंगे या नहीं	,,
३५८	विष्णुमें प्रीति रहेगी या नहीं	,,
३५९	ब्रह्मा प्रसन्न होवेंगे या नहीं	११५
३६०	ब्रह्मामें प्रीति रहेगी या नहीं	,,
३६१	दिक्पाल प्रसन्न होंगे या नहीं	,,
३६२	दिक्पालों में प्रीति रहेगी या नहीं ...	,,
३६३	हनुमान प्रसन्न होंगे या नहीं	,,
३६४	हनुमान में प्रीति रहेगी या नहीं ...	११६
३६५	गोपालजी सिद्ध होवेंगे या नहीं ...	,,
३६६	गोपालजी में प्रीति रहेगी या नहीं ...	,,
३६७	गङ्गाजी प्रसन्न होगी या नहीं	११७
३६८	गङ्गाजी में प्रीति बनी रहेगी या नहीं ...	,,
३६९	रघुनाथजी प्रसन्न होंगे नहीं	,,
३७०	रघुनाथजी में प्रीति रहेगी या नहीं ...	,,
३७१	भैरव प्रसन्न होंगे या नहीं ...	११८
३७२	भैरव प्रत्यक्ष न होंगे ...	,,
३७३	दुर्गा प्रसन्न होगी ...	,,
३७४	दुर्गा सिद्ध होगी ...	,,
३७५	यक्षिणी सिद्ध होगी ...	,,
३७६	फिर यक्षिणी सिद्ध होगी ...	११९
३७७	वास्तुदेवता प्रसन्न होंगे ...	,,
३७८	फिकर न कर वास्तुदेव प्रसन्न होगा ...	,,
३७९	सूर्य्याराधन नेत्रों की बीमारी में	१२०
३८०	सूर्य्याराधन नेत्रों से न दीखे तो ...	,,
	इति दशमस्थानम्।	
३८१	इस रोजगारमें लाभ होका	,,
३८२	रोजगार होगा या नहीं ...	,,
३८३	ढील से रोजगार होगा ...	१२१
३८४	रोजगार हुआ चाहता है ...	,,
३८५	पूर्वगमन से लाभ है	,,
३८६	दक्षिणगमन से लाभ है ...	,,
३८७	पश्चिम गमनसे लाभ है ...	१२२
३८८	उत्तर गमनसे लाभ है ...	,,
३८९	इस बड़े कार्य्य में लाभ है ...	,,
३९०	किस रोजगार में फायदा है ...	,,
३९१	राजा चाहेगा या नहीं ...	१२३
३९२	फिर राजा चाहेगा ...	,,
३९३	राजा की नौकरी से फायदा...	,,
३९४	वैश्य की नौकरी से फायदा...	,,
३९५	नौकरी अच्छी मिलेगी ...	,,
३९६	नौकरी विदेश में होगी ...	१२४
३९७	नौकरी होगी ...	,,
३९८	नौकरी जल्दी होगी ...	,,
३९९	अफसरकी मिहरबानी होगी	,,
४००	फिर अफसरकी मिहरबानी होगी ...	,,

पिण्ड.	विषय.	पृष्ठ.
४०१	अफसर कब आवेगा ...	१२५
४०२	अफसर के आने में देर ...	,,
	इति एकादशस्थानम्।	
४०३	तेरा यश होवेगा ...	,,
४०४	तेरा यश बहुत होगा ...	,,
४०५	खर्च ज्यादे पैदा कम है ...	,,
४०६	खर्च ज्यादे पैदा कम पितृदोष	,,
४०७	राज में जुर्माना होगा ...	१२६
४०८	कैद जुर्माना होवेगा ...	,,
४०९	कैद से कब छूटेगा ...	,,
४१०	कैद से छूटनेमें ढील ...	,,
४११	मुराफा में मुकद्दमा जीते ...	१२७
४१२	धन लगे मुराफा हो ...	,,
४१३	मुकद्दमा जीतेगा ...	,,
४१४	धन लगे मुकद्दमा जीते ...	१२८
४१५	राजा दंड लेगा ...	,,
४१६	कमती दंड लेगा ...	,,
४१७	खरीदे मालमें टोटा है ...	,,
४१८	इस माल में टोटा है या नहीं	,,
४१९	यह जिन्स घटेगी या नहीं	१२९
४२०	यह जिन्स तेज रहेगी या महंगी	,,
४२१	यह संवत् कैसा होगा ...	,
४२२	संवत् समान है ...	१३०
४२३	संवत् मुझको कैसा है ...	,,
४२४	यह संवत तुझको नाकिश है	,,
४२५	सामणू कैसी होगी ...	,,
४२६	सामणू माफिक होगी ...	१३१
४२७	साटू अच्छी होगी ...	,,
४२८	साटू माफिक होगी ...	,,
४२९	अन्न क्या भाव रहेगा ...	,,
४३०	अन्न क्या भाव रहेगा ...	,,
४३१	वस्त्र क्या भाव रहेगा ...	१३२
४३२	वस्त्र क्या भाव रहेगा ...	,,
४३३	रस क्या भाव रहेगा ...	,,
४३४	रस क्या भाव रहेगा ...	,,
४३५	अमल क्या भाव रहेगा ...	१३३
४३६	अमल क्या भाव रहेगा ...	,,
४३७	इस शहर से फायदा नहीं ...	,,
४३८	इस शहर से फायदा है ...	,,
४३९	घर से पत्र कब आवेगा ...	,,
४४०	घर में बीमारी है पत्र कब आवेगा ...	१३४
४४१	हस्ती खरीदने में देर है ...	,,
४४२	हस्ती बेचने का ...	,,
४४३	घोड़ा लेने का ...	,,
४४४	घोड़ा बेचने का ...	१३५
४४५	महिषी लेने का ...	,,
४४६	महिषी बेचने का ...	,,
४४७	गऊ लेने का ...	,,
४४८	गऊ बेचने का ...	१३६
४४९	मकान शुभ या अशुभ है यतन करो ...	,,
४५०	इस मकान में वधेवा नहीं है ...	,,
	इति त्रयोदशं स्थानम्।	
४५१	बाबा को ज्यादे बीमारी है ...	१३७
४५२	बाबा को निहायत बीमारी है	,,
४५३	दादी को बीमारी का ...	,,
४५४	दादी की ज्यादा बीमारी है ...	,,
४५५	पिता को ज्यादा बीमारी ...	१३८
४५६	पिता को ज्यादा दिनों की	,,
४५७	माता को कभी बीमारी ...	,,
४५८	मामा को बीमारी ज्यादे ...	,,
४५९	ताऊ को निहायत बीमारी ...	,,
४६०	ताऊ को ज्यादा बीमारी ...	१३९
४६१	ताई को ज्यादा बीमारी ...	,,
४६२	ताई को ओपरी बीमारी ...	,,
४६३	चाचा को बीमारी ज्यादे ...	,,
४६४	चाचा को ज्यादा दिनों से ...	,,
४६५	चाची बीतलिई क्या है ...	१४०
४६६	चाची के कंठ से कुछ उतरता	

पिण्ड.	विषय.	पृष्ठ.
	नहीं ...	,,
४६७	भाई को ज्यादा दिनों से बी.	,,
४६८	भाई ने दान किया आराम नहीं	,,
४६९	भाई की स्त्री को बीमारी ...	१४१
४७०	भाई की स्त्री को ज्यादे बी० पितृदोष ...	,,
४७१	लड़के की बीमारी ...	,,
४७२	लड़के को ज्यादे बीमारी ...	,,
४७३	नाना को बीमारी ...	१४२
४७४	नाना को ज्यादे बीमारी ...	,,
४७५	नानी को ज्यादा दिनों से बीमारी ...	,,
४७६	नानी को ज्यादे बीमारी ...	,,
४७७	मामा को ज्यादे बीमारी	१४३
४७८	मामा को कुछ आराम ...	,,
४७९	मामी को ज्यादे बीमारी ...	,,
४८०	मामी को अब आराम ...	,,
४८१	किसी मनुष्य को ज्यादे बीमारी	,,
४८२	एक को मारक है	१४४
४८३	शत्रु बीमार है मरेगा या नहीं	,,
४८४	शत्रु कब मरेगा	,,
४८५	शत्रु को बीमारी कब होगी ...	,,
४८६	शत्रु मरवाने का ...	,,
४८७	शत्रु मारने का ...	,,
४८८	शत्रु मारने का ...	१४५
	इति चतुर्दश स्थानम्।	
४८९	भाग्योदय कब होगा ...	,,
४९०	मेरा भाग्योदय कब होगा ...	,,
४९१	भाई का भाग्योदय हुआ चाहता है ...	१४६
४९२	भाई के भाग्योदय में देर ...	,,
४९३	पुत्र का भाग्योदय होनेवाला है	,,
४९४	पुत्र के भाग्योदय में देर है ...	,,
४९५	चोर पूर्व को ले गये नहीं मिलेगा ...	१४७
४९६	चोर धन दक्षिण को ले० ...	,,
४९७	चोर धन पश्चिम को० ...	,,
४९८	चोर धन उत्तर को ले गया ...	,,
४९९	चोरी मत कर दिन नाकिश है	१४८
५००	चोरी मत कर ...	,,
	इति पञ्चदश स्थानम्।	
५०१	तीर्थयात्रा सुख से या दुःख से	,,
५०२	तीर्थयात्रा होगी या नहीं ...	,,
५०३	जगन्नाथ यात्रा होगी या नहीं	१४९
५०४	जगन्नाथ यात्रा कब होगी ...	,,
५०५	दिल नाराज है घर में नहीं लगता ...	,,
५०६	सीरसे जुदा होने का ...	,,
५०७	बद्रीनारायण के दर्शन होंगे या नहीं ...	१५०
५०८	बद्रीश दर्शन सुख से होंगे या दुःख से ...	,,
५०९	रामेश्वर दर्शन होंगे या नहीं	,,
५१०	रामेश्वर दर्शन सुख से होंगे या दुःख से ...	,,
५११	द्वारिका दर्शन होंगे या नहीं	,,
५१२	द्वारिका दर्शन सुख से होंगे या दुःख से ...	,,
५१३	पुष्कर यात्रा होगी या नहीं	१५१
५१४	पुष्कर यात्रा सुख से होगी या दुःख से ...	,,
५१५	गंगायात्रा होगी या नहीं ...	
५१६	गंगास्नान सुख से होगा या दुःखसे ...	,,
५१७	प्रयागस्नान होगा या नहीं	१५२
५१८	प्रयागस्नान सुख से होगा या दुःख से ...	,,
५१९	काशी वास होगा या नहीं ...	,,
५२०	काशी वास सुख से होगा या दुःख से ...	,,

पिण्ड.	विषय.	पृष्ठ.
५२१	ब्रह्मपुत्र यात्रा होगी या नहीं	१५३
५२२	ब्रह्मपुत्र यात्रा सुख से होगी या दुःख से ...	,,
५२३	गयाजीकी यात्रा सुख से होगी या नहीं ...	,,
५२४	गया यात्रा सुख से होगी या दुःख से ...	,,
५२५	अयोध्या यात्रा होगी या नहीं	,
५२६	अयोध्या यात्रा सुख से होगी या दुःख से ..	,,
५२७	मथुरा यात्रा होगी या नहीं ...	१५४
५२८	मथुरा यात्रा सुख से होगी या दुःख से ...	,,
५२९	यमुनास्नान होगा या नहीं	,,
५३०	यमुनायात्रा सुख से होगी या दुःख से ...	,,
५३१	पिडारायात्रा होगी या नहीं	१५५
५३२	पिडाराश्राद्ध होगा या नहीं	,,
५३३	कुरुक्षेत्रयात्रा होगी या नहीं ...	,,
५३४	कुरुक्षेत्रयात्रा सुख से होगी या दुःख से ...	,,
५३५	देवदर्शन होगा या नहीं ...	१५६
५३६	देवदर्शन सुख से होगा या दुःख से ...	,,
५३७	तू स्वर्ग को जायगा ...	,,
५३८	तू स्वर्ग को न जायगा ...	,,
५३९	दूसरी स्त्री के जीते विवाह किया संतान न हुआ ...	१५७
५४०	दूसरी के जीते विवाह किया संतान नहीं है गोद ले ...	,,
५४१	ब्रह्मदर्शन न होगा ...	,,
५४२	ब्रह्मदर्शन होगा ...	१५८
५४३	मोक्ष न होगा ...	,,
५४४	तू जीवनमुक्त है ...	,,
५४५	देवता सत्य है ...	,,
५४६	कौन धर्म सत्य है ...	,,
५४७	प्रश्नशास्त्र सत्य है ...	१५९
५४८	प्रश्न में विश्वास कारण है परीक्षा से न मिले ...	,,
५४९	तू फिर यतन कर संतान सुख होगा ...	,,
	इति षोडशस्थानम् ।	
५५०	भाग्योदय का है ...	,,
५५१	कौन दिशा से लाभ ...	१६०
५५२	श्वेत वस्तु से लाभ ...	,,
५५३	काली वस्तु से लाभ ...	,,
५५४	गुमास्ता से लाभ ...	१६१
५५५	किसी की भी बीमारी का ...	,,
५५६	विदेश में दुकान करने का ...	,,
५५७	दक्षिण में दुकान का ...	,,
५५८	हमको लाभ कब होगा ...	,,
५५९	पूर्व की दुकान में फायदा ...	,,
५६०	पहले वर्ष में लाभ हुआ ...	,,
५६१	गमन से लाभ का है ...	,,
५६२	यात्रा से लाभ का है ...	,,
५६३	गुमास्ता भेजा है क्या लाभ होगा ...	१६२
५६४	राज्य से प्राप्ति का है ...	,,
५६५	राज्य का काम हाथ आने का	,,
५६६	राज्य से दंड होगा ...	,,
५६७	राज्य में जीतेंगे या हारेंगे ...	१६३
५६८	जमीन पर दुश्मन दावा कर.	,,
५६९	जमीन से फायदा है या नहीं	,,
५७०	मकान से फायदा है या नहीं	,,
५७१	स्थान शुभ है या नहीं ...	,
५७२	कुआं मंदिर बनाने का ...	१६४
५७३	राज्यलाभ होगा या नहीं ...	,,
५७४	फायदा होगा या नहीं ...	,,
५७५	व्यापार से लाभ का ...	,,
५७६	अपने शरीर से लाभ का ...	,,

पिण्ड.	विषय.	पृष्ठ.
५७७	पत्र कब आवेगा ...	,,
५७८	विदेशी की कुशल ...	,,
५७९	विदेशी को क्या लाभ. ...	१६५
५८०	विदेशी से खर्च आवे. ...	,,
५८१	करज कब उतरेगा ...	,,
५८२	संतान नहीं हुई सो क्या ...	,,
५८३	कन्या हुई लड़का नहीं हुआ	,,
५८४	संतान हुई नहीं ...	१६६
५८५	एक संतान होके वंध्या. ...	,,
५८६	इसी स्त्री के संतान होगा या नहीं ...	,,
५८७	संतान हुई नहीं गोद लेने का	,,
५८८	औरस पुत्र का सुख नहीं दत्त का है ...	,,
५८९	सगाई दुशमन न होने देता	१६७
५९०	दूसरी शादी होगी या नहीं	,,
५९१	तीसरी शादी का योग है होगी	,,
५९२	स्त्री से बनती नहीं ...	१६८
५९३	चोर घरका है या बाहरका	,,
५९४	चोर घरका है ...	,,
५९५	चोर धन लेकर भागा ...	,,
५९६	पशु की चोरी का ...	,,
५९७	वस्त्र की चोरी का ...	,,
५९८	तप की बीमारी का ...	१६९
५९९	आतश की बीमारी ...	,,
६००	बालक की बीमारी ...	,,
६०१	संग्रहणी बीमारी है ...	,,
६०२	जादू टोना कर रखा है ...	,
६०३	बवासीर की बीमारी है ...	,,
६०४	वादी की बीमारी का ...	,,
६०५	मूत्रकच्छ्रधातुक्षीण ...	,,
६०६	कैद से छूटने का ...	१७०
६०७	लेखा करने को जाता हूं होगा	,,
६०८	यात्रा होगी या नहीं ...	,,
६०९	एक संतान हुई मगर फिर न हुई ...	,,
६१०	यात्रा होगी या नहीं ...	,,
६११	उत्तर की यात्रा से लाभ है ...	,,
६१२	दक्षिण की यात्रा से लाभ है ...	,,
६१३	इसको अन्न से फायदा ...	,,
६१४	व्यापार से लाभ है ...	,,
५१५	प्रथम यात्रा कर लाभ है ...	,,
६१६	दूसरी यात्रा का तीसरी यात्रा का लाभ ...	,,
६१७	नौकरी से फायदा है ...	१७१
६१८	प्र. उत्सव का ...	,,
६१९	झगड़ा मिट जायगा संदेह है	,,
६२०	इसके कुटुंब में मृत्यु बहुत हुई	,,
६२१	विद्या आवेगी या नहीं ...	१७२
६२२	पशु से लाभ होगा या नहीं ...	,,
६२३	वस्त्र के व्यापार से लाभ का ...	,,
६२४	दूसरे विवाह का है ...	,,
६२५	राज्य से प्राप्ति थोड़ी हुई ...	,,
६२६	राज्य से कम लाभ हुआ ...	,,
६२७	किसमत उदय होने का	,,
६२८	दूरदेश जाने का अच्छा	,,
६२९	किसमत परदेश में खुलेगी	,,
६३०	दूरदेश जा रोजगार लगेगा	,,
६३१	तेरा भाग्य उदय नौकरी से है	१७३
६३२	रोजगार को विदेश जा ...	,,
६३३	दूसरे दूर जाने का ...	,,
६३४	रोजगार के लिये जा ...	१७४
६३५	प्रथम दक्षिण में जाने का ...	,,
६३६	विदेश में दुकान में फायदा ...	,,
६३७	विदेश में दुकान करने का ...	,,
६३८	अव्वल दुकान करने का ...	,,
६३९	दुकान से अबतक लाभ नहीं हुआ ...	१७५
६४०	दुकान कर फायदा हो ...	,,
६४१	मिल के रोजगार का है ...	,,

पिण्ड.	विषय.	पृष्ठ.
६४२	सीरमें फायदा होगा या नहीं ...	१७६
६४३	किस व्यापार में लाभ ...	,,
६४४	कौन जिनस से लाभ ...	,,
६४५	सुफेद के लेने में लाभ ...	,,
६४६	सुफेद के लेने में लाभ भी पहले रहा ...	१७७
६४७	अपने पेशा में लाभ ...	,,
६४८	दिनों की गरदिश से प्राप्ति नहीं हुई ...	,,
६४९	दिन अच्छे हैं प्राप्ति होगी ...	१७८
६५०	दुशमन अर्जी लगाता है ...	,,
६५१	दुशमन से झगड़ा जीतूंगा या नहीं ...	,,
६५२	दुश्मन की अर्जी पेश कर ...	१७९
६५३	झगडा बहुत दिनों का है ...	,,
६५४	अपील कर मुराफा लगेगा ...	,,
६५५	दुशमन तुझको दुरावे है ...	,,
६५६	बिना अर्जी कार्य्य होगा ...	,,
६५७	करजा अर्जी से मिलेगा ...	१८०
६५८	करजा थोड़ा मिलेगा ...	,,
६५९	करजा दुःख से मिलेगा ...	,,
६६०	राज से धन की आमदनी ...	,,
६६१	जमीन के झगड़े का ...	,,
६६२	जमीन राज्य से मिलेगी ...	,,
६६३	जमीन का झगड़ा वर्षों से ...	१८१
६६४	जमीन से फायदे का है ...	,,
६६५	राज से नौकरी का है ...	,,
६६६	जमीन से फायदा का ...	,,
६६७	राज में मुरातवा ज्यादा का ...	,,
६६८	राज का काम हाथ लेने का	,,
६६९	बीमारी ज्यादे ...	१८२
६७०	राजा को सवाल देने का ...	,,
६७१	राज से भय होने का ...	१८३
६७२	तेरेपै जुर्माना होगा ...	,,
६७३	कैद से छूटने का है ...	,,
६७४	कारदार से फल का ...	१८४
६७५	कैद से छूट के आने का ...	,,
६७६	कुआ महजीत बनाने का ...	,,
६७७	बागबगीचा लगवाने का ...	,,
६७८	करजा दूर होने का ...	१८५
६७९	लेखा करने जाने का ...	,,
६८०	औलाद होने का ...	,,
६८१	संतति अबतक न हुई ...	,,
६८२	फरजंद छोकरी न हुई ...	,,
६८३	एक संतान होकर फिर न हुई ...	१८६
६८४	एक छोकरी हुई फिर न० ...	,,
६८५	एक संतान होकर मर गई	,,
६८६	छोकरी हुई फरजंद न हुआ	,,
६८७	संतति मर गई ...	,,
६८८	संतान हो तो जीते नहीं ...	,,
६८९	स्त्री के गर्भ है ...	,,
६९०	औलाद का सुख न हुआ ...	१८७
६९१	विदेशी के अन्देशा का ...	,,
६९२	खत आने का ...	,,
६९३	खत जरूर आवेगा ...	१८८
६९४	विदेशी की बीमारी	,,
६९५	विदेशी को लाभ है या न ...	,,
६९६	विदेशी कब खर्च भेजेगा ...	१८९
६९७	बिगर कहे गया सो कहां है ...	,,
६९८	विदेशी कब आवेगा ...	,,
६९९	विदेश से खत आवेगा ...	१९०
७००	विदेशी के आने का ...	,,
७०१	प्रथम शादी का है सो होगी	,,
७०२	दूसरी शादी का ...	,,
७०३	तृतीय शादी का ...	,,
७०४	स्त्री प्राप्तिका धन लगेगा ...	,,
७०५	चतुर्थ विवाह का ...	,,
७०६	सगाई करके नटे हैं ...	,,
७०७	इसकी सगाई कर जाता हे	

पिण्ड.	विषय.	पृष्ठ.
	फिर नट जाता है ...	१९१
७०८	सगाई की नालिश कर ...	"
७०९	छोकरे की सगाई का ...	"
७१०	किसी औरत से मिलाप का ...	"
७११	तेरा सवाल बीमारी का ...	"
७१२	ज्वर से वदन सूख गया ...	"
७१३	संग्रहणी बीमारी का है ...	१९२
७१४	तपकी बीमारी का है ...	"
७१५	जाड़ा के तपका है ...	"
७१६	तपजाड़ा का इकतरा ...	१९३
७१७	तीसरे दिन तप आता है ...	"
७१८	इकतरा के तपमें गफलत ...	"
७१९	दिनरात तप रहता है ...	१९४
७२०	अति बीमारीका है ...	"
७२१	वादी की बीमारीका है ...	"
७२२	लड़के की बीमारी का ...	"
७२३	औरत की बीमारी का ...	"
७२४	धातुक्षीण की बीमारी ...	१९५
७२५	लकवा की बीमारी ...	"
७२६	दुश्मन से जीतने का ...	"
७२७	तेरा सवाल रोजगार का है ...	"
७२८	यह स्त्री मरेगी ...	"
७२९	किसी मनुष्य से फलेदारी ...	१९६
७३०	नेत्र की बीमारी का है ...	"
७३१	सूजाक की बीमारी का ...	"
७३२	श्वास की बीमारी का ...	१९७
७३३	घुवे की बीमारी का ...	"
७३४	दस्त की बीमारी का ...	"
७३५	मृगी की बीमारी का ...	१९८
७३६	राज में इजारा का ...	"
७३७	राज से दुरस्त होने का ...	"
७३८	पशुलेने का ...	,
७३९	गरमी की बीमारी का ...	"
७४०	महिषी लेने का ...	
७४१	गऊलेनेका ...	१९९
७४२	देवतासिद्धि होय ...	,
७४३	करजा दूर होने में देर है ...	"
७४४	गोद लेने का ढील में ...	"
७४५	इस औषधि में फायदा हो ...	"
७४६	शिकार नजदीक मिले ...	"
७४७	औरत का सङ्ग होवे ...	"
७४८	नौका जल्दी आवै ...	२००
७४९	खत जल्दी आवै ...	"
७५०	वर्षा आई जान ..	,
७५१	देव प्रसन्न न होगा ...	"
७५२	करजा दूर होगा ...	"
७५३	पुत्र गोद ले फायदा ...	
७५४	औषधि में फायदा नं. ...	"
७५५	शिकार न मिलेगी ...	"
७५६	स्त्रीगमन होगा ...	"
७५७	नवका में बखेड़ा है ...	२०१
७५८	मध्यम संवत् है ...	"
७५९	वर्षा की देर है ...	"
७६०	देवता फल देगा ...	"
७६१	करजा दूर होगा ...	"
७६२	गोद ले फायदा है ...	२०२
७६३	इसी औषधि से फायदा ...	"
७६४	शिकार दूर मिलेगी ...	"
७६५	औरतका संग होगा न करेगा	"
७६६	दोस्ती होगी ...	"
७६७	मध्यम संवत् है ...	"
७६८	वर्षा आई जान ...	"
७६९	देवता से फायदा न होगा ...	"
७७०	करजा उतरा जान ...	"
७७१	गोद से फायदा ...	"
७७२	औषधि लेने में फायदा नहीं	२०३
७७३	शिकार मृग मिलेगा ...	"
७७४	वस्तु लेनेमें फायदा ...	"
७७५	चिंता मिटेगी ...	"
७७६	दोस्ती में फायदा न ...	"

पिण्ड.	विषय.	पृष्ठ.	पिण्ड.	विषय.	पृष्ठ.
७७७	अब के काल पड़ेगा ...	,,	८११	दोस्ती में फायदा नहीं ...	,,
७७८	वर्षा की ढील है ...	,,	८१२	संवत् अच्छा होगा ...	,,
७७९	देवता पूजन में फायदा ...	२०४	८१३	वर्षा में ढील है ...	,,
७८०	करजा दूर होगा ...	,,	८१४	चोरा धन आवै ...	,,
७८१	गोद लेने में फायदा है ...	,,	८१५	बहुत लाभ नहीं है ...	,,
७८२	मनचिन्ता मिटेगी ...	,,	८१६	मुकदमा जीतेगा ...	२०९
७८३	दोस्ती में फायदा है ...	२०५	८१७	संतान यतन करनेसे हो ...	,,
७८४	संवत् अच्छा होगा ...	,,	८१८	इस वस्तु में लाभ नहीं है ...	,,
७८५	वर्षा जल्दी होगी ...	,,	८१९	तुम्हारी चिंता मिटेगी ...	,,
७८६	भाग्योदय देव पूजन से ...	,,	८२०	इस दोस्ती में फायदा है ...	,,
७८७	करजा उतरा जान ...	,,	८२१	संवत् मध्यम है ...	,,
७८८	इसके गोद लेने में क्लेश ...	,,	८२२	इमारत बनेगी या नहीं ...	,,
७८९	औषधि लेने से आराम ...	,,	८२३	चोरी का धन कुछ मिले ...	,,
७९०	पुत्र सुख होगा ...	,,	८२४	अब लाभ होगा ...	,,
७९१	इस वस्तु के लेने में फायदा नहीं है ...	२०६	८२५	तू मुकदमा जीतेगा ...	,,
			८२६	पुत्र होगा ...	२१०
७९२	अब चिंता दूर होगी ...	,,	८२७	माल खरीदने में ...	,,
७९३	दोस्ती में फायदा नहीं ...	,,	८२८	अब चिंता दूर होगी ...	,,
७९४	मुकदमा जीतेगा ...	,,	८२९	दोस्ती में लाभ नहीं है ...	,,
७९५	तेरे पुत्र होगा ...	,,	८३०	रोजगार फीका रहेगा ...	,,
७९६	इस वस्तु में लेने में फायदा है	,,	८३१	अब मकान न होवेगा ...	२११
७९७	विदेश गये चिंता जायगी ...	,,	८३२	चोरी का पता लगेगा ...	,,
७९८	दोस्ती में फायदा ...	,,	८३३	इसमें लाभ होगा ...	,,
७९९	अबके संवत् मध्यम होगा	,,	८३४	शत्रु मुकदमा जीतेगा .	,,
८००	वर्षा आई चाहती है ...	,,	८३५	पुत्र का सुख नहीं ...	,,
८०१	क्षुद्रदेव का आराधन कर ...	२०७	८३६	इसके लेने में फायदा ...	,,
८०२	संवत् में मंदा रहेगा ...	,,	८३७	यत्न से चिंता दूर होगी ...	,,
८०३	वर्षा आई जान ...	,,	८३८	प्रश्न शास्त्र सत्य है ...	,,
८०४	देव पूजन से फायदा ...	,,	८३९	इसका संबंध जल्दी हो ..	२१२
८०५	करजा दूर होगा ...	,,	८४०	रोजगार अच्छा होवे ...	,,
८०६	लाभ होगा ...	,,	८४१	मकान सुख होने में देर ...	,,
८०७	आपकी हठ टूटती दीखती है	,,	८४२	चोरी आवेगी ...	,,
८०८	संतान का सुख रहेगा ...	,,	८४३	अब लाभ होगा ...	,,
८०९	माल खरीदने में फायदा ...	२०८	८४४	मुकदमा न जीते ...	,,
८१०	चिंता दूर हुई चाहती है ...	,,	८४५	सन्तान औरत का सुख ...	,,

पिण्ड.	विषय.	पृष्ठ.
८४६	इस वस्तुके लेने में फायदा नहीं है ...	२१३
८४७	विवाह होगा ...	,,
८४८	यह संबंध अच्छा नहीं ..	,,
८४९	अब रोजगार होगा ...	
८५०	इमारत बनेगी ...	,,
८५१	कुछ चोरीका माल मिलेगा	,,
८५२	अब फौरन लाभ होगा ...	,,
८५३	मुकदमा जीतेगा ...	,,
८५४	पुत्र सुख होगा ...	,,
८५५	यात्रा होगी ...	,,
८५६	अब विवाह होगा ...	२१४
८५७	इस संबंध में देर है ...	,,
८५८	कुछ देर से लाभ होगा ...	,,
८५९	मकान बनेगा ...	,,
८६०	माल चोरी. पश्चिम में कुछ मिलेगा ...	,,
८६१	तुझको लाभ होगा ...	,,
८६२	मुकदमा जीतेगा ...	,,
८६३	सीर में लाभ होगा ...	,,
८६४	विदेश में लाभ होगा ...	,,
८६५	विवाह होगा ...	,,
८६६	संबंध हुआ जात ...	,,
८६७	अब दौलत मिलेगी ...	२१५
८६८	मकान बनेगा ...	,,
८६९	चोरी का माल नहीं ...	,,
८७०	इस कार्य्य में लाभ है ...	,,
८७१	खेती में लाभ होगा ...	,,
८७२	सीर के रोजगारमें फायदा नहीं ...	२१६
८७३	अब यात्रा में लाभ नहीं है ...	,,
८७४	विवाह सगाई में देर है ...	,,
८७५	संबंध होगा ...	,,
८७६	रोजगार में देर है ...	,,
८७७	इमारत बनेगी ...	,,
८७८	चोरी नहीं हुई माल घर में है	,,
८७९	बीमारी दूर होगी ...	,,
८८०	खेती में लाभ होगा ...	२१७
८८१	सीर में फायदा नहीं ...	,,
८८२	अब यात्रा में लाभ नहीं ...	,,
८८३	विवाह होने वाला है ...	,,
८८४	संबंध होगा ...	,,
८८५	रोजगार देर से होगा ...	,,
८८६	इमारत अब ही बनेगी ...	,,
८८७	शत्रु दूर होगा ...	,,
८८८	यतन कर बीमारी दूर होगी ...	,,
८८९	खेती में लाभ है ...	२१८
८९०	सीर में लाभ कम होगा ...	,,
८९१	देर से यात्रा होगी ...	,,
८९२	विवाह देर में होगा ...	,,
८९३	अब संबंध होगा ...	,,
८९४	रोजगार दक्षिण में होगा ...	,,
८९५	सवारी ढील से ले ...	,,,
८९६	यतन कर शत्रु को जीतेगा...	,
८९७	यतन से आराम होगा ...	२१९
२९८	तुझको व्यापार में लाभ है खेती में नहीं ...	,,
८९९	सीर में फायदा नहीं ...	,,
९००	अब यात्रा होगी ...	,,

पिण्ड.	विषय.	पृष्ठ.
९०१	कार्य्य में देर नहीं है ...	,,
९०२	अब संबंध होगा ...	,,
९०३	कैदी यतन से छूटेगा ...	,,
९०४	सवारी लेने में फायदा ..	,,
९०५	शत्रुको जीतेगा ...	,,
९०६	बीमारी ...	२२०
९०७	पश्चिम की खेती से लाभ...	,,
९०८	सीर में लाभ है ...	,,
९०९	यात्रा न होगी ...	,,
९१०	विवाह यतनसे हो ...	,,
९११	औरत के गर्भ है ...	,,
९१२	कैदी यतन से छूटेगा ...	,,
९१३	सवारी लेने में फायदा है ...	,
९१४	शत्रु दूर होगा ...	,,,
९१५	यतन से आराम बीमारी में	,.
९१६	अब खेती में मध्यम लाभ ..	२२१
९१७	व्यापार में लाभ	
९१८	अब यात्रा न होगी	,,
९१९	विद्या न आवेगी ...	,,
९२०	गर्भधारणार्थ पितृशांति ...	,,
९२१	कैदी यतनसे छूटे ...	,,
९२२	पहले को फायदा सवारी में	,,
९२३	यतन से शत्रु हारे ...	,,
९२४	बीमार को आराम होवे ...	२२२
९२५	खेती में कम लाभ है ...	,,
९२६	सीर में लाभ है ...	,,
९२७	आयु ज्यादा है आनंद होगा	,,
९२८	विद्या आने की नहीं ...	,,
९२९	गर्भ को विटोक है ...	,,
९३०	कैदी यतन से छूटे ...	,,

पिण्ड.	विषय.	पृष्ठ
९३१	सवारी में फायदा नहीं ...	,,
९३२	शत्रु भागेगा ...	२२३
९३३	बीमार को आराम कब होगा	,,
९३४	अब के खेती में लाभ ...	,,
९३५	अब धर्म न बनेगा ...	,,
९३६	आयु बहुत है ...	,,
९३७	विद्या न आवेगी ...	,,
९३८	इसके गर्भ पूरा यतन से होगा	,,
९३९	कैदी यतन से छूटेगा ...	,,
९४०	सवारी में फायदा ...	,,
९४१	शत्रु हारेगा ...	२२४
९४२	रोगी को आराम हुआ चाहता है ...	,,
९४३	भाग्योदय में देर है ...	,,
९४४	अब धर्म कर ...	,,
९४५	आयु पूर्ण है ...	,,
९४६	इस विद्या में फायदा नहीं ...	,,
९४७	गर्भ पूरा नहीं होता पितृ-दोष है ...	,,
९४८	बंदी यतन से छूटेगा ...	,,
९४९	सवारी में लाभ है ...	२२५
९५०	शत्रु जबर यतन से दूर होगा	,,
९५१	राज्य कार्य्य होगा ...	,,
९५२	भाग्योदय में देर है ...	,,
९५३	यश फल अच्छा होगा ...	,,
९५४	शरीरसुख होगा ...	,,
९५५	विद्या मुशकिल में ...	,,
९५६	यतन से गर्भ होगा ...	२२६
९५७	कैदी छूटा चाहता है ...	,,
९५८	असवारी में फायदा नहीं ... ७	,,

पिण्ड.	विषय.	पृष्ठ.
९५९	वस्तु बेचने में फायदा है ...	,,
९६०	राज्य कार्य्य होगा ...	,,
९६१	भाग्योदय होगा ..	,,
९६२	धर्म होगा ...	,,
९६३	बीमारी है आयु ज्यादे है ...	,,
९६४	विद्या खूब आवेगी ...	,,
९६५	गर्भ १॥ मासका है ...	,,
९६६	बंदी छूटेगा ...	२२७
९६७	मिलाप होगा ...	,,
९६८	इस वस्तुके बेचने में फायदा है	,,
९६९	राज्य कार्य्य नौकरी देर से हो	,,
९७०	भाग्योदय में देर है ..	
९७१	घरकार्य्य होगा ...	,,
९७२	आयु ज्यादा है ...	,,
९७३	कोई दिनों में विवाह होगा ...	,,
९७४	गर्भ होगा ...	२२८
९७५	कुटुंब में तकलीफ पितृदोष ...	,,
९७६	मिलाप न होगा ...	,,
९७७	माल बेचने में फायदा ...	,,
९७८	राज्य काम नौकरी होगी ...	,,
९७९	भाग्योदय में कुछ देर ...	,,
९८०	धर्म अब होगा ...	२२९
९८१	यतन से आयु रहेगी ...	,,
९८२	विद्या से लाभ है ...	,,
९८३	खत आवेगा ...	,,
९८४	तकलीफ देवकोप से है ...	,,
९८५	मिलाप होगा ...	,,
९८६	इस वस्तु में फिर फायदा होगा	,,
९८७	यतन से राज्य कार्य्य हों ...	२३०
९८८	यतन से भाग्योदय ...	,,
९८९	उद्यम से कृत्य होगा ...	,,
९९०	आयु मध्यम है ...	,,
९९१	नाव आई चाहती है ...	,,
९९२	खत आया चाहता है ...	,,
९९३	कुटुंब को पितृदोष से तकलीफ है ...	२३१
९९४	मिलाप से फायदा नहीं है ...	,,
९९५	माल बेचने में फायदा है ...	,,
९९६	राज्यमें रोगी होगी ...	,,
९९७	भाग्योदय में देर ...	,,
९९८	धर्म कर यश बहुत होगा ...	,,
९९९	अन्य स्त्री सङ्गमें हानि ...	२३२
१०००	नौका आनंद से आती है ...	,,
१००१	दिल बिगडा रहता है ...	,,
१००२	तेरे पितृदोष है ...	,,
१००३	इसके बेचने में फायदा ...	,,
१००४	मिलाप होगा ...	,,
१००५	वस्तु बेचने में फायदा ...	२३३
१००६	यतन से राज्यकार्य्य फतेह होगा ...	,,
१००७	यतनसे भाग्योदय होगा ...	,,
१००८	सीर कार्य्य में फायदा ...	,,
१००९	अन्य औरत से सङ्ग होगा	,,
१०१०	जहाज में बखेड़ा है ...	,,
१०११	दिल सुधरेगा ...	२३४
१०१२	बालक को ज्यादे बीमारी है	,,
१०१३	मिल देर से होगा ...	,,
१०१४	वस्तु बेचने में लाभ होगा ...	,,
१०१५	बदली कब होगी ...	,,
१०१६	रोगी अच्छा होगा ...	,,

पिण्ड.	विषय.	पृष्ठ.	पिण्ड.	विषय.	पृष्ठ.
१०१७	शिकार न मिलेगा ...	,,	१०२९	मुकदमा की खबर आई जान	२३७
१०१८	औरत चाहती है ...	२३५	१०३०	कुटुंब में पितृदोष है ...	,,
१०१९	माल जहाज में अच्छा ...	,,	१०३१	जमीन में शत्रु से झगडा ...	,,
१०२०	पत्र आया चाहता है ...	,,	१०३२	करजा दे लोभ मत कर	,,
१०२१	यतन से बीमारी जायगी	,,	१०३३	अब गोद में फायदा नहीं ...	,,
१०२२	मिलापका ...	,,	१०३४	बीमारी जतन से जायगी	२३८
१०२३	इमारत मत बेंच ...	,,	१०३५	शिकार न मिलेगी ...	,,
१०२४	करजा देर से दूर होगा ...	२३६	१०३६	औरत से सङ्ग न होगा ...	,,
१०२५	इसके गोद लेने में कुफायदा है ...		१०३७	जहाज आई जान ...	,,
			१०३८	पत्र आवेगा, लाभ है ...	,,
१०२६	यतन से आराम होगा ...	,,	१०३९	तकलीफ पितृदोष से है ...	,,
१०२७	शिकार मिलेगी ...	,,	१०४०	चक्रवर्ती होने का है ...	२३९
१०२८	औरतसे मेल होगा ...	,,	१०४१	स्वर्ग के राज्य करने का ...	,,

इति रमलगुलजारकी विषयानुक्रमणिका समाप्ता

श्रीगणेशायनमः ।

रमलगुलजार प्रारम्भ

पिण्ड १.

हुक्मी शकल लहियान ☰ खारिज अग्निकी है हुक्म फरमाती है कि: "पूछने-वाले शख्स ! तेरा सवाल भाग्योदयका है" रोजगारकी तर्फ से मनमें तकलीफ पारहा है सो अब कई दिनमें तेरा भाग्योदय होगा परन्तु तेरा दिल बिगड़ा रहता है सो तू १०० दुर्गापाठ संपुट करवा नहीं तो रोजगारमें तेरा चित्त नहीं लगेगा और तुझे स्वप्न भी रात्रिको नाकिश आते हैं सो सन्देह मतकर अल्लातालाने चाहा तो तेरा रोजगार जलदी लगैगा सन्देह मतकर इति प्रश्न ।।पिंड।।२।। हुक्मी शकल कब्जुलदाखिल ⁝ सूर्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल-लड़केके भाग्योदयका है" इस लड़के के सुखकानी देखते बहुत दिन हुए परंतु इसको अबतक आपा चेता नहीं सो इसके जन्ममें ३ ग्रह माफिक नहीं हैं सो उनका पूजन करवाना । और पूर्वजन्म में जांगलदेशमें सिंह था सो इसने गोहिंसा बहुत की इस पापसे इसकी प्रीति किसीसे नहीं है जिससे बोलता है उसको धमकाकर बोलता है सो इसके हाथसे सुवर्णकी एक गौ और एक बछड़ा किसी नेक ब्राह्मणको दान करदे और छायापात्र इसके हाथसे ब्यतीपातके रोज जितनी तेरी ताकत हो इतना करवा इसका भाग्योदय इसी सालमें होजायगा इति प्रश्न ।। पिंड ।।३।। हुक्मी शकल कब्जुल खारिज ⁝ राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल आयुका है" सो वारंवारकी बीमारियोंसे तेरा चित्त निहायत दिक हो रहा है सो यह पहले जन्ममें मरुदेशमें क्षत्री था सो इसने बालक बच्चोंकी माता हिरनी मारी थी सो उन्हींके शापसे इसको बहुत दिलगिरी रहती है सो सुवर्णकी हिरनी बनवाकर तीर्थ पर शुद्धः ब्राह्मणको : दे अल्लाताला आयु बढावेंगे । इति प्रश्न । पिण्ड ।।४।। हुक्मी शकल जमात साबित ☰ बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्त ! तेरा सवल आयुका है" तुझे सब बातोंमें तकलीफ रही परंतु मनके धीरजसे और अपनी शूर बीरतासे कोई भी नहीं व्यापी परन्तु अब तुझे ज्यादे तकलीफ है दिनोंकी गरदिश करके जो तेरे तलुवे रोलता था उसकी तू जूती भी उठावै तो मुखसे नहीं बोले सो ऐसी २ गरदिशसे तू यह चाहता है कि शरीर पूरा होना बेहतर है परन्तु तेरी आयु ज्यादा है सो तू विष्णु सहस्रनामके पाठ जितनी तेरी ताकत हो उतने करवा तेरा शत्रु और बीमारी सब दूर हो जावेगी, अल्लाताला तेरी रूह करेगा दिलासा रग इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।५।। हुक्मी शकल ⁝ फरहा दाखिल शुक्रकी है

हुकुम फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शरीरके सुखका है" सो तुझे अव्वलदिनसे ही सुख रहा किसी बातकी भी तकलीफ नहीं रही जो तकलीफ रही तो मनमें जानी नहीं शरीरके जोरसे गुजरान किया और व्यतीत दिनोंमें तालेवर शत्रुने भी तुम्हारी जूतियां उठाई अब तुम्हें यह सन्देह है कि आगे कैसी गुजरैगी सो तुझे शनिश्चर माफिक नहीं है इससे किसी वक्त दिल बिगड़ जाता है सो तू शनैश्चरका जप १००००० किसी ब्राह्मणसे करवा और डाकौत को दान दे शरीरमें सुख रहेगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ६।। हुक्मी शकल उकला ⚌ मुनकलीव शनिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेव.ले शख्स तेरा सवाल अपने शरीरके सुखका है" सो जन्मभरसे तुझे निहायत तकलीफ रही घरका भी मनुष्य दिनोंकी गरदिशकरके आदर देकर न बोला अब तुझे शरीरसे निहायत अब खाई है खानेपर भी रुह नहीं जो तनक भर खा ले तो हजम नही होता तू पूर्व न्ममें गङ्गातटमें वैश्य था तूने ब्राह्मणोंका अन्तःकरण बहुत दुखाया उस पापसे यह तकलीफ है; तू श्रीगङ्गाजी के स्नानसे द्विज हुआ है नहीं तो चाण्डालके घर जन्म होता सो तू ब्राह्मणोंको जिमा और अच्छी दक्षिणा दे ब्राह्मणोंको प्रसन्न कर विष्णुसहस्रनामका पाठ करवा जितनी तेरी ताकत हो उतना सुकृत करनेसे तू बहाल होगा सन्देह मत कर इलाही अच्छा करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७।। हुक्मी शकल अंकीस ☱ दाखिल शनिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल जन्मभूमिकी कुशलका है" तुम्हारे देशमें इस साल वर्षा बहुत हुई वर्षाकी अधिकता तथा ईश्वरके कोपसे वहां बीमारी बहुत है इससे तुझे यह सन्देह है कि ऐसी बीमारीमें ईश्वर सब जगह कैसे कुशल रक्खेंगे और तुझे स्वप्न भी माफिक नहीं आते हैं सो जितनी तेरी ताकत हो उतना जप स्वप्नेश्वरीका जितेन्द्रिय ब्राह्मणसे करवा और देशके मनुष्योंसे कहवाकर आदित्य-हृदयसे सूर्य्यका आराधन करवा देशमें अग्नि शान्त होगी और तुम्हारे कुटुंबमें बीमारी तो ज्यादा हुई परन्तु श्रीभवानीकी सहायतासे सब खुशी रहे हैं इति प्रश्न ।।पिण्ड।।८।। हुक्मी शकल ☱ हुमरा मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने-वाले शख्स ! तेरा सवाल जन्मभूमिकी कुशलताका है" सो तेरे घरसे कुशलताके समाचार आये बहुत दिन हुए तेरी जन्मभूमिमें कुशल है पहले उन्होंने एक कुशल पत्र तेरे पास भेजा था सो पत्र तेरे पास नहीं पहुंचा अब पत्र आया चाहता है और तेरा रोजगार जैसा तू चाहता है वैसा नहीं लगता जो कुछ लगे तो फिर दिल न लगे सो तेरे पितृदोष है सो तू पांच लक्ष ५००००० गायत्रीका संकल्प दक्षिणासमेत नेक ब्राह्मणको दे तेरा रोजगार बढ़ेगा दिल भी लगेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।९।। हुक्मी शकल ☲ बयाज साबित चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शरीरके अंगका है" तेरे शरीरमें चोट लगी हुई है तू यह पूछता

है कि यह चोट कब बहाल होगी तू पहले जन्ममें शूद्र था तूने सोते हुए कुत्तेको लकड़ी मारी वह कुत्ता बहुत चिल्लाया उस पापसे तेरे यह चोट लगी है इससे तुझे तकलीफ देती है तू काले कुत्तेको तिलोंका तेल डालकर चपातियां खिला अपाहजकुत्तोंकी टहलकर आराम बरजरूर होवेगा अंदेशा मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१०।। हुक्मी शकल ⁝ नुस्रुत् खारिज सूर्य्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शरीरके अङ्गका है" तेरे अंगमें निहायत तकलीफ है वात पित्तका जोर है सो तू पहले जन्ममें गंगा यमुनाके बीचमें यवन था तुझे जानवरोंका बहुत शौक था बहुत टहल करता था परन्तु एक पक्षीके: उड़नेके सबसे पर बांधरक्खे थे सो उसको बिल्ली लेगई इस पापसे तुम्हारे अंगमें पीड़ा है और टहलके सबबसे तू द्विज हुआ है अब तू सुवर्णका कबूतर बनवाके नेक ब्राह्मणको दे और शकुन्तलेश्वरीके जप करवाने से आराम जरूर होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ११ ।। "हुक्मी शकल नुस्रुत्दाखिल ⁝ गुरुकी है हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा यह सवाल है कि तुम्हारे कई पुस्तोंसे कोई पैदा चली आती थी सोकम तो पहलेसे ही थी परंतु अब राजसे बन्द होगई बहुत तजबीज भी की परन्तु अब तक जारी न हुई" सो रोजमें तेरा शत्रु शिकायत कर देता है तू अपनी ताकत माफिक दुर्गापाठ १०० संपुट करवा और ९ कन्या ब्राह्मणोंकी जिमाय ओढनेको वस्त्र दे अल्लाताला तेरी पैदा जारी करेगा अंदेशा मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। १२ ।। हुकुमी शकल ⁝ अतवेखारिज केतुकी है हुक्म फरमाती हैं कि पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल यह है कि "पुस्तोंकी राजधानी छूट गई सो फिर हाथ लगेगी" और वहां जाना बनेगा या नहीं फिर भी वह समय आवेगा या नहीं" तुम्हारा विषाद कमती नहीं हुआ है जिसमें कुल वतनकी कत्ल हो गई है सो यह राज्य कुछ कमती नहींथा यह बादशाही भी परन्तु आपसकी फूटमें बिगड़ गई सो तुम्हारा मुसाहिब उस्र जादेका है उसने तुम्हारी फूट करवा दी दोनूं तरफसे मोठा बनारहा और तुम्हारी जड़काट दी और अब भी तुमको दिलासा बहुत लोग देते हैं परन्तु तकदीर विगर राज्य मिलना बहुत कठिन है और जो खरची लेकर भगा था वह भी दिन २ निवड़ती है सो तेरीजन्म-कुण्डलीमें दो ग्रह राजघरको बिगाड़ते हैं सो उनका पूजन कर और हरिद्वारमें चण्डिका पर १००२५ दुर्गापाठ करवा तेरा दुश्मन दूर होगा: तुझे राज्य मिलेगा संदेह मत कर अल्लाताला अच्छा करेगा धर्मकी नीयत रख इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ।।१३।। हुक्मी शकल ⁝ नकी मुनकलीव मङ्गलकी है हुकुम फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अपने जीवके सुखका है" क्यों कि तेरी औलाद नाकिश है जो तू बैठनेको कहता है तो यह कहते हैं कि हम तो खड़े ही रहेंगे जो सीखकी कहता है उसे दुशमनी मानते हैं इन कारणोंसे अपने जीनेको निहायत

धिक्कार देता है यह तेरे पहले जन्मका अजाव है तू पहले जन्ममें पश्चिम देशमें शूद्र-जाति था ये वैश्य थे इनके पाप द्रव्य लेकर पीछे नट गया सो इस जन्ममें आकर तेरे पुत्र हुए हैं सो वाक्रूपी जूतियां मारके अपने द्रव्यको उगाहते हैं सो जितनी तेरी श्रद्धा हो उतना द्रव्य श्वेत वस्त्रमें लपेटके द्वादशीके दिन ब्राह्मणको दे पूर्व-जन्मका अजाव दूर होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१४।। हुक्मी शकल ⁝ अतवेदाखिल शुक्रकी है हुकम फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अपनेजीवके सुखका है है" सो तुझे बड़ी बड़ी तकलीफ हुई हैं परन्तु अब दिनोंकी गरदिश करके निहायत जालमें फंस गया है सो तेरे दिन नाकिश हैं, नाकिश दिनोंमें गुजरान कर १ वर्ष बाद तुझे दिन अच्छे आवेंगे सो लाभ अच्छा होगा सब तन्दुरुस्तीरहेगी परन्तु शिवार्चन करवा इससे जल्दी दिन अच्छे हो जावेंगे फिकर मत करै इति प्रश्न ।।पिण्ड ।।१५।। हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा सावित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अपने शरीर से लाभके उद्योगका है" सो कई दफे उद्योग किया विशेषलाभ न हुआ जैसा उद्योग किया वैसा लाभ न हुआ अब ऐसा उद्योग चाहता है कि जिसमें पूरा लाभ हो सो यही उद्योग कर जो चित्तमें विचार है खर्च तो तेरा होगा परन्तु कुछ दिन पीछे लाभ अच्छा होगा श्रीभवानीका ध्यान रखना जिससे जल्दी लाभ होगा सन्देह मतकर अल्लाताला भला करेंगे इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१६।। हुक्मी शकल ⁝ तरिख मुनकलीव चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल जबर उद्योगका है" कि जिसमें सालभरमें लाखोंके वारे न्यारे होवें उसीको लेने वास्ते है और भी कोई उलटा पक्ष कहता है परन्तु अफसरकी निगाह तुझपर ज्यादा हैं अनेकों बार तुझको समझाता भी है परन्तु वह रुपया ज्यादे लगाता है वह मनुष्य इसी कारमें बना है सो तू हिम्मत करके द्रव्य खरच कर और अच्छे होश्यार मनुष्य जो अपने निहायत प्यारे हों उनको रख दे और इस काम को जारी कर और यथाशक्ति दुर्गाका पाठ करा तुझे बहुत लाभ होगा जिसको यह काम समाया है वही मनुष्य धन इज्जत करके बड़ा हुआ है निगाह करिकै देख सन्देह मतकर अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। १७।। हुक्मी शकल लह्यान ⁝ खारिज बृहस्पति की है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अपने शरीरमें बलबढानेके वास्ते है सो अनेक यत्न किये परन्तु शरीरमें पराक्रम विशेष नहीं हुआ अब तू किसी नेक ब्राह्मणसे श्रीहनुमानका आराधन करवा और जो बलि लिखी है सो दे, श्रीहनुमानको प्रसन्न कर कुछ दिन बाद तेरे शरीरमें बहुत पराक्रम हो जायगा ।। हे भाई वृथा चौड़ी छाती और चौड़े हाथ किये और कमर खींचे पराक्रम नहीं होता अब तू हनुमान् या स्वामिकार्तिकका नेक ब्राह्मणसे जो किसीके आगे न कहै पूजन करा और तू भी किसीके आगे मत कह

पराक्रम हो जायगा दिलासा रख इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१८।। हुक्मी शकल ⚍ कबजुलदाखिल सूर्य्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अपनी सेनाके पराक्रमका है कि वह शत्रुसे हार तो न जायगी" तुझे अब चेत हुआ पहले नहीं जानता था कि फौज तो लड़ाई के वास्ते रहती है सो तुमको स्त्रियोंका शौक और वृथा हास्य और बेकालका सोना और हाथी या घोड़े की संभाल न की और रईयत को कारबारोंने खूब लूटा और बहुत तकलीफ दी और तेरा खजाना भी बहुत बरबाद किया तुझे कुछ भी चेत न हुआ अब पैरोंतलेसे जाने लगी है जीव ईश्वरकी बन्दगी करता है सो तू आप चेत और अपने बडोंका यश देख पूर्वकी तपस्यासे यह राज्य मिला है अब पहली गठड़ी को भी बरबाद करता है सो तू चेतकर एकादश ब्राह्मणोंसे श्रीदुर्गाका संपुट पाठ करा और शत्रुसे झगड़ाकर तू जीतेगा संदेह मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१९।। हुक्मी शकल कबजुल ⚍ खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजनीतिका है सो यह पूछता है कि जो राजा गद्दीपर बैठा है सो कैसी राजनीति करेगा, अपने पितासे अच्छी करेगा या बुरी यह पूछता है" सो इसके पिताने इस देश के बिगाड़ने में कुछ कचाई नहीं रक्खी ईश्वरकी गतिसे यह देश आबाद रह गया प्रथम व्यभिचारी बहुत था द्रोही बहुत था तीसरे कुसंगी था चौथे धनका बड़ा लोभी था, पांचवें रैयतसे कर बहुत लेता था और पैसे के लाभपर भंगीके भी घरमें चला जाता था और ज्यादे क्या कहूँ सो यह उससे बहुत अच्छा होगा परन्तु कुछ स्त्रियोंका कुसंग इसको भी रहेगा अब राजाके हाथसे सवालक्ष विष्णुसहस्रनामोंके पाठों का संकल्प हो जाय तो बहुत अच्छा है इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। २० ।। हुक्मी शकलजमात ☰ सावित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजनीतिका है" इस मुकदमाको अव्वल जीतेगा दोयम तू जानता है कि इस मुकदमे में बड़ी रौल डौल हो रही है और इस मामिलेमें बहुतसे लोग अव्वलकी तरफ और बहुतसे दोयमकी तरफ हैं और कारदारोंमें भी यही नौबत है सो यह मुकदमा नहीं है यह तो बड़ी आफत है जो सुनता है उसका भी दिल घबरा जाता है परन्तु अब यह मुकदमा बहुत दिन रहेगा इसमें बहुत उलट पलट होगी और रुपैया बहुत खरच पडेगा परंतु अब राजनीति अच्छी है सच्चा सच्चा ही रहेगा अंदेशा मतकरो इस नीतिमें कारदारोंको बड़ी आफत पड़ैगी इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। २१।। हुक्मी शकलफरहा ⚍ मुनकलीव शुक्र की हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अपने शरीर की शांतिका है" सो तुझे गृहस्थसे उपराम हो जाता है केवल ईश्वरके आराधनमें चित्त लगता है चित्त बहुत खुशी होता है परन्तु जिस बक्त रजोगुण तमोगुण और काम क्रोध लोभ ये चित्तको डिगाते हैं तब जीव खूब भ्रमता है सर्वज्ञान वह जाता है फिर जब तेरेको

उपराम होता है तब काम क्रोध लोभके किये कार्य्यको देख देख बहुत पछताता है और चित्तपर यह विचार करता है कि इस गृहस्थको छोड़के उत्तरदिशाको चलें सो तू सन्देह मत कर यही कलियुगका धर्म है ईश्वरकी भक्ति कर सब पाप दूर होंगे कलियुगमें ध्यान और ज्ञान नहीं है केवल भक्ति और दानसे ही मोक्ष होता है सन्देह मत कर ३ वर्ष बाद उपराम होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।२२।। हुक्मी शकल ⚍ उकलामुनकलीव शनिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अपने शरीरकी शांतिका है सो तेरे सब तीजकी मौज है परंतु जो धन था सो खरच हुआ जाता है और धन भी बहुत चाहता है धन मिलता नहीं और रात्रिको बड़े २ बिचार करता हैं परन्तु तजबीज कोई न हुई और चित्तको कहीं स्थिरता नहीं होती रात्रिको निद्रा नहीं आती यह प्रश्न है" सो तू पहले जन्ममें औरतका धन लेकर नट गया सो उसने बड़े बड़े श्वास मारे उस पापसे यह चित्तभ्रान्ति है सो तू बटुकभैरवका अनुष्ठान जितनी तेरी ताकत हो उतना करवा तुझे धन मिलेगा भ्रान्ति जायगी सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। इति प्रथमस्थानम् । अथ द्वितीयस्थानम् ।। पिण्ड ।।२३।। हुक्मी शकल ⚍ अंकीश दाखिल शनिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स। तेरा सवाल द्रब्यके आगमनका है" सो तू बहुत दिनोंसे इस धनकी आशासे बहुत दिक्क हुआ परन्तु यह धन नहीं मिला सो तू अब यही उद्योग कर शनैश्चरके निमित्त दानदे और शनैश्चरका जप करवा तुझे यह धन मिलेगा सन्देह मतकर इति प्रश्न ।।पिण्ड ।।२४।। हुक्मी शकल ⚌ हुमरा साबित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धनके आनेका है" सो तेरी रकम साहूकारने दबाई है रकम ज्यादा है लेकर नटता है पूंजी दबाकर दीवाला करता है बेईमानी छाय रही है उसको बहुत समझाते हैं परंतु लोभकरिके यह कहता है कि मेरे पास पैसा एक भी नहीं है" सो तू अर्जी पेश कर तेरा खरच तो पड़ेगा और धन भी कुछ कमती मिलेगा परंतु सुनाई जलदी होगी रकम मिलेगी और भैरवका अनुष्ठान करा तेरे दिन नाकिश हैं खेई हुई नाव चलती है तेरे जैसी पैदा है वैसा पुण्य नहीं सो तू धर्मकी नीयत रख संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।२५।। हुकूमी शकल बयाज ⚍ साबित चंद्रमाकी कहती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल है कि मेरे पास बहुत धन होगा या नहीं" सो तू और लोगों के धनको देखकर चित्त बहुत चलाता है और उद्यमको भी तेरा चित्त करता है और परदेशके उद्योगमें भी बहुत रहता है जो उपाय करता है सो चलता नहीं सो इसमें तेरा उद्योग नहीं चलेगा क्योंकि तू पहले जन्ममें उत्तर दिशामें खत्री था तेरा दोस्त ब्राह्मण था सो तू चतुर था वह गरीब था उसके घरसे धन मंगाके उसके हाथ से तू अपने घरमें बरता करता था इससे उस ब्राह्मणको टोटा आया जब तुझसे उसने मांगा तो तू नट गया वह उच्च श्वास मारके अपने घरमें

बैठा उस पापसे तेरे इससे ज्यादे धन बढ़ता नहीं कभी फायदा हो तो नुकसान हो जाता है सो तू राधादामोदरकी मूर्ति बनवायके नेक ब्राह्मणको दे और ब्राह्मणोंके पग पूज तेरे धन इज्जत २ वर्ष बाद बढ़ेगी फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ॥२६॥ हुक्मी शकल नुस्रुद खारिज ⚌ सूर्य्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल नौकरीसे लाभका है सो अव्वल दिनसे अपना इल्म छोड़के इनसे बहुतसी पढ़नेमें खेचल की और घरका जरखरच पड़ा और पढ़नेकी परीक्षामें अच्छा रहा परंतु नौकरी किया चाहता है सो बहुतसी तजबीजकी नौकरी न लगी सो तू अब पछताता है कि अपनी विद्या त्यागी और यावनी विद्या पढ़ी रोजगार न हुआ सो तू संदेह मतकर तेरे भाग्योदयमें १ वर्ष २ मास ३ दिनकी ढील है सो तू मंगलका दान दे और मंगलका जप करा संदेह मत करे इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ॥२७॥ हुकमी शकल ⚍ नुस्रुद दाखिल गुरुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने-वाले शख्स ! तेरा सवाल नौकरीसे धनके आनेका है" सो तू अपनी विद्या छोड़कर यावनी विद्या पढ़ा है सो तू अब यह चाहता है कि मेरी नौकरी कब लगेगी अरे भाई पहले तो पढ़नेमें ताकतबर हो पीछे नौकरीकी बात करिये जैसे कच्चा फल खानेमें जाइका नहीं देता तैसे थोड़ा पढ़े हुएको नौकरी जाइका नहीं देती सो तेरी तकदीर, ज्यादा है। परंतु और पढ़े बिन तकदीर नहीं खुलेगी सो तू अभी तो खूब पढ़ ३ वर्ष ४ मास १७ दिन बाद तेरी तकदीर खुलेगी नौकरी बहुत अच्छी होगी पढ़के परिपक्व हो और जो खरच लगता है उसका संदेह मत कर अल्लाताला नौकरी अच्छी लगावेगा परंतु नेक ब्राह्मणसे शिवार्चन करवा जो शत्रु खडा होगा सो रफै हो जायगा फिकर मत करै इति प्रश्न पिण्ड ॥२८॥ हुक्मी शकल अतवेखारिज केतु की है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल नौकरीसे ज्यादा लाभका है" तेरी तरक्की हुई परंतु तेरे मनलायक न हुई सो तू तरक्की विशेष कराया चाहता है सो तू औरोंको देखके सबर रख तुझसे पहलेके जो नौकर हैं तुझसे भी अधिक काम देते हैं उनकी तेरे बराबर तरक्की नहीं है सो तू औरोंको देखके दिलको सबर दे और तेरे चालचलनसे अफसर बहुत खुश हैं सो तू जितनी तेरी ताकत हो उतना दुर्गापाठ करा तेरी तरक्की जलदी होगी हे शख्स ! संदेह मतकर एक सालमें तुझे ऐसा लाभ होगा कि जिंदगी भर खुश दिल रहेगा ताकीद मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ॥२९॥ हुक्मी शकल ⁖ नकी मुनकलीव मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल जोर करके पराये धनको दबानेका है सो तू यह चाहता है कि "मुझे यह धन पच जायगा या नहीं" सो तू इस धनकी कौली मत भर बेहक्कके धनमें फलेदारी नहीं हुआ करती सो तू इस मामिलामें पैर मत धसा जो लोभकरके धसायेगा तो तेरी इज्जत बिगड़ जायगी और धन भी न मिलेगा तुझे दिन निहायत नाकिश है

ऐसे दिन हैं कि इन दिनोंमें कुछ जर पाससे लगेगा सो तू तदबीर कर तेरे ही कारमें फायदा होगा १ साल कालीका पूजन कर और नेक ब्राह्मणसे कालिका कवचका पाठ करवा सो तुझे बरजरूर धन मिलेगा संदेह मतकर अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।३०।। हुक्मी शकल–अतवेदाखिल शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यह है कि मैं किसी और शख्सका रोजगार जोर करके लिया चाहता हूं सो मिलेगा या नहीं" वह कार जबर है जिसने यह किया वहो साहूकार हो गया सो तू इस कारको संगवाले रुपये तो तेरे खरच पड़ेंगे परंतु विष्णुसहस्रनामका अनुष्ठान कराना, नहीं कराओगे तो यह काम पूरा पड़ना बड़ा मुशकिल है तू यह कर, करने बाद : तेरा काम फते होगा संदेह मतकर इति प्रश्न ।। ।।३१।। हुक्मी शकल ⁚ इज्जतमा हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल समीपके रहनेवाले शख्सके लाभका है" सो तेरा निहायत प्यारा है और तुझसे लोभकरके अपने पाससे तो दिया जाता नहीं इसके लाभके वास्ते उद्योग बहुत करता है परंतु तेरा उद्योग चलता नहीं सो इसके वास्ते तू बहुत तकलीफ पाता है सो तू संदेह मतकर और यह पहले जन्ममें दक्षिण देशमें ब्राह्मणजाति दोनों भाई थे तेरे भीतर दया थी और इसके भीतर दया नहीं थी सो तू किसी भूखेको अन्न या वस्त्र देता था यह उसके पाससे भी ले लेता था और तुझे बहुत धमकाता था और किसीको भी घरमें घुसने नहीं देता था सो इसको यह पाप का फल है तू संदेह मतकर मनुष्य अपना किया भोगता है जो तुझे निहायत ही संदेह है तो इसके हाथसे एक तुलसीके दरख्तमें जल डलवाय और कबूतरोंको दाने गिरवाय इसका अजाब दूर होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।३२।। हुक्मी शकल तीरखा ⁝ मुनकलीव चंद्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसीके लाभका है" तू उसका भेजा आया है वह रोजगार लाभके वास्ते करता है परंतु इन दिनोंमें लाभ तो होता नहीं परंतु कुछेक नुकसान हो जाता है। उसको दिन अब १ वर्षसे निहायत नाकिश हैं एक वर्ष १९ दिन और नाकिस हैं सो उन दिनोंमें गुजरान कर और सहस्र चण्डीपाठ करवाय जिससे पाठ करावे उससे दूसरेको भेद मालूम न होने पावे क्योंकि कहनेसे जप तथा दानका फल जाता है सो करवा अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।३३।। हुक्मी शकल लहियान ⁝ खारिज गुरुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अपने शरीरसे धनके उद्यमका है, सो" तेरेपास तेरे बड़ोंका कमाया हुआ पैसा बहुत है परंतु अपने हाथसे कमाये विगर तेरे दिलमें सबर नहीं होता तू संदेह मत कर अब तेरे दिन नाकिश हैं इससे तेरा दिल नहीं लगता है और तू यह कहता है कि जो घरमें अपने हाथसे कमाता है उसका सब आदर करते हैं और उसीको बड़ा मानते हैं उसीको पूछके सब

काम करते हैं यह तुझसे नहीं सहाजाता सो तू रुद्रजाप ३ वर्ष ब्राह्मणसे करवा और भूखे दीनोंको अन्न दें तुझे जरूर लाभ होगा जो तू विचारता है तेरा वह काम फते होगा संदेह मत कर अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।३४।। हुक्मी शकल ⚍ कब्जुल दाखिल सूर्य्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धनकेवास्ते उद्यमका है" सो तूं कई दफे उद्यम लाभकेवास्ते कर चुका परंतु तेरे दिल माफक लाभ न हुआ और अब यह चाहता है कि ऐसा उद्यम करूं कि जिसमें साल-भरमें लाखोंके वारे न्यारे हों सो तू यह जो विचारता है वही उद्यम कर परंतु पहले तो तेरा रुपया खरच पड़ेगा पीछे बहुत पैदा खड़ी हो जायगी और तू किसीके शीरमें मत करना फिर तकलीफ पावेगा वह मनुष्य बड़ा कदरज है और शिवार्चन किसी नेक ब्राह्मणसे कराना तुझे देशमें लाभ बहुत अच्छा होगा संदेह मत कर इलाही अच्छा करेगा इति प्रश्न ।।पिण्ड ।। ३५।। हुक्मी शकल ⚍ कब्जुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल इजाराका है" सो इस इजारेपै तेरा दिल बहुत लुभाय रहा है और शख्स भी इस इजारेको लेनेको तैयार है परंतु हिम्मत उसकी नहीं पडती है और एक शख्स उन्हींमें होश्यार है उसकी हिम्मत पूरी है सो उसपर मालिककी रजाबंदी थोड़ी है उसको देनेमें नाराज है उसको जालसाज मानता है और तू भी होश्यार बहुत है परंतु वह तुझे निहायत गरीब जानता है तुझे दिया चाहता है परंतु तू श्रीमहाकालीके मंत्रका जप किसी जितेन्द्रिय ब्राह्मणसे करवा और किसीके लगे मत कह तेरा इजारा बरजरूर हो जायगा और इस इजारेमें तुझको फाइदा बहुत रहेगा संदेह मत कर इति प्रश्न।। पिण्ड ।।३६।। हुक्मी शकल जमात ☰ बुधकी है हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यह है कि "मुझे इस इजारेमें कैसा लाभ होगा" सो तुझे लाभ तो होगा परंतु दशांश पुण्यमें लगाता रहाकर पहले तुझे लाभ रहा परंतु पैसा एक पुण्यमें न लगाया फिर टोटा पड़ा सो सहा और दिलको निहायत तकलीफ रही फिर भगवतीके ध्यानसे तुझे फायदा रहा फिर पुण्यमें पैसा न लगाया अब फिर दिल कांपता है सो तू सुवर्णकी ४० मासेकी दुर्गाकी मूर्ति दानकर और ३६० दुर्गा पाठकी दक्षिणा सामग्री समेत संकल्प दे और उस ब्राह्मणसे यह कह कि किसी दूसरेसे न कहना सो तू यह कर, बराबर मनचाहा लाभ होगा टोटा कभी न होगा संदेह मत कर इति प्रश्न।। पिण्ड ।।३७।। हुक्मी शकल फरहा ⚍ मुनकलीव शुक्रकी है हुक्मफरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल यह है कि इस मकानको मैं लेऊंगा सो मुझे इस मकानसे लाभ है या नहीं" यह मकान बड़ा है इसमें दाम पूरा लगा है और तुझे बहुत किफायतसे मिलता है और तेरा दिल बहुत खुशी है सो इस मकानकी प्रतिष्ठा नहीं हुई है और इसमें

यवन भी रहे हैं इस कारणसे इस मकानवालोंको विशेष लाभ नहीं होता तू संदेह मत कर इस मकानमें गायत्रीका जप करवाकर अपनी ताकत माफिक हवन-मार्जन ब्रह्मभोज प्रतिष्ठा समेत करवा और भूखे अपाहजोंको कुछ खैरातकर इस मकानमें बहुत फायदा होगा बहुत लागतका थोड़े धन लगनेमें आता है संदेह मतकर अल्लाताला अच्छा करेंगे। इति प्रश्न।। पिण्ड ।।३८।। हुक्मी शकल ⚍ उकलामुनकलीव शनिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल मकानसे लाभका है" यह मकान अब जिस दिनसे आबाद किया है उस दिनसे सुखसे जल भी न पिया जो अव्वल लायकबर मनुष्य दीखता है सोई तत्काल बुरा हो जाता है और घरपर रुदन किसी वक्त नहीं थंभता सो मुरब्वियोंसे निहायत क्षीण हो गये और कुछ बधेवा नहीं होता और जो रोजगारके वास्ते विदेशको जाता है उसका दिल नहीं लगता और जो दिल लगै तो शरीरमें सूख जाता है। यह मकान तुमको शुभदायक नहीं है इस मकानको छोड़ दो जो यह मकान तुमसे न छोड़ा जाय तो इस मकानकी एवजी अपनी ताकत माफिक दूसरा बनाके किसी कुटुंबीको दो और श्रीगायत्री और श्री दुर्गाका आराधन और श्रीमद्भागवतका श्रवणकर और मकान दे जो मकान देने लायक न हो तो नगदी रोकड़ी सुफेद वस्त्रमें लपेट अपनी ताकद माफिक सुबहके वक्त सूर्य्योदयके पहले उसके पास जाकर ब्राह्मणको दे और यह कह कि पहले और हमारी इल्लतका होले और आगे यही मकान सुखदायक होगा संदेह मत करो इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।३९।। हुक्मी शकल ⚏ अङ्कीश शनिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल जमीनसे लाभका है" सो जमीनसे तुझे अच्छा लाभ है और यह जमीन मौके पर है और शुभदायक है और अभी इस जमीनके लेनेमें छिपे हुए बहुत तैयार हो रहे हैं सो तू इस जमीनको तुरंत अपनी करले नहीं तो इसके लेनेमें बहुत तकलीफ होगी और फिर होनी भी मुश्किल है सो तू चूके मत और प्रतिपक्षी अब इसमें हल्ला करेंगे और यह कहेंगे कि हमारा हक्क है और जमीनके मालिकको बहकावेंगे सो तू स्कंदेश्वरीके मंत्रका जप करवा जमीन तुझे मिलेगी और लाभ भी होगा संदेह मतकर इतिप्रश्न ।। पिण्ड ।।४०।। हुक्मी शकल ☰ हुमरा साबित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल जमीनसे लाभका है" सो तू अपनी जमीनको औरको देकर धन लिया चाहता है सो जिससे तू बतलाता है वह बहुत कम धन लाता है और इस जमीनका मौका देखें धन बहुत ज्यादा है तू दुर्गाका पाठ एर्कविंशति २१ करवा फिर यह जमीन फाइदे माफिक मिल जायगी संदेह मतकर इति प्रश्न ।। पिंड ।।४१।। हुक्मी शकल ☰ बजाय साबित चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है "कि पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल श्याह वस्तुसे लाभका है" सो तू यह पूछता है कि मुझे इस काली जिन्ससे लाभ है या नहीं सो यह जिन्स कालिका

देवीका रूप है जिस मनुष्यको शौली आजा है तो भिक्षुकको भी लक्षपति कर देती है और जिसको औली आई है उस लक्षपतिको भी धरतीसे मार देती है धूलिको आदर होता है और उस मनुष्यको आदर नहीं होता सो इस व्यापारको समझ और अपनी ताकत देख कर करना क्योंकि अब तुझे दिन सामान्य आये हैं सो विचारके करना और इन दिनोंमें महाकालीके मन्त्रका आराधन करो फिर इन दिनोंमें भी अच्छा लाभ होगा और श्रीकालीजीसे प्रार्थना कर और बलिदान कर लाभ होगा और एक वर्ष बादतेरे धन और इज्जत बढ़ेगी सो धर्ममें नीयत रखना इति प्रश्न।। पिण्ड ।।४२।। हुक्मी शकल ⁝ नुस्रुत् खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल काली वस्तुसे लाभका है" सो यह काली वस्तु काली देवीके समान है जैसे श्रीकाली प्रसन्न हो जाती है तो फिर भिक्षुकभी लक्षपती हो जाता है और प्रसन्न न होय तो लक्षपतिको भी धूलसमान कर देती है और तेरेको अब संदेह ज्यादा है और आजदिन इस व्यापारमें कुछ फायदा है सो तू श्रीकालीके महामन्त्रका रात्रिमें जप और बलिदान नित्य करवा और उस ब्राह्मणसे हरदफे यह कहदे कि किसीके आगे न कहै क्योंकि जप तप दानका कहनेसे फल जाता रहता है सो तुमको भी किसीके आगे न कहना और अब तेरे ३२ दिन नाकिश रहे हैं सो श्रीमहाकालीकी प्रसन्नतासे तुझे लाभ होगा सन्देह मतकर अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ।।पिण्ड ।।४३।। हुक्मी शकल ⁝ नुस्रुद्दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वस्त्रके व्यापारसे लाभका है" सो तू हिचकता है क्योंकि तुमने यह व्यापार अब ही किया है और अब ही कुछ हानि दिखाती है सो तेरे ३ मास ७ दिन नाकिश हैं सो बटुकभैरवके मन्त्रका आराधना करवा और काले कुत्तेको बलिदे कामेश्वरीको अहत रक्त वस्त्र दानदे तुझे इसी व्यापारमें लाभ होगा सन्देह मत कर ईश्वर अच्छा करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।४४।। हुक्मी शकल ⁝ अतवेखारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वस्त्रके व्यापारमें फायदाका है' सो इस व्यापारमें पहले तुझे फायदा रहा है सो अब कुछ नुकसानभी है और तुझे दिनरात्री फिकर रहता है तुझे यह खबर नहीं रहती कि मैंने भोजन किया है या नहीं और रात्रिमें स्वप्नभी नाकिश आते हैं सो तू सन्देह मतकर ये दिन तेरेको नाकिश ही थे अब दिन २७ और रहे हैं सो तू मंगलादेवीका पाठ करा और बलिदान दे हाथ जोड़कर मिन्नत कर तेरेको लाभ होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।४५।। हुक्मी शकल नकी ⁝ मुनकलीव मङ्गलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजसे ठेकालेनेका है" सो पहले तैंने ऐसा ठेका नहीं लिया है इससे तेरा दिल कांपता है सन्देह मतकर तू बहुत होश्यार है और तेरे मनमें धीरज बहुत है और तेरा नसीव चढ़ता हुआ है और जिस मनुष्यसे एक दफे तेरी मुलाकात

हो जाती है वह फिर तुझे बहुत याद रखता है और तू लिहाज करके बड़े मनुष्यके पास नहीं जाता और जिसके पास चला जाता है वह तेरा पूरा आदर करे है सो तू श्रीचंडी पाठका किसी ब्राह्मणको संकल्प दे और इस ठेकाको जलदी करले और लोग इस कामको लेनेको बहुत तैयार हो रहे हैं सो तू जलदी करले तुझे पूरा लाभ होगा फिकर मतकरे इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।४६।। हुक्मी शकल अतवेदाखिल :‾ शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल ठेका लेनेका है" सो तैने पहले भी ठेका लिया था उसमें कुछ लाभ भी रहा था परंतु तेरे दिल माफिक लाभ न रहा सो तू यह पूछता है कि इस ठेकामें रुपयाज्यादा लगता है मुझे फायदारहेगा या नहीं? सो तू इस ठेकामें अपनी तंदईके हुश्यार मनुष्य रख जो काम खूबले और काममें हरकत न हो तू भी कामकी संभालरख और लक्ष्मी जीवेश्वरीके मंत्रकर रात्रिमें आराधन करवा और बलिदे सन्देह मत करे तुझे लाभ होगा इति प्रश्न।। पिण्ड ।।४७।। हुक्मी शकल :_ इज्जत मासावित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने-वाले शख्स ! तेरा सवाल १ घरमें धन बताते हैं उस घरको खोदके काढ़नेका है" सो तेरे घरमें धन तबा हुआ है परंतु तू मतखोद क्योंकि धन घना है पर तेरी तकदीरमें रकम नहीं है सो तुझे न मिलेगा जो तेरा दिल नहीं ठहरता हो तो तू चान्द्रायण व्रत कर और पञ्चभीष्मोंमें श्रीपुष्करजी स्नान कर और स्वप्नेश्वरीके मन्त्रका जप करवा स्वप्नमें तुझे बतावेगी और तुझे धन मिलेगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड ।।४८।। हुक्मी शकर ⁞ तरीख हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल जमीनके खोदनेसे लाभका है" तूने राजसे खानि ली है अबतक विशेषद्रव्य नहीं निकला सो तुझे यह सन्देह है कि जैसा सुना जाता था वैसा क्यों नहीं निकसता कौन ग्रहका दोष है सो है सो हे पूछनेवाले ! जितना तेरा रुपया लगा है उतना अब तक पैदा नहीं हुआ सो तेरेको यह ग्रह तो सबही अच्छे हैं परंतु धनेश्वरीके मंत्रका जप न कराया इस कारणसे विशेष माल न निकसा सो तू अब धनेश्वरीका जप करवा और सन्देह मत करे इसके करनेसे तुझे जमीनमें धन बहुत मिलेगा फिकर मत करो इति प्रश्न ।।पिण्ड।।४९।। हुक्मी शकल लहिया ≡ खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पिताके धनका है" जिसकालमें तेरे पिताका शरीर पूरा हुआ उसकालमें तू अपने पिताको पूछने न पाया जहां और सिज जिसमें था तहां २ उसी २ में रहा और जिन मनुष्योंमें था वे मनुष्य वेईमान बदल गये और कुछेक धन तुझे पीछेसे मिला परन्तु जितना भ्रम था उतना न मिला यह पूछता है धन पिताका है या नहीं है और मुझे मिलेगा या नहीं सो अपने कुलदेवताका ध्यान करो और पितरोंकी आधीनता करो कुछ धन तो तुम्हारे घरमें और कुछ उन्हें मनुष्योंके पास मिलेगा सन्देह मतकर तेरी तकदीर बड़ी है तू धन बहुत कमावेगा और यश भी

अच्छा करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।५०।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुलदाखिल सूर्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पिताके धन मिलनेका है" सो पहले तो तेरे पिताने तुझे बहुत चाहा परंतु तैंने उसका कुछ भी न माना जब उसने यह कहा कि भोजन करले तो तू यह बोला कि आज मैं जलभी न पीउंगा सो जबतक तू बालक रहा तबतक तेरी सब आल खेई फिर तू सयाना हुआ तब भी न समझा तो उसका दिल तुझसे निहायत हटगया अब जो तू उसको दिखलाई देता है तो उसके नेत्रोंसे खून बरसता है और निहायत शत्रु मालूम देता है सो अब तू उसके धनकी क्या आशा तकता है वह प्रथम तो आप जीवता ही धनको ठिकाने लगा देगा और जो कुछ रहेगा सो उसमेंसे बडी तकलीफसे कुछ धन तेरे पल्ले पडेगा तू सन्देह मतकर तेरी तकदीर बहुत अच्छी है तेरोको धन बहुत होगा परंतु धनेश्वरीके मन्त्रका जप करानेसे तकदीर खुलेगी इति प्रश्न ।। ।।पिण्ड ।।५१।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुल-खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल माताके धन मिलनेका है" जिसकालमें तेरी माता मरी उसकालमें तू विशेष पूछने न पाया और घरका माल विशेष उसीके हाथ था सो अब तू शिर धुन धुन पछताता है सो कुछेक माल तो पिछले दिनोंमें तुझे मिला था परन्तु जैसा भ्रम था वैसा न पाया सो तू संदेह मतकर पहले तो तेरे मामा को धन मिल गया और जो कुछ रहा था समीप रहनेवाले मनुष्योंने खाया और जो अवशिष्ट था सो तुमको मिला अब तू सन्देह मतकर तेरी कलाम ज्यादा है तू श्रीभवानीका आराधन कर तेरी तकदीर खुलेगी फिक्र मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।५२।। हुक्मी शकल ☰ जमात सावित बुधकी हैं हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तेरी माताके धनके मिलनेका है" सो तेरी माता तुझे पहले तो बहुत ही चाहती थी परंतु तुझसे यह कहती थी कि रे पुत्र तू भोजन करले तू ऐसा सख्त जवाब देता था कि आज मैं पानी भी न पिऊंगा ऐसे ऐसे वचनों करिके दिल बिगड़ गया जैसे फटादूध फिर नहीं मिलता है वैसे ही तुम्हारा मन नहीं मिलता पहली बातोंको यादकर अब पछताता है और धनको भी तुम्हारी माता बरबाद करती है और तुम्हारा दिल बहुत संदेहमें रहता है सो तू धनेश्वरी दुर्गाके महामन्त्रका आराधन करवा तुझे दौलत मिलेगी शान्तिरख संदेह मतकर इति प्रश्न ।।पिण्ड ।।५३।। हुक्मी शकल ⁝ फरहा मुनकलीब शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल ताऊके धनके लाभका है" सो तू यह पूछता है कि मेरे ताऊके पास धन बहुत था और विशेष हक भी मेरा है परंतु महाखोटे मनुष्य मुझे सताते हैं और राज्यमें भी दावा किया चाहते हैं और मुझसे यह कहते हैं कि इसमें तुम्हारा क्या दावा है हमको देके मरा है सो मुझसे भी ज्यादे दावा करते हैं और मनुष्योंको बहकाते हैं यह प्रश्न है सो तू श्रीकालिकाभवानीके

मंत्रका जपनेके ब्राह्मणसे करा तुझे धन मिलेगा कुछ खरच तो पड़ेगा संदेह मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।५४।। हुक्मी शकल ⚏ उकला मुनकलीब शनिश्चरकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अपने ताऊके धनके मिलानेका है" सो तुझे पहले उसने बहुत चाहा परंतु तूने उसका कहना एक भी न माना और जो तुझको उसने यह कहा कि भाई बैठ जा तो तैने कहा कि आज खड़ा ही रहूंगा जबतक तू बालक रहा तबतक तेरी सब सही फिर तू समर्थ हुआ तब भी न समझा सो उसका दिल तुझसे हट गया और दिलमें गुस्सा भी बहुत आरहा है सो इसके जीते हुए तुझे एक पैसा भी न मिलेगा यह इन पैसोंको बरबाद करेगा और इसके शरीर पूरे हुए पीछे तेरा ही है सो तू दुर्गाका आराधन कर यह पैसेको बरबाद न करेगा और उसकी उमर ५ वर्ष की है इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ५५।। हुक्मी शकल ☰ अंकीश दाखिल शनिश्चरकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चाचाके धन मिलनेका है" जिस कालमें उसका शरीर पूरा हुआ उस कालमें उसका धन तुझे नहीं मिला जहां था वहां का वहां ही रहा तू चाहता है कि मुझे मिलेगा या नहीं सो तू धनेश्वरी महाकाली के मंत्रका जप करवा और बलिदान दे जितनी तेरी ताकत हो और कुछ संदेह मत कर मास ११ दिन १७ बाद तेरे दिन, अच्छे आवेंगे और लाभ होगा सो तू संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ५६।। हुक्मी शकल ☰ हुक्म साबित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चाचासे लाभका है" तेरे चाचाके पास धन बहुत है वह पहले तो तुझको चाहता था पर अब मनुष्योंके बहकानेसे तुझसे प्रीति करके नहीं बोलता और तुझे एक पैसा भी नहीं देता परंतु तू संतोष रख तेरे पास धन है और तू बहुत होश्यार है तेरी तकदीर ज्यादा है और अबतक तेरी तकदीर खुली नहीं है सो तू श्रीकुबेरके मंत्रका जप करवा और भूखे अपाहजोंको अन्न दे धर्मकी नीयत रख तेरे पास धन बहुत बढ़ेगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड ।। ५७।। हुक्मी शकल ☰ बयाज साबित चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भाईके धनके मिलनेका है तू उसके जीतेजी तो उससे कभी दिल देकर न बतलाया जब वह मरने लगा उस वक्त तुझे अवकाश नहीं मिला और कुछ धन भी नहीं मिला और जो मिला सो बहुत थोडा मिला अब तू यह पूछता है कि मेरे भाईका धन मुझे मिलेगा या नहीं तू संदेह मत कर तेरा लहना उसमें थोड़ा था उसके धन पर जो दुष्ट मनुष्य दाव लगाते हैं सो निहायत खराब होंगे और उनका दुष्टपना इस मामिलामें जाहिर हो जायगा और ऐसे होजावेंगे कि बड़े मनुष्योंके पास बैठने योग्य न रहेंगे सो तू धनेश्वरी महामायाका जपनेक ब्राह्मणसे करवा और सूर्य्यसे हाथ जोड़के विनती कर धन मिलेगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड ।।५८।। हुक्मी शकल ⚍ नुस्रुत्खारिज

सूर्यकी है। हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल यह है कि मेरे भाईके पास धन बहुत है सो मुझे मिलेगा या नहीं तेरे भाईके पास धन तो बहुत है और तुझपर उसका दिल भी है परंतु उसने पैसा निहायत तकलीफसे कमाया है सो उसका स्वभाव अत्यन्त कृपण है वह जानता है कि प्राण चले जावें परंतु पैसा न जावें सो वह तुझको जीता हुआ तो धन मुशकिलसे देगा परंतु मरे पीछे तुम्हाराही है जो तुझे जलदी ही हो तो भद्रकालीके मंत्रका आराधन करवा तुझे धन मिलेगा संदेह मत कर आल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।५९।। हुक्मी शकल = नुस्रुददाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल साससे लाभका है" तेरी सासके पास धन बहुत है और तेरी स्त्रीसे उसका स्नेह भी बहुत है तेरी सासके जो समीपी हैं वह तुझे और तेरी औरतको देखकर निहायत दिलमें तकलीफ मानते हैं और तेरी सासकी और उसके समीपियोंकी एक पल भी नहीं बनती है और इतनी ईर्षा रखते हैं कि मौका लग जायतो चोरी करवा दें परंतु राजासे डरते हैं सो तू भगवतीका आराधन और बलिदान रात्रिमें करवा किसी प्रकारकी जोखिम नहीं होगी और धन तुझे ही मिलेगा और जो तु यह नहीं करेगा तो तुझे निहायत तकलीफ होगी और झगड़ेमें तेरा धन भी खरच पड़ेगा सो संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।६०।। हुक्मी शकल ⁝ अतवेखारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल अपनी सासके धनके मिलनेका है कि मुझे मिलेगा या नहीं" सो तेरी औरतका स्वभाव नाकिश है और विचार भी थोड़ा है सो पहले तेरी सासका तेरी औरतपर निहायत दिल था सो अब इसके स्वभावको देखकर वैसा दिल नहीं रहा यह तू जानता है अब शनैश्चरके रोज काले कुत्तेको मोठ या चनाकी चपातियां गेर और शनिश्चरका दान दे और तेरे जन्मपत्रमें मङ्गल माफिक हैं सो मंगलकी मूर्ति तांबेकी बनाकर किसीनेक ब्राह्मणको दे और उसी ब्राह्मणको १ वर्ष तकका मंगलका पूजनदे और उस ब्राह्मणसे यह कहदे कि किसीसे न कहै क्योंकि कहनेसे फल जाता है ऐसा करनेसे तुझे धन मिलेगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ६१।। हुक्मी शकल ⁝ नकी मुनकलीव मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाली स्त्री तेरा सवाल है कि मेरी सासका धन मुझे मिलेगा या नहीं" और मुझसे खुसी रहेगी या नहीं यह पूछती है सो तेरा स्वभाव निहायत खराब है क्योंकि जो तुझसे कोई व है कि तू जल पीले तो तू कहती है कि मैं आज रोटी ही न खाऊंगी और उसकाभी स्वभाव निहायत खराब है पहले तो तेरे ऊपर उसका निहायत दिल था और अब तैंने सामने बोल २ शत्रु करली। तू उससे धनकी अभिलाषा रखती है वह तुझे खाक भी नहीं देगी क्योंकि तेरे स्वभावकी तासीरसे तेरा बोलना खराब है सो तू किसी नेक ब्राह्मणसे वाग्वादिनी देवीके मंत्रका जप करवा

जितनी तेरी ताकत हो और दिलमें शान्ति रख सो तुझको धन मिलेगा और तेरी साससे प्रीति भी हो जावेगी फिक्र मतकर इति प्रश्न ।।पिण्ड ।।६२।। हुक्मी शकल ⁝ अतवेदाखिल शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल ससुरके धनके मिलनेका है" और तेरे ससुरके पास धन खूब है और वह तेरे लिये निहायत हित है परंतु कृपण पूरा है अब तू संकट निवारण कवचका पाठ करवा और उसके समीप रह और उसके कहनेमें मनरख तुझे धन मिलेगा और तू ऐसा न करेगा तो इस धनके आनेमें तेरे गलेमें बड़ा झगड़ा पड़ेगा इससे तू उक्त उपाय कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ६३।। हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मित्र लाभ तथा मित्रसे धनके लाभका है" तू यह पूछता है कि मेरा मित्र मुझे कुछ धन देगा या नहीं तू जैसी बड़ी प्रीति उससे मान रहा है बोलने बतलानेमें तो वैसा ही है परंतु जो तू उससे लाभके वास्ते कहेगा तो वह उसी वक्त तोतेकीसी आंख बदल जायगा फिर प्रीतिसे बोलेगा भी नहीं क्योंकि वह मित्र ऊपरका है अब तू उस मित्रको मत जांच तू अपनी तकदीर देख श्रीगणेशमन्त्रका आराधन अपनी ताकत माफिक करा मित्र तो सम्पत्ति समय रहते हैं और यह धनका लेन-देन मित्रताके बाधक होते हैं सो तू आपत्तिके दिनोंमें गुजरान कर अब तेरे नाकिश दिन, ३ वर्ष ५ मास और २७ दिन रहे हैं संदेह मत कर और तू निहायत तकलीफ पाता है तो पितरोंके तीर्थ श्राद्ध करवा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।६४।। हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीव चंद्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मित्रसे लाभका है" सो तेरा मित्र बहुत सरदार है और तेरे ऊपर निहायत निगाह रखता है और तुझे दिलपै हर दफे लाता है परंतु अब तक जैसी दोस्ती है ऐसा लाभ तुझे न हुआ क्योंकि तेरे अब तक दिन नाकिश थे सो अब ७ मास १३ दिन और नाकिश हैं सो तू सूर्य्यकी चांदीकी मूर्तिमें किसी नेक ब्राह्मणसे सूर्य्यका पूजन और जप करवा और हाथ जोड़के सूर्य्यकी बिनती कर जो तू मित्रसे लाभ चाहता है उससे अधिक लाभ तुझे होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न।। पिण्ड ।।६५।। हुक्मी शकल ☰ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शत्रुसे लाभका है" सो यह शत्रु बड़ा जबर है और तेरा दिल इनसे पहिले दिनसे बड़ा नाराज रखा है जिस वस्तुमें रोजगारके वास्ते तू दिल लगाता है उसी वस्तुको यह तुझसे दूर किया चाहता और आप लिया चाहता है तुझस मुखपर किसी वक्त नाराज नहीं दिखाई देता और तुझसे जबर है और तुमने कोई काम किया और इसको मालूम नहुआ वह तेरे हाथ आया है सो अब शत्रुविनाशिनीका जप किसी नेक ब्राह्मणसे करा और भी कोई शत्रु तेरा हरवक्त बना रहता है सो सब दूर होवेगा फिक्र मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।६६।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुल

दाखिल सूर्य्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शत्रुसे लाभका है" सो यह तुझसे पहले उदासीन था अब शत्रु हो रहा सो अब निहायत तकलीफ दे रहा है और निहायत जुल्म करता है जो तुम जरा भी कोई काम करते हो तो उसीको वह जान लेता है क्योंकि एक मनुष्य दुभाषिया तुम्हारे पास है सो तुम्हारी सब बातें उससे कह देता है और तुमको हरदफे दिक रखता है सो तू सन्देह मत कर शत्रुंजय मन्त्रसे ज्योतिदुर्गाका जप करवा तेरा शत्रु तेरे पैरोंमें आ पड़ेगा उसपर ऐसा निहायत पचड़ा पड़ेगा सो तदवीर कर सन्देह मत कर अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।६७।। हुक्मी शकल कबजुलखारिज ⚍ राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धातुके व्यापारका है" सो तेरे अव्वल दिनसे धातुका व्यापार है केवल व्याजकी पैदा है और इसी पैदामें तू बना है परंतु अब इससे कुछ पैदा विशेष न रही और पहले तुझको लक्षोंका फायदा रहा और अब भी है परंतु वैसा नहीं सो तू यह पूछता है कि यही रोजगार करूं या दूसरे रोजगारमें भी फायदा है तेरा दिल मालके लेनदेनमें करता है क्योंकि इस व्यापारमें इस वर्ष रकमें भी बहुत मारी गई हैं सो रकम पूरी तो नहीं मिली परंतु कुछ इमारत और जेवर बहुतसी तकलीफसे मिला सो अब तू यह चाहता है कि कौनसे व्यापारमें फायदा है सो तू यह जान कि केवल व्याजके व्यापारवालेको संतानमें तो हरजा ही रहे हैं अव्वल तो होता ही नहीं जो बडा पुण्य हो तो हो जावे परंतु सन्तान जीना मुशकिल है जो जीवे सो लड़की जीवे यह सूतका पैसा माफिक है सो तू नगदीका बड़ा पुण्य कर सूतदोष दूर होगा और १ वर्ष २ मास ७ दिन बाद तू माल खरीद बेच तुझे बड़ा लाभ होगा और तेरे पास धन अब भी बहुत है सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।६८।। हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धातुके व्यापारका है" सो तेरा दिल तो बहुत करता है परंतु हिम्मत थोड़ी पड़ती है सो श्वेत धातुके व्यापारमें सामान्य लाभ है और पीत धातुके व्यापारमें ज्यादे लाभ है क्योंकि तेरे जन्मपत्रमें बृहस्पति अच्छा पड़ा है और पहले दिन तुझसे विशेष व्यापार न हुआ क्योंकि तेरे दिलको सचावट न पड़ी और अब भी तेरे २ वर्ष ३ मास ७ दिन और अच्छे हैं सो तू व्यापार कर लाभ होगा परंतु धनेश्वरी महामायाके मंत्रका जप करा क्योंकि दिलको तसल्ली रहेगी इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।६९।। हुक्मी शकल ⚍ फरहा मुनकलीव शुक्रकी है हुक्म फरमाती है "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल काष्ठके व्यापारसे लाभका है" सो तेरेकूं काष्ठके व्यापारमें विशेष लाभ न रहा और लाभके वास्ते तैंने जितना उद्योग किया था उसका तीसरा भी हिस्सा लाभ न हुआ कारण यह कि तेरा बहुत अच्छा जो काम था वह तेरे निज नौकरोंने गायब किया और तू उनके भरोसे छोड़कर गफलतमें

रहा और तू यह नहीं जानता है कि यह काठका व्यापार है यह पापका मूल है सो विष्णु सहस्रनामका नित्यप्रति आराधन करवा तुझे इसी काष्ठमें लाभ होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७०।। हुक्मी शकल ≑ उलका मुनकलीव शनैश्चरकी हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल काष्ठके व्यापारका है" सो तेरा दिल बहुत दिनोंसे है परंतु तेरी हिम्मत नहीं पड़ती सो तू इस व्यापारको कर तेरे काम माफिक बहुत लाभ होगा इस व्यापारमें तुझको लाखोंका फायदा है काष्ठसे तुझको लहना है परंतु सत्यदेवका आराधन कर और पूर्णिमाके दिन कथा श्रवण कर विष्णु सहस्रनामका जप करवा लाभ बहुत होगा बरजरूर सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। इति द्वितीय स्थान फल ।। पिण्ड ।।७१।। हुक्मी शकल ⋮ अंकीश दाखिल शनिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल समीप गमनका है सो तू यह पूछता है कि मेरा गमन कब होगा और होगा तो मुझको लाभ होगा या नहीं" सो तेरे दिलमें तो बहुत ही दिनसे लग रही है परंतु तेरा जाना अबतक नहीं हुआ सो अब तेरे जानेमें कुछ ढील नहीं है और तुझे लाभ भी कुछ सामान्य होगा परंतु तेरा दिल खुशी हो जायगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७२।। हुक्मी शकल =: हुमरा साबित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल समीप गमनका है" सो तू गमन करके मित्रसे मिलाप चाहता है तेरी और उस मनुष्यकी बहुत मित्रता है और उस मित्रसे मिले भी दिन अधिक हुए सो तू वह पूछता है कि मेरा जाना बनेगा या नहीं और जाना बनेगा तो मिलाप होगा या नहीं सो गमन करते बहुत दिन हुए और नजदीककी जगह है सो अब गमन तेरा होगा और मित्रसे मिलाप होगा परंतु एक तेरा शत्रु है तुझको देखकर उसके नेत्रोंसे खून बरषता है शत्रु भी बहुत हैं और उसे (तेरे शत्रुको) लोग बहकाते भी हैं परंतु तेरा मित्र तुझसे निहायत खुश है और तेरे मिलापकी बहुत अभिलाषा रखता है और तुझको देखके ऐसा खुश होता है कि जैसा चन्द्रमाको देखकर कुमुदिनी खुश होती है तेरे जन्मपत्रमें षष्ठेश नाकिश है सो उसका जप नेक ब्राह्मणसे करवा शत्रु नष्ट होगा और तेरे दोस्तसे तेरा मिलाप होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७३।। हुक्मी शकल ⋮ बयाज साबित चंद्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा साल मित्रके सुखका है" अब वह (तेरा मित्र) घरमें है सो तैंने किसीसे अपने मित्रकी तकलीफ सुनी थी इससे तुझे निहायत ही संदेह है क्योंकि तेरा प्यारा संदेह करने योग्य है और उसको तकलीफ जियादा ही है परंतु उसके हाथसे सूर्य्यका आराधना हो जाय तो ईश्वरकी कृपासे कोई दिनमें सुखी हो जायगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७४।। हुक्मी शकल ≑ नुस्रुतुखारिज सूर्य्यका है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मित्रके सुखका है" सो वह मित्र देशमें है और उसके पत्रमें कुछ

बीमारी लिखी थी फिर कुछ ब्योरा न आया कि वह खुशी है या कुछ तकलीफमें सो उसको तकलीफ तो जियादा ही थी परंतु ग्रहोंके जपसे अब शान्ति है अभी उसके ग्रह कुछ दिन और नाकिस हैं महामृत्युंजयके जप करानेसे आराम होगा वह कालके मुखमें आ रहा है सो इसके घरमें यह कह दे कि पीपलके दरख्तका रविवारको छोड़कर नित्य पूजन करे और पितरोंसे प्रार्थना करे इतना करनेसे ईश्वरने चाहा तो बरजरूर आराम हो जायगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७५।। हुक्मी शकल ⁘ नुस्रत् दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मित्रके मिलापका है" सो तुझको बड़ा उत्साह है कि मेरा मित्रसे मिलाप कब होवेगा सो तेरा मित्रसे मिलाप होवेगा, तेरे मित्रने कईदफे आनेका मनोरथ किया परंतु आना न हुआ और जैसी उससे मिलनेकी अभिलाषा तू रखता है उससे अधिक तेरे मेलकी अभिलाषा वह रखता है और अब वह आया चाहता है और तेरे वास्ते भी कोई वस्तु लावेगा जिसको देखकर तू खुश हो जावेगा और उसको लाभ अब बहुत अच्छा हुआ है सन्देह मत कर तेरा मित्र मिला चाहता है तंदुरुस्ती है इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७६।। हुक्मी शकल ⁘ अतवेखारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मित्रके मिलापका है" सो तू उस मित्रकी बहुत बाट जोहता है परंतु उसका गृहस्थसे निकलना नहीं बनता और वह कई दफे मुहूर्त्त करा चुका परंतु मुहूर्त्तपर कोई न कोई विघ्न हो जाता है और मुहूर्त्त तो महीनेमें दो कढ़वाता है परंतु आना नहीं बनता सो अब बरजरूर आवेगा क्योंकि अव उसके खरच अधिक है और आजीविका थोड़ी है सो अब तेरा मिलाप होनेवाला है परंतु तेरे घरसे तेरे बुलानेका खत ३ मालभीतर आनेवाला है क्योंकि तेरे दिन नाकिश हैं और शनिश्चर भी नाकिश हैं सो तू शनिके मंत्रका जप करवा शनिश्चरका दान दे और कुत्तोंको चपातियां गेर तेरे नाकिश दिन दफः होवेंगे सुख होगा मित्र मिलाप होवेगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७७।। हुक्मी शकल ⁘ नकी मुनकलीव मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मित्रके आगमनका है" सो वह तेरा मित्र रोजगारमें गाफिल हो रहा है और आज दिन उसका रोजगार अच्छा चलता है पहले तो उसका रोजगार कोई दिन थोड़ा रहा और उसका दिल भी थोड़ा लगा परंतु वह होशियार बहुत है सब लोगोंसे मुलाकात कर ली और अब जो बडे मनुष्य हैं सो उसे निहायत चाहते हैं और रोजगार अब विशेष बना है और उसकेदिलमें देशको आनेकी है अबतक उन मनुष्योंमेंसे दिल नहीं टूटता था पर अब उसको भी चित्तका उच्चाट हो रहा है सो वह आनेवाला है संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७८।। हुक्मी शकल ⁘ अतवे दाखिल शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अपने मित्रके आगमनका है" उसको गये बहुत दिन हो

गये एकबार खबर लगी थी फिर कहीं भी खबर नहीं लगी सो तू यह पूछता है की वह मनुष्य आवेगा या नहीं यह प्रश्न है, सो उसको गये दिन अधिक हुए हैं और वह मनुष्य तुमसे कुछ खफा है इस कारणसे वह खत नहीं डालता और वह शख्स पूर्वमें है बड़े चैनसे है अपने धर्म ईमानसे साबित है और उसके पास धन बहुत है सो अब तुम चर्षणी मन्त्रका आराधन अपनी ताकत माफिक करवाना उसके पाससे खत या खबर जरूर आवेगी सो तुम जाकर ले आना आपसे तो नहीं आवेगा फिक्र मतकर यही कर बर जरूर आवेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७९।। हुक्मी शकल = इज्जमता साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल नौकरीके शुभ अशुभका है तू यह पूछता है कि मेरी नौकरी दो जगह होनेवाली है सो एक जगह तो तनख्वाह जियादह है और फायदा कम है और एक जगह नौकरी तो कम है और फायदा जियादह है सो मुझे कौनसी शुभ और कौनसी अशुभ है" सो तुझे कमनौकरी और जियादह फायदा यही नौकरी वफेदार है इसीमें तेरा रोजगार बहुत बढ़ेगा इज्जत बढ़ेगी परंतु तेरे जन्मपत्रमें राजभंग शक योग है सो तू नेक ब्राह्मणसे शमदात्री मन्त्र करके १ वर्ष केलाका पूजन करवा तेरा भाग्योदय पूर्ण होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।८०।। हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीव चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल नौकरीके शुभाशुभका है कि तुझे नौकरीसे फायदा है या घरके रोजगारसे सो" तुझे फायदा तो नौकरीसे है परंतु तेरे जन्मपत्रमें राजयोग शनिने बिगाड़ रक्खा है सो तेरी नौकरीकी तजबीज होती है फिर नहीं होती और तुमको इल्म तो कम है परंतु तेरी अकल बहादुरीकी है तेरा नाम होश्यारोंमें ज्यादा है सो तू शनिके रोज पीपलके दरख्तका पूजन कर और शनि देवताका दान दे और शनिका अपनीताकत माफिक जप करवा सो पहले तो तुझको एवजी मिलेगा फिर तेरी पक्की नौकरी हो जायगी सन्देह मत कर तेरे भाग्योदय में ८ मास २१ दिन और बाकी हैं पीछे भाग्योदय होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।८१।। हुक्मी शकल लह्यान ⁝ खारिज बृहस्पतिका है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवालनौकरीके सुखका है सो तू यह पूछता है कि मुझको नौकरीसे सुख है या अपने घरके रोजगारमें" सो तू विशेष ऐसा इल्म तो पढ़ा नहीं कि कोई बड़ेकारपै हो जाय और पढ़ा है तो तेरी हिम्मत कम है और अकल तुझे ज्यादा है परंतु तू अपने घरका पेशा कर इसमें तुझको लाभ होगा और ८ मास पीछे तेरी तकदीर खुलेगी तेरीतभी नौकरी लगेगी सन्देह मतकर तुझको और नौकरी शुभदायक अच्छी है परंतु तू सूर्यदेवता का जप करवा और व्रत कर और सूर्य्य-देवताको हाथ जोडकर आधीनता कर तेरी नौकरी लगेगी और तुझको नौकरी शुभदायक है फिकर मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ।।८२।। हुक्मी शकल ⁝ कब

जुलदाखिल सूर्य्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल नौकरीके शुभाशुभका है सो तू यह पूछता है कि मुझको नौकरी शुभदायक है या घरका व्यवहार" सो पूछनेवाले शख्स ! तेरा इल्म अच्छा है और निहायत मिहनत करके पढा है और तेरा कलाम भी जबर है और जिसके पास एक दफे चला जाता है वह हरदम तुझको दिलमें रखता है और तेरी नौकरीके वास्ते हरदम अफसर इन्तजाम में लग रहे हैं सो तुझको दोनों शुभ हैं परंतु तुझको नौकरीमें कुछ ज्यादे लाभ है सो तू मंगलका जप दान और बलिदान करवा तुझको नौकरी बहुत शुभदायक होगी फिकर मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।८३।। हुक्मी शकल ≐ कबजुलखारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल नौकरके मिलापका है तू यह पूछता है कि एक मित्रको नौकरी पर गये बहुत दिन हुए और यह कहता है कि अब जाऊंगा पर आता नहीं सो आवेगा या नहीं और आवेगा तो कब आवेगा" सो तुम्हारे सामने यह लिखता है कि अब आऊंगा सो तुम्हारे दिल ठहरानेके वास्ते लिखा है क्योंकि वह छुट्टी बिगर नहीं आ सकता और जो वह छुट्टी मांगे तो उसके समीप रहनेवाले यह कह देते हैं कि तू बार बार छुट्टी मत मांग सो संदेह मतकर वह इस सालमें बरजरूर आवेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ८४।। हुक्मी शकल ⁞ जमात सावित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल नौकरके आनेका है" सो वह न तो आनेको कहता और न खरच भेजता सो वह आवेगा या खरच भेजेगा या मैं जाऊं सो वह नहीं आवेगा न खरच भेजेगा क्योंकि उसके दिलमें कुछ तुम्हारे कहे हुए का ख्याल है सो तू जा और उसको गुपतगूकरिके समझा फिर तुझको खरच भी देवेगा और पीछे वह भी आजायगा और उसके जन्मपत्रमें लग्नेश्वर बिगढ़ रहा है उस कारण घरवालोंसे उसका दिल बिगड़ा रहता है सो उसको लिख भेजो कि राहुदान और जप करवादे इसके करनेसे उसका दिल खुश रहेगा और हरदफे तुमसे मिलेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ८५ ।। हुक्मी शकल ⁝ फरहा मुनकलीव शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल नौकरसे फायदाका है तू पूछता है कि यह नौकर है सो इससे मुझको कुछ लाभ होगा या नहीं" सो यह नौकर बड़ा दलगीर है और बहुत अक्लवाला है और नेकनामीवाला है सो जो इसके पास गया है किसीको इसने नाराज न आने दिया और यह तुझको तो निहायत चाहता है सो तू संदेह मत कर तुझको उससे लाभ होगा परंतु तुझको पापग्रह नामाफिक है उसका जप और दान बरजरूर करो उसके करनेसे तुझको फायदा होगा संदेह मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।८६।। हुक्मीशकल ≑ उकला मुनकलीव शनिश्चरकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल नौकरोंसे फायदेका है" सो पहले दिनसे नौकरोंसे बहुत फायदा तुझको

रहा है परंतु अब कुछ तेरा दिल डिगरहा है कि कुछ तेरे धनका नुकसान भी है सोक तू संदेह मत कर तुझको बहुत लाभ होगा इसी कारसे फायदा है परंतु जैसा तुझको लाभ पहले रहा वैसा पुण्य न किया पुण्यके नहीं करनेसे तुझको नुकसान रहा है और अब तेरा दिल भी ठीक नहीं रहता है और कुछ मनुष्योंमें भी एकता न रही सो तू गौका दान दे और ब्राह्मणको जिमाय जितनी तेरी ताकत हो और हवन तर्पण मार्जन सहित श्रीगायत्रीका जप करवा निस्सन्देह लाभ अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।८७।। हुक्मी शकल ☰ अकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शक्स ! तेरा सवाल मुनीमसे फायदेका है तू यह पूछता है कि इस मुनीमसे मुझको फायदा होगा या कुफायदा" सो तू इस मुनीमको रखले इसके रखनेमें तुझको बहुत लाभ होगा यह मुनीम बड़ा भला मानस है और दिलका दिलगीर है खुशदिल है और कुलीन है और अकलबहादुर हो सो तू मत चूक इसके जन्म पत्रसे और तेरे जन्मपत्रसे नाम राशि मिलती है। सो तू इसको रखले तुझको व्यापारसे बहुत लाभ होगा तू अब अपना संदेह दूरकर और जन्मपत्र दिखला तुमको दिन अब कुछ नाकिश हैं सो तू शिवार्चन करवा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ।।८८।। हुक्मी शकल ☰ हुमरा सावित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने-वाले शख्स तेरा सवाल मुनीमका है तू यह पूछता है कि इस मुनीमसे मुझको फायदा है या नहीं" क्योंकि इससे तुझको कुफायदा रहा है इस कारणसे पूछता है सो तू संदेह मतकर और इस मुनीमको दोष मत दे तुझको ये दिन नाकिश ही थे सो अब ७२ दिन और नाकिश रहे हैं ये दिन व्यतीत हुए तुझको पूरा लाभ इसी मुनीमसे होगा संदेह मत कर और नाकिश दिनोंमें धनेश्वरीका आराधन कर इस मुनीमसे तुझको बहुत लहना है और मनुष्योंकी शिकायत मत मान फिकर मतकर अल्ला-ताला अच्छा करैगा इति प्रश्न ।।पिण्ड ।।८९।। हुक्मी शकल ☰ वयाज सावित चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यह है कि मुनीम धन खागया या नहीं" सो तेरा मुनीम बहुत हरीफ है अकलके घोड़े तो बहुत दिनोंसे चलाता था परंतु इसका मौका न लगा और अब इसका मौका लगा तो बहुत धन खागया जो तेरी जाहरीमें है उससे और भी ज्यादे खागया और होश्यार ऐसा है कि जब पूछते हैं तब वह यह कहता है कि मैंने तो एक भी पैसा नहीं खाया और सब मनुष्योंसे बहुतसी करुणा करके बोलता है सो तू इससे सख्ती कर और श्रीमहा-कालीके मंत्रका जप तथा अर्द्धरात्रिके समयमें बलिदान करा और ५ वर्षकी ९ ब्राह्मणकी कन्या जिमा कर वस्त्र दे और सूवर्णकी दक्षिणा दे तेरा धन मिलेगा इसने अबतक बरवाद नहीं किया है। इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।९०।। हुक्मी शकल ☰ नुस्रुत खारिज सूर्य्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने वाले शक्स ! तेरा सवाल यह

है कि मैं सेठका मुनीम था सो उसकी दूकानमें इस साल हरजा ही रहा मैंने बहुत ही उद्योग किया परंतु मुझको यश नहीं मिला सो साहूकार यह कहता है कि मेरा सब धन यह खागया और मनुष्य भी उसको बहकाते हैं और जिसके आगे मैं सच कहता हूं उसकी भी झूठ मानते हैं और सब मनुष्योंको यही जच रही है कि इसने अवश्य रुपया खाया है" सो हे पूछनेवाले ! वे मनुष्य सच्ची कहते हैं क्योंकि तैंने रुपया खाया ही है परंतु पचा नहीं है सो तू श्रीक्लेशनिवारणी दुर्गाके मंत्रका जप करा अर्द्ध-रात्रिमें बलिदान दे कुछेक धन लगके तेरा फंदा कट जायगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।९१।। हुक्मी शकल ⠶ नुस्रत् दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मुनीमसे सुलझनेका है" तेरा मुनीम निहायत कपट और छलकी खानि है तेरे आगे पहले दिनसे निहायत गरीब बना रहा और जो तैंने उसके वास्ते नन्हासे भी नन्हा काम और पैफरमाया सो भी आप करनेको उठा और सबसे बहुत हलीमीसे बोला और आपने जैसा २ इसका कायदा बढ़ाया, तैसे २ यह निहायत अभिमान और सख्त बोलना और अपना कहा ऊपर रखना करता है बहुत दिनोंसे इसका यही हाल था इनके पास रहनेवाले सब जानते हैं सो तुमने गर्दभ हस्तीपर बैठाया था सो तुमको फल आया और तुम भी अब जाने हो सो अब सिंह हो रहा है रक्कम मिलनेसे तुमसे बराबरीका इरादा रखता है सो यह निहायत खोटा मनुष्य है तुम्हारे बलम न आवेगा और धन भी उलटा न देगा आर जो तेरा लेनेका इरादा हो तो तू श्रीदुष्टभंजनी महामायाके मंत्रका अनुष्ठान और बलिदान करवा कुछ कमती तेरा धन मिलेगा सन्देह मतकर इति प्रश्न ।पिण्ड। ।।९२।। हुक्मी शकल ⠶ अतवेखारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मुनीमसे सुलझनेका है" इस मुनीमने पहले तो बहुत धन कमाकर तुझको दिया है यह निहायत गरीब था और तुझको इसका विश्वास भी निहायत था परंतु अब और मनुष्योंके बहकानेसे इसकी अकल छली गई सो इसने बेईमानी की तेरा धन उड़ाया परंतु छिपा न रहा क्योंकि पाप छिपा नहीं रहता सो अब तू इससे धन मांगता है तो नटता है और तेरा सामना करता है सो यह तुझको धन नहीं देगा क्योंकि तेरे अब १ वर्षसे दिन निहायत नाकिश है सो तू श्रीपिंगलाक्षी दुर्गाका आराधन और बलिदान दे कुछ दिनों पीछे तेरा धन आ जायगा सन्देह मतकर इति प्रश्न ।।पिण्ड ।। ९३।। हुक्मी शकल ⠶ नकी मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अपने भाईकी कुशलका है" सो वह विदेशमें है और बड़ा हिम्मतवाला है और तेरा उसका दिल भी मिलता है सो तू यह पूछता है कि उसका पत्र जानेके पीछे जल्दी ही आया करता था अबके हम भी पत्र दे चुके परंतु उसका पत्र न आया सो तू तो दिलमें बडी ढाढस रखता है परंतु औरत तुझको

खाना नहीं खाने देती सो तू यह पूछता है कि वह प्रसन्न है या बेदिल है सो तू सन्देह मतकर वह खुशी है उसकी खुशीका समाचार .तेरे पास आया चाहता है परंतु तेरे दिन सामान्य हैं सो तुझको कुछेक सन्देह बना रहता है सो तू कालीदुर्गाके मंत्रका जप करवा कुशलका समाचार जल्दी ही आवेगा फिकर मतकर इति प्रश्न।।पिण्ड।। ।।९४।। हुक्मी शकल ⁚ अतवेदाखिल शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भाईकी कुशलताका है" सो तेरा भाई देशमें है और उसका निहायत दिल लगा है सो वह तेरे पास पत्र जलदीही दिया करता था परंतु अब दिन बहुत जियादा हुए सो तू यह पूछता है कि मेरा भाई खुशी है या बेदिल सो तू सन्देह मतकर वह कार्य्यावश्यकतासे तुझको कुशलपत्र नहीं देने पाया और अब जल्दी ही खत तेरे पास आवेगा परंतु अब ६ मास २१ दिन तुझको नाकिश हैं सो पहले ही महामृत्युंजयका जप करवा तेरा सब सन्देह दूर होगा फिकर मतकर इति प्रश्न ।।पिण्ड ।।९५।।हुक्मी शकल ⁝ तू इज्जतमा सावित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भाईके मिलापका है" और वह विदेशमें है और तेरा दिल निहायत चाहता है कि कब मिलाप होवेगा और रातको तुझे इसी विचारमें नींद भी नहीं आती है सो तू यह पूछता है कि कब मिलाप होगा सो वह धनके लोभमें लग रहा है और मिलनेको उसकी भी बहुत अभिलाषा है तेरे पास खतमें भी कई दफे लिख चुका है कि अब मैं जाऊंगा परंतु अब तक आना न बना सो तू ऊद्ध्र्व-जटेश्वरीके मंत्रका आराधन करवा जितनी तेरी ताकत हो उतना और बलिदान दे मिलाप जल्दी होगा सन्देह मतकर अल्लाताला जल्दी ही करेगा इति ।। प्रश्न ।। पिण्ड ।। ९६।। हुक्मी शकल तरीख ⁞ मुनकलीव चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तेरे भाईके मिलापका है," सो यह अपने देशमें है सो तू यह पूछता है कि हरवक्त वह खतमें लिखता है कि अब मैं आया चाहता हूं परंतु आता नहीं सो उसके आनेमें तेरा भी दिल उठ रहा है और रात्रि दिन यही दिलमें रहती है रातमें इसी विचारसे नींद भी नहीं आती तुमको निहायत सन्देह हो रहा है सो वह गृहस्थके धंधेमें फस रहा है और उसके दिन नाकिश हैं इससे उसका आना नहीं होता सो तू उसके नामसे सूर्य्यदेवताका व्रत करवा और अपनी ताकत माफिक जप भी करवा सो नाकिश दिन दफे होवेंगे बरजरूर आवेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ९७।। हुक्मी शकल ⁝ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भाईकी बीमारीका है" सो वह विदेशमें है तेरे पास खतमें लिखा आया है जिस वक्त खत आया उस वक्तसे निहायत सन्देह है और कुटुंबमें जो सुनता है शो ही निहायत सन्देह करता है सो उसको अब आराम है या नहीं जो आराम नहीं है तो कब होगा यह पूछता है सो हे पूछनेवाले !

उसकी बीमारी निहायत सख्त है और वह कालके मुखमें आरहा है दिनोंकी गरदिशसे उसको उस देशका खाना दाना न पचा क्योंकि वह परहेजसे नहीं रहा सो तू कालभैरुके मंत्रका संकल्प १०२५०० इसी वक्त दक्षिणासमेत नेक ब्राह्मणको दे उसको आराम बरजरूर होगा और अर्द्धरात्रिको बलिदान दे सन्देह मतकर इति प्रश्न ।।पिण्ड।।९८।। हुक्मी शकल ⚍ कब्जुल दाखिल सूर्य्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तेरे भाईकी बीमारीका है तू पूछता है कि मेरे भाईकी बीमारी अच्छी होगी या न होगी" सो तेरे भाईकी बीमारी निहायत सख्त है कालके मुखमें आरहा है और सब कुटुंबको निहायत सन्देह है सो तू कालभैरवके मंत्रके जपका संकल्प सवालक्ष दक्षिणासमेत इसी वक्त नेक ब्राह्मणको दे और बलिदान दे रात्रिमें इसके करनेसे इसको आराम बरजरूर होगा सन्देह मतकर इति प्रश्न ।।पिण्ड ।।९९।। हुक्मी शकल ⚍ अबजुलखारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भाईकी सन्तानका है तेरे भाईको अबतक सुंदर सन्तानका सुख नहीं हुआ सो तू यह पूछता है कि इसको औरस पुत्रका सुख है या नहीं" सो तेरे भाईकी स्त्रीको अजाब है यह पहले जन्ममें भवपार नामक दक्षिणकी नदीके तीर कोलजातिकी थी सो एक पुरुषके दो स्त्री थीं इसने धनकेलोभकरकेबड़ी बहनके तीन लड़के मार दिये और पीछे पापका भय करके दानपुण्य इसने बहुत किया सो दानके करनेसे द्विजन्मा जाति और यह धन मिला परंतु इसने प्रायश्चित्त नहीं किया उस पापसे सन्तानका दुःख है सो तू ३ बालकोंकी सुवर्णकी मूर्ति बनवाकर प्रायश्चित्त विधानसे नेक ब्राह्मणको दे संदेह मत कर संतान होगी इति प्रश्न पिण्ड ।।१००।। हुक्मी शकल ☰ जमातसाबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि 'पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तेरे भाईकी संतानका है" सो तेरे भाईकी स्त्रीके हमल है सो तू यह पूछता है कि क्या सन्तान होगी सो इस स्त्रीके शरीरमें रज ज्यादा है और तेरे भाईके शरीरमें वीर्य्य कम है और यह पहले जन्ममें किसी कन्याका तिरस्कार करती भई उस पापसे इसके कन्याका योग है परंतु श्रीबालेश्वरीके मंत्रका जप करा और ब्राह्मणकी कन्याको जिमाना लड़का बरजरूर होगा फिक्र मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१०१।। हुक्मी शकल ⚍ फरहा मुनकली शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भाईसे धन लेनेका है सो तू यह पूछता है कि मेरे भाईके पास हमारा शीरका धन है सो मुझको देगा या नहीं" सो धन सब तरहका है रोकड़ी भी और जेवर भी बहुत हैं और उसमें बहुत धन ऐसा भी है कि तुझको संदेह है निश्चय मालूम नहीं है सो अब तेरा और उसका कई दिनोंसे तनाजा है दिल नहीं मिलता सो जो जाहिरमें धन है सो तुझको देगा और जो छिपा हुआ है उसको छिपाया चाहता है सो तू धनकालिकेश्वरीकी मूर्ति ११ पलकी

बनवाकर किसी नेक ब्राह्मणको दे और धनकालिकेश्वरीके महामंत्रका जप रात्रिम २१ दिन करवा और मूर्तिका षोडशोपचार पूजन करवा २२ दिन वह मूर्ति दक्षिणा समेत उसी ब्राह्मणको दे और दशांश हवनादि और ब्राह्मण भोजन करवा सब धन तुझको आपसे आप बांट देगा इति प्रश्न।। पिण्ड ।।१०२।। हुक्मी शकल ⁝ उकला मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भाईसे धनके लाभका है सो तू यह पूछता है कि "मुझको लाभ होगा या नहीं क्योंकि अब यह कमानेको दुरुस्त है" सो तेरा भाई तुझको दिलसे बहुत चाहता है और तेरे दुःखमें अपने दिलमें निहायत तकलीफ मानता है सो तुझको बहुत धन कमाकर देगा परंतु तुझको दिन नाकिश हैं सो तू यथाशक्ति विष्णुसहस्रनामका आराधन करवा उससे लाभ होगा फिक्र मतकर इति प्रश्न ।। पिंड ।।१०३।। हुक्मी शकल ⁝ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बहनके सूखका है सो तू यह पूछता है कि मेरी बहनको सूख रहेगा या नहीं" सो तू संदेह मतकर तेरी बहनका कलाम बहुत अच्छा है और उसको धर्मका भी खयाल है परंतु कुटुंबके मनुष्योंसे प्रीति नहीं है उसका कारण यह है कि उसके जबानमें लगाम नहीं है सो इसके हाथसे तू वागीश्वरीके मंत्रका संकल्प करवा इसकी वाणी शुद्ध होगी फिर सबसे नेकीसे बोलेगी और दिल भी इसका साफ होगा संदेह मतकर अल्लाताला अच्छा करेगा ।। इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१०४।। हुक्मी शकल ⁝ हुमरा सावित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बहनके सुखका है सो तू यह पूछता है कि मेरी बहनको सुख होगा या नहीं" सो तेरी बहनका और तेरी बहनके पतिका जन्मपत्रसे वर्ग वैर है और वह इनको नहीं चाहता इसमें कारण यह है कि बड़े मनुष्योंके वचनको नहीं मानता है वह उसको त्याग देते हैं इसको यह आग्रह है कि अपना ही कहना करना औरोंका कहना न मानना सो यह सबसे द्वेष करता है तू समझा दे कि अभिमान मतकर और इसके हाथसे शान्ति-पाठका संकल्प दक्षिणा समेत सवालक्ष करवा और संगमेश्वरी कालीकी सुवर्णकी मूर्ति उसी ब्राह्मणसे पूजन करवा और ३१ दिन पीछे उसका पतिसे मिलाप होगा संदेह मतकर इति प्रश्न पिण्ड ।।१०५।।हुक्मी शकल ⁝ बयाज सावित चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बहनकी बीमारीका है तू यह पूछता है कि मेरी बहनको बीमारी है सो अच्छी होगी या नहीं" उसको बीमारी माफिक नहीं है और कालके मुखमें आरही है सो तू पुण्य कर इसका दिन निहायत नामाफिक हैं ऐसा करनेसे इसको बरजरूर आराम होगा सन्देह मत कर इतिप्रश्न ।। पिण्ड ।।१०६।। हुक्मी शकल ⁝ नुस्रुत् खारिज सूर्य्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तेरी बहनके पतिको बीमारी है सो

तू यह पूछता है कि बीमारी कब अच्छी होगी" सो बीमारी नाकिश है दिन इसको निहायत माफिक हैं कालके मुखमें आ रहा है तू तो यह पूछता है कि बीमारी कब अच्छी होगी और इसकी बीमारी बढ़नेवाली है सो तू कालदेवकी सूवर्णकी मूर्ति बनवा कर नेक ब्राह्मणको दे और सवालक्ष महामृत्युञ्जयके जपका इसी वक्तइसके हाथसे संकल्प करा और ब्राह्मणोंसे जप कराय तद्दशांश हवन, तद्दशांश तर्पण, तद्दशांश मार्जन, तद्दशांश ब्राह्मणभोजन करवा भूखे अपाहिजोंको अन्न दे दिलमें दया रख ऐसा करनेसे इसको आराम हो जायगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ।।१०७।। हुक्मी शकल ⁝ नुस्रुद्दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने-वाले शख्स ! तेरा सवाल भानजेकी सगाईका है इसके संबंधमें क्या आंट है कब होगा और कैसे घरमें होगा" सो इसके जन्मपत्रमें ७ वां घर बिगड़ रहा है सो संबंध नहीं होने देता है परंतु सप्तम गृहके वास्ते दान दे और जप करा इसका संबंध बहुत अच्छे घर होगा इज्जत बढ़ेगी इस लड़केकी तकदीर बड़ी होगी इसने पहले जन्ममें बड़े दान दिये हैं परंतु एक ब्राह्मणकी रकम इसीमें पहले जन्ममें रही थी वह सेधती है सो इसके हाथसे नगदी सुफेद कपड़ेमें लपेटके सबेरे ब्राह्मणके स्थानमें जाकर दे यह आजब दूर होगा संबंध होगा सन्देह मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१०८।। हुक्मी शकल ⁝ अतवेखारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अपने भानजेके संबंधका है।" वह फिर संबंध कराया चाहता है। संबंध करनेको बहुत मनुष्य कहते हैं परंतु योग नहीं लगता। यह पहले जन्ममें उत्तर देशमें कोल जाति था और इसकी स्त्री बहुत पतिव्रता थी, उसने किसी मनुष्यसे झूंठा पाप जानकर बिगरदोष इसका त्याग किया और वह फिर ग्रहण नहीं की सो उसने शाप दे दिया कि तुझको दूसरे जन्ममें स्त्रीका सुख नहीं होगा सो उसके शापसे उसको स्त्रीका सुख नहीं होता। इससे सुवर्णकी स्त्री बनवाके उसका पूजन करवा और उसके पास जैसे पहिननेमें आवें वैसे स्त्रीके सब कपड़े और सब जेवर भी किसी नेक ब्राह्मणको दे और उससे यह कहो कि मेरे शापकी विमुक्ति हो ऐसा करने से इसका शाप दूर होगा और इसको बहुत रूपवती, बड़ी आयुवाली स्त्री मिलेगी फिकर मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। १०९।। हुक्मी शकल ⁝ नकी मुनकलीव मङ्गलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भानजाकी बीमारीका है" पूछता है कि उसको आराम कब होगा सो हे पूछनेवाले शख्स ! उसको निहायत बीमारी हो रही है तू तो यह पूछता है कि इसको आराम कब होगा उसको दिनरात करिके बीमारी बढ़ती है वह कालके मुखमें आरहा है आजकल उसके दिन निहायत नाकिश हैं सो यथाशक्ति उसका तुलादान दे और कालक्षयके मंत्रका जप करवा बरजरूर आराम होगा सन्देह मतकर। इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।११०।। हुक्मी शकल ⁝ अत-

वेदाखिल शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भानजेकी बीमारीका है तेरे पास उसकी खबर आई है जिस वक्तसे बीमारीकी सूनी है उस-वक्तसे दिल कहीं भी नहीं लगता और दिलको निहायत सन्देह है" सो उसको बीमारी ज्यादा है निहायत तकलीफ हो रही है और अन्नमें रुचि नहीं होती और जो कुछ खाले तो हजम नहीं होता और हकीमोंने भी बहुत इलाज किये परंतु कुछ फायदा हो फिर वैसा ही हो जावै सो इसके पितृदोष हैं इसको रात्रिमें निहायत खोटे स्वप्न भी आते हैं सो इसके हाथसे जितनी इसकी ताकत हो उतनी रोकड़ी ब्राह्मणोंको दिला और पितरोंके निमित्त गउवोंका दान करवा इसको आराम होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१११।। हुक्मीशकल ⁝ इज्जतमा साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल स्वप्नके शुभाशुभका है तू यह पूछता है कि मुझको रात्रिमें नामाफिक स्वप्न आया सो स्वप्नका क्या फल होगा" सो तुझको स्वप्न तो इन दिनोंमें नाकिश बहुत आते हैं जिनको दिनमें याद करके दिल घबराता है और दिनमें भी दिल बिगड़ा रहता है अब तेरे दिन नाकिश हैं सो तू कुक्कुटेश्वर महादेवका प्रातःकाल अराधन कर और ताकतभर इसके मंत्रका जप करवा और हवनादि ब्राह्मण भोजन करवा इसके करनेसे अशुभ स्वप्न शुभदायक होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।११२।। हुक्मी शकल ⁝ तरीखमुनकलीव चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स"! तेरा सवाल स्वप्नका है कि यह स्वप्न शुभदायक है या अशुभदायक" सो यह स्वप्न तो शुभदायक है परंतु तुझको शुभ फल नहीं देता क्योंकि तैने पहले जन्ममें यावनी विद्या पढ़ी थी सो इस जन्ममें उसका संस्कार होनेसे स्वप्नको तू मिथ्या मानता है सो शुभदायक स्वप्न तुझको फल नहीं देता और अशुभदायक फल देता हैं क्योंकि अशुभ स्वप्नका तेरे दिलमें ख्याल रहता है और विचारता है कि कभी सच्चा न होजाय सो तू कुक्कुटेश्वर महादेवका आराधन करवा और छायापात्र व्यतिपातके रोज दे शुभ स्वप्न फल देवेगा और अशुभ स्वप्न भी शुभ फल, देवेंगे संदेह मत कर इति प्रश्न ।। इति तृतीय पिंड ।।११३।। हुक्मी शकल ⁝ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल खेतीके शुभाशुभका है तू यह पूछता है कि मुझको खेती में लाभ है या नहीं" क्योंकि मैं तो इस खेतीके भरोसे बरबाद हो गया जो एक सालमें निपजता है उसमें खरच भी नहीं चलता और जो एक सालमें ज्यादे हो जाता है तो फिर दो या तीन सालतक नहीं होता सो तुझको खेती से लाभ तो है परंतु तेरे पुण्य नहीं हैं और जो तुझको पूजनीय है उनकी पूजा नहीं और शास्त्रका श्रवण नहीं और जो कुछ सुने तो प्रीति न हो सो इन पापोंसे तुझको तकलीफ है और बरकत नहीं होती है सो तू पूज्यजनोंके पैर छू और दिलमें सत्यता रख तुझको खेतीसे फायद,

होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।११४।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुलदाखिल सूर्य्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल खेतीसे लाभका है सो तू यह पूछता है कि मुझको खेतीसे लाभ है या नहीं" सो तू खेती बहुत बोता है परंतु तुझको खेती फायदा नहीं देती सो तेरे दो पाप हैं एक तो तेरे गऊ आदि पशु बहुत तकलीफ पाते हैं और भूखे रहते हैं और दूसरा तुम्हारे पितृदोष है सो अब तक गया नहीं कराई और तू तो धनकी अभिलाषा रखता है परंतु तेरे अन्नका भी संदेहदीखता हैं तू पितरोंका श्रीगयाश्राद्ध करवा और सूपूज्योंमें पूज्य भाव रख अल्लाताला तुझको बहुत देगा संदेह मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।११५।। हुक्मी शकल ⁝ कब्जुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बैल लेनेका है तू कहता है कि बैलमें तुझको कैसा फायदा होगा सो पहले बैलों ने तुझको निहायत तकलीफ करी और तुझको कुफायदा रहा यद्यपि कुछ फायदा भी रहा परंतु ज्यादे नहीं सो अब सुफेद बैल लेना उससे फायदा भी रहेगा परंतु तू अपने पूज्योंका पूजन कर और अपने धर्ममें सावधान रह अब तुझको बैल खरीदनेमें लाभ होगा और खेतीमें भी अच्छा होगा संदेह मत कर. इति प्रश्न ।। पिण्ड।।११६।। हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बैल लेनेका है" तुझको बैलोंमें खूब फायदा रहा है और खरच भी रहा परंतु अब तुझको बैलोंमें फायदा न रहेगा क्योकि तैंने कुछ भी पुण्य नहीं किया सो अब तुमको फायदा न होगा तेरे दिन नाकिश हैं सो तू मत खरीद तुझको बड़ी तकलीफ रहेगी और जो तुझसे नहीं रहा जाता तो तू शनि देवताका दान दे और अपनी ताकत माफिक जप करवा फिर तुझको लाभ होगा । इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ।।११७।। हुक्मीशकल ⁝ फरहा मुनकीलाव शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बैल बेचनेका है सो तू यह पूछता है कि यह बैल बिकेगा या नहीं और इस बैलमें फायदा रहेगा या टोटा" सो यह बैल छातीका सिला है और इसके आनेसे तेरा दिल निहायत उदास रहता है इसकी जैसा रकम लगी वैसा नहीं मिला और अब इसको बेचा चाहते हो तो बिकता नहीं जो ग्राहक आता है वही उलटा चला जाता है सो तेरे दिन नाकिश हैं और इस बैलमें फायदा नहीं रहेगा और ढीलसे बिकेगा सो तू मंगलका व्रत कर जल्दी ही बिक जायगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।११८।। हुक्मीशकल ⁝ उकला मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बैल बेचनेका है सो तू यह पूछता है कि मुझको बैलोंमें फायदा होगा या नहीं" सो तू संदेह मत कर तेरे बैलोंमें फायदा है और अब जल्दीही बैल बिके चाहते हैं संदेह मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।११९।। हुक्मीशकल ☰ अंकीश दाखिल शनिदेवकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले

शख्स ! तेरा सवाल माता और पिताके गड़े धनके निकालनेका है सो तू यह पूछता है कि मेरे माता पिताके पास धन बहुत था परंतु सब धन मुझको नहीं मिला सो मेरे घरमें है या नहीं और है तो मुझको मिलेगा या नहीं" सो तेरे घरमें धन बहुत है परंतु तुझको नहीं मिलेगा क्योंकि वैरी तकतपीर सामान्य है और जो तेरे पास धन था उसमेंसे भी खर्च हुआ है कुछ लाभ नहीं हुआ है सो तेरी तकदीर नहीं है जो और जो निकासा चाहै तो बटुकभैरवी कालीकीमूर्ति बना किसी नेक ब्राह्मणसे पूजन करवा और वटुकभैरवीके मंत्रका जप करवा कुछ धन तुझको मिलेगा संदेह मतकर इति प्रश्न ।।पिण्ड।।१२०।।हुक्मीशकल ⚍ हमरा साबित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल माता पिताका गाडा धन निकालनेका है सो तू यह पूछता है कि "मेरे पिताके पास बहुत धन था परंतु मुझको सब धन नहीं मिला सो मेरे मकानमें धन है या नहीं" सो तेरे मकानमें धन बहुत है और तुझको मिलेगा भी परंतु जगदीश्वरीके आराधनसे ढीलसे मिलेगा क्योंकि तेरे दिन नाकिश हैं सो नाकिश दिनोंमें मत छेड़ और जो तेरे दिलको सबर न होवेगा तो तू मंगलामूर्ति सुवर्णकी बनवाकर ५१ दिन पूजन रात्रिमें करवा और रात्रिहीमें बलिदान दे और तिसके मंत्रका जप करवा और तद्दशांश हवन, तद्दशांश तर्पण और तद्दशांश मार्जन तद्दशांश ब्राह्मण भोजन करवा और वह मूर्ति उसी ब्राह्मणको दे और यह कह कि महाराज इसका पूजन होता रहै और आपनी ताकत माफिक दक्षिणा दे शंकरका ध्यान रख धन तुझको सब मिलेगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ।।१२१।। हुक्मीशकल ⚌ वयाज साबित चंद्रमाकी हैः हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अपनी जागीरकी सीमाका है सो तू पूछता है कि "मेरी सीमा दूसरेने दबाली सो वह नाटता है कि मैंने नहीं दबाई तुझे झूठाही वहम है तू मपवाले" सो वह बड़ा फरेबदार है और जो तू मपावेगा तो मापदारको कुछ देकर तेरी जमीनको बंधावेगा और यह बड़ा होश्यार है तू तो गफलतमें रहा और उसने अपना मतलब किया सो अब फिर उससे कहेगा तो वह करेगा और तुझको दबा लेगा और जो तू उसको दबाया चाहे तो शत्रुनिवारण मंत्रका संपुट देकर ब्राह्मणोंसे सहस्र चंडीका पाठ करवा पंच फैसलासे तू जीतेगा संदेह मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१२२।। हुक्मी शकल ⚍ नुस्रुत् खारिज सूर्य्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अपनी जायदादकी सीमाका है" सो तुझे यह संदेह है कि पहले मेरी सीमा परे तक थी परंतु अब मुझको कुछ उरे सरकी मालूम होती है सो तू सन्देह मतकर तेरी जमीनकी सरहद यही है तुझको पितृदोष है जिसकरके तेरा दिल बिगड़ा रहता है और विना कारण क्रोध मनमें आता है और किसी वक्त बिनाबातसन्देह हो जाता है सो तू पितरोंके लिये ११ पुरश्चरण करवा तैंने पितरोंके वास्ते श्राद्धादि कभी नहीं

किये सो कर फिकर मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१२३।। हुक्मी शकल नुस्नुद्-दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किस खेतीमें फायदा हैं यह पूछनेका है" सो तुझको सामणुसे फायदा है तुझको खेतीमें खरच ज्यादे हैं आमदनी कम है सो तेरे दिन ज्यादा नाकिश हैं अब तू सूर्य्यदेवताका आराधना कर और व्रतकर हाथ जोड़के बिनतीकर सामणूमें लाभ है फिकर मतकर इति प्रश्न ।।पिण्ड ।।१२४।। हुक्मीशकल अतवेखारिज केतु ग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल खेतीसे लाभका है सो तू यह पूछता है कि मुझे किस खेतीसे लाभ है सामणुमें या सादूमें या कोईसी में" सो तुझको खेतीसे लाभ है परंतु सादूकी खेतीसे है परंतु जैसे तेरे सादूकी खेती होती है उससे ज्यादे खरच रहता है सो तेरे मनमें ईश्वरका निश्चय नहीं है दी हुई चीजका पछतावा रहता है सो तू इस परितापको त्याग तुझको बरकत होगी इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१२५।। हुक्मी शकल नकी मुनकलीब मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शीरमें खेतीका है" सो तू यह पूछता है कि अकेला खेती करूं या शीरमें फायदा है । सो तुझको शीरमें फायदा है क्योंकि तेरे पास बहुधा मनुष्योंकी बहुतायत नहीं है और खेतीका काम कैसा है कि जितने मनुष्य होवें उतनेही थोड़े सो तू शीरमें कर और दो मनुष्योंका भाग्य भी ज्यादे हुआ करता है सो तुझे शीरमें बहुत फायदा है संदेह मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१२६।। हुक्मी शकल अतवेदाखिल-शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शीरमें खेतीका है" तू यह पूछता है कि मुझको शीरमें खेतीमें फायदा है या अकेला करनेमें सो तुझको खेतीसे जैसा लाभ है वैसा और नौकरीमें नहीं है और जैसा अकेलेको खेतीके करनेमें लाभ है वैसा शीरमें नहीं है सो तू अकेला खेतीकर और शनिदेवताका दान दे और अपनी ताकत माफिक जप करवा तेरेको बहुत लाभ होगा संदेह मतकर नाकिश दिन गये अच्छे दिन आये हैं अब तुझको लाभ अच्छा रहेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ।।१२७।। हुक्मी शकल इज्जतमा सावित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यह है कि खेतको मैं बोऊं या बटाईको देऊं या किराबेको" सो तुझको बटाईके देनेमें फायदा है परंतु तेरे जन्ममें मंगलसाक्षान्य है सो कोई न कोई तकलीफ तुझको बनी रहती है सो तू भी मंगलका दान दे तुझको बटाईसे लाभ है फिकर मतकर तुझको लाभ होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१२८।। हुक्मी शकल तारीख मुनकलीव चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यह है कि मुझको बटाईमें फायदा है या किरावामें" सो तू जमीनका पति है तेरा राज्य बहुत अच्छा है और तुझको गफलत ज्यादा है तेरी गफलतमें कारदारोंको खूब आनंद हो रहा है प्रजाको लूटते हैं और तेरे बडोंने तो

जमा किया और तेरे आगे सब धनको बरबाद करते हैं और तुझको भेद भी नहीं है और जो तू पूछता है मुझको बटाईमें फायदा है या किरावामें सो तू बटाईकर या किरावाले तेरे मालको तो अमात्यलोग खाते हैं सो चेतकर ब्राह्मणोंसे गायत्रीका आराधन करवा और नेक ब्राह्मणसे मंत्रदीक्षा स्वकुलोचिता ले और उस ब्राह्मणके कुटुंबके वास्ते जमान दे और उसको गुरु करके मान तेरा भाग्योदय होगा और तू बटाई करेगा तो बटाईमें और किरावा लेगा तो किरावामें फायदा होगा और जितने तेरे अमात्य हैं तेरे दूर बैठनेसे भी भय मानेंगे और तेरे धनको नहीं खावेंगे सो तेरे धर्मसे खजाना बढ़ेगा यह कर तुझको लाभ होगा संदेह मतकर आल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। १२९।। हुक्मी शकल ≡ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा वाल बगीचा बनवानेका है" सो तेरा दिल बहुत दिनोंसे है परंतु यह मनोरथ सिद्ध नहीं हुआ अब तेरा मौका बगीचा बनवानेका लगा है सो तेरा बगीचा बहुत अच्छा लगेगा परंतु खरच तो धनका पड़ेगा तेरा एक दुशमन है सो उसकी निगाह रखनी चाहिये और इस बगीचेमें विष्णुसहस्रनामका जप कराना न करावोगे तो शोभायमान न होगा सो ऐसा करनेसे जो दरख्त लगावेगा वोही जल्दी परवस्त होगा और इसमें तेरा दिल भी बना रहेगा और पूछनेवाले शख्स ! अब तेरे दिन निहायत अच्छे हैं और ४ मास १५ दिन पीछे नाकिश आवेंगे से तुझको जन्मपत्र दिखाकर तजबीज करना चाहिये इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। १३०।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुलदाखिल सूर्य्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल जंगलकी जमीन मोल लेनेका है सो तू यह पूछता है कि मैं यह जमीन लूं तो इसमें मुझको फायदा है या नहीं" सो यह जमीन नाकिश है जिसकी यह रही है सो बरबाद हुआ है सो इस जमीनमें तू हाथ मत डाल और जो तुझसे न रहा जाय तो एक सहस्र विष्णुसहस्रनामका पाठ कराके लेना फलदाई होगी संदेह मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१३१।। हुक्मी शकल % कबजुलखारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल जंगलकी जमीन लेनेका है" सो इस जमीनमें अब तो तुझको दाम लगते बहुत दिखते हैं परंतु यह जमीन बहुत अच्छी है इसको लेनेके लिये और भी मनुष्य तैयार हैं सो तू मत चूक जल्दीकर इसके लेनेमें तुझको निहायत फायदा होगा और तेरे दिन अच्छे हैं ७ मास और ३ दिन बाद कुछेक दिन तेरे नाकिश आवेंगे सो तूने दुर्गाका आराधन करवा और दुर्गाको बलिदान देना तुझको बहुत लाभ होगा संदेह मतकर इति प्रश्न पिण्ड ।।१३२।। हुक्मी शकल ≡ जमात सावित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल कूंवा बनवानेका है सो तू पूछता है कि इस जगह कूवा बनवाऊं तो जल अच्छा निकसेगा या खारी सो प्रथम तो इस जमीनमें यह विश्वास

भया कि खारी है और पूर्वजन्मका तेरा कोई ऐसा पुण्य भी नहीं है सो तू जितनी तेरी ताकत हो उतना गौ दान और ब्राह्मणभोजन करवाकर खोदनेका नंबर लगा अच्छा निकसेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१३३।। हुक्मी शकल ⁝ फरहा ! मुनकलीव शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तालाब बनानेका है सो तू यह पूछता कि मैं तालाब बनाया चाहता हूं सो मुझको शुभदायक होगा या नहीं," और मुझसे पार पड़ेगा या नहीं सो तू संदेह मतकर तेरा तालाब बहुत अच्छा बनेगा परंतु ये जबर पुण्य है सो छोटे पुण्योंके आधीनहोते हैं सो तू श्रीगायत्रीका अनुष्ठान इसकी पूर्तिके वास्ते बैठा और धर्मनीयत धर्मका जाननेवाला जिसने शास्त्र श्रवण किया हो जिसके दिलमें दया हो उसको यह काम सौंप दे तेरा यश बहुत होगा सन्देह मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१३४।। हुक्मी शकल ⁝ उकला मुनकलीव शनि देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बावड़ी बनवानेका है सो तू यह पूछता है कि यह बावड़ी पारपड़ेगी या नहीं और इसमें किसी प्रकारका विघ्न तो न होगा" सो तू सन्देह मत कर तेरी बावड़ी निर्विघ्नतासे पूर्ण होगी और कोई साधारण विघ्न आवेगा तो दुर्गाके आराधनसे दूर होगा फिकर मतकर तेरा यश बहुत होगा इति प्रश्न ।। इति चतुर्थस्थानफलं समाप्तम् । ।। इति रमलगुलजारपूर्वार्धे स्थानचतुष्टयस्य प्रथमपरिच्छेदः समाप्तः ।। अथ द्वितीय परिच्छेदः प्रारभ्यते ।। पिण्ड ।।१३५।। हुक्मी शकल ⁝ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी हे हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विद्याके शुभाशुभका है सो तू पूछता है कि मुझको विद्या शुभदायक है या नहीं" सो तेरी तकदीर अच्छी है हे पूछनेवाले ! दरखत लगते ही जो फल देखा चाहे तो फल कहांसे आवेगा फल तो समयपर लगता है सो तुझको इस विद्यासें बहुत लाभ है और तू बड़ा अक्लबहादुर है परंतु जैसी तेरी अक्ल है वैसी विद्या नहीं है सो तू विद्यामें श्रमकर तेरा मुरातबा बढ़ेगा और इस विद्यासे तुझको बहुत लाभ होगा और किसी वक्त इस विद्यासे तेरा दिल उलटता है उस वक्त तेरे दिलपर यह आजाता है कि अब तो इसको नहीं पढूंगा और फिर किसी कालमें दिल लग जाता है सो तेरा पञ्चम भवन बिगड़ रहा है सो जन्मपत्र दिखलाकर उस ग्रहकी शांति कर संदेह मतकर इस विद्यासे तुझको बहुत लाभ होगा और तेरे पितासे तेरी इज्जत बढ़ेगी फिकर मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। १३६।। हुक्मी शकल ⁝ हुमरा सावित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विद्याके शुभाशुभका है सो तू यह पूछता है कि अब कोई दिनमें मेरी परीक्षा होनेवाली है सो मैं परीक्षामें कैसा रहूंगा" सो हे पूछनेवाले ! तुम्हारी परीक्षामें अभी देर है और तुम्हारी परीक्षा बहुत अच्छी उतरेगी परंतु अब तुझको कुछेक दिन नाकिश हैं सो तू जन्मपत्र दिखलाकर

शांति करा और फिकर मतकर इस परीक्षामें तुझको कुछ नेकनामी मिलेगी संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१३७।। हुक्मी शकल ⁝ बयाज साबित चंद्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विद्याके आनेका है सो तू यह पूछता है कि मुझको विद्या आवेगी या नहीं" सो तेरी बुद्धि कुछ मंद है जो तू परिश्रम करता है सो तो याद रहता है और देखी बात दिलमें नहीं रहती सो तेरे पूर्व जन्मका अजाव है पहले तू पूर्वदेशमें यवन था तैने बालकपनमें एक बकरीके बच्चेकी जिह्वा काट ली थी सो उस पापसे तेरी बुद्धि मंद है सो तू वाग्वादिनी कालीका आराधन रख और प्यासे जनोंको जल पिला तुझको विद्या आवेगी संदेह मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। १३८।। हुक्मी शकल ⁝ नुस्रुत् खारिज सूर्य्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विद्याके आनेका है सो तू यह पूछता है कि इस शख्सको विद्या कैसी आवेगी" सो यह बहुत होशियार है और पढ़नेमें इसका दिल बहुत है औ बड़ा खुशदिल है और किसी वक्त इसको क्रोध आता है जब इसके लग्नको क्रूरग्रह देखता है तब बहुत आता है सो उसकी शान्ति करना और यह बड़ा प्रारब्धी होगा और इसको यह विद्या बहुत अच्छी तरहसे आवेगी क्योंकि इसकी कमाल ज्यादे है परंतु अब इसको दिन नाकिस है सो इसके हाथसे जितनी तेरी ताकत हो उतना शिवार्चन करवा और त्र्यम्बक मंत्रका जप करवा सन्देह मत कर इसको विद्या अच्छी आवेगी इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। १३९।। हुक्मी शकल ⁝ नुस्रुत् दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वेदान्तविद्याका है सो तू यह पूछता है कि मैं वेदान्तविद्या पढ़ा चाहता हूं क्योंकि इस विद्याकी पूछ ज्यादे है इसके पढ़नेसे रोजगार भी होगा सो यह वेदान्तविद्या मुझको आवेगी या नहीं सो वेदान्त सब शास्त्रोंमें मुख्य है कठिन भी बहुत है इसके पदार्थ न्याय और व्याकरणसे सूक्ष्म हैं और काल भी ज्यादे चाहता है सो तू पढ़ तुझको बरजरूर आवेगा और तेरा दिल साबित नहीं है तू दिलकी सचावट रख तुझको यह विद्या (वेदान्त) बहुत अच्छी आवेगी परंतु तेरे जन्मपत्रमें पञ्चम भवन बिगड़ रहा है उसकी शान्ति करते रहना फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। १४०।। हुक्मी शकल ⁝ अत-बेखारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वेदान्त विद्याके आनेका है तेरी वेदान्तमें श्रद्धा बहुत है और जो वेदान्तका पढ़ा हुआ है उसमें तेरी बहुत प्रीति है और यह चाहता है कि किसी प्रकारसे कर्मबंधन छूट जावे और मोक्ष हो जावे और तू जीव ब्रह्मका निर्णय बहुत किया चाहता है परंतु अबतक तुझको निश्चय नहीं हुआ है सो वेदान्त तो जीव और ब्रह्मको एक प्रतिपादन करता है और न्याय ब्रह्मजीवमें भेद कहता है और मीमांसा कर्मको ईश्वर कहती है सो इन बचनोंको श्रवण करके तेरे दिलका सन्देह नहीं मिटता है सो तू सन्देह मत कर सब ही

सत्य है जीवब्रह्मके भेद विगर कर्म नहीं हो सकते और कर्म विना ज्ञान नहीं होता और ज्ञान विना मोक्ष नहीं होता है सो तू पहले ऊपरकी पैड़ीमें पग मत धर और विष्णु-यज्ञ कर कर्म कर वेदांत आवेगा ज्ञान होगा, और ऐसा करनेसे मोक्ष भी होवेगा फिकर मत कर कर्म कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। १४१ ।। हुक्मी शकल ⁝ नकी मुनकलीव मङ्गलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल व्याकरण विद्याका है सो तू यह पूछता है कि मुझको व्याकरण विद्या कैसे आवेगी और आवेगी तो इस विद्यासे मुझे लाभ होगा या नहीं" सो तेरी बुद्धि जरा मंद है क्योंकि तेरा पञ्चम भवन जन्मपत्रमें बिगड़ रहा है सो ग्रहका आराधन रख और पढ़नेमें परिश्रम कर तुझको व्याकरण विद्या आवेगी और अभी तेरे भाग्योदयमें देर है सो तेरा भाग्योदय हुए पीछे तुझे व्याकरणविद्यासे बहुत लाभ होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। १४२ ।। हुक्मी शकल ⁝ अतबेदाखिल शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल व्याकरणविद्याके आनेका है सो तुझे पढ़ते २ बहुत दिन हुए और तू बुद्धिमान भी है परंतु तैंने जैसा परिश्रम किया है वैसा बोध नहीं हुआ सो तू यह पूछता है कि इस व्याकरण विद्यामें मैं और परिश्रम करूं तो मुझको इसमें लाभ है या नहीं सो तू परिश्रमकर तुझको लाभ होगा अब तेरे भाग्योदयमें ३ वर्ष २ मास ११ दिन और बाकी हैं पीछे तुझको बहुत लाभ होगा। जहां जावेगा वहांही लक्ष्मी तेरे पैरोंमें रहेगी फिकर मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। १४३ ।। हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा सावित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल ज्योतिष-विद्याका है सो तू पूछता है कि मैंने और विद्या तो जैसी मेरी बुद्धि थी वैसी पढ़ी" परंतु अबतक लाभ विशेष नहीं हुआ अब ज्योतिष विद्या मुझको आवेगी या नहीं सो हे पूछनेवाले शख्स ! तू संदेह मतकर मैंने पढनेमें परिश्रम नहीं किया तू चतुराईसे बुद्धिमान् बना चाहता है सो बिना परिश्रम कोई कार्य्य फल नहीं देता जैसे दरख्तके ऊपर अच्छे फलको देखके मनुष्य मुखको फैलावे तो वह फल मुखमें नहीं आवेगा और जो उसमें चढ़के तोड़ेगा तो मुखमें आजायगा सो तू विना पुरुषार्थ फल चाहता है सो ज्योतिष शास्त्रमें परिश्रम करेगा तो तुझको बरजरूर आवेगा और इस शास्त्रसे तुझको लाभ भी होगा संदेह मत कर ।। इति प्रश्न पिण्ड ।। १४४ ।। हुक्मी शकल तरीख ⁝ मुनकलीव चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल ज्योतिषविद्याका है सो तू यह पूछता है कि ज्योतिष विद्यासे मुझको कैसा फायदा है यह क्या कारण है कि मैं बहुत तकलीफ करके पढ़ाहूं परंतु मुझको अबतक लाभ नहीं हुआ सो हे पूछनेवाले ! तू पहले जन्ममें भी ब्राह्मण था सो पश्चिमदेशमें पांच वर्षका हुआ पीछे तेरे मातापिताने गुरुजीके पास पढ़ानेवास्ते भेज दिया फिर गुरुजीने बहुत दिल लगाकर और अपना काम छोड़कर तुझको पढ़ाया सो तू बुद्धिमान्

होगया फिर किसी कारणसे एक दिन तुझसे गुरु कुपित होगये सो तू उनके सामने गया गुरुजीने निहायत तकलीफ मानी तू उनसे नहीं बोला सो उन्होंने तुझको शाप दे दिया कि जा तुझको विद्या फलीभूत नहीं होगी तुझको वही शाप है सो तू अब जिसके पास पढ़ा है उनको प्रसन्न कर तुझको बहुत लाभ होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ।।१४५।। हुक्मी शकल ☰ लहियात खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल न्यायविद्याका है सो तू यह पूछता है कि और विद्या तो अपनी बुद्ध्यनुसार मैंने पढ़ी हैं परंतु मेरा दिल यह चाहता है कि मैं न्यायविद्या पढ़ूं सो मुझको आवेगी या नहीं यदि आवेगी तो मुझको लाभ होगा या नहीं।" सो न्याय विद्या बहुत अच्छी है और काव्य कोष पुराणोंसे बहुत सूक्ष्म पदार्थ हैं परंतु तेरी बुद्धि अच्छी है सो तू न्याय पढ़ तुझको न्यायशास्त्र बहुत अच्छा आवेगा और तुझको लाभ भी होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१४६।। हुक्मी शकल कब्जुलदाखिल ☰ सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यह है कि मैं न्यायविद्या पढ़ूं परंतु इस विद्यासे मुझको लाभ होगा या नहीं" सो तुझको न्यायविद्या अच्छी आती हैं परंतु तुझको अकल नहीं है व्यवहार बिगड़ता है तेरे लग्नमें दुष्ट ग्रह हैं उसका पूजन कर अब तुझको ८ मास ३ दिन पीछे अच्छा लाभ होगा फिकर मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। १४७।। हुक्मी शकल ☰ कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती हैं कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मीमांसा विद्याका है सो यह पूछता हैं कि मीमांसा विद्या मुझको आवेगी या नहीं मैं पढ़ाभी हूं इस शास्त्रसे मुझको फायदा है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! मीमांसा विद्यामें कर्मको ईश्वर माना है और यही सत्य है कर्म ही ईश्वर है और यह शास्त्र बहुत ही अच्छा है तू पढ़ तुझको बरजरूर आवेगा परंतु तेरे जन्मपत्रमें पंचमभवन कुछ बिगड़ रहा है सो उसकी शान्ति करवा यह शास्त्र तुझको बहुत आवेगा और इस शास्त्रसे तुझको लाभ भी बहुत होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड।। १४८।। हुक्मी शकल ☰ जमात सावित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पुराण विद्यासे लाभका है तू पूछता है कि मैंने एक जगह कोई पुराण बाचनेकी तजबीज लगाई है वह (तजबीज) लगेगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! उस जगह तेरा विश्वास पूरा है परंतु एक मनुष्य उस जगह ऐसा दुष्ट है कि चलता हुआ पाप लेता है सो वह मनुष्य तेरे बलमें नहीं आवेगा और जो तू उससे कहेगा तो वह ऐसा सख्त जवाब तुझको देगा कि सुने पीछे तेरा दिल कभी बाचनेको नहीं करेगा सो तू दुष्टनिवारणी दुर्गाका आराधन कर पीछे तुझसे वह कुछ प्रीतिसे बतलायेगा और जब तेरा पुराण बैठेगा तुझको लाभ बहुत होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१४९।। हुक्मी शकल ☷ फरहा मुनकलीव शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि

"पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यह है कि मेरी कथा बैठ रही है कब बिदा होगी सो अब तेरे २ मास ७ दिन और सख्त हैं इन दिनोंमें तू मत बोल और जो तू बिदा करेगा तो तुझको लाभ कम होगा क्योंकि तुझको इन दिनोंमें लाभका विशेष योग नहीं है और इन दिनों पीछे बिदा करिये फिर तुझको अच्छा लाभ होगा सो सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१५०।। हुक्मी शकल ⁞ उकला मुनकलीव शनि देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सांख्य विद्याका है सो तू यह पूछता है कि सांख्य विद्याके पढ़नेसे मुझको कैसा लाभ है" सो सांख्य विद्या तुझको अच्छी आती है और इस विद्यासे तुझको लाभ भी बहुत है परंतु अब तक तुझको लाभ विशेष नहीं हुआ क्योंकि तेरा भाग्योदय अबतक नहीं हुआ है सन्देह मत कर अब १ वर्ष २ मास और ३ दिन पश्चात् तेरा भाग्योदय होगा और इसी विद्यासे तुझको बहुत लाभ होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१५१।। हुक्मी शकल ⁞ अंकीश दाखिल शनिश्चरकी है हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वेदविद्याका है यह तू पूछता है कि "वेदविद्या मुझको कैसी आती है और इस विद्यामें मुझको कैसा लाभ होगा" सो तुझको इसीमें बरजरूर लाभ होगा परंतु अबतक तेरा भाग्योदय नहीं हुआ है सो १ वर्ष ११ मास १३ दिनमें ईश्वरके आराधनसे भाग्योदय होगा सन्देह होगा तो दूर होजायगा तू फिकर मत कर इसी विद्यासे तुझको लाभ बरजरूर होगा तेरी इज्जत बढ़ेगी इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१५२।। हुक्मी शकल ⁞ हुमरा सावित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वैद्य विद्या पढ़नेका है तू यह पूछता है कि मैं वैद्य विद्या पढूंगा तो मुझको आवेगी या नहीं और जो आजायगी तो मुझको लाभ होगा या नहीं" सो तेरे घरमें पहले तो वैद्य विद्या कोई भी नहीं पढ़ा है और हाथ सख्त होनेसे और लोगोंकी पैदाको देखकर अब तेरा दिल निहायत चलता है सो तू वैद्यविद्यामें लघुत्रयी और वृद्धत्रयी परिश्रम खूबकरके पढ़ यह विद्या भाग्य विना फलीभूत नहीं होती इस जन्म या पूर्वजन्मके तपको भाग्य कहते हैं सो ईश्वरका भजन कर यह विद्या रत्नोंकी खान है कुछ बादशाहीसे कम नहीं है सो तू पढ़ तुझको विद्या आवेगी और इस विद्यासे तुझको बहुत लाभ भी होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१५३।। हुक्मी शकल ⁞ बयाज सावित चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वैद्यविद्याका है तू पूछता है कि यह वैद्यविद्या मुझको आवेगी या नहीं और जो आवेगी तो इससे मुझको लाभ कैसा होगा" सो हे पूछनेवाले ! तैंने और भी शास्त्र पढ़ा है और वैद्यविद्या भी तुझको कुछ थोड़ीसी आती है क्योंकि यह विद्या तेरे कुलकी है जो कुलकी विद्या होती है सो आधी तो विना पढ़ी आती है सो तेरा भाग्यजबर है परंतु अबतक तेरा भाग्योदय नहीं हुआ है और अब तेरे १ वर्ष २ मास ३ दिन नाकिश और

रहे हैं पीछे तेरा भाग्योदय होगा इस विद्याको पढ़ तुझको आवेगी और लाभ होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१५४।। हुक्मी शकल ⁝ नुस्रुत् खारिज सूर्य्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल यावनी विद्याका है सो तू यह पूछता है कि यह विद्या मुझको आवेगी या नहीं और जो आवेगी तो मुझको इस विद्यामें लाभ होगा या नहीं सो" हे पूछनेवाले ! तू परिश्रम कर और सबसे नेकीसे रह तुझको यह विद्या आवेगी परंतु तेरी जन्मपत्रीमें पञ्चम भवन बिगड़ रहा है सो तू उसकी शांति कर तुझको लाभ होगा और विद्या भी खूब आवेगी फिकर मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड ।।१५५।। हुक्मी शकल ⁝ नुस्रुत् दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यावनी विद्याका है सो तू बालकपनसे यावनी विद्या पढ़ा है और यह पूछता है कि मेरा रोजगार कब लगेगा" सो हे पूछनेवाले ! तैंने पढ़नेमें बहुत तकलीफ की है अब रोजगार नहीं होता है और जो रोजगार उठता भी है तो सामान्य उठता है जैसी तेरी पढ़ाई है वैसा रोजगार नहीं मिलता सो तू संदेह मत कर अभी तुझको कुछ दिन नाकिश हैं ४ मास ५ दिन पीछे तुझको एवजी मिलेगी नाकिश दिनोंमें एवजी ही रहेगी और नाकिश दिनोंके बाद तुझको पक्का रोजगार मिलेगा फिकर मत कर अब ही तेरा भाग्योदय नहीं हुआ है तेरा भाग्य बहुत अच्छा है परंतु तू शनिदेवताका दान दे और जप भी करा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। १५६।। हुक्मी शकल ⁝ अतव-खारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजविद्याका है तू राजविद्या पढ़ा चाहता है और यह पूछता है कि मुझको यह विद्या कैसी आवेगी और मुझको लाभ कैसा है" सो राजविद्या पढ़ना है और तुझको हरेक मनुष्यसे अच्छी आती है परंतु जैसा तेरा श्रम है वैसी विद्या नहीं है क्योंकि तेरे जन्मपत्रमें पञ्चमेश बिगड़ रहा है सो उसका आराधन रखना किसी नेक ब्राह्मणसे अपनी ताकत माफिक जप करवा तुझको विद्या बहुत अच्छी आवेगी और इस विद्यासे तुझको लाभ बहुत होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१५७।। हुक्मी शकल ⁝ नकी मुनकलीव मङ्गलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तू राजविद्या पढ़ा है सो यह पूछता है कि रोजगार कब हो" सो पूछनेवाले तैंने बालकपनसे इस राजविद्यामें बहुत श्रम किया और पाससे जरभी लगा और अब पढ चुका कोई रोजगार नहीं मिलता और कोई रोजगार उठता भी है तो पढ़ाई माफिक नहीं मिलता और मनकी सत्यता भी नहीं होती सो तू फिकर मत कर अबतक तेरा भाग्योदय नहीं हुआ है और दिन भी तेरे नाकिश हैं सो नाकिश दिनोंमें गुजरान कर अब २ वर्ष ९ मास पीछे तेरा भाग्योदय होगा और नाकिश दिनोंमें तुझको एवजी मिलेगी सो एवजीमें काम कर और शिवार्चन करवा तुझको लाभ बहुत होगा ।। इति प्रश्न

पिण्ड ।।१५८।। हुक्मी शकल ⁝ अतबे दाखिल शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल यह है कि मैं राजविद्या पढ़ा हूं और मेरी नौकरी भी लग गई थी परंतु अब छूट गई सो फिर मैंने बहुत उद्योग किया परंतु कहीं भी तजबीज नहीं लगती और लगती है तो ऐसी लगती है कि जिसमें मेरा खर्च भी न चले सो अब रोजगार विना मैं निहायत दिक हो रहा हूं मेरा रोजगार होगा या नहीं" सो तेरे शरीरमें एक तो क्रोध बहुत है और तुझमें अकल नहीं और तू अपनेको बड़ा अक्कल-दार जानता है सो तू अपने अफसरसे बोलनेकी भी राहदारी नहीं रखता और तुझे लोभ भी बहुत ज्यादे है सो तैने वे अकल पनामें रोजगार खोये हैं सो अब पछताता है सो अब तो तेरे दिन नाकिश हैं और जन्मपत्रीमें तेरा छठा भवन बिगड़ रहा है सो उसकी शान्ति कर तेरा रोजगार जलदी ही लगेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१५९।। हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा सावित बुध देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल मंत्रविद्याका है सो तू यह पूछता है कि इस मंत्रको मैं आराधन करूं यह मंत्र सिद्ध होगा या नहीं" सो मंत्र तो सब ही सिद्ध हैं करनेवाला चाहिये सो तू सच्चे गुरुसे उपदेश लेकर पहले एक पुरश्चरण गायत्रीका कर और श्रीगङ्गाजीके जलका सेवन कर और गऊको जवोंको चरा फिर गऊके गोबरमें निकसे उनको धोय और सुखाय उनको भोजन कर और फिर इस मंत्रका विधान पूर्वक जप कर और बलिदान दे मंत्र सिद्ध होगा फिकर मत कर मंत्र सब ही सच्चे हैं इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१६०।। हुक्मी शकल ☰ तरीख मुनकलीव चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल मंत्र विद्याका है" सो तू यह पूछता है कि मैं इस मंत्रको सिद्ध किया चाहता हूं सो यह मंत्र सिद्ध होगा या नहीं और मंत्र कलिमें सिद्ध हैं या नहीं। सो मंत्र तो सबही युगोंमें सिद्ध हैं परंतु करनेवाला चाहिये जिस मनुष्योंमें पाप होवेंगे वह मंत्रादि को कैसे सिद्ध कर सकता है जैसे जिस जलमें मल होगा वह जल वस्त्रको कैसे सफेद करेगा? इस कारणसे पहले अपने शरीरके पापोंको दूरकर तू इस मंत्रसे लक्ष्मीप्राप्ति शत्रुनाश और स्त्रीप्राप्ति यह कार्य्य चाहता हैं सो तू पहले तो चान्द्रायण व्रतों करके शरीरके प्रच्छन्न पापोंका प्रायश्चित कर और पीछे सावित्रीका एक पुरश्चरण कर और उसमे पीछे फल आहार कर फिर इस मंत्रका आराधन कर जो मनसा करके करेगा वही सिद्ध होगा मंत्र तो सब ही सिद्ध हैं संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१६१।। हुक्मी शकल ⁝ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल सन्तानका है सो तेरे उज्वल संतानका सुख नहीं है तू यह पूछता है कि मुझको सन्तानका सुख होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले! तेरे पहले जन्मका अजाव है सो वह दूर हुए विना तुझको संतानका सुख नहीं होगा सो तू पहले जन्ममें नटजाति

था विशेष जंगलमें रहा करता था और मृगोंको मारके उनका मांस भक्षण किया करता था। एक समय हिरनीपै बाण चलाया वह बाण हिरनीके तो नहीं लगा और उसी हिरनीके बच्चेको लग गया तैने मांसके लोभ करके बाण मारा सो उसकी माता अपने बच्चेकी तकलीफ देखकर बहुत दिक हुई परंतु तू उस बच्चेको मारके ले चला अब उसकी माता यह कहने लगी कि हे दुष्ट ! जैसे मुझको अपुत्र करके चला है ऐसे तू भी जन्मजन्मोंमें पुत्रका सुखी न होगा और उस जन्ममें तेरे यही दो स्त्री थीं सो उस पापका फल हो रहा है। और उसी उजाड़में तैंने तेरी स्त्रीने अपने पीनेके वास्ते एक छोटी पलाबड़ी खोदी जिसमें वर्षातका जल टिक जाय उसमें और भी जीव बहुत पीया करते थे सो उस पुण्यसे यह द्विज जाति और यह लक्ष्मी पाई है सो तू औरस सन्तानका सुख चाहे तो तीर्थमें जाके २१ पल सुवर्णकी एक मृगी और एक मृगीका बच्चा ३ पलका बनवाकर नेक ब्राह्मणको दे और महागोपाल सन्तानका आराधन करवा रात्रिमें बलिदान दे और उसी नेक ब्राह्मणसे यह कह दे कि औरके आगे मत कर और तू भी मत कह क्योंकि कहनेसे जपदानका फल जाता है और धर्मकी नीयत रख ब्राह्मणभोजन करवा पहले किया अब पाता है और अबका किया आगे पावेगा यह धन संग नहीं चलेगा धर्मकी नीयत रख तेरे फरदंज बरजरूर होवेगा और जिंदा रहेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१६२।। हुक्मी शकल ⁖ कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स तेरा सवाल औलादका है सो तू यह पूछता है कि मेरी उज्वल औलाद हुई परंतु जीयी नहीं सो मेरी औलाद जीवेगी या नहीं और किस दोषसे नहीं जीती है।" सो तेरे संतान जीनी बहुत मुशकिल है क्योंकि तेरे पहले जन्मका अजाब है उसके दूर हुए विना न जीएगी तू पहले जन्ममें पूर्वदेशमें धीवर जाति था जंगलमें कूंवाके पास रहा करता था और लकड़ी बेचकर अपना उदर पूरण किया करता था। एक ब्राह्मणका लड़का जेवर पहिने हुए भूलके रातमें तेरे पास चला आया सो तेरी औरत तो सोती थी और तैने धनके लोभ करके वह मार दिया और फिर पीछे उसका पिता आया उसको वह मरा हुआ मिला और जेवर नहीं मिला सो उसको देख तुम्हारे पास बैठकर रुदन किया सो पीछे क्रोधमें आकर यह कहने लगा कि जिसने मेरा लड़का मारा है उसके जन्मजन्मान्तरमें संतान नहीं जीवेगी यह कहकर अपने लड़केकी और्द्धदैहिक क्रिया करता भया। तुम्हारे उस जन्ममें लड़के थे सो कुछ दिनमें मर गये तू बहुत पछताया और लड़केके मारनेका हाल औरतसे कहा सो सुनकर उसने बहुत रुदन किया और तुझसे यह कहा कि जो यह जेवर है इसको तो उस ब्राह्मणके घरमें छिपकर गेरआ और जो तेरे घरमें धन है उसका अन्न लेकर भूखे जनोंको दे कुछ तो पाप दूर होगा तू इस प्रकारसे करता भया सो उस अन्नदानके प्रभावसे तुझे लक्ष्मी तो बहुत मिली परंतु संततिका

दुःख ही रहा और तेरी औरतको स्वप्नमें अब भी बालक दिखाई देता है सो तू एक सुवर्णका ब्राह्मण ११ पलका और लड़का सुवर्णका ५ पलका और जेवर वस्त्र-समेत कि जिसे ब्राह्मण पहिन सके ऐसे दोनों सुवर्णकी मूर्तियोंका पूजन करवा दान दे रात्रिमें नेक ब्राह्मणसे संतान गोपालका ३१ दिन पाठ करवा और पीछे उसको दक्षिणा दे और उससे यह प्रार्थना कर कि हमारा पाप दूर हो और उस ब्राह्मणसे यह कह कि और किसीके आगे न कहना और औरतको भी कह दे कि किसीके आगे न कर क्योंकि कहनेसे जप दानका फल जाता रहता है सो मत कह यह कर तेरे फरजंद होगा और जिंदा रहेगा और तैंने पहले भी किया परंतु इस तजबीज बिगर पाप नहीं कटा सो तू यह कर २ वर्ष भीतर तेरे लड़का होगा और जिंदा रहेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। १६३।। हुक्मी शकल ⚍ कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औलादका है तू पूछता है कि मेरे लड़की होती है और लड़का नहीं होता सो मेरे लड़का होगा या नहीं और किस दोषसे नहीं होता" सो हे पूछनेवाले ! पूर्वजन्मके शापसे तेरा फरजंद नहीं होगा, क्योंकि तू पहले जन्ममें उत्तर दिशामें यमुनाजीके तीरपर क्षत्रियजाति था तू गौका पालक रहा करता था सो गर्भवती गऊके पेटमें तैंने क्रोधमें आकर लकड़ी मारी सो मारनेसे गर्भमें जो बछड़ा था सो निकल पड़ा और भूमिमें पड़ते ही मर गया और उस गायने निहायत तकलीफ पाई सो तैंने उसका कुछ भी प्रायश्चित्त नहीं किया तेरे पहले जन्मका अजाव है सो तू सुवर्णकी गऊ और चांदीके पात्र श्रद्धानुसार दे और भ्रूण दोषहा दुर्गाका सवालक्ष पाठ तद्दशांश हवन तद्दशांश तर्पण तद्दशांश मार्जन और ब्राह्मणभोजन करवा और एक सुवर्णकी भ्रुण दोषहा दुर्गाकी मूर्त करवा षोडशोपचार करवा पूजन कर सो ये दोनों मूर्ति नेक ब्राह्मणको दे और दक्षिणा दे और उससे यह प्रार्थना कर कि मेरा शाप दूर हो और मेरे सन्तान हो सो तू ऐसा कर तेरी सन्तान बरजरूर होवेगी फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१६४।। हुक्मी शकल ☰ जमात सावित बुध देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औलादका है सो तू यह पूछता है कि मेरे एकबार सन्तान हुई फिर नहीं हुई सो मेरे संतान और होगी या नहीं और किस दोषसे नहीं होती हैं" सो तेरे पहले जन्मकी स्त्रीका दोष है तेरे संतान नहीं होगी पहले जन्ममें तेरी औरत दक्षिण दिशामें क्षत्रिय जातिमें जन्मी थी सो तू भी क्षत्रिय था तेरे सकाशसे इसको ५ कन्या और एक फरजंद हुआ सो इसने फरजंद तो बहुत प्रीतिसे रक्खा कन्याको कभी आदर नहीं दिया उन कन्याओंने शाप दिया कि जन्मजन्मान्तरमें तेरा एकसे ज्यादा बालक न हो सो उनके शापसे संतान नहीं होती सो तू सुवर्णकी मूर्त २ पलकी करवाकर और

उनका पूजन अपनी औरतके हाथसे करवा और संतानेश्वरी दुर्गाका पाठ सवालक्ष करा और पांचो मूर्ति दक्षिणासमेत नेक ब्राह्मणको दे और एक वर्ष तक शुक्ल पक्षकी ८ को ब्राह्मणकी नव कन्या जिमा और उनको ओढनेको वस्त्र दे तेरा सब जन्मोंका अजाब दूर होगा, तेरे पास धन बहुत है पुण्य कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१६५।। हुक्मी शकल ⁝ फरहा मुनकलीव शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औलाद होनेका है तू पूछता है कि मेरे एक लड़का और लड़की हुई परंतु लड़का और लड़की नहीं जीये अब कोई बालक जीएगा या नहीं और क्या दोष है" सो हे पूछनेवाले ! तेरे कुटुंबमें पितरोंका शाप है कि औरस पुत्रका सुख न हो अव्वल तो सन्तान होती नहीं और होती है तो जीती नहीं और जो जीवे तो कन्या जीवे फरजंद न जीवे सो तेरे कुटुंबमें धन होता है तो संतानका सुख नहीं और जो संतानका सुख होवे तो धन नहीं होता सो तेरे पास धन बहुत है और पैदा बहुत है परंतु तू लोभी बहुत है धर्मके नाम तुझको संदेह होता है सो तुझसे बन आवे तो तू किसी कुटुंबी ब्राह्मणको बहुत अच्छी हवेलीमें बसवा दे और एक सुवर्णकी औरतकी मूर्ति २ पलकी बनवाकर पूजन कर उसीमें पितरोंका ध्यान कर उसी ब्राह्मणको मूर्तिदान दे और उस ब्राह्मणसे यह कह कि हे पितृरूप ! मेरा शाप दूरकर, संतान दे और उस ब्राह्मणसे यह कह दे कि और किसीसे मत कहो क्योंकि कहने से दान और जप का फल जाता रहता है ऐसा कर सन्तान फरजन्दकी होगी और जिंदी रहेगी और तू यह सन्देह न करना कि कौन पितृ है सो तुम्हारे कुलमें एक बेऔलादी स्त्रीने धन और घरमें सीर नहीं लिया सो उसके वास्ते मकान देनेसे संतानका सुख होवेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। १६६।। हुकमी शकल ⁝ उकला मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल औलादका है सो तू यह पूछता है कि औरतके गर्भ है फरजंद होगा या कन्या" तुझको फरजंदकी बहुत अभिलाषा है और दिनरात्रि यही फिकर है सो इस औरतके कलाममें ज्यादा कन्या हैं क्योंकि इसको पहले जन्मका शाप है यह पहले जन्ममें दक्षिण दिशामें तरला नदीके तीरपर वैश्यजाति थी और व्रतदानमें तत्पर थी परंतु इसकी हवेलीके समीप एक ब्राह्मण था उसके एक साथ ७ कन्या हुई सो उसकी औरतसे जब यह लड़ती थी तब कहती थी कि तू ऐसा है तभी तो कन्या होती है इस प्रकार सदा उसका अंतःकरण बहुत दुखाया करती थी सो एकदिन उसने यह कहा कि तू भी मेरी सरीखी हो यह शाप दिया सो व्रतदानसे तो यह धन पाया है और उस शापसे इसके कन्या होवेगी सो तू जिस ब्राह्मणका बड़ा कुटुंब हो और नेक हो उसको एक विष्णु और एक लक्ष्मी की ११ पल सुवर्ण की दो मूर्ति बनवाय और पूजन करवाय औरतके हाथसे शक्तयनुसार दक्षिणा दे और यह प्रार्थना करवा कि मेरा शाप दूर हो यह फरजंद होवगा जिन्दा

रहेगा फिकर मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१६७।। हुक्मी शकल ☰ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पत्रके आनेका है सो तू यह पूछता है कि पत्र आये बहुत दिन हुए कुशलपत्र कब आवेगा" सो तुझको बहुत अभिलाषा है तेरा कुशलपत्र आया ही चाहता है संदेह मत कर वे सब प्रसन्न हैं और तेरा मनोरथ पूर्ण हुआ चाहता है परंतु अब तेरे दिन कुछ नाकिश हैं तेरे दिलको बिगाड़ रखते हैं सो तू श्रीकालीके मंत्रका आराधन करवा और रात्रीमें बलिदान दे पत्र आवेगा और अब कार्य्य सिद्ध होगा फिकर मतकर इति प्रश्न ।।पिण्ड ।।१६८।।हुक्मी शकल ☰ हुमरा सावित मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पत्रके आनेका है सो तू पूछता है कि यह पत्र आवेगा या नहीं सो तेरे पत्रके आनेमें ढील है जैसी तेरे दिलपर ताकीद है वैसी भेजनेवालेके दिलपर नहीं है सो तू दिलमें धीरज रख पत्र तो तेरा आवेगा परंतु अभी देर है फिकर मत कर अभी तेरे दिन नाकिश हैं सो नाकिश दिनोंमें गुजरान कर और तेरा भाग्य बहुत अच्छा है परंतु छठा भवन जन्मपत्रमें बिगड़ रहा है सो उसकी शांति करवा ऐसा करनेसे तुझको लाभ अच्छा होगा और जो शत्रु उठेगा वही नाश होजावेगा और तेरा खत वरजरूर आवेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। १६९।। हुक्मी शकल ☰ बजाज सावित चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल फरजंद गोद लेनेका है सो तू यह पूछता है कि गोदके फरजंदसे मुझको लाभ है या नहीं" सो तुझको गोदके फरजंदसे लाभ है तेरे औरतसे पुत्र नहीं होगा और तेरी औरतका दल निहायत नाराज है यह विचारती है कि मैंने कौन ऐसा पाप किया कि मैं गोद लेती हूं यह बारंबार कहती है तू औरतको समझा दे कि संदेह न कर तेरे गोदके पुत्रका भी जीना मुशकिल है क्योंकि तेरी औरतके पहले जन्मका अजाब ज्यादा है यह पहले जन्ममें शूद्रजातिकी थी और अपने धर्ममें तत्पर थी क्रोध इसमें बहुत ज्यादा था इसके एक बालक लड़का था उसपर विना कसूर कोप कर कोठेमें रोक दिया और वह डरता हुआ बहुत ही पुकारा परंतु इसने कपाट न खोला सो वह लड़का दहशत पाकर मर गया सो उस पापसे गोद का भी रहना मुशकिल है और अपने धर्ममें सावधान थी इससे यह धन मिला है सो तू सुवर्णका ३ पलका बालक बनवाया, और औरतसे पूजन कराय दक्षिणा समेत नेक ब्राह्मणको दे और जितनी तेरी ताकत हो उतना संतान गोपालका पाठ करवा फिर गोद ले तुझको दीर्घायु और उत्तम ग्रहोंबाला पुत्र मिलेगा और तेरा पूर्वजन्मका अजाब दूर होगा यद्यपि तैंने पहले भी उपाय (पूजनादि) किया है परंतु संतान होनेके वास्ते किया गोदके वास्ते नहीं किया है सो कर फिकर मतकर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ।।१७०।। हुक्मी शकल ☷ नुस्रतुत्खारिज सूर्य्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने-

वाले शख्स ! तेरा सवाल गोद लेनेका है सो तू यह पूछता है कि जिस बालकको निगाहमें करते है उसीके ग्रह सामान्य पाते हैं सो तजबीज नहीं लगती अब कब लगेगी और कैसा आवेगा यह पूछता है" सो तू संदेह मतकर तेरी औरतने बालकके होनेमें बहुत बोल कबूल रख्खा है सो करवा और एक शत चण्डीपाठका संकल्प किसी नेक ब्राह्मणको दे तेरे बरजरूर जल्दी पुत्र आवैगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।।१७१।। हुक्मी शकल ⁚ नुस्रुत् दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी बड़े मनुष्यके पाससे दूतके आनेका है तू पूछता है कि मैंने दूत भेजा है सो कब आवेगा और जिस कामके वास्ते भेजा है वह काम करके आवेगा या नहीं" सो तेरा दूत बहुत होश्यार है दश मनुष्योंकी अक्लको अकेला बहा देता है सो दूत तेरा आनेवाला है कामकी भी सलाह मिलावेगा तू कुछ फिकर मत कर तेरा काम होनेवाला है ।। इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ।।१७२।। हुक्मी शकल ⁝ अतबे खारिज केतु ग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा यह सवाल है कि तैंने एक मनुष्यके पास दूत भेजा है पूछता है कि कब आवेगा" सो तेरा दूत आनेवाला है कुछ देर नहीं है परंतु तेरा काम तो फते नहीं हुआ और होना भी मुशकिल है क्योंकि तेरे दिन नाकिश हैं और तुझको अकल भी कम है तू काम करके पीछे पछताता है सो तू दुर्गाका आराधन कर तेरा काम फते होगा और दूत जलदी आवेगा फिकर मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१७३।। हुक्मी शकल ⁝ नकी मुनकलीव मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल दूत भेजनेका है तू पूछता है कि मैं दूतको भेजा चाहता हूं सो दूतको भेजूं या नहीं, मेरा काम बननेवाला है या नहीं" तुम दूतको बरजरूर भेजो तुम्हारा दूत बहुत होश्यार है क्योंकि जिसके पास भेजता है वह भी तुझको निहायत चाहता है सो तेरा कार्य्य फते होगा तुम दूतको भेजो परंतु श्रीभगवतीकी आराधना रखनेसे जल्दी होगा फिकर मतकर इति प्रश्न।।पिड।। ।।१७४।। हुक्मी शकल ⁝ अतबेदाखिल शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल दूत भेजनेका है तू यह पूछता है कि मैं दूत भेजूं तो मेरा काम बनेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब तेरे दिन नाकिश हैं तू दूतको मत भेज क्योंकि नाकिश दिनोंके कारण तेरा काम होना मुशकिल है और जो तू भेजो तो कामेश्वरी दुर्गाका आराधन करवा और बलिदान कर इससे तेरा कार्य्य होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। इति रमलगुलजारे पंचमस्थानफलं समाप्तम् ।। पिण्ड ।। १७५।। हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा बुधकी है हुक्म फरमाती है के "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शत्रुके शुभाशुभका है" सो तेरा शत्रु तुझसे निहायत जबर है और ज्यादं द्वेष अभी हुआ है परंतु तेरा ग्रह उससे जबर है उसके जन्मपत्रमें छठाभवन बिगड़ रहा है

और तेरे जन्मपत्रमें छठाभवन बलवान् है जो उसका कार्य्य दामोंसे होगा वह तेरा बातोंसे हो सकता है परंतु तू शत्रुनिवारण मंत्रका आराधना कर तेरा शत्रु दूर होगा सन्देह मत कर तू आनंदसे रहेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१७६।। हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीव चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शत्रुके शुभाशुभका है तू पूछता है कि यह शत्रु मुझको ले रहेगा या मैं उसको" हे पूछनेवाले ! तेरा शत्रु बहुत काफर है अच्छी बुरी करता परलोकको नहीं देखता है अब तेरे दिन नाकिश हैं सो अब नाकिश दिनोंमें तेरे पर ज्यादे हाथ पड़ेगा सो तू सावधान रह और तू होश्यार बहुत है परंतु नाकिश दिनोंमें होश्यारी नहीं चलेगी सो तू शत्रु निवारण मंत्रका संपुट दिवाकर श्रीदुर्गापाठ १०० करवा तेरा शत्रु तुमसे पराजय होगा और तेरी बात सही रहेगी ऐसा कर फिकर मत कर अल्लाताला अच्छा करेंगे इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। १७७।। हुक्मी शकल ⁝ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शत्रुसे जीतनेका है" सो तेरा और तेरे शत्रुका झगड़ा राज्यमें दाखिल है और जबर है उसकी भी राजमें पहुंच पूरी है परंतु अब मुकद्दमा तुल रहा है और तेरे शत्रुने दुर्गाका अनुष्ठान करवा रक्खा है सो अब तो तेरी ही जीत दिखाई पड़ती है परंतु तू अब नीचा देखेगा क्योंकि जिस दिनसे यह मुकद्दमा जारी हुआ है उस दिन से तेरा शत्रु निहायत पुण्य करता है और दुर्गाका अनुष्ठान गुप्त करवाता है सो तू जबर पुण्य और दुर्गाका अनुष्ठान बलिदान समेत करवा तब तेरा मुकाद्दमा बहाल होगा और तू जीत जावेगा फिकर मत कर धन लगे धन आता है इति प्रश्न ।।पिण्ड ।।१७८।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुलदाखिल सूर्य्य देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शत्रुसे जीतनेका है" तेरा झगडा बहुत दिनोंका है कईदफे उलट पलट हो लिया और निहायत दिक हो रहा है और तेरा शत्रु निहायत जोर लगार हा है और इस झगड़ा पर बहुत ज्यादे कमर बांध रहा है और जिसको तू दिनमें अफसर अपना करता है उसीको वह रिश्वत देकर रातमें अपना कर लेता है सो झगाड़ा नहीं है यह गलेका झाड़ है सो तू शत्रुनिवारण मंत्रका सवालक्ष जप और तद्दशांश हवन तद्दशांश तर्पण तद्दशांश मार्जन तद्दशांश ब्राह्मण भोजन करवा फिर इसी झगड़ेको जीतेगा फिकर मत कर अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ।।१७९।। हुक्मी शकल . ⁝ कबजुलखारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संबंधके झगड़ेका है तू पूछता है कि इस संबंधके झगड़ेको मैं जीतूंगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! यह संबंध पहले तेरे लिये करा रक्खा था परंतु करनेवाले और उसके कुटुंबका दिल खुशी नहीं हुआ अब और जगह विवाही चाहते हैं सो तू यह पूछता है कि "यह संबंधका झगड़ा मैं जीतूंगा

या शत्रु" सो हे पूछनेवाले शख्स ! अब तेरे दिन नाकिश हैं तू जो तजबीज करता है उसमें नुकसान रहता है सो दिनोंकी गरदिशकरके इस मुकद्दमामें तू ही फेल होता दीखता है और जो तू यह कहै कि यह झगड़ा नहीं कि जानकी बाजी लगा रही है तो शंकरेश्वरी कालीके महामंत्रका आराधन करा और बलिदान दे संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१८०।। हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संबंधके झगड़ेका है सो यह पूछता है कि इस झगड़ेको मैं फते करूंगा या शत्रु करेगा" सो यह संबंध पहले औरके कर रखा है फिर तेरे कर दिया है कि जितने जिन्दगी रहेगी इस संबंधको न छोडूंगा सो बहुत जोर करता है उसके क्रोध ज्यादा आ रहा है सो तू बहुत होश्यार है और बहुत अकलदार है उससे दूर रहना और शत्रुनिवारणीका जप जितनी तेरी ताकत हो उतना कराना झगड़ेमें तू बरी होवेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१८१।। हुक्मी शकल ⁝ फरहा मुनकलीव शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल जमीनके झगड़ेका है सो तू यह पूछता है कि इस झगड़ेको फते मैं करूंगा या शत्रु" सो इस जमीनपर तैंने बहुत गला घाला परंतु अबतक सही नहीं हुई और शत्रु यह कहता है कि इसको मैं लेऊंगा और इस मुकदमामें बहुत दिन लगे हैं सो अब तेरे दिन नाकिश हैं और तेरा शत्रु जोर खा रहा है और इस मुकदमा में धन भी दोनोंका बहुत लगा है और अब इस मुकदमामें अफसर भी दिक्क हो रहा है सो तू मंगलदेवताका आराधन कर और धर्मको नीयत रख इस मुकदमामें तेरा शत्रु फेल होवेगा और तू फते करेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ।।१८२।। हुक्मी शकल उकला ⁝ मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सावल जमीनके झगड़ेका है तू यह पूछता है कि इस झगड़ेको मैं फते करूंगा या शत्रु फते करेगा" सो तेरा दिल साक्षी नहीं देता है और यह झगड़ा कुछ कम नहीं है इसमें दादा इलाही जाती आती है परंतु तेरे मालिकको आजकलमें जन्मपत्रसे दशा माफिक है परंतु तेरे दिन नाकिश हैं अभी ७ वर्ष ४ मास और २७ दिन तेरे नाकिश और रहे हैं और जो नाकिश दिनोंमें शत्रु तुझको दबावे ही तो तू जगदीश्वरी कालिकाकी ११ पल सुवर्ण की मूर्ति बनवाकर ८ अष्टमीके रोज पूजन कर और वह मूर्ति दक्षिणा समेत कुटुंबी विदेशी नेक ब्राह्मणको संकल्प करके दे और उसी ब्राह्मणसे जगदीश्वरीके महामंत्रका सवालक्ष जप तथा १०० दुर्गापाठ करवा और विपुल दक्षिणा दे तुझको जमीन बरजरूर मिलेगी शत्रु दफा होवेगा सन्देह मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१८३।। हुक्मी शकल ☰ अकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धनके झगड़ेका है वह धन दोनोंका है परंतु तू यह चाहता है कि मैं दबा लूं और वह चाहता है मैं दबा लूं" परंतु

सीरका धन है तुम बिरादर हो इस धनके सबब निहायत शत्रु हो गये सो तुम समझते नहीं तुम्हारा ही धन है वृथा झगड़ेमें बरबाद होता है सो समझना चाहिये और तुम्हारे झगड़ेको देखके जो तुम्हारे पहले निहायत शत्रु थे मुखसे भी नहीं बोलते थे वे अब बहुत खुशी होते हैं और तुम्हारे मकानमें आकर तुमको बहकाते हैं परंतु तुम नहीं समझते सो दोनोंहीको दिन निहायत नाकिश हैं तुम जन्मपत्र दिखाना नहीं तो तुम दोनों बरबाद हो जाओगे समझो और जितनी तुम्हारी ताकत हो उतना शांतिपाठ करा झगड़ा शांत होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। १८४।। हुक्मी शकल ☰ हुमरा सावित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राज्यमें धनके झगड़ेका है तू पूछता है कि राज्यकी दी हुईः इनामका झगड़ा है भाई ही शत्रु होगया है मुझको कुछ भी नहीं देता यही झगड़ा है सो मुझको मिलेगा या नहीं" सो हे प्रश्नकर्ता ! तू जगती भैरवके मंत्रका जप सवालक्ष करवाकर झगड़ा कर और भैरवको रात्रिमें बलिदान दे और हवनादिक करवा तू झगड़ा जीतेगा परंतु तेरे रुपये तो लगेंगे फिकर मत कर तुझको धन मिलेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ।।१८५।। हुक्मी शकल ☰ बयाज मुनकलीव चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल करजके झगड़ेका है सो तू पूछता है कि यह झगड़ा मैं जीतूंगा या नहीं" सो पहले तो तेरे पापसे इसने बहुत धन लिया और मनुष्योंका भी लिया और अब कुछ टोटा रहा सो दिलमें यह विचारी है कि टोटा देओगे तो भी इज्जत न रहेगी और न देओगे तब भी इससे सबको नट जाओ जर तो रहेगा यह बेईमानी मनमें छागई है जो मांगनेवाला आता है उससे यह कहता है कि मेरे पास नहीं सो तू यह पूछता है कि मुझको कुछ धन वह देवेगा या नहीं सो हे पूछनेवाले ! वह मनुष्य पहिलेसे ही बहुत सख्त है और जब तो वह यह कह चुका है कि मेरे पास नहीं है सो बहुत मुशकिलसे देगा और अब तेरे दिन नाकिश हैं सो तू शक्तिके अनुसार किसी नेक ब्राह्मणको शिवार्चनका दक्षिणा समेत संकल्प दे कुछेक कम तेरा धन आवेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। १८६ ।। हुक्मी शकल ☱ नुस्रुत्खारिज सूर्य्य देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल करजके झगड़ेका है तू पूछता है कि मुझसे एक मनुष्य करजा मांगता था उसका करजा मेरे मांथे ज्यादा ही था सो मुझसे नहीं दिया गया बहुत ही उद्योग किया परंतु तकदीरके आगे तदबीर नहीं चली सो अब उसने निहायत तकलीफ दे रक्खी है और यह कहता है कि सब धन अब लेऊंगा और इज्जतको बिगाड़ा चाहता है" सो हे पूछनेवाले ! तू गणेशचतुर्थीका व्रतकर और इतवार को छोड़कर सब दिन पीपलके दरख्तमें पानी डाल तेरे दिन बाहड़ेंगे फिकर मतकर तेरा करजा ३ वर्ष भीतर सब दिया जायगा और तीन वर्षबाद तेरे पास धन हो जावेगा

इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१ ८७ ।। हुक्मी शकल ⁚⁚ नुस्रुत् दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी स्त्रीके झगड़े का है वह स्त्री पहले तुम्हारे यहां रहती थी अब और ने रखली पहले दिनसे तूने बहुत कहा कि तू इस औरतको मत रख सो उसने कहना न माना और तुझको यह जवाब दिया कि तेरा कुछ जोरलगे तो ले ले सो तैंने क्रोधमें आकर विना समझे यह झगड़ा कर दिया और अब फेल होता दीखता है अब तू पछताता हैं सो तेरी दशा इन दिनोंमें नाकिश है और जबतक वह औरत अपने मुखसे न कहेगी तबतक तु मुकदमें में बरी न होगा सो तूनेक ब्राह्मणसे मनोहारणी भवगती का आराधन करा वह स्त्री अपने मुखसे तेरा अच्छा कह देगी तू झगडा जीत जायगा संदेह मत कर इति प्रश्न।। पिण्ड ।। १८८ ।। हुक्मी शकल ⁝ अतवखारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल स्त्रीके झगड़े का है तू पूछता है कि इस स्त्रीके झगड़ेको मैं जीतूंगा या शत्रु जीतेगा" सो यह स्त्री पहले उसके थी सो उसके दिलकी असन्तुष्टि होनेसे और तेरे ऊपर दिलकी तुष्टि होनेसे यह तेरे यहां चली आई सो उसने एक या दो दफे तुझको कहा कि यह बात तेरे लायक नहीं है तू इस औरत को अपने मकानमें मत रहने दे सो तैंने न माना तब इसको क्रोध आया यह झगड़ा उठा दिया अब तू निहायत दिक होता है परंतु पकड़ी पंज नहीं छुटती सो तेरे दिन अब निहायत नाकिश हैं सो तेरे दिलमें कोई न कोई फिकर बना रहता है इससे तू विश्वेश्वरीका आराधन करवा तेरे दिलका संदेह मिटेगा और यह झगड़ा तू जीतेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। १८९ ।। हुक्मी शकल ⁚ नकी मुनकलीव मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मकानके झगड़ेका हैं तू पूछता है कि हमारे सीरके मकान है सो एक मकान ज्यादे मौकेपर है सो उसके वास्ते उसका और हमारा भी दिल बहुत चलता है सो वह मकान मुझको मिलेगा या उसको" सो वह मकान उसको मिला चाहता है क्योंकि तेरे दिन नाकिश है और उसके दिन अब अच्छे हैं और जो तेरे दिलमें यही जचती है कि मैं ही लूं तो तू वास्तु देवताकी ७ पल सुवर्णकी मूर्ति बनवाकर उसका किसी नेक ब्राह्मणसे २१ दिन पूजन करवा और वह मूर्ति दक्षिणा समेत २२ वें दिन उस ब्राह्मणको दे तुझको यही मकान मिलेगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१९०।। हुक्मी शकल ⁝ अंतवदाखिल शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मकानके झगड़ेका है तू पूछता है कि इस मकानके झगड़ेका मै जीतूंगा या दूसरा जीतेगा" इससे तेरा दिल बहुत कांपता है सो अब तेरे दिन नाकिश- हैं इन नाकिश दिनोंमें गुजरान कर तेरा मकानका झगड़ा फेल होवेगा और जो

तेरे दिलमें यही कि मैं फेल न होऊं सो तू सूर्य्य देवताकी ५ तोलाकी चांदीकी मूर्ति बनवाकर नेक ब्राह्मणसे पूजन और सूर्य्यकी गायत्रीका जप ताकतभर करवा और सूर्य्यदेवाकी विनती कर हाथ जोड़ तुझको मकान मिलेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। १९१ ।। हुक्मी शकल इज्जतमा साबित: बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राज्यका है तू पूछता है कि मेरे दादा इलाहीका राज्य शत्रुओंने दबा लिया सो कई दफे आनेकी भी तजबीज हुई परंतु मिला नहीं और जितने जागीरदार हैं वे भी भीतरसे मुझको चाहते हैं परंतु अब मुझको भी आशा नहीं रही सो यह पूछता कि मुझको यह राज्य मिलेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले शख्स ! तुम्हारा पहले जन्मका तप इतना ही थोड़ा था कि राजकुलमें जन्म हो और अब दिन भी तेरे नाकिश हैं जिस दिनसे राज्यसे निकले थे उसी दिनसे तुम्हारे ९ वर्ष नाकिश थे और अबतक उससे भी ज्यादे चले जाते हैं सो तू भाग्येश्वरी कालिकाका आराधन करवा और बलिदान दे १ वर्ष ११ मास और १३ दिन पश्चात् तुझको अच्छे दिन आवेंगे सो यह आराधना अपनी ताकत माफिक करेगा तो अच्छे दिनोंमें राज्य मिलेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१९२।। हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीव चंद्रमाकी है हुक्म फरमाती है "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राज्यके मिलनेका है" सो तू यह पूछता है कि मेरा राज्य जबर शत्रुने दबाया मेरे ही मनुष्योंको बिगाड़ा तब शत्रुका हाथ पड़ा और बड़ी इज्जत हतक की मेरा शत्रु बहुत जोरावर है और दूसरेके राज्य लेनेमें बहुत होश्यार है और उसने अबतक कोई युद्धकरके राज्य नहीं लिया है अव्वल तो जिसका राज्य लिया चाहते हैं उसके घरमें तोड़ फोड़ करते हैं पीछे छलकरके अपनी हद्द बढ़ाते हैं और पीछे कुछेक ज्यादा ऐसे करके राज्यको लेते हैं इनके धर्म और नीति एक ही है कि जैसे तैसे पैसा इकट्ठा करना सो अबतक तेरे दिन नाकिश थे अब एक वर्ष ३ मास ११ दिन बाद अच्छे आवेंगे सो तू जगदीश्वरीकालीकी सुवर्णकी मूर्ति २५ पलकी बनवा रत्नों के नेत्र और नख बनवाके ब्राह्मणसे पूजन करवा उसी ब्राह्मणको मूर्ति दक्षिणा समेत दे तुझको बरजरूर राज्य मिलेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड ।। १९३।। हुक्मी शकल ☰ लह्यान खारिज बृहस्पति है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राज्यके झगड़ेका है" सो भाई ही शत्रु हो रहा है सो तेरा झगड़ा बहुत जबर है और तेरा शत्रु यह चाहता है कि मैं राज्यको दबा लूं और उस मनुष्यमें अकल तो नहीं है और उसके कोई सलाही भी ऐसा नहीं है कि किसी बातकी छान बीन करे परंतु धनका खर्च बहुत करता है और यह कहता है कि इस मुकद्दमेको मैं फते करूं सो तू फिकर मत कर तेरे दिन नाकिश हैं सो नाकिश दिनोंमें यह जोर पकड़ रहा है अब २ मास १७ दिन और नाकिश हैं सो तू जीतेगा परंतु सुवर्णके कलशमें

सप्तरत्न गेरके और रेशमी या पसमीनेके वस्त्रमें लपेटके नेक ब्राह्मणको दे और सहस्र चण्डीपाठ करवा तू जल्दी फते करेगा इति प्रश्न ।। पिण्डा ।। १९४।। हुक्मी शकल ⠿ कबजुलदाखिल सूर्य्य देवताकी है हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राज्यके झगड़ेका है तू पूछता है "कि मेरे राज्यमें पहले दिनसे हमारे बडोंहीका हुक्म चला आता था परंतु अब हमपर बादशाह बारंबार जोर देता है कभी तो अपना हुक्म करता है और कभी यह कहता है कि तुम्हारे ऊपर अफसर एक मेरा मनुष्य रहेगा सो जो हुक्म करो वह उससे पूछकर करो सो मैं नटता हूं यह कैसा होगा" सो हे पूछनेवाले शख्स ! तू फिकर मत कर तुम्हारे बड़ोंने तो पूरा तप किया था और इस जन्ममें भी उन्होंने तप किया सो तपके तेजसे उनके ऊपर कोई भी अफसर नहीं हुआ सो तुम्हारा एक तो विशेष पहले जन्मका तप नहीं और अब भी तुम्हारे धन और स्त्री व्यसनके सिवाय और पुण्य जप नहीं है सो तू शास्त्रकी पाठशाला करा विद्या का दान दिवा और कुछ पुण्य भजन कर तेरे ऊपर अफसर नहीं होगा तेरा तेज बढ़ेगा इति प्रश्न ।।पिंड।।१९५।। हुक्मी शकल ⠿ कबजुलखारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल लड़के के झगड़ेका है तू पूछता है कि मेरा लड़का इसने बुलाके देखा उसका जन्मपत्र भी दिखाया और निश्चय भी किया परंतु अब नटता है सो यह मेरे लड़केको गोद लेगा या नहीं यह पूछता है" सो हे पूछनेवाले ! उसके पास धन बहुत है और तेरे लड़केके जन्मपत्र में धन भवन-बिगड रहा है सो उस जगह जानेकी इसकी तकदीर नहीं और जो तू यही चाहै कि मैं उस जगह दिया ही चाहता हूं तो जितनी तेरी ताकत हो उतना इस लडकेके हाथसे धनेश्वरी दुर्गाके मंत्रका जप करवा इसको बरजरूर ले लेगा फिकर मत कर अल्ला-ताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। १९६।। हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल फरजंदके झगड़ेका है' तू यह पूछता है कि हमने एक लड़का गोद लेनेके वास्ते देखनेको मंगवाया था सो घरमें और जन्मपत्रदेखने पंडितोंकी पसंद नहीं आया सो अब हमने वह उसके घर भेज दिया हे पूछनेवाले ! इसका नतीजा क्या होगा उसके घरके तुमसे झगड़ा किया चाहते हैं कि कुछ तैंने देखनेके वास्ते नहीं बुलाया था किन्तु गोदके वास्ते पक्का करके बुलाया था सो तेरे घरमें पसंद नहीं हुआ अब तू ईमान बदलता है सो इसके माता पिताको कुछ धन दे दफे होवेगा और अब तेरे दिन नाकिश आये हैं सो तू सहस्र चण्डीका संकल्प नेक ब्राह्मणको दे तेरा दिल खुश रहेगा इति प्रश्न ।।पिण्ड ।।१९७।। हुक्मी शकल ⠿ फरहा मुनकलीव शुक्रदेवता की है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वृथा झगड़ेका है तू पूछता है कि बातोंमें ही झगड़ा हो गया पहले तो कुछ बात नहीं थी और अब बढ़गई सो इस झगड़ेमें मेरी फतेहोगी

या शत्रुकी" सो अब तेरे दिन नाकिश है इससे तूही हारता दीखता है परंतु तू अब शिवार्चन किसी नेक ब्राह्मणसे करवा और सूर्य्यदेवताका आराधन रख फिकर मतकर तेरा शत्रु दफे होवेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१९८।। हुक्मी शकल ⚍ उकला मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वृथा झगड़ेका है पूछता है कि एक वृथा झगड़ा हो गया था सो कुछ भी नहीं था और अब उसका विस्तार फैल गया सो कब दफे होवेगा और उस मुकदमाको मैं जीतूंगा या शत्रु" सो तेरे दिन दुरुस्त हैं जो कंकरमें हाथ डालता है तो पैसा हाथ लगता है सो इस मुकदमाको तो तू ही जीतेगा परंतु अब ३ मास और २१दिन पीछे तेरे नाकिश दिन आवेंगे सो विजयेश्वरी कालिकाका आराधन करवा दिन अच्छे रहेंगे और जो तू न करवावेगा तो तुझको बड़ी तकलीफ होगी और तेरे दिलका फिकर कभी न मिटेगा सो अवश्य उक्त आराधना कर फिकर मतकरइति प्रश्न ।।पिण्ड।। ।।१९९।। हुक्मी शकल ⚍ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजाओंके व्यापारकी वस्तु विशेषके झगड़ेका है सो इस कामको तू लिया चाहता है सो यह काम बहुत अच्छा है एक दफे तो दामखरच पड़ते हैं परंतु फिर पैदा पूरी हो जाती है और जिसने यह काम किया है वह पूरा भाग्यवान् हो गया सो यह काम पहले तो औरके पास था अब तू लिया चाहता है सो तुझको मिलना मुश्किल है जो दूसरा इसको लेनेको कहता है उसका तो दिलखुल रहा है और तेरी अबतक पैसा लगाकर पैसा कमानेकी हिम्मत पड़ती नहीं सो तू ५ तोलाकी शाकंभरी दुर्गाकी सुवर्णकी मूर्ति बनवाकर किसी नेक ब्राह्मणद्वारा एकादशाक्षर मंत्रसे ११ दिन पूजन करवा और बलिदान करवा और वह मूर्ति उसी ब्राह्मणको दे यह काम बरजरूर तेरे हाथ आवेगा फिकर मतकर इति प्रश्न।।पिण्ड।। ।।२००।। हुक्म शकल ⚍ हुमरा सावित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने-वाले शख्स ! तेरा सवाल कोई राज्यका किया ऐसा काम है कि जिसमें एक दफे तो रुपये लग जाते हैं और पीछे बहुत पैदा होती है सो यह काम पहले तेरे ही पास था परंतु तेरा रोजगार व्यापार देखके और मनुष्य निहायत दिल चलाता है उसने दिलमें यह करली है कि रुपये चाहै इससे ज्यादे लग जावें परंतु यह कार छोड़ना नहीं सो तू शत दुर्गाका अनुष्ठान करा तेरा शत्रु दफे होगा और यह काम तेरे हाथ आवेगा,रुपैया भी ज्यादे न लगेगा सन्देह मतकर अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। २०१।। हुक्मी शकल ⚍ बयाज सावित चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल मालके बदलेका है तू पूछता है कि तेरा माल मूलमें बदला गया सो तेरा माल तो खरा था और उसका माल नाकिश था सो उसका माल तेरे पास आ गया और तेरा माल उसके पास चला गया सो तेरे पास

नाकिश आया और उसके पास अच्छा आया अब तेने राज्यमें अर्ज किया है कि मेरा अच्छा माल तो औरके पास चला गया और मेरे पास किसीका नाकिश हाथ लगा है सो तू पूछता है कि अच्छा माल मेरे हाथ आवेगा या नहीं' सो तू सन्देह मत कर श्रीदुर्गाका आराधन करवा तेरे मालकी रक्म आजायगी और उसके मालकी उसके तेरे पाससे दिलाई जायगी सन्देह मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।२०२।। हुक्मी शकल ⠿ नुस्रुत् खारिज सूर्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल माल बदले जानेके झगड़ेका है तू पूछता है कि मेरा माल तो नाकिश था और अब मेरे पास किसीका अच्छा माल आया है सो यह माल मुझे पचेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! इस मालकी टोह निहायत हो रही है और तू इसको छिपा मत छिपानेसे तू अब चोर हो जावेगा सो तू इसको जाहिर कर जाहिर करनेमें तेरी इज्जत बढ़ेगी और राज्यमें मुरातवा बढ़ेगा और जो तेरा दिल डूब ही चुका तो गुप्तेश्वरी दुर्गाकी सुवर्णकी मूर्ति जितना फायदा इसमें हुआ है उसको १०वें हिस्सेकी बनवा और नेक ब्राह्मणको दे उससे कह दे कि ११ दिन इसका पूजनकर और उसको दक्षिणा भी दे सन्देह मतकर इसके करनेसे तू बरी हो जायगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।२०३।। हुक्मी शकल ।। ⠿ नुस्रुत् दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल जहाजके झगड़ेका है" तू कहता है कि जहाज मेरी है मेरा धन बहुत लगा है और वे नटते हैं सो विष्णु सहस्रनामके पाठोंका अनुष्ठान करवा इस झगड़ेको तू ही जीतेगा और तेरा कुछ रुपया तो लगेगा परंतु तेरा शत्रु दफे होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिंड ।।२०४।।हुक्मी शकल ⠿ अतवेखारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल जहाजके झगड़ेका है तू पूछता है कि पहले तो डूबते मालके दाम भरे फिर किसीके पुण्यसे न डूबा तो अब बेईमानगी करता है कि मैंने तो माल बेचा नहीं और राज्यमेंझगड़ा करता है" सो तू श्रीजलेश्वरीका अनुष्ठान नेक ब्राह्मणसे करवा और हाथ जोड़कर विनती कर इस प्रकारसे सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।।२०५।। हुक्मी शकल ⠿ नकी मुनकलीव मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल गोदके लड़केका है सो पूछता है कि पहले तो मेरे लड़के को हमारे कुलमें गोद लिया चाहते थे परंतु कुछ वर्गप्रीति नहीं मिली अब हमारे लड़केको गोद, रक्खेगा या नहीं सो अव्वल तो तेरा लड़का ही नालायक है और कुसंगी भी है और दूसरे जो गोद लेता है उसका स्वभाव जल्लाद है सो इसकी और तेरे लड़केकी नामराशी मिलती नहीं दीखती सो तू अपने लड़केके हाथसे सङ्गमेश्वर महादेवके मंत्रका जप करवा और तू नम्र होकर कह कि हे भाई ! यह लड़का तेरा ही है सो बरजरूर लड़केको रखलेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।२०६।। हुक्मी शकल ⠿

अतवे दाखिल शुक्की है हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सुवाल बीमारी का है कि एक मनुष्यको बीमारी है सो इसका क्या दोष है और कब अच्छा होगा" सो इसके बीमारी ज्यादा है कालके मुखमें आ रहा है इसको अव्वल तो क्षुधा हीनहीं लगती और कुछ दिल करै तो खाया नहीं जाता है और कुछ खाले तो हजम नहीं होता और अब कई दिनोंसे निहायत तकलीफ है सो अब बीत लिया है जब पूछता है सो तुम्हारे पितृकोप है सो तुम जानते हो सो तुम पितरोंका ध्यान करो और पितरों की देई गौ छोड़ो और पितृसंहिताका पाठ कराओ और पितरोंके वास्ते गायत्रीका जप कराओ और पितरोंके वास्ते विष्णुसहस्रनामका पाठ कराओ पितृदेवता प्रसन्न होयंगे, नहीं तो पुण्य तो परलोकमें भी सहायक है फिकर मत कर पितरोंकाआराधन रख इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।२०७।। हुक्मी शकल ⠿ इज्जतमा सावित चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तापकी बीमारीका है सो उस वक्त शख्सके ताप चढ़ता है उस वक्त सबको घबरा देता है शरीरमें फूटनी ज्यादा होती है और उसके शरीरमें इतना बोझा मालूम देता है कि कभी कपड़ा सुहाता है कभी नहीं सुहाता और भूख नहीं लगती और जो कुछ खाले तो उदरमें धरा रहै और छर्दि कभी २ कर देता है और निहायत तकलीफ रहती है सो यह पहले, जन्ममें हजाम जाति था और बालकोंको बहुत डराया करता था सो उस पापसे इसको यह तकलीफ है सो जितनी इसकी ताकत हो उतना नगदी रुपया नेकब्राह्मणों को दे और ब्राह्मणोंके लड़कोंको जिमाये इसने पहले जन्ममें ब्राह्मणोंकी टहल बहुत की थी उसके फलमें इसके पास धन है और द्विज जाति पाई है सो यह कर इसका बुखार दूर होवेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।२०८।। हुक्मी शकल ⠿ तरीख मुनकलीब चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल किसीके बीमारीका है सो तापकी बीमारी है इसको विषमज्वर आवते बहुत दिन हुए ताप इसके हाड़ोंमें फँस गया और मंद ज्वर रहता है और शरीरसे निहायत हार रहा है सो इसको कोई ग्रह माफिक है या कोई दोष है" सो हे पूछनेवाले शख्स ! उसके पहले जन्मका अजाब है यह पहले जन्ममें उत्तरदेशमें कायस्थ था क्रोधी ज्यादा था और राजाका अमात्य था सो इसने बे इन्साफ किया यवनोंकी कुसंगत करके ब्राह्मणोंपर बहुत जुल्म करता था और उनके दिलोंको बहुत दिक किया करता था सो उनके शापसे यह विषमज्वर आता है और इसने तीन गोदान किये थे उनके फलसे यह द्विज और धनवान् हुआ है सो ताप निवारणेश्वरीके मंत्रके जपका सवालक्षका संकल्प कर और नेकब्राह्मणोंको नगदी दे और उनके पग पकड़ तेरा विषमज्वर दूर होगा इति प्रश्न ।।पिण्ड।।२०९।। हुक्मी शकल ⠿ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है सो बीमारी वायुकी है सो शरीर जकड़ा रहता

है और किसी अङ्गमें पीड़ा ज्यादा होती है अन्न भावता नहीं रूह कम है सो तू यह पूछता है कि इसको ग्रह माफिक है या कोई दोष है" सो इसके पहले जन्मका अजाब है यह पहले जन्ममें ब्राह्मण था सो इसने वेदशास्त्र अच्छा पढ़ा परंतु यह लड़कोंको पढाया करता था जो लड़का इसके घरका कार्य नहीं करता था उसको बिना गुनाह किसी वक्त पीछेको हाथ बांधके गेर देता था सो उस पापसे उसको यह बीमारी है और वेदके पढनेसे इसने द्विज जाति और धन पाया है सो नगदी नेक ब्राह्मणोंको दे और ब्राह्मणोंके लड़कोंको भोजन करवा अच्छा होगा सन्देह मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।२१०।। हुक्मीशकल ⚍ कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है" सो तेरे वायुकी बीमारी है और तेरे शरीरमें आतश भी है तेरे शरमें दर्द होता है और पैरोंमें फूटनी रहती और कमरमें दर्द रहता है और सदैव तुझको कोई न कोई तकलीफ रहती है सो तेरे पहले जन्मका अजाव है पहले जन्ममें तैने बहुत पाप किये हैं एक तो कुत्तेका बच्चा मारा था जिससे तेरे शिरमें दर्द है और एक मच्छी मारी थी जिससे कटी दर्द है और तैने ब्राह्मणोंका मन दुखाया था इससे तेरा मन दुःखित होता है परंतु कुछ तैने तीर्थमें प्रायश्चित करवाया और पुण्य भी करता है जिससे तुझको फायदा रहता है कुत्ते और मच्छीकी सुवर्णकी मूर्ति १२ पलकी दोनों बनवा तीर्थमें दान विधान करके नेक ब्राह्मणको दे और गायत्रीके पुरश्चरण करवा और दक्षिणा उत्तम दे और तैने एक ब्राह्मणके वास्ते टट्टी बंधवाय दी थी उस पुण्यके फलसे यह धन मिला है यह तजवीज कर तुझको आराम होवेगा फिकर मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।२११।। हुक्मी शकल ⚌ कबजुल खारिज राहुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पित्तकी बीमारीका है तेरे शरीरकी तासीर पित्तकी है ग्रीष्म ऋतुमें क्षुधा नहीं लगती जलमें निहायत दिल रहता है। और किसी वक्त खून भी आता है और मुखमें छाले पड़ जाते हैं" सो तेरे पित्तका जोर ज्यादा है तू पूछता है कि मुझको किस दोषसे बीमारी है और कब अच्छी होगी सो तेरे पहले जन्मका अजाब है तू पहले जन्ममें पश्चिममें शूद्र था और तेरे गोधन बहुत था सो उसकी भूख या प्यासकी खबर न लेने पाया धूपमें तेरा गोधन बहुत तकलीफ पाया करता था सो उसके शापसे तेरे शरीरमें आतश ज्यादा है सो तू गौवाके वास्ते ग्रीष्मऋतुमें जहां जलका तोड़ा हो तहां जलकी प्रपा दे अच्छा होवेगा और उसी जन्ममें तैने अतिथियोंको टुकड़ा दिया था सो उसके फलसे तुझको यह धन मिला है सो तू उक्त प्रपा आदिका प्रबंध यह कर तेरी बीमारी दूर होगी इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। २१२।। हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुध देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरासवाल बीमारीका है" जलकी बीमारी है पहले तो इसको भूख मन्द हो गई फिर दस्त हो गये और जब

संग्रहणी हो गई तब शरीरमें निहायत नाताकत है सो तू इसके शरीरमें व्याधि दूर किया चाहता है तो एक तुलादान व्यतीपातके दिन करा और ब्राह्मणको सुवर्ण दिलवा और इसको मङ्गल नाकिश है सो मंगलका दान करवा और मंगल गायत्रीका सवालक्ष जप करवा फिर दवा दे आराम बरजरूर होगा इति प्रश्न ।।पिण्ड।।२१३।। हुक्मी शकल ⁞ फरहा हुनकलीव शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है" सो कफकी बीमारी है कफ बहुत आता है कुछ रक्त भी संग आता है और ताप है और पसलियोंमें दर्द है निहायत तकलीफ है सो यह पूछता है कि कई इलाज किये माफकत कोई भी न आया और भूख लगी नहीं इसको कब आराम होगा और किस दोषकी बीमारी है सो पूछनेवाले ! यह मनुष्य कालके मुखमें आ रहा है इस बीमारीमें कुछ चूक नहीं है परंतु पहले जन्ममें यह मनुष्य जातिका धीवर था सो इसने लोभ करके एक बनियेका लड़कामार दिया था आभूषण काढ़ लिये थे उस पापके फलसे इसको यह बीमारी हुई है और इसने भूखोंको टुकड़ा दिया था उस पुण्य फलसे इसके पास यह धन है सो इसके हाथसे एक सुवर्णकी मूर्ति ७ पलकी और पहरने माफिक कपड़े जेवर मूर्ति समेत नेक ब्राह्मणको दे ईश्वरने चाहा तो अच्छा हो जायगा पाप ज्यादे हैं और महामृत्युञ्जयका जप सवालक्ष करवा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।२१४।। हुक्मी शकल ⁞ उकला मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका तू पूछता है कि कफकी बीमारी है सो कफने निहायत दिक कर रखा है, रात्रिमें चारपाई पर पड़ने नहीं देता सो तू यह पूछता है कि इसको आराम कब होगा" हे पूछनेवाले इसको भूख भी नहीं लगती और यह घने दिनोंसे कालके मुखमें आ रहा है परंतु इसके हाथसे रोकड़ी धन और अच्छे कपड़े दान करा और महामृत्युञ्जयका का जप करवा इसको आराम बरजरूर होवेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड।। २१५।। हुक्मी शकल ⁞ अङ्कीश दाखिल शनिग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने वाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि श्वास बहुत दिनोंका है परंतु अब निहायत सता लिया दिन और रात किसी वक्त भी सुख नहीं होता सो हे पूछनेवाले ! यह बीमारी कुछ छोटी नहीं है यह इसके पहले जन्मका आजाब है पहले जन्ममें यह पश्चिमदेशमें क्षत्रिय था सो इसके हाथसे एक ब्राह्मण मर गया था सो उस पापसे इसको श्वासकी बीमारी है और यह बहुत ब्राह्मणोंकी आजीविका करवाता था उस पुण्यसे यह फिर द्विजन्मा हुआ है सो तू तदबीर करके किसी तीर्थमें जाकर एक पुरश्चरण गायत्रीका करवा और अब नेक ब्राह्मणोंको सुवर्ण दान दे अच्छा होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। २१६।। हुक्मी शकल ⁞ हुमरा सावित मंगल देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है" श्वासकी

बीमारी है सो इसके पूर्वजन्मका अजाब है यह पहले जन्ममें वैश्य था इसका लेना देना चांडालोंसे था सो एक चांडालसे करजा नहीं दिया गया तब वह कहने लगाकि मैं चोरी करके धन लाऊंगा जो मुझसे ले लेवे यह कह कर उसने एक डोकरीका धन चोरा लिया और वह धन लाकर इसको दे दिया फिर उस डोकरीने बहुत ऊंचे ऊंचे श्वास मारे सो वह चांडाल तो अब पूर्व देशमें कुष्टी है और इसको यह श्वास है और इसने कुसमयमें गौओंके वास्ते फूस बहुत गिरवाया उससे द्विजन्मा हुआ है और यह धन भी हुआ है सो तू अब किसी नेक ब्राह्मणको धन रोकड़ दे जिससे ब्राह्मणकी खूब तुष्टि हो जाय तब आराम होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।२१७।। हुक्मी शकल ⁝ बयाज साबित चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि पूछनेवारे ।शख्स तेरा सवाल सूखनेकी बीमारीका है दिनपर दिन सूखता जाता है सो तू यह पूछता है कि इसको क्या बीमारी है" इसके पितृदोष है सुपने बहुत माफिक आते हैं अग्नि लगी हुई दीखती है सो पितृपद्धतिसे शान्ति करावो और पितृश्राद्ध करो आराम बरजरूर होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। २१८।। हुक्मी शकल ⁝ नुस्रुत् खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "हे पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है सो सूखनेकी बीमारी है तू पूछता है कि इसको क्या बीमारी है और कितने दिन रहेगी सो इसके नाकिश दिन हैं नाकिश दिनोंमें आराम नहीं होगा और ईश्वरने तुझको धनबहुत दिया है सो गायत्रीका पुरश्चरण करवा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।।२१९।। हुक्मी शकल ⁝ नुस्रुत् दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल फोड़ेकी बीमारीका है सो फोड़े बहुत होते हैं सब देई देवताकी आराधना करी परंतु कुछ आराम नहीं होता इसके पहले जन्मका अजाब है यह पहले जन्ममें दक्षिणमें शूद्र था खेती किया करता था इसके बैल शीले थे यह उनके ओर लगाया करता था उस पापसे यह तकलीफ में है सो दोनों बैलोंकी सुवर्णकी मूर्ति बनवाकर और जितनी ताकत हो उतनी दक्षिणासमेत नेक ब्राह्मणको दे तुझको बरजरूरआराम होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।२२०।। हुक्मी शकल ⁝ अतबेखारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तेरे शरीरमें फोड़े होते हैं और शान्त हो जाते हैं फिर हो जाते हैं सो कब अच्छे होंगे और क्या दोष है यह पूछता है" और देई देवताकी आराधना सब करली परंतु आराम नहीं हुआ इसको दिन नाकिश है और पित्तका जोर है सो अब संदेह मतकर सूर्य्यका आराधन करवा सन्देह मत कर आराम बरजरूर होगा इति प्रश्न पिण्ड ।।२२१।। हुक्मीशकल ⁝ नकी मुनकलीव मंगल देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल आतिशकी बीमारीका है तू पूछता है कि आतिश अच्छी कब होगी और किस दोषसे है" तेरी इंद्रियपर दाग है सो बहुत तकलीफ देता है सो तेरे पहले जन्मका

अजाब है तू पहले जन्ममें पश्चिम दिशामें यवन था धर्ममें तेरी ज्यादे नियतथी परंतु एक समय तू कामदेवके वश हुआ कुंवारी वैश्यकन्यासे संग किया फिर उसने तुझको शाप दिया उसी शापका यह फल है। तू पुण्यके प्रभावसे द्विज हुआ है सो तू सुवर्णकी कन्या बनवाकर नेक ब्राह्मणसे २१ दिन उसका पूजन करवा और शाप विमोचनीके मंत्रका आराधन कराय पीछे इलाज कर आराम बरजरूर होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।२२२।। हुक्मी शकल ⁝ अतबे दाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल आतिशकी बीमारीका है" लिङ्ग इंद्रियपर दाग है और शरीरमें भी दिखलाई देती निहायत तकलीफ पा रहा है तैंने इलाज बहुत किया परंतु दिनोंकी गर्दिश करके आराम नहीं हुआ और ज्यादे हो जाती है तेरे पहले जन्मका अजाब है और इस जन्मका भी दोष है पहले जमन्में वैश्य था तैंने संतानके वास्ते दो औरत विवाही थीं एक रूपवती और एक कुरूपा थी जो कुरूपा थी वह बहुत नेक थी और जो रूपवती थी वह चालाक थी सो उस कुरूपासे संग कभी भी नहीं किया अन्य स्त्रीसे संग किया इस पापसे यह फल पाया है सो तू ५ पल सुवर्णकी औरतकी मूर्ति कपड़े पहिनने योग्य बनवा कर नेक ब्राह्मणको जेवर समेत दे और पश्चात् इलाज कर तेरी बीमारी दूर होगी फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।२२३।। हुक्मी शकल इज्जतमा ⁝ साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शिरदर्दकी बीमारीका है" सो दर्द जब कभी होता है तब शिरको उकसने भी नहीं देता और मनमें निहायत तकलीफ रहती है सो तेरे पहले जन्मका अजाब है तू पहले जन्ममें उत्तरके पहाड़में श्रीगंगाजीके तीरपर ब्राह्मण जाति था अपने धर्ममें सावधान था और तैंने एक सोए कुत्तेके शिरमें लकड़ी मारी वह कुत्ता बहुत चिल्लाया और मर गया तुझको यह पाप ७ जन्म तक सतावेगा सो तू ५ तोला सुवर्णका कुत्ता बनवाय श्रीगङ्गाजीके तीरके ब्राह्मणको दे और कुत्तियोंको चपातियां खिला तेरे पास धन बहुत है पहलेका किया अब पाया अबका किया आगे पावेगा शिरदर्द जायगा फिकर मतकर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ।।२२४।। हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीव चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है" तेरे शिरमें दर्द रहता है तू यह पूछता है कि "यह बीमारी कब जायगी और किस दोषसे है" सो तेरे माथेमें घुकवा चलता है जब घुकवा चलता है उस वक्त तू यह जानता है कि यह जिंदगी कुछ नहीं है इससे तो मरना ही भला है सो तेरे पितृपीड़ा है तुम्हारे कुलमें कोई बे औलाद मरा है उसका धन तैंने लिया है वह धन जहां जायगा वहां ही सुखी नहीं रहने देगा और पितरोंके वास्ते तुम्हारे कुलके जनने तीर्थश्राद्ध किया भी परंतु उसका श्राद्ध ठीक नहीं हुआ एक तो वह कृपण ज्यादे था और उसको कोई निंदित बीमारी थी सो अब धन लगाके

तीर्थ श्राद्ध कर बीमारी दूर होवेगी इति प्रश्न ।।२२५।। हुक्मी शकल ≡ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमरी-का है" तेरे पेटमें दर्दकी बीमारी है सो दर्द निहायत है किसी वक्त चैन नहीं होता दिन राति नींद नहीं आती और बीमारी निहायत है सो इसने गरिष्ठ और वादी भोजन किया है जो दवाई दी कोई भी काम नहीं आई सो इसके दिन निहायत नाकिश हैं जन्मपत्रकी प्रत्यन्तरदशासे और गोचरग्रह भी माफिक है सो ग्रहोंका दान और ग्रहोंका जप इसी वक्त ताकत माफिक करवा और सवालक्ष महामृत्युंजयका जपका संकल्प ले आराम बरजरूर होगा फिक्र मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।२२६।। हुक्मी शकल कबजुलदाखिल ⁝ सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पुछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है" पेटकी बीमारी है तुझको यह बीमारी ज्यादे दिनोंसे है कभी तो कम होजाती है और कभी ज्यादे ज्यादे और कुटुंबमें भी किसीके कुछ किसीके कुछ दुःख रहता ही है सुख नहीं रहता सो तुम्हारे कुलमें पितृदोष है सो एक तो कुलमें अब मेल नहीं दूसरे मनुष्योंके मन फटे रहते हैं और विना मतलब कलह हो जाता है सो तुम पित्रीश्वरकी आराधना रखो पितरोंकी गायत्रीका सवालक्ष जप कराओ और हाथ जोड़के विनती करो तुमको सुख बरजरूर होगा सन्देह मत करो इति प्रश्नः ।। पिण्ड ।।२२७।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुलखारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तेरे चोट लग गई है सो तू यह पूछता है कि यह चोट कब अच्छी होगी और किस दोषसे लगी है" सो तेरे जन्मपत्रमें ग्रह माफिक हैं ग्रहोंके दान करवा तेरे दिन नाकिश हैं और ग्रहोंका जप करवा यह चोट अच्छी होनेवाली है सन्देह मतकर इति प्रश्न ।।पिण्ड।।२२८।। हुक्मी शकल ≡ जमात सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चोटकी बीमारीका है तू पूछता है कि यह चोट बहुत दिनोंकी है कब अच्छी होगी और किस दोषसे लगी है" सो हे पूछनेवाले शख्स ! पहले जन्ममें तू शूद्र था पूर्व देशमें एक गऊ इसके घरमें भूखी आ पड़ी इसने क्रोधमें आकर उसको लकड़ी मारी और वह गऊ चक्कर खाकर गिर पड़ी फिर पीछे उठके चली गई सो उस पापसे इसके यह चोट लगी है इससे निहायत भूखी गायको अनारदाना खिला और टहल कर आराम होगी इति प्रश्न ।। पिण्ड।। २२९।। हुक्मी शकल ⁝ फरहा मुनकलीव शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा फूलेकी बीमारीका प्रश्न है तेरे नेत्र दूखने आये थे सो उनमें परछाई पड़े है तैंने बहुत इलाज किये परंतु यह फूला गया नहीं सो तेरे दिन नाकिश हैं तेरे जन्मपत्रमें सूर्य्यदेवता बिगड़ रहे हैं तू सूर्य्यका आराधन करा तेरे फूला अच्छा होगा फिकर मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ।।२३०।। हुक्मी शकल ⁝ उकला मुनकलीव शनिकी है, हुक्म फरमाती है कि

"पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है। तेरे नेत्रोंमें फूला पड़ रहा है सो बहुत तजबीज की परंतु यह फूला दूर न हुआ सो पूछता है कि यह कटेगा या नहीं और कटेगा सो किससे कटेगा और किसके दोषका है" सो हे पूछनेवाले शख्स ! तेरे पहले जन्मका अजाब है तू पहले जन्ममें पश्चिम देशमें क्षत्रिय था और बालकोंके नेत्रोंमें अंजन किया करता था और ईश्वरका भजन बहुत किया करता था सो एक ब्राह्मणके लड़केके नेत्रमें तेरे हाथसे नख लग गया था उससे उसको नाखूना हो गया उस पापसे तेरी आंखमें यह फूला है सो तू ३ पल सुवर्णका एक ब्राह्मणका लड़का बनवा कर उसके चांदीके नेत्र बनवा फिर किसी नेक ब्राह्मणसे मासभर पूजन करवाके फिर वह मूर्ति दक्षिणा और वस्त्र आभूषण समेत उसी ब्राह्मणको दे तुझको बरजरूर आराम होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।२३१।। हुक्मी शकल ☰ अंकीश दाखिल शनि देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स तेरा सवाल बीमारीका है सो उसको दस्तोंकी बीमारी है पेटमें गाढ़ है और आव भी आता है परंतु खुलके नहीं आता कई दवा की परंतु अबतक आराम नहीं हुआ सो कब होगा और क्या दोष है हे पूछनेवाले ! तुझको मंगल नाकिश है सो जन्मपत्र दिखा लेना यथाशक्ति मंगलका दान और जप करवा तुझको आराम बरजरूर लेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। २३२ ।। हुक्मी शकल ☰ हुमरा साबित मंगल देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स तेरा सवाल बीमारीका है दस्तोंकी बीमारी ज्यादा है कई इलाज किये परंतु आराम नहीं हुआ अब आराम कब होगा यह पूछता है" सो इनके दिन नाकिश हैं यह कालके मुखमें आरहा है इसके पहले जन्मका अजाब है यह पहले जन्ममें पापमोक्ष नदीके तीरमें शूद्र था नित्य नदीपर जाकर भजन किया करता था और अपने माता पिताकी टहल थोड़ी किया करता था सो इसके पिताको दस्तोंकी बीमारी हो गई शरीरमें ताकत नहीं रही तब भी भजनको मुख्य धर्म मान कर नित्य भजन करने चला जाता था वहांसे आकर पीछे अपने पिताको नहलाता धुलाता था फिर उसका शरीर पूरा हो गया वही पाप है उस पापसे इसके दस्त हुए हैं सो पितरोंके वास्ते एक गायत्री पुरश्चरणका संकल्प कर नेक ब्राह्मणोंसे करवा और नगदी दान दे आराम बरजरूर होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।२३३।। हुक्मी शकल बयाज साबित ☰ चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मूत्रकृच्छ्रकी बीमारीका है कि यह बीमारी कब अच्छी होगी और किस दोषसे है" सो इसको दिन नाकिश हैं ३ ग्रह माफिक हैं उन ग्रहोंका दान कर और ताकत भर जप पाठ करवा पीछे औषधि ले आराम बरजरूर होगा फिकर मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। २३४।। हुक्मी शकल ☰ नुसुतखारिज सूर्य्यदेवताकी हैं हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स तेरा सवाल बीमारीका है" तुझे मूत्रकृच्छ्र ज्यादा

दिनोंसे है उससे निहायत तकलीफ पा रहा है सो इसके पूर्वजन्मका अजाब है यह पूर्वजन्ममें पश्चिम दिशामें कोलजातिका था सो इसने बैल वधिया किये हैं परंतु अपने घर आये हुएको भूखा नहीं जाने देता था सो अन्नदानसे इसके यह धन है और गोवीर्य्य हननके पापसे यह बीमार है सो इसके हाथसे इसी वक्त बैलोंका संकल्प और गोवीर्य्यदा भगवतीके मंत्रके सवालक्ष जपका संकल्प दक्षिणा समेत नेक ब्राह्मणको दे तथा रात्रिमें बलिदान कर और चिकित्सा करवा इसको बरजरूर आराम होगा संदेह मत कर अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।२३५।। हुक्मी शकल ⁚ नुस्रुत् दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है मन्दाग्निकी बीमारी है किसी भोजनकी रुचि नहीं होती और कभी हुई भी तो कंठके नीचे नहीं उतरता और जो किसी तरह भोजन कर भी ले तो हजम नहीं होता और जो शरीरमें ताकत न हुई तो यह बीमारी कैसे जावेगी और क्या दोष है" सो हे पूछनेवाले ! इसके दिन नाकिश हैं और इसके ग्रह भी सामान्य हैं जल भी इसको तकलीफ देता है सो ग्रहोंका दान और सूर्य्य-गायत्रीका अनुष्ठान करवा पीछे औषधि ले आराम बरजरूर होगा फिकर मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।२३६।। हुक्मी शकल ⁝ अतबेखारिज केतुकी है हुक्म फर-माती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तुझको मंदाग्नि है भूख नहीं लगती और जो कुछ थोड़ा भी घना खाया तो हजम नहीं होता शरीरकी भी ताकत घटती जाती है" हे पूछनेवाले ! तुझको किसी वस्तुकी रुहत (रुचि) भी कम है सो तेरे पहले जन्मका अजाब है तू पहले जन्ममें गंगा यमुनाके बीचमें वैश्य जाति था ईश्वरका भजन खूब करता था परंतु तेरे माता पिता वृद्ध थे सो अच्छा भोजन तो तू आप करता और बिगड़ा रूखा सूखा माता पिताको देता था सो उस पापसे तुझको मंदाग्नि है भूख नहीं लगती और भजनके प्रतापसे यह धन तुझको मिला है सो तू ब्रह्मभोज यथेच्छ नित्य करवा और ब्राह्मणोंके पैर धोकर आचमन ले उनके जीमने पीछे जीम सो ब्राह्मण नित्य १०० या ५० या २५ जिमा और अग्नीश्वरीके मंत्र का एक पुरश्चरण करवा तुझको भूख बहुत लगेगी फिकर मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ।।२३७।। हुक्मी शकल ⁚ नकी मुनकलीब मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने वाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारी का है धातुक्षीण की बीमारी है तेरा वीर्य्य पतला पड़ रहा है जब तू पेशाब या पाखाने जाता है तब वीर्य्य स्खलित हो जाता है बहुत इलाज किये कुछ फायदा नहीं हुआ जब औषधि हो तब तो बंद हो जाय और फिर वैसा ही हो जाता है तू पूछता है कि मेरी बीमारी जायगी या नहीं" सो तेरे जन्मपत्रमें पराक्रम भवन बिगड़ रहा है उसका दान और जप ताकत भर करवाके औषधि ले आराम बरजरूर होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। २३८।। हुक्मी शकल

⁝ अतवे दाखिल शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि धातुक्षीणकी बीमारी ज्यादे दिनोंसे है बहुत इलाज किये परंतु एक बेर तो कुछ फायदा दीखा कि फिर वैसी ही हो जाती है धातु निहायत पतली हो गई" सो हे पूछनेवाले ! तेरे पहले जन्मका अजाब है तू पहले जन्ममें दक्षिण दिशामें रहने वाला क्षत्रिय था तेरी औरत पातिव्रत धर्ममें तत्पर थी किसी कालमें तेरी और तेरी औरतकी बिगड़ गई थी फिर उसने तेरी निहायत खातिर की परंतु तू फिर उससे नहीं बोला और तैंने इसके द्वेषसे वेश्या रख ली सो उस पापके फलसे तू निर्वीर्य्य है और तेरे यहां सदावर्त था उस पुण्यसे तेरे पास यह धन है सो तू ११ पल सुवर्णकी मूर्ति बनवा और उसको सब जेवर वस्त्र पहना कर उसका पूजन कर और पीछे अपने हृदयसे लगा कर नेक ब्राह्मणको दे और इलाज कर बरजरूर आराम होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।२३९।। हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा सावित शुक्र देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है कानकी बीमारी है निहायत तकलीफ देती है और सोजा भी नहीं है फकत सूखी चीस चलती है और कुछ औषधि डाली तब तो आराम हो जाता है कुछ देर पीछे फिर हो जाती है सो निहायत क्लेश हो रहा है यह कब आराम होगा और किस दोषसे है" सो हे पूछनेवाले ! तेरे जन्मपत्रमें दशा नाकिश है सो अपनी शक्तिके अनुसार तू गरीब भूखे ब्राह्मणसे शिवार्चन करा तुझको बरजरूर आराम होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।२४०।। हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीब चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है सो बीमारी कानके दर्दकी है तू पूछता है कि आराम कब होगा" सो इसके कानमें सोजा भी है और पीड़ा निहायत है और दिन राति चैन नहीं होता सो तेरे पहले जन्मका अजाब है तू पहले जन्ममें चाण्डाल था तैंने एक गौके बछड़ेके कानमें बबूलका कांटा चुभा दिया फिर निकाला नहीं इससे उस बछड़े को बहुत तकलीफ हुई उसी पापसे तेरे कानमें यह दर्द है सो तू ११ पल चांदीका गौका बच्छा बनवा कर उसका षोडशोपचार पूजन करके नेक ब्राह्मणको दे तुझको आराम होगा तैंने पहले जन्ममें माता पिताकी टहल बहुत की थी उससे यह धन मिला है फिकर मत कर अल्लाताला अच्छा करेंगे इति प्रश्न ।।पिण्ड ।।२४१।। हुक्मी शकल लहियान ☰ खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स तेरा सवाल बीमारीका है तुझको सुजाककी बीमारी है सो पेशाब करते समय दर्द होता है और कुछ राधि भी आती है सो तेरे दिन नाकिश हैं अनेक इलाज किये परंतु आराम नहीं हुआ अब पूछता है कि आराम होगा या नहीं सो तू ४१ दिन नेक ब्राह्मणसे शिवलिङ्गका पूजन करा और शिवाभिषेक करवा पीछे दवा ले आराम बरजरूर हो जावेगा फिकर मत कर इति

प्रश्न ।। पिण्ड ।।२४२।। हुक्मी शकल —·— कबजुल दाखल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है" सुजाककी बीमारी है पेशाब करनेमें निहायत तकलीफ पाता है और राधि (पीब) भी बहुत पड़ती है सो तेरे पहले जन्मका अजाब है तू पहले जन्ममें पश्चिम दिशामें ब्राह्मण था जप दानादि बहुत करता था परंतु तुझको एक कामका बहुत व्यसन था किसी जाति की स्त्री मिले तू उसीसे संग करता था उसी पापसे तुझको यह सुजाककी बीमारी हुई है और जप दानके फलसे तुझको यह धन (जायदात) मिली है सो तू प्रायश्चित्त कर नहीं तो जन्म जन्मान्तरतक यह बीमारी होगी सो तू ब्राह्मणकी १०० कन्याओंका विवाह करा और ५ कन्या सुवर्णकी २ पलकी बनवाकर वस्त्र जेवर समेत षोडशोपचार पूजन करके नेक ब्राह्मणोंको दे सब तकलीफ दूर होगी अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। २४३।। हुक्मी शकल ··= कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है" सो उसके भगंदरकी बीमारी है सो इसको निहायत तकलीफ देती है इसके गुदाके समीप छिद्र है उसमें मल मूत्र भी आता है इससे बहुत ज्यादे तकलीफ है इसके पहले जन्मका अजाब है सो यह उत्तरदेशमें शूद्र था इसने अन्नका दान और द्विजपूजन बहुत किया था परंतु इसको एक व्यसन था कि लड़कोंसे संग (मैथुन) किया करता था उस पापके फलसे यह बीमारी है सो ब्राह्मणोंके लड़कोंका पूजन कर और एक वर्ष तक ११ लड़के जिमाय और २ पल सुवर्णके ५ लडके बनवा कर और पूजन करके नेक ब्राह्मणोंको दे और एक गायत्रीका पुरश्चरण करवा बीमारी दूर होगी फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।२४४।। हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुध देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है सो बवासीरकी बीमारी है जिससे तुझको निहायत तकलीफ है तुझे इस बवासीरने निहायत थका दिया है और भूख भी तुझको नहीं लगती है सो तेरे पहले जन्मका अजाब है तू पहले जन्ममें ईश्वरका भक्त था परंतु एक व्यसन था कि लडकोंसे संग किया करता था सो ईश्वर भक्तिसे तेरे धन है और दुर्व्यसनसे तेरे यह बवासीरकी बीमारी है सो तू ५ लडके नित्य पूजन करके १ वर्ष तक जिमा और दक्षिणासमेत एक गायत्रीका पुरश्चरण नेक ब्राह्मणको संकल्प दे बरजरूर तुझको आराम होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।।२४५।। हुक्मी शकल ··—· फरहा मुनकलीब शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तुझको कुष्ठकी बीमारी है उससे इतनी तकलीफ नहीं कि जितनी तू मान रहा है और अपने को धिक्कारता है और इलाज भी बहुत किया परंतु माफिक कोई भी नहीं आया सो तेरे पहले जन्मका अजाब है तू पहले जन्ममें उत्तर दिशाके पहाड़में ब्राह्मण था तेरी दो औरत थीं सो

एक औरत विषे झूठा परसंग जान कर तैने उसको मार डाला वही पाप है अब २१ तोला सुवर्णकी मूर्ति बनवाके पूजन कर और ५१ ब्राह्मणोंको नित्य २५ दिन तक भोजन करवा और गायत्रीका एक पुरश्चरण तीर्थमें करवा तुझको आराम होगा सन्देह मत कर यह करे विना श्वित्रकुष्ठ न जायेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड।।२४६।। हुक्मी शकल ⚏ उकला मुनकलीव शनिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि बीमारी कुष्ठकी है निहायत तकलीफ है सूरत विगड़ गई है अनेक इलाज किये परंतु एक भी काम न आया सो यह बीमारी जावेगी या नहीं और कौन दोषसे है" सो हे पूछनेवाले ! इसके पहले जन्मका अजाब है यह पहले जन्ममें दक्षिणमें धनवान् वैश्य था और शुष्क वेदान्ती था। रंगे कपड़ेवालोंको खूब मानता था और ब्राह्मणोंका बहुत अनादर किया करता था उस पापसे यह बीमारी है जबतक इसका प्रायश्चित्त न किया जायगा तब तक (जन्म-जन्मान्तरतक) यही बीमारी होगी सो तू १०० ब्राह्मणोंको नित्य भोजन दे और उनके चरण धोकर पी तथा श्रेष्ठ ब्राह्मणोंको पुरश्चरणका संकल्प दक्षिणा समेत दे और नगदी दे आराम हो जायगा फिकर मत कर तैने पहले जन्ममें तीर्थमें एक ब्राह्मणको दान दिया था उसका फल यह धन है इति प्रश्न ।।पिण्ड ।।२४७।। हुक्मी शकल ⚏ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है कि उसको पहले बुखार रहा था अब हाथपैरोंमें शोजा है उसको आराम कब होगा" हे पूछने वाले ! यह मनुष्य कालके मुखमें आरहा है इसके दिन निहायत नाकिश हैं सो इसके हाथसे ११ मासे सुवर्ण छायापात्रमें रखनेके योग्य ब्राह्मणको दे और महामृत्युंजयका जप करवा आराम हो इति प्रश्न।।पिण्ड।।२४८।। हुक्मी शकल ⚏ हुमरा सावित मंगल की है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारी का है" सो दस्तोंमें शोफ आ रहा है यह कालके मुखमें आरहा है तू इसके हाथसे जितनी तेरी ताकत हो उतनी गौओंको दक्षिणा समेत ब्राह्मणको दे इसको आराम होगा इस लोकमें और परलोकमें पुण्य सहाय है इति प्रश्न ।। इति षष्ठस्थानं समाप्तम् ।। अथ पिण्ड।। ।।२४९।। हुक्मी शकल ⚏ बयाज सावित चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विवाहका है तू पूछता है कि इसके विवाहकी तजबीज नहीं लगी मनुष्य आता है और देख जाता है फिर नहीं आता इसकी सगाईमें क्या ढील है" पूछनेवाले ! इसके जन्मपत्रमें सप्तम भवनमें ग्रह अच्छे नहीं हैं उनकी शांति करवा इसकी सगाई बरजरूर होगी फिकर मत कर अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न पिण्ड ।।२५०।। हुक्मी शकल ⚏ नुस्रुत् खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संबंधका है तू पूछता है कि एक बड़ी जगह कोई मनुष्य इसकी

सगाईके वास्ते कह गया था सो आया नहीं तेरे दिलपर यह है कि इस जगह सगाई हो जावे तो बहुत अच्छी हो परंतु इसका सप्तम भवन जन्मपत्रमें बिगड़ रहा है उसकी शान्ति करवा धनवानसे इसका संबंध होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ।।२५१।। हुक्मी शकल :- नुस्रत् दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विवाहका है तेरी औरत मर गई है तू फिर विवाहकी बात पूछता है" सो तेरा फिर विवाह होगा तेरी औरत कबूल सूरत और बहुत होशियार अच्छे घरकी आवेगी कुछ तेरी दौलत भी न लगेगी परंतु तेरी औरत जीनी मुशकिल है क्यों कि तेरे पहले जन्मका अजाब है तू पहले जन्ममें क्षत्रिय था धर्म बहुत करता था परंतु तुझको विवेक नहीं था तेरी तीन औरत थी तैंने दोनों को वियोग दे रखा था सो उन्होंने बहुत विनती की परंतु तैंने वे ग्रहण न की सो उनका शाप है तू दो सुवर्णकी मूर्ति बनवा और उनका पूजन करवाकर नेक ब्राह्मणको दे और जन्म पत्रमें जो सप्तम भवन बिगड़ रहा है उसकी शान्ति करा स्त्रीका सुख होगा इति प्रश्न ।।पिण्ड ।। २५२।। हुक्मी शकल :- अतवेखारिज केतु की है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विवाहका है तू पूछता है कि औरत जिन्दी रहेगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरी कई औरत मर चुकीं तेरी औरत जीती ही नहीं तेरे पहले जन्मका अजाब है तू पहले जन्ममें उत्तर दिशामें ब्राह्मण था और तू ईश्वरके आराधनामें बहुत तत्पर रहता था सो तैंने विवाह तो करवा लिया पर औरत को ऋतुदान नहीं दिया तब उस औरतने तुझको शाप दे दिया इस औरत का सुख नहीं है ईश्वरके आराधनासे तुझको यह दौलत मिली है सो तू प्रायश्चित्त कर सुवर्णकी एक सावित्रीकी मूर्ति २१ पल की किसी नेक ब्राह्मणको दे और सावित्रीका एक पुरश्चरण कर संतानका भी सुख होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।२५३।। हुक्मी शकल :- नकी मुनकलीव मंगलदेवता की है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विवाहका है तेरी औरत मर गई है तू पूछता है कि कई जगहोंसे संबंध की बात है कौनसी जगह होगा" सो तू संदेह मत कर जिस जगहका संबंध चाहता है उसी जगहका संबंध होगा सो यहां से दक्षिण पूर्वके बीचमें दो योजनपर कन्या बड़ी कबूल सूरत और बहुत होश्यार है उससे तेरा संबंध होगा फिकर मत कर जन्मपत्रमें तेरा सप्तम भवन बिगड़ रहा है सो उसकी शांति करवा इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ।।२५४।। हुक्मी शकल :- अतवेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विवाह का है तू पूछता है कि मेरा विवाह होगा या नहीं" सो तेरा विवाह नहीं होगा क्योंकि कोई बातकी तकलीफ भी नहीं है और अवस्था अभी थोड़ी है और धन बहुत है परंतु तुझको पहले जन्मका अजाब है पहले जन्ममें तू दक्षिण में ब्राह्मण था और सुग्रीवका परम भक्त था पर निर्धन था सो

धनके वास्ते सुग्रीवकी बहुत भक्ति की परंतु अपनी औरत को तैंने ऋतुदान नहीं दिया उसने तुझको शाप दे दिया कि तू भक्तिहीमें रहेगा तुझको औरत का सुख नहीं हो सो अब तुझको स्वप्न अवस्थामें सुग्रीवके दर्शन होते हैं और जो तू औरत का सुख चाहता है तो ११ पल सोनेकी सावित्रीकी मूर्ति बनवाकर शुक्लाष्टमीके दिन पूजन करके नेक ब्राह्मणको दे और गायत्री का एक पुरश्चरण करवा तेरे शापकी विमुक्ति होगी फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। २५५।। हुक्मी शकल ⁚ इज्ज-तमा सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विवाहका है तू अपने चाचाका विवाह किया चाहता है और पूछता है कि इसका संबंध कब होगा" सो तू संदेह मत कर इसका संबंध होनेवाला है परंतु इसके जन्म पत्रमें सप्तम भवन बिगड़ रहा है सो तू सप्तम भवनके दुष्टग्रहोंकी शांति कर इसका विवाह बरजरूर होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।२५६।। हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीब चंद्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संबंधीके संबंधका है तू पूछता है कि संबंधीका विवाह कब होगा" सो तू फिकर मत कर उसका विवाह होनेवाला है अब उसके दिन बहुत दुरुस्त हैं विवाह अब होनेवाला है संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।२५७।। हुक्मी शकल ⁝ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल लड़केके विवाहका है सो तू पूछता है कि लड़केका विवाह कब होगा" सो इस लड़केके विवाहका उद्योग होते बहुत दिन हुए परंतु अबतक हुआ नहीं क्योंकि अबतक लड़केका ग्रह संबंध नहीं आया था सो अब अच्छे दिन हैं और ग्रह संबंध भी आया है सो अब इसका विवाह हुआ चाहता है कुछ संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।२५८।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुल दाखिल सूर्य्य देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल लड़काके विवाहका है तू पूछता है कि बहुत दिनोंमें संबंध हुआ था और अब विवाहमें बहुत दिन लग गये अब विवाह कब होगा" हे भाई पूछनेवाले ! अब तक इसका भार्य्याग्रह योग नहीं आया है अब २ मास और १२ दिन पश्चात् भार्य्याग्रह योग आवेगा और विवाह जल्दी ही होगा फिकर मत कर अल्लाताला जलदी ही करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।२५९।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बहनके विवाहका है तू पूछता है कि इसका संबंध कब होगा और कब विवाह होगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरी बहनके विकृत अंग हैं शरीरमें कुछ विकार है सो तू अच्छा घर और वर देखता है और अच्छा घर वर वाला ब्यंग वालीको नहीं विवाहैगा सो तू मंगलेश्वरीके मंत्रका आराधन करवा और अबतक इसके पतिग्रह योग नहीं था अब आ रहा है सो अब इसका संबंध भी होगा और विवाह भी होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड

।।२६०।। हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विवाहका है तू पूछता है कि मेरी बहनका विवाह कब होगा मुझको रात दिन नींद नहीं आती है बहुत फिकर रहता है कि हमारे पिता आदिकोंने तो अच्छे ही विवाह किये हैं सो यह विवाह कब होगा" सो तू संदेह मत कर तुझको निहायत नाकिश दिन हैं नाकिश दिनोंमें गुजरान कर अब ५ मास २१ दिन और नामाफिक रहे हैं इन दिनों बाद अच्छे दिन आवेंगे और अच्छे दिनोंमें तुझको लाभ होगा और जैसी तेरी मुराद है वैसा ही तेरी बहनका विवाह हो जावेगा फिकर मत कर अल्लाताला अच्छा करेंगे इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।२६१।। हुक्मी शकल ⁝ फरहा मुनकलीव शुक्र देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल लड़कीके विवाहका है सो तू पूछता है कि लड़कीका संबंध कब होगा और विवाह कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरी लड़कीके शरीरमें कोई विकार है सो तजवीज अब तक नहीं लगी तेरी लड़कीको अबतक पति ग्रह योग नहीं आया है अभी कुछ दिन और बाकी रहे हैं सो ७ मास ५ दिन बाद संबंध तथा विवाह जैसा घर और वह चाहता है वैसी ही जगह हो जायगा फिकर मत कर कन्या किसीके घर पर नहीं रहती ईश्वरका आराधन कर इति प्रश्न ।।२६२।। हुक्मी शकल उकला ⁝ मुनकलीव शनिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल लड़कीके विवाहका है तू पूछता है कि लड़की समर्थ हो गई है और बहुत ही तजबीज करता हूं किसी तजबीजसे विवाह हो हाथ निहायत सख्त है सो बड़ोंने तो विवाह बहुत अच्छे किये और अब मैं ऐसा मंद प्रारब्ध हुआ कि कुछ भी नहीं हो सकता" सो हे पूछनेवाले ! तू संदेह मत कर बहुत नाकिश दिन गये और अब तुझको ११ मास २ दिन और नाकिश रहे हैं और तेरी कन्याको भी पतिग्रह योग नहीं आया था सो योग अब आया है फिकर मत कर विवाह अब होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।२६३।। हुक्मी शकल ⁝ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भाईके विवाहका है तू पूछता है कि इसके संबंधके वास्ते मैंने बहुत तकलीफ उठाई परंतु मेरा पुरुषार्थ कुछ भी न चला सो इसका संबंध होगा या नहीं और इसकी तकदीरमें है या नहीं" हे पूछनेवाले ! इसकी तकदीरमें संबंध है परंतु अबतक भार्य्या ग्रह योग इसका आया नहीं अब ८ मास १६ दिन और बाकी हैं पीछे इसका संबंध जरूर हो जावेगा और इसके जन्मपत्रमें सप्तम भवन बिगड़ रहा है उसकी शांति करवा और दुर्गाका संपुट पाठ अपनी ताकत माफिक करवा फिर इसका संबंध और विवाह होनेमें देर नहीं है अल्लाताला जल्दी ही करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ।।२६४।। हुक्मी शकल ☰ हमरा साबित मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भाईके विवाहका है तू पूछता है कि

मेरे भाईका विवाह होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! इसका विवाह न होगा इसको औरतका सुख नहीं है इसी कारण इसकी बाल अवस्थामें औरत मरी है सो इसके पहिले जन्मका अजाब है यह पहले जन्ममें दक्षिणदिशामें किष्किंधा पुरीमें निर्धन ब्राह्मण था सो इसने धनके वास्ते सुग्रीवकी बहुत भक्ति की सो इसने भक्ति और धनके लोभ करिके अपनी औरतको ऋतुदान नहीं दिया था उसने शाप दे दिया कि तू भक्ति और धनसे ही बड़ा हो स्त्रीका सुख न होगा सो इसको उस भक्तिके प्रतापसे धन तो बहुत मिला परंतु औरतका सुख नहीं है और जो तू सुख किया चाहे तो २१ पलकी सावित्रीकी मूर्ति बनवाकर और अष्टमीके दिन षोडशोपचार पूजन करके नेक ब्राह्मणको दे सावित्रीके पुरश्चरण करवा यह अजाब दूर होकर स्त्री सुख होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।२६५।। हुक्मी शकल ⁝ बयाज साबित चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विवाहका है तू पूछता है कि पहले तो मेरा धन ले गया और अब नाटता है सो यह विवाह होगा या नाटेगा" यह मनुष्य तो साफ नट रहा है परंतु इसके घरमें एक शख्स है वह नटने नहीं देता है परंतु वह कबतक सहारा करेगा दो दिन पीछे नटैगाही बेईमानको सबर भी नहीं होता सो यह परले सिरेका बेईमान है इसको जो समझाता है उससे भी लड़नेको तैयार होता है और अब तेरे दिन नाकिश हैं सो तू नाकिश दिनोंमें गुजरान कर पीछे वह काम बनैगा अब ७ मास ११ दिन और नाकिश रहे हैं सो पीछे अच्छे दिन आवैंगे सो तू पीपलमें इतवारके विना काले तिलोंसे युक्त पानी नित्य डाल और कुत्तोंको शनिके रोज तेल चुपड़के चपातियां डाल तेरा काम बरजरूर होगा फिकर मत कर अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। २६६ ।। हुक्मी शकल ⁝ नुस्रुत् खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल विवाहका है तू पूछता है कि पहले तो उसने जेवर अपनी कन्याके चढवाया था कहकर अब नटता है अब विवाह होगा या नहीं" सो यह मनुष्य तुझसे दगा करता है क्योंकि एक मनुष्य तेरा है उसने तेरी शिकायत की है सो उसकी शिकायत सुननेसे दिल हट गया अब ठीक होना मुशकिल है सो तू शनिदेवताका आराधन कर और संगमेश्वरी कालीका मंत्र सवालक्ष जपवा और रात्रिमें बलिदान दे संबंध होगा संदेह मत कर अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड।।२६८।। हुक्मी शकल ⁝ नुस्रुत् दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल स्त्रीके सुखका है तू पूछता है कि मुझको स्त्रीका सुख होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तुझको स्त्रीका सुख कम है तेरे पहले जन्मका अजाब है तू पहले जन्ममें दक्षिणमें धनवान वैश्य था तुझको आमदनी बहुत थी और दान भी वित्तसमान करता था परंतु तेरी औरत पतिव्रता थी तू धनके लोभमें उसको ऋतुदान भी नहीं देता सो ऋतुसे पीछे वह जिस दिन वस्त्र

प्रक्षालन करके स्नानसे शुद्ध हो तेरी आशा करती थी तू लोभमें लगा रहता था ऋतुदान नहीं देता था सो वह उच्चश्वास मारके शय्यापर सो जाती थी सो कुछ दिन पीछे उसका शरीर वे औलाद पूरा हो गया जिस समयमें शरीर पूरा हुआ उस समयमें भी तू उसके समीप नहीं गया सो उसने मरती समय यह शाप दिया कि तुझको जन्म-जन्मान्तर तक औरतका सुख न होवे सो तुझको सुख होना मुशकिल है अब तू सुख चाहै तो इसका प्रायश्चित्त कर एक सुवर्णकी मूर्ति सावित्रीकी ५ पलकी बनवाके तांबेके कलशमें पंचरत्न और गंगाजल दूध सर्वौषधिसे पूर्ण कर रेशमी वस्त्रसे आसन बनवायके पूजन कर और ब्राह्मणोंसे करवा तथा अनुष्ठानकी रीतिसे गायत्रीका जप करवाकर उनको दक्षिणा दे तुझको सुख होगा फिकर मत कर अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। २६८।। हुक्मी शकल सावित ⁝– अतवेखारिज केतुका है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औरतके सुखका है तू पूछता है कि औरतका सुख है या नहीं मैं विवाह करवा चुका परंतु औरतजीती नहीं और यदि औरत जीवे तब मेरे शरीर में बीमारी बनी रहती है यह क्या कारण है और मुझको औरतका सुख होगा या नहीं" हे पूछनेवाले ! तेरा सप्तमेश अष्टमभवनमें पड़ा है इससे स्त्री मरती है तेरी पहली औरत जिन्द (भूत) हो रही है उसके पास धन जेवर और कपड़ा बहुत था परंतु उसने भोगा नहीं और तुमने उसका और्द्धदैहिक कर्मः बहुत किया परंतु उसका दिल अपनी चीज में रहा पीछे वस्त्र या जेवर जो उसको दिये वह भी उसको सुखदायक नहीं हुए क्योंकि जिस जिस ब्राह्मणको जो दिया उससे ब्राह्मण संतुष्ट नहीं हुआ इसीसे कुछ फल नहीं देता जैसा थोड़ा भी संतोषी ब्राह्मणको फल देता है इसीसे तुम्हारी स्त्रीके मनकी संतुष्टि नहीं हुई, सो तू किसी नेक ब्राह्मणके कि जिसको थोड़ेमें संतोष हो उसको अपनी औरतके वस्त्र जेवर और श्रद्धानुसार नगदी दें और उसके अंतःकरणसे यह कहा कि मैं तुष्ट हुआ और अपनी औरतके वास्ते गायत्री का आराधन करवा फिकर मत कर तुझको औरतका सुख होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।२६९।। हुक्मी शकल ·–: नकी मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल स्त्रीके कुलक्षणका है तू पूछता है कि मुझको अपनी स्त्रीके विषयमें कुछ संदेह है कि वह दूसरे मनुष्यसे-बात करती है यह बात सच्च है या झूठ" हे पूछनेवाले ! तेरी औरत निहायत चालाक है और जिस मनुष्यका तुझको भ्रम है वह मनुष्य इससे अबतक खराब नहीं हुआ है क्यों कि अवसर नहीं लगा परंतु दिल खुल गया है सो अब होनेवाला है और तू अपनी औरतको वरजेगा तो तेरी इज्जतकी गाहक होजायगी सो तू शत्रु विनाशिनीके मंत्रका जप जितनी तेरी ताकत हो करवा और अपने दहने पैरतलेकी मिट्टी शनिवारके रोज सुबे के वक्त लेकर जो कुआं छटता नहीं हो अर्थात् जिसकी

मिट्टी नहीं निकलती हो ऐसे कुएमें गेर दे और अपने शत्रुके बाए पैरतलेकी मिट्टी लेकर भड़भूजाके भाड़में गेर सो उससे दिल फट जायगा और तुझसे निहायत दिल मिलेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। २७०।। हुक्मी शकल ⁝ अतवेदाखिल शुक्रदेवताकी हैं हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औरतके विश्वासका है" सो तुझे औरतका यह शिवास है कि मेरी औरत खराब है सो तेरी औरत चालाक है परंतु खराब नहीं है चित्त तो चञ्चल है पर दूसरे पुरुषसे दिल नहीं लगाती है परंतु तेरे दिलमें निहायत शक है सो तुझको पितृदोष है उसीसे तेरे दिलमें जच रही है सो तेरे कुटुंबमें एक मनुष्य वे औलाद मरा है उसका धन तुम्हारे कुटुंबमें ही रहा है सो वह तकलीफ देता है तुम्हारे कुटुंबमें सुख नहीं होने देता और जो किसी को कुछ सुख हो तो उसके मनमें उच्चाटन रहता है सो तेरी औरत खराब नहीं है यह पितृदोषसे तुझको इसमें शक जचती है सो पितरोंके वास्ते सकुटुंब श्रीमद्भागवत श्रवण करके सवालक्ष गायत्री का जप करवा और गयाजी जाकर पिण्ड दे तीर्थ श्राद्ध करवा सब कुटुंबकी समता रहेगी और तेरा और तेरी औरतका दिल साफ रहेगा संदेह मत कर अल्लाताका अच्छा करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।२७१।। हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसीके फिकर का है (गुप्तचिन्ता का है(सो पहले अपनी औरतमें तुझको कुछ अविश्वास था तेरे दिलमें यह निश्चित था कि यह औरत खराब है उसी संदेहसे तू यह पूछता है कि यह सन्तान मेरे वीर्यसे पैदा हुई है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तुझको अपनी औरतका वृथा अविवश्वास था वह बहुत कुलीन है परंतु जवान अवस्थामें उसको कुछ प्रमाद था परंतु इतना प्रमाद नहीं था कि गर्भ औरका रह जावे सो तू फिकर मत कर यह तेरे वीर्य्यसे औरस पुत्र उत्पन्न हुआ है इसको संपूर्ण श्राद्धादिकों का अधिकार है तू कुछ फिकर मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।।२७२।। हुक्मी शकल ⁝ तरीख मनकली चन्द्रमा देवता की है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संतान का है सो गुप्त चिन्तवन करता है कि यह सन्तान मेरे शुक्रसे हुई है या और के" सो पूछनेवाले ! तू क्या नहीं जानता है कि जिस वक्त यह आशा तेरी औरत के रहो उस वक्त तू अपनी औरत के पास भी नहीं था और हमलके रहनेमें तुम्हारा बड़ा कुयश हुआ था परंतु यह संतान उज्ज्वल जातिसे हुई है और देव पितृ कार्य के योग्य नहीं है औरतका प्रायश्चित्त करवानेसे यह शुद्ध हो जायगी सो तू इस औरतके हाथसे नेक ब्राह्मणको गायत्रीका एक पुरश्चरण का दक्षिणा समेत संकल्प दे और गंगाजलमें स्नान करवा और यव और गोमूत्र ३ दिन खिला शुद्ध हो जायगी फिकर मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।।२७३।। हुक्मी शकल ☰ लहियान खारिज बृहस्पति की है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा

सवाल कोई औरत घरबसानेके वास्ते लानेका है कि मेरे यहां कोई औरत आवेगी या नहीं वह चिन्ता तेरे दिलमें बहुत आती है तुझको रात्रिमें नींद नहीं आती है तू यह विचारता है कि देखो कैसा घर बरबाद हुआ जाता है और जो कोई मिली भी तो ठिकानेकी नहीं मिली सो अब यह पूछता है कि ठिकानेकी कोई मिलेगी या नहीं" सो हे पूछने वाले ! अब तक तेरे दिन नाफिश थे परंतु अब भी ७ मास ११ दिन और नाकिश हैं पीछे तेरे अच्छे दिन आवेंगे फिकर मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ।।२७४।। हुक्मीशकल – · – · कबजुलदाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी औरतसे घर बसानेका है तू पूछता है कि यह औरत मेरे घर में रहेगी या नहीं" सो तू इस औरतके लानेमें उद्योग कर तेरे घर में आना तो मुशकिल है परंतु जो तेरे घरमें यह आजाय तो भाग्यवान् बहुत है सो तू इसके लानेमें उद्यम कर अब तेरे जरा दिन नाकिश हैं सो नाकिश दिनोंमें यह काम होना मुशकिल है तू पुष्यनक्षत्रसे लेकर पुष्पनक्षत्रतक जांटके दरख्वतमें पानी डाल और कीडनाल को २ मास जिमाय वह औरत तेरे यहां बरजरूर आवेगी संदेह मत कर अब नाकिश दिन पीछे गये अब तुझको सब सुख हो जावेंगे फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।२७५।। हुक्मी शकल · – · – कबजुल खारिज राहुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी औरतके मिलापका है तू पूछता है कि उस औरतसे मेरा मिलाप होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! उस औरतसे तेरा मिलाप बरजरूर होगा परंतु जो बात तू चाहता है वह न होगी क्यों कि उसका वर्ण देवता है । जो तू उससे संग किया ही चाहता है तो ५ तोला की सुवर्ण की मोहनी दुर्गाकी मूर्ति बनवा कर और ११ दिन नेक ब्राह्मणसे पूजन कराके दक्षिणा समेत उसी ब्राह्मणको दे पीछे उससे संग बरजरूर होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।२७६।। हुक्मी शकल – – – – जमात साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औरतसे मिलापका है तू पूछता है कि मेरी औरतका मिलाप मुझको कब होगा सो तेरी औरत नेत्रोंसे दूर है परंतु तू दिलसे दूर कभी भी नहीं करता है तेरी औरतका पहले जन्मका अजाब है सो उससे तेरा और तेरी औरतका समीप रहना नहीं बनता है तू और तेरी औरत पहले जन्ममें वैश्य जातिमें जन्मे थे तू विदेशमें धन कमानेके वास्ते रहा करता था एक दफे तेरी औरतको निहायत बीमारी हुई तू लोभके कारण उसको बीमार छोड़के चला गया पीछे तेरी औरतका शरीर पूरा हो गया तब उसने यह शाप दिया कि तैंने धनके लोभ से मुझे छोड़ दी ईश्वर करै तुझको धन न मिले सो उस शापसे ऐसा लाभ नहीं होता है कि तू घरमें बैठजाय और तेरी औरतका विशेष मिलाप हो तो तू प्रायश्चित्त कर तुझको लाभ भी पूरा होगा तू और तेरी औरत समीप रहोगे अब तू एक तोलेकी सुवर्णकी दुर्गाकी

मूर्ति तांबेके कलशके ऊपर वस्त्रमें रखकर नेक ब्राह्मणसे उस दुर्गासंमेलिनीका ११ दिन आराधन और पूजन करवा पीछे दक्षिणा समेत उसी ब्राह्मणको दे तेरा औरतसे मिलाप होगा और तुझको बहुत जल्दी लाभ होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। २७७।। हुक्मी शकल ⠇ फरहा मुनकलीव शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीका है पूछना है कि मेरा माल मिलेगा या नहीं" सो तेरा माल हाथ न आवेगा क्योंकि अव्वल तो तेरे दिन नाकिश हैं और दूसरे जिसने तेरा माल लिया है वह दिलका बहुत पक्का है अपने दिलकी बात औरोंके आगे नहीं कहता है औरोंके दिलकी पूछ लेता है उसने अबतक ऐसे ही काम लिये हैं अबतक पाड़के मौके नहीं पकड़ा गया था परंतु अबके उसने ४ शीरी और मिलाये हैं उनमें एक दिलका कच्चा है सो कई दिन पीछे मालका जाहरात होगा तो हो जायगा मिलना कुछ है नहीं तू सबर कर नाकिश दिनोंमें गुजरान कर अल्लाताला तुझको और धन देगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। २७८।। हुक्मी शकल ⠇ उसका मुनकलीव शनि देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीका है तू पूछता है कि मेरा बहुत मालाचोरी गया है इससे मुझको दिन रात निद्रा नहीं आती सो माल मिलेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब सब देवता-ओंको हाथ जोड़ता है और खुशवक्तीमें कभी शिर भी नहीं नवाया सो तेरे मालके ले जानेमें ५ चोर शीरी हैं एक तो वैश्य है और समजाति हैं परंतु चोर बड़े पक्के हैं वैश्यने तेरा माल बताया है और तेरा माल तेरे मकानसे पूर्व दिशाकी ओर लेकर चले हैं हे पूछनेवाले ! तेरे दिन निहायत नाकिश हैं २ मास १ दिन और नाकिश रहे हैं जन्म पत्रमें भी देख लेना सो तू श्रीकालिकाके मंत्रका जप करवा नाकिश दिन व्यतीत हुए कुछ कम तेरा माल भी मिलेगा और तू यह भी जान जायगा कि घरके बंदर हैं ऐसे भी चोर चांडाल होते हैं फिकर मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड ।।२७९।। हुक्मी शकल ⠇ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धनकी चोरीका है तेरा धन बहुत गया है और तैंने इन्तजाम भी बहुत किया परंतु पक्का पता अबतक कुछ नहीं लगा तू पूछता है कि मेरा धन आवेगा या नहीं" सो पूछनेवाले ! तुझको ३ वर्षसे दिन निहायत नाकिश आ रहे हैं सो दिनोंकी गरदिश करके तेरा धन चोरोंने लिया है चौर ६ हैं एक उनमें भेदी है नाकिश दिनोंमें तेरा धन गया है सो यह धन आना मुशकिल है परंतु श्रीदुर्गाकी दो तोला सुवर्णकी मूर्ति बनवा कर नेक ब्राह्मणसे प्राण प्रातिष्ठा कराके ११ दिन पूजन करवा और ११ वें दिन वह मूर्ति दक्षिणा समेत उसी नेक ब्राह्मणको दे श्रीदुर्गाकी प्रसन्नतासे कुछ कम तेरा धन मिलेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड ।। ।।२८०।। हुक्मी शकल ⠇ हुमरा सावित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने

वाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीका है तेरे धनकी चोरी हुई है धन बहुत ज्यादा गया और सब थाना तहसील दाखिल हो लिये परंतु पता न लगा तो तू यह पूछता है कि धन मिलैगा या नहीं जो न मिले तो सबर करूं" सो हे पूछनेवाले ! चोर चार है इन्हींमें घरका भेदू भी है सो तू श्रीमंगलाके मंत्रका आराधन करवा कुछ धन लगाके धन आवेगा फिकर मत कर जिसने यह दिया था वह और भी देगा इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ।।२८१।। हुक्मी शकल ☰ बयाज साबित चंद्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने-वाले शख्स ! तेरा सवाल पशुकी चोरीका है तेरा पशु घरसे गया है तू पूछता है कि मेरा पशु आवेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरे पशुकी चोरने चोरी नहीं की परंतु तेरे शत्रुने करवाई है सो तेरा शत्रु निहायत नालायक है उससे कुछ फरतूत तो हो नहीं सकती इससे तेरा पशु ही उसने कढ़वाया है सो तू चोर पिशाचिनीके मंत्रको चरखेसे बांध कर माल काढ़ कर उलटा फिरा तेरा पशु आ जावेगा परंतु दिन नाकिश हैं सो कुछ धन लगेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड।। २८२।। हुक्मी शकल: नुस्रुत् खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पशुकी चोरीका है सो तेरा पशु घरसे नहीं गया जंगलसे गया है सो तेरे पशुपर कुछ चोरकी साज नहीं थी तेरे दुशमनने चपरके साज लगाई है सो वह पशु एक पहर तो जंगलमें बांध रक्खा और पीछे उत्तरको चलता कर दिया और अब भी चला जाता है सो तेरा दुशमन बहुत खोटा मनुष्य है उसने अपना परलोक बहुत बिगाड़ लिया है उसके दिलमें कुछ दया नहीं है परंतु तू देख सुख वह भी नहीं पाता है तेरे देखते ही इन पापोंका फल भोगेगा और तेरा पशु नहीं आवेगा तू सबर कर और जो तुझसे सबर न किया जाय तो तू यथाशक्ति पिशाचघातिनीके मंत्रका जप करवा और झुंडके दरख्तमें ११ दिन चावलोंके दोनों सहित पानी डाल कुछ धन लगेगा तेरा पशु मिल जायगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड ।।२८३।। हुक्मी शकल ⁝ नुस्रुत् दाखिल बृहस्पति देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीका है वस्त्रकी चोरी हुई वस्त्र बहुत गया जो घरमें अच्छे वस्त्र थे सो सब चले गये और जो तजबीज की उससे कुछ पता नहीं लगा सो तेरा दिल घबराता है हौलदिली हुई जाती है रात्रिमें निद्रा नहीं आती यह संदेह रहता है कि मेरा वस्त्र आवेगा या नहीं और जो न आवे तो सबर करूं" सो हे पूछनेवाले शख्स ! इस चोरीमें ५ चोर शीरी हैं एक मनुष्य इनमें घरका भेदू है उसने भेद दिया था कीमती माल उसीके हाथ लगा दूसरे चार चोरोंने तेरे वस्त्र कुछ तो दक्षिण दिशाको भेज दिये और बांट लिये हैं सो तू सबरकर तेरे दिन नाकिश हैं तेरा माल नहीं मिलेगा ईश्वरसे विनती कर वह और देगा इति प्रश्न ।।पिण्ड।।२८४।। हुक्मी शकल ⁝ अतबेखारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीका

है तेरे कपड़ोंकी चोरी हुई है कपडे बहुत अच्छे और बहुत ज्यादे गये हैं और बहुत तजबीज की परंतु कहीं भी खबर नहीं लगी सो निहायत तकलीफ पाया अब पूछता है कि मेरा माल आता दीखता हो तो मैं उद्योग करूं और जो न आता दीखे तो मैं सबर करूं" सो हे पूछनेवाले ! गया धन आना बहुत मुशकिल है और जो मनुष्य तुझसे कहता है कि कुंछ धन लगेगा तेरा माल मैं ला दूंगा वह मनुष्य निहायत कपटी है ऊपरके बोलनेमें निहायत सफाई है उससे बचा रहना और तुम मंगलेश्वरीके मंत्रका जप करवाना और रात्रिमें पीपलके तले उड़द गेरके उनमें तेलका दीपक रख कुछ धन लगनेपर तेरा धन आवेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।।२८५।। हुक्मी शकल ⁝ नकी मुनकलीब मंगल देवताकी है हुकूम फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औरतकी चोरीका है तू पूछता है कि मेरी औरत एक मनुष्यके संग चली गई कुछ माल भी लेगई है सो वह औरत और माल हमको मिलेगा या नही" हे पूछनेवाले शख्स ! उस औरत के दिलमें तो बहुत दिनोंसे जानेकी थी परंतु उसका अबतक मौका नहीं लगा अब उसका मौका लगा है सो पूछनेवाले ! वह औरत अव्वल ही तुम्हारे कामकी नहीं थी परंतु अब तो चली ही गई सो वह औरत तुम्हारे मतलबकी नहीं है और उस औरतने तुम निहायत दिक किये हो और उसने तुम्हारा दिल बहुत सताया है इससे कुछ फल तो उसने पालिया अब आगे भी उसकी निहायत दुर्गति होगी पर यहां नहीं आवेगी न जेवर मिलेगा सबर कर इति प्रश्न ।।पिण्ड ।।२८६।। हुक्मी शकल ⁝ अतवेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! सवाल चोरीका है तू पूछता है कि औरत चोरी गई है सो आवेगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले शख्स ! तेरी औरत चोरी नहीं गई वह औरत अब अपने पिताके घर गई है तू संदेह मतकर और हे पुत्र! तेरे पितृदोष है सो एक तो मनुष्यों का दिल नहीं मिलने देता और विना बात कलह हो जाता है और जहां ज्यादे पैदा दीखे वह नष्ट होजाती है जो नष्ट नहीं होय तो कमती होजाता है सो तेरे पितृदोष है दिलको स्थिर नहीं रहने देता और उसको बिगाड़ता है सो सन्देह मतकर इति ।।प्रश्न।। पिण्ड।।२८७।। हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा साबित बुध देवताकी हैं हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बालककी चोरीका है तू पूछता है कि बालक किसीने चोर लिया बहुत ढूंढ़ा परंतु मिला नहीं सो तू पूछता है कि लड़का कहा मिलेगा "हे पूछनेवाले ! तेरा लड़का नहीं मिलेगा क्योंकि तुझको दिन निहायत नाकिश हैं तेरा लड़का दुशमनने पकड़वाया है सो तेरी औरतकी कलाम माफिक है अब तू श्रीगणेशके बीजमन्त्रका जप जितनी तेरी ताकत हो करवा कुछ सन्देह मत कर ईश्वर जैसे रखे वैसे ही रहिये इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।

।।२८८।। हुक्मी शकल तरीख ⋮ मुनकलीव चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मनुष्यके खोये हुए का है सो तेरा लड़का खोया गया है तू पूछता है कि लड़का मिलेगा या नहीं" तू कुछ फिकर मतकर तेरा लडका बहुत खुशी है और उसको इस वक्त बहुत मनुष्य समझा रहे हैं सो तेरा लड़का आया ही चाहता है तू फिकर मतकर और तेरे लड़केको जन्मपत्रमें शनिग्रह माफिक है सो शनि देवताका दान और जितनी तेरी ताकत हो उतना जप शनिके बीजमंत्रका करवा फिर तेरे लड़केको संदेह कुछ भी न होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।२८९।। हुक्मी शकल ।।। लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धन और वस्त्रोंकी चोरीका है" तेरे पास कुछ बाकी नहीं रहा है इधर ३ वर्षसे तेरे दिन निहायत नाकिश हैं पैदा तो कुछ होती नहीं और जो कुछ होती भी है उससे दिलको संतोष नहीं होता और मन तो पहले ही बहुत बिगड़ा रहता था परंतु अब चोरी हुए पीछे दिल धीरज नहीं धरता आज कल तेरे नाकिश दिन हैं सो नाकिश दिनोंमें गुजरान कर और यथाशक्ति श्रीगणेशजीके बीजमंत्रका जप करवा और सुबेके वक्त जांटके दरख्तमें पानी डाल और शामके वक्त उसी जांटके तले काले उरद गेरके उनपर तेलका दिया बाल और हाथ जोड़कर यह विनती कर कि हे देव ! मेरे मालको दिला सो कुछ धन लगे तेरा माल आवेगा फिकर मत कर अल्लाताला अच्छा करेंगे इति प्रश्न ।।पिण्ड।।२९०।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धन वस्त्रकी चोरीका है ऐसी चोरी हुई है कि घरमें कुछ भी नहीं रहा सो अब यह पूछता है कि मेरा माल मिलेगा या नहीं जो मुझको नहीं मिलेगा तो मेरा जीना मुशकिल है और जो जीता रहा तो मेरे दिलके उठावकी बीमारी होगी सो मेरा माल मिलेगा या नहीं" (यह पूछता है) सो हे पूछनेवाले ! तेरा माल तो चोरोंने हजम कर लिया तुझको नहीं मिलेगा सबर कर यह माल तैंने निहायत अन्यायसे इकट्ठा किया था और तैंने पुण्य भी एक पैसा का नहीं किया सो जैसी और मनुष्योंके ऊपर कटारी तैंने फेरी थी वैसी ही तेरे फिरी सो तू सबर कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।।२९१।। हूक्मी शकल ⁝ कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल जेवरकी चोरीका है तू पूछता है कि चोर घरका है या बाहरका और मेरा जेवर मिलेगा या नहीं जेवर जो घरमें था सो सब जाता रहा और तेरे दिलको सबर नहीं होता" सो हे पूछनेवाले ! इसमें ३ सोरी हैं सो इनमें एक घरका भेदी है उसने तेरे जेवरका पहले सब भेद बता दिया तब औरोंने निकाला है और जो घरभेदी मनुष्य है सो होश्यार है किसीसे बतलाता नहीं तुम्हारी बात जान लेता है अपने दिलकी नहीं कहता बड़ा कुटिल है सो तेरे २

मास २३ दिन खोटे हैं। नाकिश दिनों पीछे इन चोरोंकी आपसमें फूट होकर कुछ जेवर तेरा मिलेगा इति प्रश्न ।।पिण्ड।। २९२।। हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल जेवरकी चोरीका है तू पूछता है कि मेरा जेवर चोरा गया है चोर घरका है या बाहरका अथवा मेरे घरमें ही कहीं रक्खा हुआ है" सो हे पूछनेवाले ! तेरे घरमें चोर नहीं लगा बल्कि तेरे घरमें पितृदोष है तेरे घरमें विना बात कलह होजाता है और कुटुंबके मनुष्योंका परस्परमें मेल नहीं है और दिल सबका बिगड़ा रहता है विना बातका दिलमें संदेह रहता है अचानक कोई न कोई विघ्न होजाता है कुटुंबमें बंधेज भी नहीं होता सो तुझको पितृदोष है तू पितरोंके वास्ते श्रीमद्भागवत श्रवण कर और सवालक्ष गायत्रीका जप करवा गयाजी या पिण्डारेमें तीर्थश्राद्ध करवा तुम्हारा जेवर तुम्हारे घरमें ही है पितरोंने तुम्हारे घरवालोंकी बुद्धि बिगाड़ रक्खी है यह करनेसे सब सुख होगा तेरा जेवर घरमें मिल जायगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।।२९३।। हुक्मीशकल ⚍ फरहा शुक्रदेवताकी है मुनकलीब है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल है कि मेरे बहुत बर्तन चोर गये हैं जो बर्तन अच्छे थे सो सब चले गये तू पूछता है कि मेरे बर्तन मिलेंगे या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरे दिन निहायत सख्त हैं इससे आवते नहीं दीखते और जो तू यह कहै कि मुझको सबर नहीं होता तो तू जिस शिवलिंगकी प्राणप्रतिष्ठा हो रही हो उसमें चिताकी भस्मका लेप सायंकालके वक्त कर और यह प्रार्थना कर कि हे त्र्यंबक ! 'मे भोजनं देहि' इस मंत्रकी एकादश माला जप करवा या तू कर २१ दिन भीतर तेरे बरतन आजावेंगे फिकर मतकर इति प्रश्न ।।पिण्ड ।।२९४।। हुक्मी शकल ⚍ उकला मुनकलीब शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीका है तू पूछता है कि मेरे चोरी हुई और बरतन गये" सो तेरे घरमें एक मनुष्य नाकिश बदनजर आता है उसने तो चोरोंके आगे कुछ और माल दी थी परंतु तकदीर बिगर धन नहीं मिलता है सो उसमें तो उनका हाथ पड़ा नहीं परंतु बर्तन लेगये सो वे बर्त्तन कई दिनों पीछे आवेंगे तेरा यह संताप जायगा और नाकिश दिन तेरे गये अब बहुत अच्छे दिन आवेंगे सो अब तुझको बहुत लाभ होगा फिकर मतकर इति प्रश्न ।।पिण्ड।।२९५।। हुक्मी शकल ☰ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीका है तेरा माल दिनमें ठगोंने उठाया है तू पूछता है कि माल ज्यादे था और वह माल गये पीछे दिलमें सबर नहीं होता सो वह माल कहां है और मुझको मिलेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! वह माल तुम्हारे पाससे बालकबच्चोंने उठाया था और उसको उठा कर बड़े मनुष्यको देदिया सो वह मनुष्य उत्तर दिशाको दूर लेगया फिर एकांतमें उसको खोलके देखा सो

बहुत खुश होगया सो वह तो पश्चिमदिशा अपने घरको उसी वक्त चला गया सो तू सबर कर वह माल तुझको नहीं मिलेगा और अब तेरी तकदीर ४ मास २२ दिनमें खुलेगी बहुत लाभ होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड ।।२९६।। हुक्मी शकल हुमरा साबित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीका है" तेरी वस्तु दिनमें ठगने उठाई है तेरा और जिस ठगका थोड़ा ही फासिला रहा था सो उस ठगने नहीं उठाई थी जो तेरे पास छोटासा लड़का खड़ा था उसने उठाई थी सो उस लड़केने उठा कर बड़े मनुष्यको दे दी वह ले गया सो दिन तो तुझको नाकिश ही हैं परंतु तू अपनी ताकत माफिक दुर्गाका चढ़ावा कबूल तेरी वस्तु कुछ दाम लगके ११ दिन भीतर आजायगी फिकर मत कर इति प्रश्न ।। इति सप्तमस्थानं समाप्तम् । अथ पिण्ड ।। २९७।। हुक्मी शकल बजाय सावित चंद्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल कर्जके शुभाशुभका है तू पूछता है कि एक मनुष्यके पास मैं करजा लेने जाता हूं वह मनुष्य देगा या नहीं" सो वह मनुष्य जरा नजर चोर है और ऐसा भी है कि जिसके धन देखता है उसको देता है सो हे पूछनेवाले अव्वल तो तुझको नाटेगा और पीछे यह कहेगा कि घर या बाहरकी जमीन लिखवादे और पीछे जामिन मांगेगा सो इस वक्त तो तेरा काम बनता नहीं दीखता हैं और २१ दिन बाद तुझको करजा मिलेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।२९८।। हुक्मी शकल नुस्रुत् खारिज सूर्य्यदेवताकी है, हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल करजाके शुभाशुभका है तू पूछता है कि मैं हुंडी करके करजा लेना चाहता हूं मुझे रकमकी बहुत चाह है एक दो मास पीछे तो मेरे ही रकम बहुत आ जायगी पर इस समय मैं हुंडी करूं तो वह सिकारेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब जो तू विचारता है उतनी हुंडी मत कर अपना वजन देख वह तेरा निहायत प्यारा है परंतु सबसे प्यारा यह धन है अपना वजन देखकर हुंडी कर वह सिकार देगा परंतु अब दिन जरा तेरे नाकिश हैं सो श्रीमहाजयीके बीज मंत्रका जप करवा हुंडी तेरी सिकरेगी इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।२९९।। हुक्मी शकल नुस्रुत् दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल करजाका है तू पूछता है कि मैं एक मनुष्यसे बहुत ज्यादे रुपये मांगता हूं वे रुपये मुझको मिलेंगे या नहीं और मिलेंगे तो किस तजबीजसे मिलेंगे" सो यह करजा गला जाता है और यह करजा तुझको इन आंखोंसे नहीं मिलेगा अब यह तुझको बहुत मीठा बोलता है परंतु जिस वक्त तू दो या तीन दफे मांगेगा उस वक्त उसके नेत्रोंको देखिये परंतु जमीनसे पूरे पूरे करेगा फिकर मत कर तुझको सबर हो जावेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।३००।। हुक्मी शकल अतबे खारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स !

तेरा सवाल करजका है सो तू यह पूछता है कि मुझको करजा ज्यादे है अब कब उतरेगा" इस करजाने तेरी इज्जत बनाई है और बिगाड़ी भी है पहले यह करजा तुझको ऐसा नहीं दीखता था परंतु अब बढ़ गया और पहले तो तेरे साहूकारकी नियत अच्छी थी अब सबकी बदनीयत हो रही है सो हे पूछनेवाले ! तेरे सालभरकी जितनी पैदा है उतना ब्याज बढ़ता है सो कुछ ज्यादे पैदा होवे तो कोई न कोई खरच पावे सो तेरा करजा कैसे पार पड़ेगा सो तू गणेशचतुर्थीके व्रत कर और काले तिलोंसे इतवारको छोड़कर सब दिन पीपलके दरख्तमें पानी डाल सो २ वर्ष १ मास ३ दिन बाद तेरा करजा सब दूर हो जावेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ३०१।। हुक्मी शकल ⁝ नकी मुनकलीव मंगल देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल करजाका है तू पूछता है कि मेरा करजा बहुत दिनका होगया पहले तो मुझको कुछ निगाह नहीं रही और उसके पास भी देनेको कुछ नहीं था परंतु अब उसके पास धन पूरा है उसने कमाया है परंतु देनेकी इच्छा कम है मुझको देगा कि नहीं जो नहीं देवे तो वृथा झगड़ा क्यों उठाऊं" सो हे पूछनेवाले ! ये तेरे रुपये कमाये खाये गिन रक्खे हैं परंतु पहले जितना तेरा करजा मूल है उसका २० वां हिस्सा श्रीभगवती धनदात्री मंत्रके आराधनमें खर्च कर पीछे उससे करजा लेनेकी तजवीज कर तेरा करजा मिलैगा फिकर मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।३०२।। हुक्मी शकल ⁝ अत अतवेदाखिल शुक्र देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल करजाका है तू पूछता है कि मेरा करजा बहुत दिनका है और जो नगदी इससे ली थी उससे ज्यादे नगदी तो मैं दे चुका परंतु अब भी रुपये बहुत हैं सो ब्याजका परव्याज जुडकर रुपये हो रहे हैं सो मुझको दिन रात नींद नहीं आती" सो हे पूछनेवाले! अब समय बहुत माफिक है पहले तो साहूकारको सवाईमें सुबर था परंतु अब सबर नहीं है सो तू श्रीभगवतीका ध्यान कर और अर्कके पुष्पोंकरके शिवार्चन कर और शिवजीसे यह प्रार्थना कर कि हे त्र्यंबक ! मेरा करजा दूर करो सो शिवजी तेरा करजा दूर करेंगे फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ३०३।। हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा सावित बुध देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विदेशीके अंदेशाका है तू पूछता है कि विदेशीने गये पीछे कुछ खबर या खरची नहीं भेजी सो क्या कारण है उसको कुछ लाभ हुआ है या नहीं और वह शरीरसे खुश है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! उसका जबर रोजगार अबतक नहीं लगा है क्योंकि उसको अब तक दिन नाकिश थे परंतु अब उसको रोजगार एक मास सात दिन बाद अच्छा लगेगा परंतु अबतक उसका दिल नहीं लगा है दिलमें उच्चाट रहता है और विशेष रोजगार नहीं लगा इस कारण उसने खबर और खर्च नहीं भेजा तू कुछ संदेह मत कर तेरे लिये खबर और खर्च भेजनेवाला है इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ३०४।।

हुक्मी शकल ⋮ तरीख मुनकलीव चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विदेशीके अंदेशाका है" सो उसके पापसे तुम्हारे पास एक खत आया था उस खतमें कुछ बीमारीकी बात लिखी थी उस खतको देखने के पीछे तुझको सबर नहीं पड़ता इससे यह पूछता है कि उसको आराम होगया है कि नहीं सो उसको अब आराम है परंतु उसको एक तो वहांका जल नहीं रुचा और दूसरे उसके दिन अब निहायत नाकिश हैं इससे उसकी बीमारी दुरुस्त होना बहुत मुशकिल है सो तू महामृत्युंजय मंत्रके जपका संकल्प इसी वक्त योग्य ब्राह्मणको दे और जितनी तेरी ताकत हो उतना विष्णुसहस्रनामका पाठ करवा आराम बरजरूर होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ३०५।। हुक्मी शकल ⁝ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल दान करनेका है तू पूछता है कि मेरा मनोरथ बहुत दिनोंसे था परंतु मेरा मनोरथ पूर्ण नहीं होता था कोई विघ्न हो जाता है अब यह दान होगा या नहीं" हे पूछनेवाले ! तेरे दिलमें स्थिरता अब तक नहीं हुई है क्योंकि तेरे पाप दूर नहीं हुए हैं क्योंकि तू अपने आधीन नहीं है तेरे पाप तेरे दिलको डिगा देते हैं सो अब तू श्रीगङ्गाजीमें स्नान करके उसी जगह संकल्प ले तेरा दान पूर्ण होगा और बहुत फल होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड ।।३०६।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल है कि दानका क्या फल है सो तू यह पूछता है कि मैंने दान किया और करनेकी मनमें रहती है" सो हे पूछनेवाले ! अब तक तुझको निश्चय नहीं हुआ है पहले जन्ममें तू दक्षिण दिशामें वैश्यजाति में उत्पन्न हुआ था और ब्राह्मणोंको भोजन और कपड़े और दान रोकड़ा बहुत दिया करता था परंतु तू ब्रह्मभोजके समय अधिक भोजन करनेवाले को कहा करता कि यह कितना ज्यादे भोजन करता है सो पीछे उसकी निंदा करा करता था पूर्व जन्ममें जो जो पुण्य किया था उसीके फलसे तुझको लक्ष्मीका सुख है परंतु भोजनका फल नहीं हुआ, निन्दा करनेसे तुझको भूंख कम लगती है और किसी भोजनमें रुचि नहीं होती सो तू पुण्य दान कर फल प्रत्यक्ष है संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।३०७।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सर्पके भयका है तू पूछता है कि कई दफे सर्प ऐसे वक्त दिखाई देता है कि कुछेक फरक रह जाता है इससे कुटुंबको ऐसा भय होरहा है कि चारपाईसे नीचे पग कोई भी नहीं रखता तो यह पूछता है कि सर्प इस घरसे जावेगा या नहीं और किसी पर चोट तो नहीं करेगा और किस दोषसे दीखता है" सो हे पूछनेवाले ! यह सर्प नहीं है यह किसीका काल है क्योंकि यह तुम्हारा पितररूप हैं जो पितरोंके वास्ते श्राद्धादिक किया करते हैं और गया अथवा पिण्डारा करवा दिया करते हैं उनके

पितरोंका मोक्ष हुआ करता है और जिनके श्राद्धादिक नहीं होते वे प्रेत पिशाच सर्पादिक हुआ करते हैं सो पितरोंकी गतिकर फिकर मत कर फिर न दीखेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ३०८।। हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सर्पके भयका है तुझको सर्प दिखाई देता है और भय बहुत रहता है तू पूछता है कि मुझको सर्प न दीखै और उसका भय न रहे और यह किस दोषसे है" सो तू गूंगापीरकी यात्रा कबूल पहले जन्ममें तू शूद्र था सो तैंने सर्प बहुत मारे थे अब वे सर्प तेरा बदला लिया चाहते हैं सो तू सर्प दमन यज्ञकी ऋचाका जप करवा सर्प नहीं दिखलाई देंगे इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।३०९।। हुक्मी शकल ⁝ फरहा मुनकलीव शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल गुहेराके भयका है तेरे मकानमें गुहेरा रहता है तू पूछता है कि गुहेरा चोट तो न करेगा" सो हे पूछनेवाले ! उस गुहेरेको काल लिये फिरता है सो आज या कल यहां से बिदा होगा तू फिकर मत कर निःसन्देह सो रह इति प्रश्न ।।पिण्ड ।।३१०।। हुक्मी शकल ⁝ उकला मुनकलीव शनिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल गुहेरके भयका है वह गुहेरा कई दफे तेरे सामने भगा है परंतु उसका हाथ नहीं पड़ा तेरी तकदीरने जोर किया है उसने तो चोट करनेमें कोई कचाई नहीं रखी सो वह पहले जन्ममें सर्प था और तू न्यौलिया था तैंने इसको मारा था सो अब बदला लिया चाहता है सो सुवर्णका सर्प बनाकर नेक ब्राह्मणको दे यह दूर हो जावेगा और तुझको भय नहीं होगा इति प्रश्न ।।पिण्ड।।३११।। हुक्मी शकल ☰ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सिंहके भयका है तेरे ग्राममें दूसरे या तीसरे दिन सिंह आता है इससे ग्राममें निहायत तकलीफ होजाती है सो तू पूछता है कि इस सिंहका पाप कब कटेगा" सो हे पूछनेवाले ! सब ग्रामके मनुष्य सम्मति करके २१ दिन सिंहारूढा श्रीकालिकाका आराधन नेक ब्राह्मणसे करवावो यह सिंह कभी नहीं आवेगा जो आवेगा तो तुरत मारा जावेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।३१२।। हुक्मी शकल ☰ हुमरा साबित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सिंहके भयका है तू पूछता है कि मेरा जंगलमें बहुत काम पड़ता है परंतु उस जगह सिंहका बहुत भय है सो रोजगार तो ठहरा यह सिंहका निहायत भय है सो कभी चोट तो न करदेगा" सो तू संदेह मत कर श्रीसिंहासना कालिकाका आराधन करवा फिकर मतकर तेरा संदेह दूर होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।३१३।। हुक्मी शकल ☰ बयाज साबित चंद्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल व्याघ्रके भयका है तुम्हारे ग्राममें रात्रिको व्याघ्र आता है और बालक बच्चोंको उठा ले जाता है इससे ग्राममें निहायत तकलीफ हो रही है सो तू पूछता है कि दिनमें

तो गृहस्थीके धंधेमें रहते हैं और रात्रिमें व्याघ्रका भय है सब ग्राम निहायत तकलीफ पा रहा है सो यह व्याघ्रका भय कब दूर होगा" सो हे पूछनेवाले शख्स ! सब ग्रामके मनुष्योंको यह कह दे कि मंगलेश्वरी कालिकाका जप करवावो और इन व्याघ्रोंको मरवावो और व्याघ्रोंका भय न होगा फिकर मत करो इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।३१४।। हुक्मी शकल ⁝ नुस्रत् खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल व्याघ्रके भयका है तू पूछता है कि मेरा काम जंगलमें बहुत पड़ता है उस जंगलमें व्याघ्रोंका बहुत भय है कई दफे वे व्याघ्र सामने हो गये हैं सो मेरे दिलमें भय रहता है कि कभी चोट तो न कर दें" सो हे पूछनेवाले ! तू जगदीश्वरी कालीका आराधन अपनी ताकत माफिक करवा फिर तेरे समीप नहीं आवेंगे फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ३१५।। हुक्मी शकल ⁝ नुस्रत् दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शत्रुके भयका है तू पूछता है कि एक शत्रु है वह बड़ा जालसाज है सो तुझको यह डर लगता है कि कोई जालसाजी करके मुझको राज दरबारमें न फसा देवे" सो हे पूछनेवाले ! यह फिकर तू मत कर वह मनुष्य तुझसे आप ही भय मानता है कि कोई जालसाजी तो न करे परंतु तेरे रोजगार में अवश्य भाजी मार देता है सो तू शत्रु विनाशिनी कालीकी सुवर्णकी मूर्ति बनाकर ताकत भर शत्रु विनाशिनीका पाठ करवा तेरा शत्रु दूर होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ३१६।। हुक्मी शकल ⁝ अतबे खारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शत्रुके भयका है" तुझसे शत्रुने बड़ी जालसाजी की है और तुझको बहुत दिक किया सो तू शत्रुविनाशिनीके मंत्रका सवालक्ष जप करवा और दो तोले सुवर्ण की मूर्ति बनवाकर पूजन करवा संदेह मत कर तेरा शत्रु दफे होगा फिकर किसी बातकी मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ३१७।। हुक्मी शकल ⁝ नकी मुनकलीव मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बिच्छूके भयका है" सो तेरे घरमें बिच्छू बहुत निकलते हैं इससे तुझको बहुत भय है और रात्रि समयमें तुम्हारे घरके सभी मनुष्य नीचे पग धरते भय मानते हैं और तू पहले तो ऐसा नहीं डरता था और अब तुझको निहायत भय हो गया दिनमें तो गृहस्थके कृत्यमें रहता है और रात्रिमें कोई भी जीव तेरे ऊपर आपड़े तो तू उठ भागता है और जबतक उसको देख नहीं लेता तबतक तुझको नींद नहीं आती सो तू शिवजीके लिंगका अर्कपुष्पोंसे पूजन कर तेरे घरसे बिच्छू चले जावेंगे फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।।३१८।। हुक्मी शकल ⁝ अतबेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बिच्छूके भयका है" सो प्रथम तो इस देशमें ज्यादे बिच्छू हैं और इस ग्राममें निहायत ही बिच्छू हैं सो दिनमें तो जहां तहां छिपजाते हैं और

रात्रिमें दीपक शान्त होनेके बाद प्रकट होते हैं सो सोए हुए मनुष्य पर पड़ते हैं सो जिस मनुष्यको काटते हैं वह सारी रात्रि पुकारता है और बहुत तकलीफ होती है सो तू दंशनिवारणी भगवतीका आराधन करवा बिच्छूका भय दूर होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।।।३१९।। हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा साबित बुध-देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल प्रेतके भय का है" सो हे पूछनेवाले ! तुझको कुछ रात्रिमें भय लगता है और सोया हुआ रात्रिमें दब जाता है और कभी रात्रिमें चमककर उठ खड़ा हो जाता है और तेरे दिलमें भय रहता है और दिल कुछ ठीक नहीं रहता है सो तेरे पितृदोष है सो तू प्रेतसे बहुत भय मानता है सो तू श्रीविष्णुसहस्रनामका पाठ नेक ब्राह्मणसे श्रवण कर और तुलसीका और गङ्गाजलका सेवन रख तेरा प्रेतभय दूर होगा फिकर मतकर इति प्रश्न ।।पिण्ड।।३२०।। हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीव चंद्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल प्रेतका है तेरे मकान में प्रेत है किसी मनुष्य को सोने नहीं देता और जब तू किसी मनुष्यको मकानमें रखता है या तू रहता है तो रहने नहीं देता और मकान सब बरबाद होगया और अनेक तजबीज की परंतु शांति नहीं हुई यह प्रेत नहीं गया सो इसके जानेकी यह तजबीज करो कि, नेक ब्राह्मणसे श्री गायत्रीका अनुष्ठान करवा और तद्दशांश हवन तद्दशांश तर्पण तद्दशांश मार्जन तद्दशांश ब्राह्मणभोजन उसी मकानमें करवा यह प्रेत दूर होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ।।३२१।। हुक्मी शकल ⁝ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने वाले शख्स ! तेरा सवाल पुरुषकी बीमारीका है तू पूछता है कि यह ओपरी बीमारी है या और कोई बीमारी है सो हे पूछनेवाले ! इसके ओपरी बीमारी है जो इसको निहायत तकलीफ देती है सो इसके हाथसे एकसहस्र विष्णुसहस्रनामका पाठ करवा बीमारी अच्छी हो जावेगी फिकर मत कर और पितरोंकी हाथ जोड़के आराधना कर तुझको बरजरूर आराम होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।३२२।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है सो उस पुरुषके ओपरी बीमारी है उसको जिंद लग रहा है और दिनरात निहायत तकलीफ देता है और रात्रिमें भय बहुत लगता है और ऐसा करता है कि, अच्छे मनुष्य से कह भी न सके और दिल तो सदैव बिगड़ा रहता है परंतु किसी वक्त हरेक होश्यार मनुष्यको भी इससे भय लगता है सो तू यह पूछता है कि इसको आराम कब होगा और किस दोषकी बीमारी है" सो हे पूछनेवाले ! यह ज्यादे दिनोंकी बीमारी है और आसेव है तू श्रीपिशाचनाशिनी महामायाका सवालक्ष जप और तद्दशांश हवनादि करा और इसके नित्य तुलसीजीके पत्रके साथ कालीमिरच नयनोंमें डाल आराम बरजरूर होगा पिशाच जबर है

फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।३२३।। हुक्मी शकल ⁚= कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औरतकी बीमारीका है सो उस औरतके ओपरी बीमारी है उससे उसको निहायत तकलीफ है और यह बीमारी ज्यादा है कभी नाचना और कभी रोना करती है इसको औरत और बच्चे दिखलाई देते हैं सो तू पूछता है कि, उसको आराम कब होगा और क्या दोष है" हे पूछनेवाले ! इसमें जिंदोंका हाथ पड़ गया है सो तू श्रीमद्भागवतका श्रवण कर और इसके हाथसे सवालक्ष गायत्रीका जप करवा इसको आराम बरजरूर होगा फिकर मत कर अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ।।पिण्ड।।३२४।। हुक्मी शकल ≣ जमात साबित बुद्धदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है सो इस औरतके ओपरी बीमारी है इससे निहायत तकलीफ है और इसके इलाज और यत्न (जतन) बहुत किये परंतु कुछ भी कार न आये और तुमको बहुत संदेह है" सो हे पूछनेवाले ! तेरे पितृदोष है सो पितरोंके वास्ते तजबीज कर ज्यादे मैल ज्यादे जलसे कटता है सो तू पितरोंके वास्ते श्रीमद्भागवतका श्रवण कुटुंब समेत कर और सवालक्ष गायत्रीका जप करा और पितृसंहिताका पाठ करा बरजरूर इसको आराम होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।३२५।। हुक्मी शकल ⁚-· फरहा मुनकलीव शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल कुटुंबके क्लेशका है" कुटुंबमें प्रथम तो मृत्यु बहुत हुई बधेवा नहीं औरतोंके कन्या होती हैं और जो लड़का हो जावे तो कुछ न कुछ बीमारी रहै और जिसके पास जर है उसके संतान नहीं और जिसके संतान है उसके पास जर नहीं और दिलमें फिकर रहता है सो तुम पितरोंके वास्ते हरिवंशका श्रवण सब कुटुंब समेत करो और अपनी ताकत माफिक उसमें दक्षिणा चढ़ाओ और एक हरि-भगवान्‌की मूर्ति ७ पल सोनेकी बनवाके चांदीके सिंहासनमें बैठाके हरिवंश पुराणका श्रवण करो तबतक नित्य षोडशोपचार करके पूजन करो और कथा बिदा करके उसी नेक ब्राह्मणको यह मूर्ति सिंहासनसमेत देओ तुम्हारे सब दुःख दूर होवेंगे फिकर मत कर दानसे सुख होता है इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।३२६।। हुक्मी शकल ·=· उकला मुनकलीव शनि देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शखस ! तेरा सवाल कुटुंबके सुख-दुःखका है" सो प्रथम तो कुटुंबमें बधेवा नहीं औरतोंके लड़की होती हैं और जो लड़का होवे तो उसके कुछ न कुछ बीमारी होती है अच्छा किसी वक्त भी नहीं होता है और कुटुंबमें जो किसीके संतानका सुख है तो जरका सुख नहीं और जरका सुख है तो सन्तानका सुख नहीं कदाचित् जर और संतानका सुख हो भी जाय तो दिलको निहायत तकलीफ रहती है कुटुंबको सुख नहीं रहता सो पितरोंके वास्ते गयाश्राद्ध अथवा पिण्डारा करवा तेरे कुटुंबमें सब बातका सुख

होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।३२७।। हुक्मी शकल ≡ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सुपनेका है" तू पूछता है कि, मुझको स्वप्न बहुत नाकिश आते हैं निषिद्ध सवारी मनुष्योंकी मृत्यु, विवाह, जलमें तैरना, ऊंट, बंदर और पक्षियोंकी तरह उड़ना और अपने पितरोंके संग बतलाना ऐसे सुपने आते हैं निहायत तकलीफ होती है सो तू स्वप्नेश्वरीके मंत्रका आराधन करवा और काले तिलोंसे पीपलके दरख्तमें पानी डाल तुझको फिर कभी दुःस्वप्न नहीं आवेंगे फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।३२८।। हुक्मी शकल ≡ हुमरा सावित मंगल देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! सवाल दुःस्वप्नका है पूछता है कि मुझको सुपने निहायत नाकिश आते हैं और रात्रिमें ऐसा मालूम पड़ता है कि, मुझको कोई दबा लेता है सो मैं बहुत तकलीफ पाता हूं यह उपद्रव किस प्रकारसे दूर होगा" हे पूछनेवाले ! तेरे पास जर बहुत मनुष्योंके पापसे आया है सो उन मनुष्योंका दिल बहुत तकलीफ पाया और जैसा धन तेरे पास है वैसा तैंने पुण्य भी नहीं किया सो तू ५ पल सोनेकी स्वप्नेश्वरीकी मूर्ति बनवाकर दिव्य-पद्धतिसे संकल्प कर नेक ब्राह्मणसे पूजन करवा और श्रद्धा माफिक दक्षिणासमेत नेक ब्राह्मणको दे और ५ दरख्त पीपलके लगा तुझको दुःस्वप्न न आवेंगे और तेरा दिल किसी कालमें न बिगड़ेगा संदेह मत कर अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।३२९।। हुक्मी शकल ≡ बयाज सावित चन्द्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वनके कटानेका है तू पूछता है कि इस वनको कटानेमें मुझको फायदा है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तुझको और रोजगार नहीं मिलता ? यह वनका कटाना तो मरते हुएका काम है तू और काम कर क्योंकि पहले तो हरे दरख्त कटवावेगा जो भाग्यवान् होते हैं वे तो बागमें दरख्त लगाया करते हैं धर्म या कीर्तिके लिये प्रायः यह इरादा सब मनुष्योंका रहता है परंतु जिससे ऐसा न हो सके तो काटनेका परहेज तो रखता है सो हे पूछनेवाले ! थोड़ी जिन्दगीमें इतना जबर पाप क्यों करता है और जिसने ऐसा व्यापार किया है उसको सुख नहीं रहा है और फायदा भी नहीं रहेगा सो तू यह काम मत कर और काममें तुझको लाभ बरजरूर होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।३३०।। हुक्मी शकल ≡ नुस्तुत् खारिज सूर्य्य-देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वनके कटानेका है तू पूछता है कि इस वनके कटवानेमें मुझको फायदा है या नहीं" सो तू इस वनको कटवाय और जुतवा तुझको फायदा बहुत होगा परंतु पुण्य खूब करना क्योंकि वन कटानेका बहुत पाप होता है सो पाप निवृत्ति करना जो न करेगा तो नमककी तरह गल जावेगा इससे पुण्य खूब करना संदेह मत कर इति प्रश्न पिण्ड ।।३३१।। हुक्मी शकल ≡ नुस्तुत् दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स !

तेरा सवाल राजाके खजानची होनेका है तू पूछता है कि मुझको राज्यमें खजानेका कार्य्य मिलेगा या नहीं जो मुझको मिल जावेगा तो मुझको फायदा होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले! तेरे दिन बहुत अच्छे हैं सो तेरे सिपुर्द राज्यका खजाना होगा परंतु राजाका एक मुसाहब जल्लाद और बदनजर है उसकी मित्रताके वास्ते संगमेश्वरीके मंत्रका पुरश्चरण योग्य ब्राह्मणोंसे करवा पीछे खजानेका काम तुझको हो जावेगा और इस कार्य्यमें तुझको दिन दिन लाभ ज्यादे होगा सो तू संगमेश्वरीका आराधन कर तेरे ऊपर राजाकी मेहरवानी भी रहेगी और लाभ ज्यादे होगा फिकर मत कर अल्लाताला सब अच्छा करेंगे इति प्रश्न।। पिण्ड।। ३३२।। हुक्मी शकल ⁝ अतबे खारिज केतु देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल राज्यके खजानची बनानेका है" सो राज्यमें खजानचीकी चाह है खजानची बननेके वास्ते और भी कहते हैं उद्योग भी करते हैं परंतु अब तक किसीका भी उद्योग पूरा नहीं पड़ा है परंतु तुझको बहुत अभिलाषा हो रही है सो आज कल तेरे दिन जरा साधारण हैं सो तू कौबेरी महामायाका सवालक्ष जप और तद्दशांश हवनादि करवा यह काम तुझको मिलेगा अन्यको नहीं मिलेगा और तुझको बहुत लाभ होगा परंतु एक बार तुझपर उलझन पड़ेगी सो कौबेरीश्वरीका आराधन करना सब भय दूर हो जावेंगे फिकर मत कर तुझको लाभ बहुत होगा इति प्रश्न।। पिण्ड।। ३३३।। हुक्मी शकल ⁝ नकी मुनकलीब मंगलदेवकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल फौजदारीका है सो तू राजाका खर्च ओटा चाहती है कि, जो राजमें खर्च लगे सब मैं दे दूं फिर राज्यमें माल आवे तब व्याज समेत ले लेऊं सो इस काममें फायदा है या नहीं" सो हे पूछनेवाले! यह काम तुझको बरजरूर मिलेगा और राज्यमें तेरी मांगत है। सो तुझको काम भी होगा परंतु तेरे ऊपर एक राज्यका मुसाहब खिजा रहेगा सो उसके निवारण करनेके वास्ते तू शतचंडीपाठ करवा इसमें तुझको लाभ बहुत होगा पुण्य करना सब व्यवहारोंमें पुण्य सहायक है संदेह मत कर इति प्रश्न।। पिण्ड।। ३३४।। हुक्मी शकल ⁝ अतबेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल फौजदारीका है तू पूछता है कि इस राज्यमें घाटा बहुत है और कई वर्षसे यह फौजदारी मेरी ही है क्योंकि सब राज्यके खर्च मेरे ही पाससे उठे हैं और राज्यमें घाटा ज्यादे है अब मैं इस कामको छोड़ना चाहता हूं बल्कि मेरे पाससे भी कुछ लग जावे और यह काम छूट जावे तो मैं बहुत प्रसन्न हूं सो यह काम कुशलतासे छूटेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले! जिस वक्त तू छोड़ना चाहेगा उसी वक्त तेरे लिये राजा जाल करेगा क्योंकि इसने कोई भी अछूता नहीं जाने दिया है इसकी धर्ममें कुछ निगाह नहीं है यह तो पैसेका पूत है सो पहले कोई और साहूकार इस कामको ओट लेवे तो छोड़ देना कुछ भी तकलीफ

नहीं होगी और तुझको निहायत जलदी ही हो तो तू संकट विवर्त्तनी कालिकाके मंत्रका आराधन करवा तेरा मनोरथ पूर्ण होगा फिकर मत कर अल्लाताला अच्छा करेंगे इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।३३५।। हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा सावित बुध देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राज्यमें पोजदारी लेनेका है तू यह पोजदारी लेले तुझको बहुत लाभ होगा क्योंकि जिसने यह काम लिया है उसको ही बहुत फायदा रहा है सो तू संगमेश्वरीके मंत्रका आराधन करवा तुझको यह काम बरजरूर होगा और तुझको फायदा होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ।।३३६।। हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीव चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पोजदारीका है तू पूछता है कि, जिसने पोजदारी ली है उसको ही बहुत लाभ हुआ परंतु मुझको क्या दिनोंकी गरदिश है जिस दिनसे यह पोजदारी ली है उसी दिनसे वक्त पर तो भोजन नहीं किया और दिलको निहायत तकलीफ रहती है और इसको थोड़ा भी चाहते हैं परंतु छूटती नहीं यह मरा हुआ सर्प गलेमें पड़ गया निकसता नहीं" सो हे पूछनेवाले तुझको जो तकलीफ है इस पोजदारीसे नहीं है दिन नाकिश हैं तेरी पैदा तो पापकी है और पुण्य है नहीं पुण्य बिना पत्थर नहीं तिरता सो तू दशवां हिस्सा पुण्य कर और इस समय विष्णुसहस्रनामका पाठ करवा तुझको इसमें बहुत लाभ होगा तेरे सब शत्रु दूर होंगे इति प्रश्न ।। अष्टमस्थानं समाप्तम् ।। इति पूर्वार्द्धे द्वितीयपरिच्छेदः समाप्तः ।। अथ पूर्वार्द्धे तृतीयपरिच्छेदः ।। पिण्ड ।।३३७।। हुक्मी शकल ⁝ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पुण्य करनेका है तेरा दिल पुण्य करनेसे बहुत प्रसन्न होता है तू पूछता है कि, मेरे मनमें कई दफे पुण्य करनेकी इच्छा होती है सो यह पुण्य हो सकेगा या नहीं और कैसा फल होगा यह पूछता है" सो हे पूछनेवाले ! तेरा पहले जन्मका फल है इससे तेरी पुण्यमें निगाह रहती है तू पहले जन्ममें दक्षिणदिशामें महाराष्ट्र ब्राह्मण था ईश्वरके आराधनमें बहुत तत्पर रहा करता था तैने ईश्वरकी बहुत भक्ति की और तेरा यह भी दिल रहा कि मेरे पास धन होवे तो खूब पुण्य करूं पूर्वजन्ममें तैने पुण्यकी ही अभिलाषा नहीं की बल्कि धनकी भी, सो पहले जन्मके भजनसे और पुण्यकी अभिलाषासे तैने यह धन पाया है सो अब इस जन्ममें पहले जन्मका भी मनोरथ पूर्ण कर और तेरी कुटुंबमें विशेषवासना नहीं है केवल पुण्यमें वासना है सो तू पुण्य करके इस पुण्यहीसे वासना निवृत्त कर पहले ही जन्ममें तेरा मोक्ष हो जाता परंतु तेरी पुण्यमें वासना बनी हुई है सो अब अपना मनोरथ पूर्ण कर पश्चात् तेरा मोक्ष होगा संदेह मत कर पुण्य कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ३३८।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पुण्य करनेका है किसी वक्त तो

तेरे दिलमें ऐसा आता है कि पुण्य करूं और फिर कुछ काल पीछे तेरा दिल डुल जाता है कि न करूं सो तेरे पहले जन्मका अजाब है तू पहले जन्ममें ब्राह्मण था पराई निंदा किया करता था परंतु अपने नित्य नियममें समर्थ था सो जिस कालमें शरीर पूरा हुआ उस कालमें तकलीफ नहीं सही गई तब तैंने दान लेनेवाले ब्राह्मणोंकी निंदा की है उस पापके फलसे तुझको यह तकलीफ रही तब तैंने दिलमें यह विचारा कि फिर मेरा जन्म हो तो मैं भी ब्राह्मणोंको दान दूं इसी कारणसे तुझको दानमें प्रीति है और निंदाका फल कुत्सित होता है सो तू पुण्य कर तेरा भला होगा इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ।।३३९।। हुक्मी शकल ⚏ कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि, "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल जमीनके दानका है तेरे दिलमें जमीन के दान करने का है तू चाहता है कि और दानका तो ऐसा उत्तम फल नहीं है जैसा कि जमीन के दानका, परंतु यह दान तुझसे हो न सका सो तेरे पहले जन्मका अजाब है अब तू पहले गौका दान कर तुझको यह पुण्य बन जावेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ३४०।। हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल गऊके दानका है तू पूछता है कि, मेरा मनोरथ बहुत दिनोंसे है कि गऊका दान करूं परंतु हो नहीं सकता सो अब यह पूछता है कि गऊका दान मुझसे कब होगा" हे पूछनेवाले ! यह दान बहुत जबर है जिसकी बहुत अच्छा प्रारब्ध होवे उससे दान बनता है सो तेरे दिलमें तो बहुत है परंतु होता नहीं सो तेरे पहले जन्म का अजाब है तू पहले जन्ममें पूर्वदिशामें वैश्य था और एक साहुकारका गुमास्ता था वह साहुकार बहुत पुण्य किया करता था सो उसको दिखानेके वास्ते तू भी कुछ करता था परंतु तेरे दिलमें दया नहीं थी सो विना दया कुछ दान तैंने किया सो उस दानके प्रभावसे कुछ तेरे पास धन है परंतु निर्दयताके कारण तुझसे पुण्य नहीं बना सो तू राधा दामोदरकी दो सुवर्णकी मूर्ति बनवाकर षोडशोपचार पूजन करके नेक ब्राह्मणको दे तेरी बुद्धि शुद्ध हो जावेगी और तुझसे बहुत अच्छा दान बनेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ३४१।। हुक्मी शकल ⚍ फरहा मुनकलीब शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बहुत गऊके दानका है तू पूछता है कि मेरे से इन गउओंका दान कब होगा मैं दिलमें बहुत करता हूं परंतु मुझसे दान होता नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरे पहले जन्मका अजाब है तू पहले जन्ममें दक्षिण दिशामें क्षत्रिय था वेद शास्त्र पढ़ा हुआ था और दो भाई थे सो तेरी तो वेदमें ही श्रद्धा थी पुराणमें न थी और तेरे भाईकी सब शास्त्रों में श्रद्धा थी सो वह तो स्वर्गलोकको गया और तेरा भूलोकमें जन्म हुआ और पूर्व जन्ममें पुण्य नहीं किया इस कारणसे तेरी पुण्यमें रुचि है सो तू पहले श्रीमहाभारतादि श्रवण कर तेरी श्रद्धा बहुत होगी और तुझसे गौओंका दान भी बनेगा और बहुत फल होगा फिकर

मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ३४२।। हुक्मी शकल ⚍ उकलामुनकलीव शनि देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धनके दानका है तेरे दिलमें यह है कि इस लोकमें तो एक धनके सिवाय और कोई भी सुख नहीं देखा पर अब धनका दान करू जिससे आगे मुझको धन मिलेगा परंतु तुझसे हो नहीं सकता और तेरी संगति भी उत्तम नहीं है" सो पूछनेवाले ! पहले तो तू विष्णुयज्ञ कर और जप यज्ञ करवा जिससे तुझको ज्ञान होगा और यज्ञमें दक्षिणा विपुल दे और गौवोंका दान दे ऐसा करनेसे तुझसे दान बनेगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ।।३४३।। हुक्मी शकल ⚍ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सर्वस्व दानका है तेरे दिलमें यह है कि सर्वस्व दान करके श्रीगंगाजीके निकटजा रहूं सो दिलमें तो बहुत लग रही है परंतु किसी वक्त दिल फिर जाता है इससे तू पूछता है यह दान मुझसे बनेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! यह दान बहुत मुशकिल है वड़ा उत्तम पूर्व जन्मका कर्म होवे तो यह दान हो सकता है सो तू यह कर कि पहले ब्राह्मणोंसे जप यज्ञ व्रतादिक सहित करवा फिर सर्वस्वदान कर और एक ईश्वरके सिवाय और किसी वस्तुमें ध्यान मत रख श्रीगंगाजीका स्मरण रख फिकर मत कर ईश्वर तेरा मनोरथ सिद्ध करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ३४४।। हुक्मी शकल ⚍ हुमरा सावित मंगल देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सर्वस्वदानका है तू पूछता है कि गृहस्थसे मेरा दिल हट गया है और अवस्था भी मैंने पाली अब सर्वस्व त्याग वानप्रस्थाश्रमका तेरा मनोरथ है" सो तेरे पूर्वजन्मका पुण्य ज्यादा है तू पहले जन्ममें विष्णुभक्त था तैंने विष्णुकी भक्ति बहुत की थी सो उसके प्रभावसे तेरे दिलमें यह अंकुर हैं सो तू कुछेक काल तेरे घरमें और टिकेगा और पीछे तुझको ज्ञान होके वानप्रस्थ हो जावेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ३४५।। हुक्मी शकल ⚍ बजाय साबित चन्द्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल ग्रहोंके दानका है तू पूछता है कि मेरे मनमें ग्रहोंके दान करनेकी बहुत दिनोंसे लग रही है परंतु जब मनोरथ करूं तब ही कुछ विघ्न हो जाय सो यह दान कब हो सकेगा" सो हे पूछनेवाले ! तुझको दिन निहायत नाकिश थे इससे तुझको निहायत तकलीफ रही है और जब तकलीफके दूर करनेके वास्ते ग्रहोंके दान की दिलमें लाये सो उसी वक्त कुछ विघ्न हो गया सो अब नाकिश दिन तो गये और सामान्य दिन रहे हैं सो अब दान कर तेरे कसाला भी शान्त होवेगा और ग्रहोंका दान भी अब होवेगा हे पूछनेवाले ! जिन मनुष्योंको शास्त्रका विश्वास नहीं होता है वह इसी प्रकारसे तकलीफ पाया करते हैं क्योंकि पहले तो वे शास्त्रके अविश्वास होनेसे करते नहीं और पीछे नाकिश दिन कुछ करने नहीं देते सो दान अब होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।३४६।। हुक्मी शकल ⚍ नुस्रुत

खारिज सूर्य्य देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल ग्रहोंके दानका है तुझको यह संदेह है कि मैं जिसके पास जाता हूं वही कुछ बतलाता है पूजा करनेवालोसे पूछा उसने देई देवताकी बतलाई और बुद्धिमान् लोगोंसे पूछा उन्होंनें पूर्वकर्मका पाप बतलाया और ज्योतिषियोंको पूछा तो उन्होंने ग्रहोंका दान बतलाया सो मैं यह पूछता हूं कि मेरे क्या दोष है" पूछनेवाले ! सब एक ही बात है कोई ईश्वरको मानता है कोई खुदाको कोई और किसीको सो सब एक हैं इसमें संदेह मत कर ग्रहोंका दान कर आराम बरजरूर होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ।।३४७।। हुक्मी शकल ⁞ नुस्रुत् दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल ग्रहणमें दानका है तू पूछता है कि ग्रहणके दानका क्या फल है" हे पूछनेवाले ! ग्रहणके दानके समान और कालके दानका ऐसा फल दूसरा नहीं है तू सूर्य्यग्रहणमें दान किया चाहता है सो तू दान करेगा और तुझको पुण्य बहुत होगा शास्त्रमें सूर्य्यग्रहणमें दानका यह फल लिखा है कि सूर्य्यग्रहणमें दिया हुआ सहस्रगुण होता है, सो तू दान कर फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।३४८।। हुक्मी कशल ⁞ अतवेखारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चन्द्रग्रहणमें दानका है तू पूछता है कि चन्द्रग्रहणमें दान करनेका क्या फल है" सो हे पूछनेवाले ! चन्द्रग्रहणमें शतगुणा फल होता है तू पुण्य करेगा और तुझको बहुत लाभ पुण्यका होगा यह पुण्य तेरे पूर्वजन्मके संस्कारसे बनेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ३४९।। हुक्मी शकल ⁞ नकी मुनकलीब मङ्गल देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल कन्याके दानका है तू पूछता है कि मेरा मनोरथ कन्याके दानका है बहुत दिन हो गये अब कब होगा और उसका क्या फल है" सो हे पूछनेवाले शख्स ! तेरा पूर्वजन्मका पुण्य उदय नहीं हुआ था इससे अबतक यह नहीं हो सका और अब तेरे पुण्यका उदय हुआ है सो यह विवाह अब होनेवाला है क्योंकि तेरे पूर्व पुण्यका उदय हुआ है हे पूछनेवाले ! कन्याके दानका बहुत फल है इस कन्याके दानके वास्ते युधिष्ठिरादिकोंका भी बहुत अभिलाषा रही सो तू ब्राह्म विवाह करवा तुझको बहुत फल होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ३५०।। हुक्मी शकल ⁞ अतवे दाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल कन्याके विवाहका है तू पूछता है कि मेरा मनोरथ ब्राह्मणकी कन्याके विवाहका है सोगया या नहीं और ब्राह्मणकी कन्याके विवाहका क्या फल है यह पूछता है" सो हे पूछनेवाले ! ब्राह्मणकी कन्याके विवाहका बहुत फल है ऐसी बुद्धि होनी बहुत मुशकिल है परंतु तेरे पूर्व जन्मके पुण्यका उदय हुआ है सो तू पहले जन्ममें दक्षिण दिशामें क्षत्रिय था सो तेरे शरीरसे उपकार किसीका भी नहीं हुआ और पाप तो तेरे शरीरसे बहुत बना परंतु एक ब्राह्मणकी समर्थ लड़की हो रही थी

तैंने उस लड़कीका विवाह करवाया उस पुण्यके अंकुरसे तेरे दिलमें यह आता है कि एक ब्राह्मणकी लड़की विवाह कराऊं सो तू विवाह करवा अब बरजरूर होवेगा और तुझको बहुत पुण्य होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ३५१।। हुक्मी शकल = इज्जतमा साबित बुध देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल ब्राह्मण जिमानेका है तू पूछता है कि जिस वक्त मैं ब्राह्मण जिमानेका मनोरथ करता हूं उस वक्त कुछ विघ्न होजाता है इसका क्या कारण है" सो हे पूछनेवाले ! तेरे पहले जन्मके कर्मका फल है तू पहले जन्ममें मध्यदेशमें शूद्र था यदि और भी कोई ब्राह्मणको खिलाता तो तू अपने दिलमें बहुत तकलीफ मानता था सो तैंने जन्म लिये पीछे अपने हाथसे कुछ भी पुण्य नहीं किया था उस पापसे तेरा पैसा सुकृतमें नहीं लगता है और उसी जन्ममें तेरे हाथसे एक पुण्य हुआ था कि एक दिन तैंने अतिथिको अन्न दिया था सो उसके फलसे तेरे पास रिजक है सो तू पहले ब्राह्मणोंका पूजन कर और उनके चरणोंका दक्षिणांगुष्ठ धोकर पी फिर तेरा मनोरथ सिद्ध होगा सो एक ब्राह्मणको भोजन दियेका यह फल है संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ३५२।। हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीब चन्द्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल ब्राह्मण स्वजाति जिमानेका है सो तू पूछता है कि मैं यह काम किया चाहता हूं सो यह कार्य्य मेरा पार पड़ेगा या नहीं और मेरे दिलमें जैसा है वैसा बनेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरा कार्य्य बहुत अच्छा होगा तेरे दिलमें यह संदेह है कि कोई तो कैसे ही कहता है कोई कैसे ही सो कदाचित् धनभी लगे और यश भी न मिले ऐसा काम तो न हो जायगा सब मनुष्योंकी संमति एक नहीं होती है सो तू फिकर मत कर अव्वल तो तेरा पूर्व जन्मके भजनका प्रताप है क्योंकि पूर्व जन्मके प्रताप विगर बहुत पैसा होजावे तो भी यश न आवे तू फिकर मत कर तेरा कार्य्य बहुत अच्छा बनेगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।।३५३।। हुक्मी शकल ≐ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यह है कि मेरे पास पहले तो धन था सो विवाह तथा और कार्य्य भी बहुत अच्छे किये परंतु अब धन भी नहीं रहा और पैदा भी नहीं है सो मेरे दिन कभी सुधरेंगे भी" सो हे पूछनेवाले ! जिस वक्त तेरे पास धन था उस वक्त तो देवता कोई न जाना साधु ब्राह्मणसे भी प्रीतिसे नहीं बोला और अब नाकिश दिनोंमें तुझको तकलीफ हुई सो अब सबकी आराधना करता है सो हे पूछने-वाले ! जो सुखमें ईश्वरको भजे तो दुःख न होवे और दुःखमें तो सभी भजते हैं सो तू नाकिश दिनोंमें गुजरान कर अब ३ वर्ष ११ मास और ७ दिन और नाकिश रहे हैं सो नाकिश दिनोंमें गुजरान कर अब पछताये क्या होता है और संकटेश्वरीके मंत्रका आराधन रख फिकर मत कर आराधन करनेसे फिर धन होगा संदेह मत कर इति

प्रश्न ।। पिण्ड ।।३५४।। हुक्मी शकल ⠶ कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल ऋण दूर होनेका और धनके लाभका है तू यह पूछता है कि मुझको तकलीफके ही दिन बीतेंगे या अच्छे भी आवेंगे और यह करजा कब दूर होगा" सो हे पूछनेवाले ! इन नाकिश दिनोंमें निहायत तकलीफ पायी परंतु अब नाकिश दिन गये केवल १ मास और रहे हैं सो उद्यम कर तेरा ऋण दूर होगा और अब तेरे पास पैसा इकट्ठा होगा परंतु श्रीरवीश्वरीका पाठ करवा तुझको लाभ बरजरूर होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। इति नवमस्थानं समाप्तम् ।। अथ ।। पिण्ड ।।३५५।। हुक्मी शकल ⠶ कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल ईश्वरके आराधनका है तू पूछता है कि मुझको शिवजीका इष्ट है सो यह शिवजी महाराज मेरा मनोरथ सिद्ध करेंगे या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरा शिवजीका आराधन बहुत अच्छा है परंतु तू शिवपुराणोक्त विधान कर शिवजी तुझपर जल्दी ही प्रसन्न होंगे सन्देह मत कर भक्ति कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ३५६ ।। शकल ☰ जमात साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल ईश्वरके आराधनका है तू पूछता है कि मेरी जैसी भक्ति शिवजीमें है वैसी बनी रहेगी या नहीं" सो तेरी भक्ति इससे ज्यादे बढ़ेगी क्योंकि तेरा पूर्व जन्मका संस्कार है सो हे पूछनेवाले ! तू पहले जन्ममें दक्षिणमें भिल्लजाति था और शिवजीका परम भक्त था परंतु जाति कम होनेसे यथार्थ भक्ति नहीं हुई शिव भक्तिमें तेरी प्रीति बनी रही सो तू अब भी शिवभक्त है और कुछ संदेह मत कर तेरे वास्ते अब शिवलोक तैयार है फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।३५७।। हुक्मी शकल ⠶ फरहा मुनकलीब शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विष्णुके आराधनका है तू पूछता है कि मैं विष्णु भगवानका आराधन करता हूं सो मुझपर विष्णु प्रसन्न होंगे या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! विष्णु भगवान् तो सबहीके एकसे हैं परंतु भक्तोंके तो वशीभूत हैं सो तू विष्णुपुराणोक्त विष्णुपूजन कर बरजरूर तेरा मनोरथ सिद्ध होगा सन्देह मत कर परिश्रम किसीका वृथा नहीं जाता इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।३५८।। हुक्मी शकल ⠶ उकला मुनकलीब शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विष्णु आराधनका है सो तू पूछता है कि मेरी विष्णु भगवानमें ऐसी ही प्रीति बनी रहेगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरी इससे भी ज्यादे प्रीति बनी रहेगी क्योंकि पहले जन्मका तू विष्णुभक्त है सो हे पूछनेवाले तू पहले जन्ममें श्रीगंगातटपर रहनेवाला वैश्य था और विष्णुकी भक्ति और आचार विचारमें पूरा था परंतु ब्राह्मणोंका बहुत तिरस्कार किया करता था उससे तेरी पुष्कल भक्ति नहीं हुई सो अब तू ब्राह्मणोंके चरण धो

कर पी और मस्तकमें धारण कर तेरी भक्ति विष्णुमें पुष्कल होगी फिकर मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड ।। ३५९।। हुक्मी शकल ☰ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल ब्रह्माके आराधनका है तू पूछता है कि मैं ब्रह्माका आराधन करूं तो ब्रह्मा मुझसे प्रसन्न होंगे या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तू ब्रह्माका आराधन कर तेरे लिये ब्रह्मा बरजरूर प्रसन्न होंगे जो कोई मनुष्य शत्रुका भी आराधन करते हैं शत्रु भी उनके वशीभूत हो जाते हैं सो ब्रह्मा तो जगत्के मातापिता हैं परंतु तू ब्रह्मवैवर्त्त पुराणसे ब्रह्माके पूजनका विधान देखकर कर तेरा मनोरथ सिद्ध होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ।।३६०।। हुक्मी शकल ☰ हुमरा सावित मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल ब्रह्माके आराधनका है तू पूछता है कि जैसी भक्ति मेरी ब्रह्मा देवतामें है वैसी और देवतामें नहीं सो मैं यह पूछता हूं कि यह मेरी प्रीति ऐसी ही ब्रह्माजीमें बनी रहेगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तू फिकर मत कर तुझको पहले जन्ममें ब्रह्माने वर दे रखा है तू पहले जन्ममें उत्तरदिशा हिमाचल पर्वतमें ब्राह्मण था सो तेरे उस जन्मसे पूर्व जन्मका किया हुआ कर्म अच्छा नहीं था जिससे तू दरिद्री था सो दरिद्रके कारणसे बहुत तकलीफ पाया तैने अपने आत्माको बहुत धिक्कार दिया और ब्रह्माको भी बहुत गाली दी परंतु जब तेरा शरीर पूरा होने लगा तेरे दिलमें यह आई की ब्रह्माका क्या दोष है ब्रह्माको मैंने वृथा गालियां दीं अब ब्रह्माका इतना आराधन करे जो अच्छा फल होवे ऐसा चित्तमें करते तुझको ब्रह्माका दर्शन हुआ उन्होंने हे पुत्र ! वर मांग ऐसा कहा तो तू भक्ति ही मांगता भया सो तेरी भक्ति रहेगी इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ३६१।। हुक्मी शकल ।।.। बयाजे सावित चंद्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल दिक्पालोंके आराधनका है तू पूछता है कि यदि मैं दिक्पालोंका आराधन करूं तो दिक्पाल मेरे ऊपर प्रसन्न होंगे या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! दिक्पालोंका आराधन कर और बलिदान तेरे ऊपर दिक्पाल प्रसन्न होंगे और तेरा मनोरथ सिद्ध होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।३६२।। हुक्मी शकल ⁝ नुस्रुत् खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "हे पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल दिक्पालोंके आराधनका है सो तू पूछता है कि मुझको दिक्पालोंके आराधनमें प्रीति है सो वह बनी रहेगी या नहीं और मेरा मनोरथ सिद्ध होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तू फिकर मत कर तेरी दिक्पालोंमें प्रीति बहुत बनी रहेगी क्योंकि तू पहले जन्ममें ऋषि ब्राह्मण था सो कर्ममें बहुत सावधान था सो तैने दिक्पालोंको बहुत बलि दिवाई हैं परंतु ब्राह्मणोंकी निंदा किया करता था सो उस पापसे किसी वक्त तेरी प्रीति घट जाती है सो तू ब्राह्मणोंका पूजन किया कर दिक्पाल तुझपर बहुत प्रसन्न होंगे

जिससे निरंतर तेरी प्रीति उनपर बनी रहेगी और तेरा मनोरथ सिद्ध होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ३६३।। हुक्मी शकल =: नुस्रुत् दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल हनुमान्‌जीके आराधनका तू यह पूछता है कि मैं हनुमान्‌का आराधना करना चाहता हूं सो हनुमान्‌जी मुझपर प्रसन्न होवेंगे या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तू श्रीहनुमान्‌का आराधन कर और जितेन्द्रिय रह तेरे ऊपर हनुमान् प्रसन्न होवेंगे और तेरा मनोरथ सिद्ध होगा परंतु रात्रिमें आराधन करना और बलि अपने पास रख लेना जिस वक्त दर्शन होवे उस वक्त नयन न मीचना और भय न करना बलि देना तेरा मनोरथ सिद्ध होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।३६४।। हुक्मी शकल :: अतवे खारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल हनुमान्‌के आराधनका है तू पूछता है कि मेरी भक्ति जैसी अब हनुमान्‌जीमें है वैसी बनी रहेगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तू फिकर मत कर तेरा तो इसका इष्ट है तू पहले जन्ममें किष्किन्धा पुरीमें ब्राह्मण था और हनुमन्‌जीका परम भक्त था सदा भक्तिमें तत्पर रहता था तुझको एकदफे दर्शन हुए तैंने यही मांगा कि मैं तुम्हारी भक्ति चाहता हूं अब तेरे पास जो यह धन है सो भी उसकी कृपा है परंतु हे पूछनेवाले ! जो श्रीहनुमान्‌का आराधन किया करते हैं उनकी कुटुंबमें प्रीति नहीं रहा करती औरत तथा संतानका भी सुख कम हुआ करता है सो तूम संदेह मत कर तेरे प्रीति ज्यादे रहेगी और तेरा मनोरथ सिद्ध होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ३६५।। हुक्मी शकल :- नकी मुनकलीब मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल गोपालजीके आराधनका है तू पूछता है कि मेरे मनमें गोपालजीके आराधनकी है सो आराधन मुझसे हो सकेगा या नहीं और यदि हो सके तो मेरा मनोरथ सिद्ध होगा या नहीं सो हे पूछनेवाले ! तू गोपालजीका आराधन कर तुझको बहुत शुभदायक है और तेरा मनोरथ सिद्ध होगा सन्देह मत कर जिसने गोपालजीका आराधन किया है उसको किसी बातकी तकलीफ नहीं रही है सो तू आराधन कर सब पाप दूर होवेंगे उत्तम लोकप्राप्ति होवेगी फिकर मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड ।।३६६।। हुक्मी शकल -: अतवेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल गोपालजीके आराधनका है सो तू यह पूछता है कि गोपालजीके आराधनमें मेरी ऐसी ही प्रीति रहेगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तूने पहले जन्ममें गोपालजीकी भक्ति पूर्ण की है तू पहले जन्ममें वृन्दावनमें ब्राह्मण था और श्रीगोपालजीकी भक्तिमें बहुत तत्पर रहता था सो स्वप्नमें कई दफे गोपालजीने तुझको दर्शन दिये तब तैंने भक्ति ही मांगी सो यह भक्ति बहुत शुभदायक है और जिसने यह भक्ति की है उसको किसी बातका क्लेश नहीं रहा है सो तेरी भक्ति बनी रहेगी फिकर मत कर

और तुझको उत्तम लोकप्राप्ति होगी हे पूछनेवाले ! जो स्वांग भरकर भी गोपालजीका पूजन करते हैं उनको भी उत्तम लोककी प्राप्ति हुआ करती है सो तू कर्मका संदेह मत कर तुझको उत्तम पदकी प्राप्ति होगी फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।३६७।। हुक्मी शकल इज्जतमा सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल श्रीगंगाजीके आराधनका है तू पूछता है कि; श्रीगंगाजीके आराधन में मेरी प्रीति है सो मुझको कैसी शुभदायक है" सो हे पूछनेवाले ! तुझको श्रीगंगाजीका आराधन बहुत शुभदायक है और तेरा श्रीगंगाजीसे षड्वर्ग भी मिलता है सो तू श्रीगंगाजीका आराधन रख तेरे मनोरथ सिद्ध होंगे परलोकमें विष्णु-पद प्राप्त होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ३६८।। हुक्मी शकल तारीख मुनकलीव चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल श्रीगंगाजीके आराधनका है सो तू पूछता है कि जैसी श्रीगंगाजीमें मेरी प्रीति है वैसी बनी रहेगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरी प्रीति ज्यादा होगी क्योंकि तुझको पहले जन्मका वरदान है तू पहले जन्ममें पूर्वमें वैश्य था और प्रभात समय सदैव श्रीगंगाजीमें स्नान करता था और जिस कालमें तेरा शरीर पूरा होने लगा उस कालमें तू अपने लड़कोंसे कहने लगा कि, मुझको श्रीगंगाजीके तीरपर ले चल सो वे तुझको ले गये वहां तेरा अंतकाल होने लगा तब विष्णुभगवान्के पार्षद विमान लेकर तेरे लेनेके वास्ते आये उनको प्रणाम करके तैंने उनसे यह कहा कि, मेरी प्रीति श्रीगंगाजीके भजनमें है पर मेरी प्राप्ति नहीं हुई पार्षद बोले इसी कारणसे तेरा द्विज-घरमें जन्म हुआ है तू कुछ फिकर मत कर तेरी प्रीति बनी रहेगी पश्चात् उत्तम लोकप्राप्ति होगी संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ३६९।। हुक्मी शकल लहियान खारिज बृहस्पतिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रघुनाथजीके आराधनका है तू पूछता है कि यदि मैं रघुनाथजीका आराधन करूं तो मुझपर रघुनाथजी प्रसन्न होंगे या नहीं और मुझसे हो सकेगा या नहीं" सो पूछनेवाले ! श्रीरघुनाथजीका आराधन तुझको बहुत शुभदायक है और तुझसे आराधन हो सकेगा और तेरा सब मनोरथ सिद्ध होगा हे पूछनेवाले ! रघुनाथजीके आराधनसे कौनसा कार्य्य असाध्य है कोई भी नहीं सो तू निस्सन्देह कर फिकर मत कर इसीके करनेसे हनुमान् समुद्रको पार कर गये थे इति प्रश्न ।।पिण्ड।।३७०।। हुक्मी शकल कब्जुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रघुनाथजीके आराधनका है तू पूछता है कि मेरी प्रीति रघुनाथजीमें ऐसी ही बनी रहेगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तैंने पहले जन्ममें बहुत आराधना किया है सो तेरी प्रीति बहुत होगी फिकर मत कर त पहले जन्ममें पश्चिममें ब्राह्मण था सो श्रीरघुनाथजीका आराधन बहुत करता था

इससे श्रीरघुनाथकी तेरे ऊपर कृपा है सो तेरी प्रीति बनी रहेगी फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ३७१।। हुक्मी शकल ⁞ कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल श्रीभैरवजीके आराधनका है तू पूछता है कि, मेरी प्रीति श्रीभैरवजी देवतामें है मैं श्रीभैरवजीका आराधन करूं तो मेरा मनोरथ सिद्ध होगा या नहीं और श्रीभैरवजी प्रसन्न होंगे या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! षड्वर्ग चक्रसे तेरा और श्रीभैरवजीका वर्ग मिलता है सो तू बरजरूर श्रीभैरवजीका आराधन कर तुझपर श्रीभैरव प्रसन्न होंगे और गायत्री मंत्रकरके आत्माका शोधन और रक्षा कर और काले कुत्ते को बलि दे तेरे सब मनोरथ सिद्ध होंगे फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ३७२ ।। हुक्मी शकल ⁞ जमात सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल श्रीभैरवजीके आराधनका है तू पूछता है कि, मैने श्रीभैरवका आराधन किया परंतु कुछ भी फल नहीं हुआ और कुछ भय भी नहीं हुआ सो मेरे लिये श्रीभैरव देवता प्रसन्न होंगे या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! श्रीभैरव तेरे ऊपर प्रसन्न ही हैं पर जो तू चाहता है वह सिद्ध न होगा क्योंकि तुझको प्रत्यक्ष श्रीभैरव नहीं हो सकते तू पहले जन्ममें दक्षिणमें ब्राह्मण था तैने और कार्य्य तो खोटे किये परंतु एक गायत्रीका भजन किया था और इस जन्ममें भी तैने अच्छा काम नहीं किया है परंतु पहले जन्मके गायत्रीके तेजसे तेरे प्रत्यक्ष श्रीभैरव नहीं हो सकते क्योंकि यह मलिन देवता हैं और जो तू प्रत्यक्ष देवता चाहे तो देवताको शुद्ध भावसे आराधन कर प्रत्यक्ष होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ३७३।। हुक्मी शकल ⁞ फरहा मुनकलीव शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल देवदोषका है और दुर्गाके आराधनका है तू पूछता है कि मेरी दुर्गामें प्रीति बहुत है इससे श्रीदुर्गाका आराधन करनेकी दिलमें है सो मैं दुर्गाका आराधन करूं तो दुर्गा मेरे ऊपर प्रसन्न होगी या नहीं और मेरा मनोरथ सिद्ध होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तू श्री दुर्गाका आराधन कर और बलिदान दे तेरे ऊपर श्रीदुर्गा बरजरूर प्रसन्न होगी फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।३७४।। हुक्मी शकल ⁞ उकला मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल श्रीदुर्गाके आराधनका है तू पूछता है कि, मेरी दुर्गामें बहुत प्रीति थी और मैंने दुर्गाका बहुत आराधन किया परंतु जैसा आराधन किया वैसा फल नहीं देखा सो मैं यह पूछता हूं कि, मेरे करनेमें कुछ न्यूनता तो नहीं जो दुर्गा सिद्ध नहीं होती है" सो हे पूछनेवाले ! दुर्गा तो सिद्ध ही है परंतु तेरे करनेमें कुछ त्रुटि रही है सो तू अब अच्छा मुहूर्त्त देखकर आराधन कर जितेन्द्रिय रह सावधान होकर दुर्गापाठ कर और बलिदान दे तेरे ऊपर श्रीदुर्गा प्रसन्न होगी तेरा मनोरथ सिद्ध होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।।

पिण्ड ।। ३७५।। हुक्मी शकल ☰ अंकीश शनिदेवता की है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यक्षिणीके आराधनका है सो तू यह पूछता है कि मेरा मनोरथ यक्षिणीके आराधनका है मैं यक्षिणीका आराधन करना चाहता हूं सो यक्षिणी सिद्ध होवेगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तू यक्षिणीकी मूर्तिका ध्यान करके उसका आराधन कर और संकटेश्वरीकी मूर्तिका पूजन करके 'आपोहिष्ठा' इस मंत्रसे स्नानकर पीछे यक्षिणीके मंत्रका आराधन कर और रात्रि दिन किसी औरतका मुख मत देख यक्षिणी तुझको बरजरूर सिद्ध होगी फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ३७६।। हुक्मी शकल ☰ हुमरासावित मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यक्षिणीके सिद्ध करनेका है तू पूछता है कि मैंने बहुत परिश्रम किया परंतु यक्षिणी सिद्ध नहीं हुई" सो हे पूछनेवाले ! मंत्र तो सबही सिद्ध हैं परंतु साधक होना बहुत मुशकिल है श्रीगायत्री करिके तेरा शरीर शुद्ध है पहले जन्ममें तू ब्राह्मण था दक्षिण देशमें रहता था और वेद पढ़ा था सो गायत्रीका जप बहुत करता था परंतु एक कालमें तूने अपने पिताका अनादर किया वह वृद्ध था उसके मुखसे यह निकला कि हे मूर्ख ! तुझपर देवता कभी प्रसन्न न होगा यह शाप दिया सो हे पूछनेवाले ! उस शापसे तेरा मंद भाग्य है और देवताकी अप्रसन्नता है इससे अब तू अपने पितामहकी सुवर्णकी या मृत्तिकाकी मूर्ति बनवाकर पुष्यनक्षत्रसे लेकर पुष्यनक्षत्र पर्य्यन्त उस मूर्तिका पूजन कर और पितृ-संहिताका पाठ कर फिर यक्षिणीके मंत्रका यथोक्तविधिसे जप कर यक्षिणी सिद्ध होगी फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ३७७।। हुक्मी शकल ☰ बयाज सावित चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल गृहदेवताके आराधनका है तू पूछता है कि मेरे घरमें कोई बातका बंधेज नहीं है सो मैं वास्तुदेवताका पूजन करना चाहता हूं उस पूजन करनेसे वास्तुदेवता प्रसन्न होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! परिचर्या करनेसे सब ही प्रसन्न हो जाते हैं बल्कि शत्रु भी मित्र समान हो जाता है और जो देवता हैं यह तो सबके मातापिता हैं सो वास्तु आराधन करवा सब आनंद बरजरूर होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ३७८।। हुक्मी शकल ☰ नुस्रुत् खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वास्तुदेवताके आराधनका है तू पूछता है कि मैंने वास्तुदेवताका आराधन किया परंतु वह प्रसन्न न हुआ जिन वस्तुओंकी मुझको पहले अभिलाषा थी और जो मेरे पास न थी उनमेंसे किसी भी वस्तुका लाभ और उत्सव न हुआ" सो हे पूछनेवाले ! तेरी नीतिमें खलल है जो पुण्यका काम करता है उसमें तेरी श्रद्धा कम जचती है और जिस वक्त करता है उस वक्त तमोगुण भी आ जाता है सो अब आस्तिक बुद्धिसे और सतोगुणसे अच्छे मुहूर्त्तमें कर तेरा गृहदेवता प्रसन्न होवेगा

संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ३७९ ।। हुक्मी शकल ⁖ नुस्रुत् दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सूर्य्य देवताके आराधन का है तेरे नेत्रोंमें बीमारी है उसके दूर होनेक वास्ते तू आराधन किया चाहता है सो तू यह पूछता है कि सूर्य्यदेवताके आराधनसे मुझको सूर्य्यदेवता ज्योति देंगे या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! विश्वास कारण है जो तू श्रद्धा करके और यथोवतविधिसे करेगा तो तेरे लिये सूर्य्यदेवता बरजरूर प्रसन्न होंगे परंतु तुझसे यथार्थ आराधन नहीं हो सकेगा क्योंकि थोड़े दिनसे तेरी बुद्धि बिगड़ रही है सो तू पहले गायत्रीका आराधन कर पीछे सूर्य्यका आराधन करना सूर्य्यदेवता प्रसन्न होंगे तेरे नेत्रोंमें बरजरूर आराम होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ३८० ।। हुक्मी शकल ⁖ अतवेखारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि "हे पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल नेत्रोंकी बीमारीका है सो तेरे नेत्रोंमें कुछ पीड़ा नहीं है तुझको पहले तो थोड़ा कम दीखे था और अब दिन २ पर नेत्रोंकी ज्योति घटती जाती है जिससे तू नेत्रोंमें निहायत तकलीफ मान रहा है और सब बातकी मौज है" सो हे पूछनेवाले! तेरे पहले जन्मका अजाब है तू पहले जन्ममें पश्चिमदिशामें द्विजन्मा वैश्य था दान पुण्य करनेमें तेरी बहुत प्रीति थी और सदावर्त्त भी तेरे मकानपर था सो उससे तेरे यहां सब आनंद है परंतु एक शास्त्र का पढ़ा हुआ ब्राह्मण यह विचार कर तेरे मकानपर आया कि कुछ मिलेगा सो जिस कालमें वह तेरे पास आया उस कालमें तैंने अभ्युत्थान और आसन नहीं दिया और तू उससे यह बोला कि अंधा है ? कहां चला आता है सो वह ब्राह्मण उसी वक्त उलट गया और यह शाप दे गया कि अंधेको अंधा दीखै है सो तुझको शाप है इससे अब ब्राह्मणोंके पग पूज और सूर्य्यका आराधन कर आराम होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। इति दशमस्थानं समाप्तम् ।। अथ पिण्ड ।। ३८१ ।। हुक्मी शकल : नकी मुनकलीव मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "हे पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रोजगारका है तू पूछता है कि यह रोजगार मैं करता हूं इस रोजगारमें मुझको विशेष लाभ नहीं हुआ सो अब होगा या नहीं और अन्य रोजगारको बहुत दिलमें करता हूं परन्तु बनता नहीं" हे पूछनेवाले ! तुझको इसी रोजगारमें लाभ होगा परंतु अब बहुत दिनोंसे तेरे दिन नाकिश आ रहे हैं सो नाकिश दिनोंमें लाभके वास्ते उद्योग करता है परंतु फायदा नहीं होता और इसी रोजगारमें अनेक मनुष्य बन गये हैं सो तू संकटविनाशनीके मंत्रका संकल्प यथाशक्ति दक्षिणासमेत नेक ब्राह्मणको इसी वक्त दे तुझको लाभ बरजरूर होगा अब दो वर्ष ३ मास ११ दिन नाकिश और रहे हैं फिकर मत कर लाभ बरजरूर होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ३८२ ।। हुक्मी शकल ⁖ अतवेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रोजगारका है तू पूछता

है कि कोई रोजगार किया चाहता हूं वह चलेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! रोजगार तेरा अब भी अच्छा है परंतु और लोगोंके रोजगारको देखकर तेरा मन चलता है सो तू रोजगार कर तू जैसा लाभ चाहता है वैसा ही लाभ होगा परंतु जिस वक्त तेरे दिलमें सचावट इस रोजगारकी हो जाय उस वक्त सवालक्ष धनेश्वरीके मंत्रका जप दक्षिणासमेत नेक ब्राह्मणको दे और किसीसे कहे मत कहनेसे जप तपका फल नहीं होता है संदेह मत कर तुझको लाभ बरजरूर होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।३८३।। हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने-वाले शख्स ! तेरा सवाल रोजगारका है तू पूछता है कि रोजगार कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! अब दिन तुझको नाकिश हैं तू बारंबार दिल करता है परंतु दिनोंकी गरदिश करके दिलमें सचावट नहीं होती सो तू फिकर मत करो तेरा रोजगार ६१ दिन बाद होगा परंतु तू धनेश्वरीके महामंत्रको जप बलिदान दे और ब्राह्मणोंको जिस वक्त जपका संकल्प दे उसी वक्त दक्षिणा भी उनको दे तू फिकर मतकर रोजगार होगा आल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ।।३८४।। हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीव चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रोजगारका है तू पूछता है कि यह रोजगार मेरा कब होगा" सो तेरा रोजगार होनेवाला है परंतु जो तेरा दिल रोजगारको चाहता है उससे कुछ देर पीछे दिल हट जाता है सो चंद्रमा तेरे जन्मपत्रमें विरुद्ध है वही तेरे दिलको स्थिर नहीं रहने देता सो तू ११ पलकी चंद्रमाकी मूर्ति बनाकर नेक ब्राह्मणसे चन्द्र-पूजन-विधिके अनुसार पूजन ३१ दिन करवा और चन्द्रबलि दे तेरा रोजगार बरजरूर ४० दिन बाद लगेगा और लाभ बहुत अच्छा होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ३८५।। हुक्मी शकल ⁝ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल लाभका है तू पूछता है कि किस दिशासे लाभ है" सो हे पूछनेवाले ! तेरे दिलमें यह बहुत फिकर रहता है कि किस दिशासे लाभ होगा और तू दिलसे निश्चय करता है परंतु दिल फिर डिग जाता है सो तेरा पश्चिम भवन (बुद्धिस्थान) बिगड़ रहा है तू जन्मपत्र दिखलाकर उसकी तजबीज कर और श्रीभगवतीका ध्यान रख और पूर्वको गमन कर तुझे लाभ बहुत होगा परंतु पहले तेरा रोजगार कम लगेगा सो दिल नहीं डिगाना क्योंकि २ मास २२ दिन तुझको नाकिश रहेंगे पूर्वमें धनेश्वरीका आराधन यथाशक्ति कर-वाना तुझको पूर्वसे लाभ होगा फिकर मत कर तेरा दिल भी साहदारी पूर्वकी देता है संदेह मत कर गमन कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।३८६।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल लाभका है तू यह पूछता है कि मुझको कौन दिशासे लाभ होगा" सो हे पूछनेवाले !

तू दिशाका निश्चय भी करता है परंतु दिल साक्षी नहीं देता और इसी तजबीजमें रातको निद्रा भी नहीं आती है" सो पूछनेवाले ! तेरे बहुत नाकिश दिन हैं जिस करके तेरे दिलको टिकने नहीं देते सो तू इस वक्त श्रीभगवतीके आराधनकी चित्तमें कर और जितनी तेरी श्रद्धा हो उतना चंडीके परममंत्रकी आराधना करा और तू दक्षिणसे गमन कर तुझको लाभ बरजरूर होगा दक्षिणके लाभमें तेरा दिल भी साहकारी भरता है सो तू यह कर फिकर मत कर तुझको लाभ पूरा होगा परंतु दक्षिण दिशामें तुझको १ मास २५ दिन नाकिश हैं सो दिल न डिगाना इतने दिनों पीछे पूरा लाभ होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ३८७।। हुक्मी शकल ⠯ कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल लाभका है तू पूछता है कि मुझको कौन दिशासे लाभ है तेरे दिलमें निश्चयहो जाता है परंतु फिर दिल डिग जाता है सो तेरे दिलको सचावट नहीं पड़ती" सो तुझको पश्चिम दिशासे लाभ है सो तू पश्चिमका निश्चय कर और जन्मपत्रमें तेरा एकादश भवन बिगड़ रहा है सो उसके वास्ते इसी वक्त जितनी तेरी ताकत हो उतना धनेश्वरीके मंत्रका संकल्प दक्षिणासमेत नेक ब्राह्मणको दे तुझको लाभ बरजरूर पश्चिमसे होगा तेरा दिल भी सचावट देता है गमन कर फिकर मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ३८८।। हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल लाभका है तू पूछता है कि मुझको किस दिशासे लाभ है" सो तू दिलपर बहुत चितवन करता है परंतु किसी दिशाको सचावट नहीं होती और जो कुछ दिल सचावट देता भी है तो फिर झट लौट जाता है सो तू कुछ फेर दिलमें मत कर तेरे जन्मपत्रमें धन भवन बिगड़ रहा है वह तेरे दिलको बिगाड़ता है सो तू जलदी श्रीकुबेरेश्वरीके मंत्रका जप करवा तुझको उत्तर दिशासे लाभ है और कुछ तेरा दिल भी सचावट देता है संदेह मत कर इति प्रश्न पिण्ड।। ।।३८९।। हुक्मी शकल ⠯ फरहा मुनकलीब शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यह है कि कौन रोजगारमें फायदा है" सो हे पूछनेवाले शख्स ! तेरे दिलमें अनेक रोजगारोंकी आती है परंतु दिलमें सचावट नहीं पड़ती पर अब तेरे दिन बहुत अच्छे आये हैं इस ही उपस्थित रोजगारमें तुझको लाभ होगा परंतु यह कार्य्य बड़ा है सो तू श्रीभगवतीका पाठ अपनी ताकत माफिक करवा तुझको बहुत लाभ होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।३९०।। हुक्मी शकल ⠯ उकला मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रोजगारका है तू पूछता है कि किस रोजगारमें फायदा होगा" सो जिस रोजगारको करता है उसीमें विशेष लाभ नहीं होता और दिल भी उस रोजगार पर नहीं ठहरता सो हे पूछनेवाले ! अबतक तेरे दिन बहुत नाकिश थे

परंतु अब ५ मास ७ दिन और नाकिश रहे हैं सो अब जिस रोजगारको करेगा उसी में तुझको फायदा होगा परंतु अब तू श्रीभगवतीके महामंत्रका सवालक्ष जप करवा और पुष्कल दक्षिणा दे फिकर मत कर बरजरूर लाभ होगा इति प्रश्न।।पिण्ड।।३९१।। हुक्मी शकल ☰ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल राजाका है तू पूछता है कि राजा मुझको कैसा चाहता है" सो हे पूछनेवाले! तेरा और राजाका जन्मपत्रसे बहुत वर्ग मेल है परंतु तेरे जन्मपत्रमें शत्रुभवन बिगड़ रहा है सो तेरे गुप्त शत्रु ज्यादे हैं जिस समयमें राजा तेरी तोफगी करता है उस कालमें वे तेरी तकदीरी कर देते हैं सो शत्रुघातिनी भगवतीके मंत्रके जपका संकल्प इसी वक्त करवा दक्षिणा समेत नेक ब्राह्मणको दे और बलिदान कर तेरा शत्रु नष्ट होगा और राजा तेरे ऊपर प्रसन्न हो जावेगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड ।। ३९२।। हुक्मी शकल ☰ हुमरा सावित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल राजाके विषयमें है तू पूछता है कि राजा मुझको कैसा चाहता है" सो हे पूछनेवाले! पहले राजाका दिल तेरे ऊपर पूरा था और तुझको बहुत चाहता था परंतु तेरे दिलमें कुछ गुमान न था और ऐसा भी नहीं जानता था कि राजा ऐसे उलट दिया करते हैं सो हे पूछनेवाले! तेरा छठा भवन शत्रुग्रस्त है तू शत्रुके दूर करनेके वास्ते शत्रुघातिनी श्रीभगवतीके मंत्रका जप सवा ७ लक्ष करवा फिर राजा वैसा ही चाहने लग जायगा और तेरी तथा राजकी प्रीति ज्यादे बढ़ेगी फिकर मत कर अल्लाताला अच्छा करेंगे इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।३९३।। हुक्मी शकल ☰ बयाज सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल नौकरीका है तू पूछता है कि मुझको किसकी नौकरीसे फायदा है" सो पूछनेवाले! तेरे २ मास ११ दिन अभी नामाफिक हैं सो नाकिश दिनोंको व्यतीत करके तुझको राजाकी नौकरीसे फायदा होगा परंतु श्रीभगवतीका जितना आराधन करेगा उतना ज्यादे तनख्वाह बढ़ेगी फिकर मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ।।३९४।। हुक्मी शकल ☰ नुस्रुत् खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल नौकरीका है तू पूछता है कि मुझको किस नौकरीसे फायदा है" सो हे पूछनेवाले! अब नाकिश दिन प्रायः व्यतीत हुए और १ मास २२ दिन नाकिश और रहे हैं सो इन दिनों बाद तेरी वैश्यकी नौकरी लगेगी और तुझको बहुत लाभ होगा सो भगवतीका पाठ करा जितना भगवतीका आराधन रक्खेगा उतना लाभ ज्यादे होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ३९५।। हुक्मीशकल ☰ नुस्रुद्दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल नौकरीका है तू पूछता है कि नौकरी कहीं होगी" सो हे पूछनेवाले! तेरे पिछले दिन निहायत नाकिश गये हैं परंतु ३१ दिन बाद तेरे अच्छे दिन आवेंगे सो तेरी नौकरी

इसी जगह हो जावेगी परंतु तू श्रीगणेशके मंगल मंत्रका आराधन करवा इसके करवानेसे तुझको अच्छी नौकरी मिलेगी फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ।।३९६।। हुक्मी शकल ⁝ अतवेखारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल नौकरीका है तू पूछता है कि मेरी नौकरी कहां होगी" सो हे पूछनेवाले ! अबतक तेरा भाग्योदय नहीं हुआ था परंतु अब भाग्योदय होगा और तेरी नौकरी विदेशमें होगी परंतु एकदफे तो कुछ कम होगी और पीछे बढ़ेगी दिल न डिगाना सो अब तेरी तकदीर खुलेगी फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।३९७।। हुक्मी शकल ⁝ नकी मुनकलीव मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि हे "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल नौकरीका है तू पूछता है कि मेरी नौकरी कब होगी" सो हे पूछनेवाले शख्स ! तेरे जन्मपत्रमें ग्रह खराब हैं जो तजवीज करता है खाली जाती है इसलिये तू पहले मंगलमूर्तिके मंत्रका आराधन करवा फिकर मतकर इति प्रश्न।। पिण्ड ।।३९८।। हुक्मी शकल ⁝ अतवेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल नौकरीका है तू पूछता है कि मेरी नौकरी कब होगी" सो हे पूछनेवाले ! तुझको प्रथम तो नौकरी मिलती नहीं और जो कोई मिले तो संतोष माफिक नहीं मिलती सो तू मंगलकी तांबेकी मूर्ति बनवाकर नेक ब्राह्मणसे पूजन करवा और दान पद्धतिसे मंगलका दान करवा फिकर मत कर तेरी नौकरी दान करनेके बाद १ मास १७ दिनमें लगेगी संदेह मत कर अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।३९९।। हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा सावित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि अफसरकी मेरे ऊपर मेहरवानी होगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अफसरकी और तेरी जन्मपत्रसे वर्ग प्रीति बहुत मिलती है परंतु तेरे जन्मपत्रमें शत्रुभवन बिगड़ रहा है सो जिस वक्त अफसर तेरी तोफगी करता है उस वक्त तेरे शत्रु तेरी तकदीरी उठा देते हैं सो तू शत्रुओंके दूर करनेके वास्ते श्रीभगवती शत्रुघातिनीके मंत्रका आराधन करवा और बलिप्रकारसे बलिदान दे फिकर मत कर तुझपर अफसरकी बहुत मिहरवानी रहेगी संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ।।४००।। हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीव चंद्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अफसरका है तू पूछता है कि मेरे ऊपर अफसरकी मेहरवानगी है या नहीं" सो हे पूछनेवाले तेरा शत्रु बड़ा बलवान् है पहले अफसरकी तो तेरे ऊपर बहुत प्रीति की निगाह थी अब कुछ तो तेरी भी गुना है और कुछ तेरे शत्रुओंने भी भ्रमकर रक्खा है सो तू अब निहायत दिक हुआ है और तुझको भय निहायत है फिकर मत कर श्रीभगवती शत्रुनाशिनीके मंत्रका आराधन करवा तेरा शत्रु दूर होगा और अफसरकी नेक निगाह होगी फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ।।४०१।। हुक्मी शकल ⁝ लहियान खारिज बृहस्पति देवताकी है हुक्म फरमाती

है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यह है कि अफसर कब आवेगा" सो हे पूछनेवाले शख्स ! अफसरके आनेमें कुछ देर नहीं है यहां आनेकी गुफ्तगू हो रही है सो जल्दी ही आया जान दूर नहीं है परंतु हे पूछनेवाले ! तू "पूछता है कि अफसर मुझसे प्रसन्न है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तू श्रीकामवरेश्वरीकीसु वर्णकी मूर्ति बनवाकरके नेक ब्राह्मणसे पूजन करवा और श्रीकामवरेश्वरीके मंत्रका सवालक्ष आराधन करवा अफसरकी नेक निगाह रहेगी इति प्रश्न पिण्ड ।। ४०२।। हुक्मी शकल ⁝̄ कबजुलदाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अफसरका है तू पूछता है कि अफसर कब आवेगा" सो अफसरके आने में देर है आनेका मनसूबा तो ठीक था परंतु अब उसके पास और जगहका पत्र आ गया है सो अब उसके आनेमें देर है सो कुछ ढीलसे आवेगा और तेरे दिन भी सामान्य हैं सो तेरे ऊपर अफसर कुछ नाराज रहेगा सो तू श्रीमंगलमूर्तिके मंत्रका आराधन रख और जप करवा बलिदान दे फिकर मत कर अफसर आवेगा और तुझको नेकनामी मिलेगी फिकर मत कर इति प्रश्न ।। इति एकादशस्थानफलं समाप्तम् । अथ पिण्ड ।। ४०३।। हुक्मी शकल ⁝̄ कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल खर्चका है तू पूछता है कि मैं एक खर्च किया चाहता हूं सो मेरा कार्य्य पार पड़ेगा या नहीं और पार पड़ेगा तो मुझको यश मिलेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! ऐसे कार्य्य पूर्व जन्मके संस्कारसे होते हैं सो तेरा पूर्व जन्मका संस्कार अच्छा है तू पहले जन्ममें उत्तर दिशामें ब्राह्मण था और श्रीगंगाजीके तीरमें ईश्वरका भजन बहुत किया करता था परंतु तेरे पास धन नहीं था सो तेरे यश करनेकी बहुत अभिलाषा रही परंतु धन विगर नहीं हो सकता, उस आशा करके इस जगह तेरा जन्म हुआ है सो तेरा कार्य्य बहुत अच्छा होगा और तेरे को यश भी अच्छा मिलेगा परंतु कार्य्यकी पूर्तिके वास्ते विष्णु सहस्रनामका अनुष्ठान करा कार्य्य पूर्ण होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ४०४।। हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल खर्चके शुभाशुभका है तू पूछता है कि मेरा वित्त तो सामान्य था और कार्य्य जबर उठा लिया सो मेरा कार्य्य परवस्त होगा या नहीं" हे पूछनेवाले ! यह कार्य्य तेरे वित्तसे ज्यादा नहीं है और जो वित्तसे ज्यादे किया करता है उसीका यश हुआ करता है सो तेरा कार्य्य बहुत अच्छा होगा और तेरा यश भी बहुत होगा परंतु कार्य्य पूर्तिके वास्ते श्रीविष्णुसहस्रनामका पाठ करवा कार्य्य बहुत उत्तम होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।४०५।। हुक्मी शकल ⁝̄ फरहा मुनकलीब शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल खर्च और पैदाका है तू पूछता है कि मेरा सदैव खर्च तो ज्यादे होता है और पैदा कम होती जाती है" सो हे पूछनेवाले !

तू सच पूछता है ऐसे ही है परंतु तू फिकर मत कर तेरे पहले जन्मका अजाब है तू पहजे जन्ममें पूर्व दिशामें वैश्य था एक वैश्यकी दूकानमें गुमास्ता रहता था और चालाक बहुत था ऐसी चालाकी किया करता था कि दूकानकी पैदा और खर्च मालिकको बराबर दिखला देता था और वह मालिक बहुत भोला था सो तैंने उसका धन बहुत खाया उस पापसे तुझको लाभ नहीं होता सो तू प्रायश्चित्तकर तीर्थमें जाकर राधा दामोदरकी सुवर्णकी मूर्ति बनवाके नेक ब्राह्मणको दे तेरा धन बढ़ेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।।४०६।। हुक्मी शकल ⚏ उकला मुनकलीब शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल खर्च और पैदाका है तू पूछता है कि मेरा खर्च तो बहुत ज्यादे है और पैदा कम है बहुत फजूल खर्च मैंने हटा भी दिया है और कुछ पैदा होती है तो बरकत नहीं होती सो क्या कारण है" हे पूछनेवाले ! तू अबतक नहीं जानता तेरे पितरोंका कोप है सो तू पितरोंका आराधन कर अपने पूज्योंका पूजन कर पितरोंका गयाश्राद्ध या पिण्डारा करवा तेरे पास धन हो जावेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।४०७।। हुक्मी शकल ⚏ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरे सवाल राज्य संबंधी है सो तू पूछता है कि राज्यमें क्या जुर्माना होगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरे दिन नाकिश हैं जुर्माना ज्यादे होगा परंतु तुझसे बन पड़े तो शत्रुघातिनी कालीके मंत्रका आराधन करवा और बलिदान दे ईश्वरने चाहा तो जुर्माना न होगा और जो हो गया तो मुनाफामें छूट जायगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ।।४०८।। हुक्मी शकल ⚏ हुमरा सादित मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राज्यसंबंधी है तू पूछता है कि क्या जुर्माना होगा" सो हे पूछनेवाले ! यह मुकदमा नहीं है यह जीवका जञ्जाल है इसमें जुर्मानाकी क्या पूछता है इसमें जिन्दगी और घर बने रहें यही बड़ी बात है और तुझको अब दिन निहायत नाकिश आ रहे हैं जो मनुष्य तेरे देखनेसे उठता था वह अब तेरे हाथ पकड़नेसे भी नहीं उठता सो तू संकटनाशिनी महाकालीके मंत्रका आराधन करवा नेक ब्राह्मणोंको दक्षिणा और मंत्र संकल्प संगही दे यह करनेसे तेरे मुकदमे में जान आवेगी फिकर मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड ।।४०९।। हुक्मी शकल ⚏ बयाज सावित चंद्रमाकी है । हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल कैदसे कब छूटनेका है तू पूछता है कि यह मनुष्य कैदसे कब छूटेगा" सो हे पूछनेवाले ! इसका मुराफा कर अब इसको २ मास ३ दिन और नाकिश रहे हैं और शत्रुघातिनी भगवतीके मंत्रका आराधन करवा और तंदई करके झगड़ा झगड़ यह कैदसे छूट जावेगा उद्यम कर जर लगे जोरू आती है, पैसा खरच शत्रु हारेगा और तू जीतेगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।।४१०।। हुक्मी शकल ⚏ नुस्रत् खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती

है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल कैदसे छूटनेका है तू पूछता है कि यह मनुष्य कैदसे कब छूटेगा" सो हे पूछनेवाले ! इस मनुष्यको दिन निहायत नाकिश थे और अब ५ मास ११ दिन और नाकिश रहे हैं सो इसके छूटनेके वास्ते बंधविमोचनी भगवतीके मंत्रके जपका संकल्प सवालक्ष दक्षिणा समेत नेक ब्राह्मणको दे इसकी सुनाई बरजरूर होगी फिकर मत कर भगवतीका आराधन कर यह झगड़ा नहीं है जीवको जञ्जाल है इस कैदमें घर बिगड़ जावेंगे भगवतीका आराधन कर जलदी ही छूटेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।४११।। हुक्मी शकल ⚏ नुस्रत् दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मुराफाका है तू पूछता है कि मेरा मुराफा लगेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरा मुकदमा इसी जगह जय होता है परंतु तेरा शत्रु निहायत फरेबदार है सो उसने कारदार अपना कर लिया है जिससे कुछ देवबलकी तुझको आवश्यकता है और दिन भी तुम्हारे निहायत नामाफिक थे परंतु अब श्रीभगवती शत्रुघातिनीके मंत्रके जपका संकल्प दक्षिणासमेत नेक ब्राह्मणको दो और बलिदान करो फिर तुम मुराफा करो मुकदमा जीतोगे संदेह मत कर इति प्रश्न।। पिण्ड।। ४१२।। हुक्मी शकल ⚏ अतबेखारिज केतुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मुराफाका है तू पूछता है कि मेरा मुराफा लगेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरा मुकदमा ऐसा नहीं हुआ है कि तेरा मुराफा लगे और तेरे दिन निहायत नाकिश हैं इसीसे यह तकलीफ हुई है सो तेरा मुराफा नहीं लगेगा और लगेगा तो दंड ज्यादे होगा सो तू चुपका हो बैठ जो तुझसे न रहा जाय तो ११ माशे सोनेका १५ पंदरहका यंत्र बनवा कर नेक ब्राह्मणसे षोडशोपचार पूजन करा फिकर मत कर और शत्रुघातिनीके मंत्रका जप सवालक्ष करवा और भगवतीको बलि दे संदेह मत कर जर लगे जोरूं होती है सो यह कर तेरा मुराफा लगेगा इति प्रश्न ।।पिण्ड ।।४१३।। हुक्मी शकल ⚏ नकी मुनकलीव मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मुकदमाका है तू पूछता है कि मुकदमा जीतूंगा या हारूंगा" सो हे पूछनेवाले यह मुकदमा तैंने जबरदस्ती गलेमें पहर लिया और अब पछताता भी है परंतु अब पछताये क्या होता है मनुष्यको समझ होवे तो कोई भी बेवाजबी काम न करे पूर्वजन्मके जो कर्म हैं उन्हींको नाकिश और अच्छे दिन कहते हैं सो पूर्व जन्ममें जिस अवस्थामें अच्छा या बुरा किया जाता है उसी अवस्थामें सुख दुःख दिया करता है सो तेरे पहले जन्मका इस अवस्थाका पाप था उसका फल भोगना ही पड़ेगा और जो तू निहायत तकलीफ मानता हो और शत्रुको दूर किया चाहता हो तो तू श्रीभगवतीकी ५ पल सुवर्णकी मूर्ति बनवा कर नेक ब्राह्मणसे पूजन करवा ३१ दिन दुर्गापाठ करवा तू मुकद्दमा जीतेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ४१४।। हुक्मी शकल ⚏

अतवेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मुकदमाका है तू पूछता है कि मुकदमा जीतूंगा वा नहीं" सो हे पूछनेवाले ! यह मुकदमा बहुत दिनोंका है और इस मुकदमे में दोनोंका जर ज्यादे लगा है और अब दोनों थोक निहायत तकलीफ पाते हैं परंतु छोड़ नहीं सकते सो तेरा दिल निहायत तकलीफ मान रहा है सो दिन दोनोंहीको नाकिश हैं सो तू मंगलमूर्तिके मंत्रका जप करवा बरजरूर जीतेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।।४१५।। हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजाको दण्ड देनेका है तू पूछता है कि राजा क्या दंड लेगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरे ऊपर राजाकी खफगी है और तेरे शत्रु वारंवार तेरी अदावत रखते हैं और तेरे दिन भी नाकिश हैं ऐसा दंड नाकिश दिनोंमें हुआ ही करता है सो तू सुवर्णका २१ का यंत्र ५ पलका बनवा कर पूजन करवाके नेक ब्राह्मणको दे और २१ दिन भगवतीका आराधन करवा तुझसे राजा दंड न लेगा और तेरा शत्रु पैमाल हो जावेगा और तेरे ऊपर राजाकी मिहरवानी हो जावेगी फिकर मत कर जर खरचे जोरूं मिलती हैं संदेह मत कर तुझको दंड न होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ।।४१६।। हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीव चन्द्रमादेवकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजासे दंड पानेका है तू पूछता है कि राजा दंड थोड़ा लेगा या ज्यादे" सो हे पूछनेवाले ! तेरेदिन निहायत नाकिश हैं सो राजा दंड कम नहीं लेगा क्योंकि राजाकी निगाह कड़ी हो रही है परंतु तू अब श्रीभगवतीके बीज मंत्रको सुवर्णके पत्रपर लिखवाकर प्राणप्रतिष्ठा पूर्वक दुर्गापद्धतिके विधानसे उसका पूजन नेक ब्राह्मणसे करवा और बलिदान दे जो दंड होगा तो बहुत कम होगा संदेह मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ४१७।। हुक्मी शकल ⁝ लहियान खारिज बृहस्पतिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल कुछ खरीदे हुए मालका है उस मालमें तुझको टोटा है सो व्यापारमें टोटा और फायदा दो ही होते हे परंतु इस टोटाने दिल निहायत दिक कर दिया सो यह पूछता है कि मेरी इस व्यापारमें इज्जत बनी रहेगी या नहीं और मुझको फायदा होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब तो टोटाका जहूरा देख पहले तुझको टोटा रहा तब दुर्गा आराधन कबूला था फिर फायदा हुआ तब जिस दिलसे कबूला था उस दिलसे नहीं किया सो तैंने माल खरीद रखा है और जैसा आराधन किया वैसा कुछ लाभ भी है परंतु अब तेरे नाकिश दिन हैं नाकिश दिनोंमें गुजरान कर अब २५ दिन और नाकिश रहे हैं पीछे अच्छे आवेंगे सो पुण्य कर बेईमानी दिलमें मत रख जर लगाये जर होता है इति प्रश्न ।।पिण्ड ।। ४१८।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मालमें लाभका है तू पूछता है कि मेरे मालमें

टोटा ज्यादा है सो इस मालमें तुझको फायदा होगा या टोटा ही रहेगा" सो हे पूछनेवाले! जिस वक्त तुझको फायदा रहता है उस वक्त खूब हाथ जोड़के देवताकी विनती करता है और जब फिर तुझको फायदा हो जाता है तब सब देवताओंको भूल जाता है सो हे पूछनेवाले ! अब नाकिश दिनोंकी गरदिश करके तुझको टोटा है और दिलको कहीं भी चैन नहीं पड़ता और रातमें नयनोंमें नींद भी नहीं आती सो तैंने दुर्गाका आराधन कराना तुझको कुछ थोड़ा टोटा रहेगा फिकर मत कर तैंने माल बेच रखा है सो ईश्वरके आराधनसे पूरा पड़ेगा अब ३१ दिन और नाकिश रहे हैं पीछे अच्छे आवेंगे नियत पुण्यमें रख इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।४१९।। हुक्मी शकल ⚍ कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल जिनसके भावका है तू पूछता है कि यह जिनस आगे घटेगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अभी तो यही भाव चलेगा परंतु फिर कई दिन पीछे तेज रहेगा सो १५ दिन चलेगा पीछे कुछ मंदा रहेगा परंतु हे पूछनेवाले ! तेरे दिन नाकिश ज्यादा हैं सो तू कोई व्यापार कर परंतु पहले एक ब्राह्मणसे मंगलमूर्तिके मंत्रका आराधन करवा फिर व्यापार करना लाभ होवेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ४२०।। हुक्मी शकल ☰ जमात सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले ! तेरा सवाल जिन्सके तेज मंदीका है तू पूछता है कि मंदी जिन्स कब रहेगी" सो हे पूछनेवाले ! अभी तो मंदी न रहेगी कुछ हेर फेरसे यही भाव रहेगा परंतु कोई दिन बाद कुछ मंदा रहेगा और फिर तेज भी रहेगा परंतु कुछ विशेष मंदा रहेगा सो व्यापार विशेष मत करना क्योंकि तेरे दिन सामान्य हैं इन दिनोंमें तुझको कसर रहेगी और श्रीकुबेरेश्वरीके बीजमंत्रका जप किसी नेक ब्राह्मणसे ११ दिन करवा फिर तुझको बरजरूर लाभ होगा टोटा दूर होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। इति द्वादशस्थानं समाप्तम् । इति पूर्वार्द्धे तृतीयः परिच्छेदः ।।३।। अथ चतुर्थः परिच्छेदः ।। पिण्ड ।। ४२१ ।। हुक्मी शकल ⚍ फरहा मुनकलीव शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संवत्के शुभाशुभका है पूछता है कि यह संवत् कैसा होगा इसमें समा होगा या काल पड़ेगा" सो हे पूछनेवाले ! यह संवत् देशदेशांतरमें बहुत अच्छा होगा वर्षाकी खेंच और बहुत वर्षा हो तो हुआ ही करते हैं परंतु संवत् अच्छा होगा सो हे पूछनेवाले ! आश्विन मासमें बीमारी तो मनुष्योंको आवेगी क्योंकि मंगल और शनि देवता इस संवत्में बिगड़ रहे हैं सो तू सबसे मंगल और शनिका दान और जप करवा बीमारी न होगी संवत् अच्छा रहेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।४२२।। हुक्मी शकल ⚍ उकला सावित मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा

सवाल संवतके शुभाशुभका है तू पूछता है कि संवत् कैसा होगा" सो हे पूछनेवाले ! संवत् सामान्य है कहीं अकाल नहीं होगा परंतु कहीं तो अच्छा होवेगा और कहीं सामान्य कहीं कुछ भी न होगा परंतु इस संवत्में शनिदेवता है सो अच्छा है लड़काकी संतान ज्यादे होगी और बीमारी विशेष नहीं होगी कहीं कुछ होगी भी तो शांत हो जायगी और पशुओंको शरीर पीड़ा कुछ कहीं कहीं होगी सो यह संवत् नाकिश तो नहीं है परंतु सामान्य है फिकर मत कर ईश्वर अच्छा करेंगे इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ।।४२३।। हुक्मी शकल ☰ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संवत्का है तू पूछता है कि यह संवत् मेरे लिये कैसा रहेगा" सो हे पूछनेवाले ! यह संवत् तेरे लिये अच्छा रहेगा जिसमें चैत्र और वैशाख दो मास सामान्य रहेंगे ज्येष्ठ और आषाढ़ ये दो मास अच्छे रहेंगे इस प्रकार यह संवत् तेरे लिये अच्छा रहेगा फिकर मत कर परंतु तेरे जन्मपत्रमें शनिदशा अच्छी नहीं है उसका दान और जप करवा अच्छा रहेगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ।।४२४।। हुक्मी शकल ☰ हुमरा सावित मङ्गलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संवत्का है तू पूछता है कि यह संवत् मेरे लिये कैसा होगा" सो हे पूछनेवाले ! यह संवत् तेरे लिये नाकिश है एक तो दिलपरसे संदेह कभी नहीं जाता है और कुछ न कुछ तकलीफ बनी रहती है सो इस संवत्में तेरे लिये बहुत अली और डली आवेगी दिलको बहुत फिकर रहेगा सो तू प्रथम तो अपने वर्ष प्रवेशके दिन सालग्रह करवा नवग्रहोंके पृथक् पृथक् भोजन करवा और ग्रहोंके दान दे यह करनेसे अच्छा होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ।।४२५।। हुक्मी शकल ☰ बयाज सावित चंद्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सामनी खेतीका है तू पूछता है कि सामनी कैसी होगी" सो हे पूछनेवाले ! सामनी तो बहुत अच्छी होगी परंतु कुछ कीड़ेका नुकसान रहेगा और किसी किसी जगह वर्षा न होनेसे सूख भी जायगी परंतु इस सालमें बुध और बृहस्पति दो ग्रह अच्छे पड़े हैं सो खेतीका अन्न अच्छा होगा और आश्विन मासमें बीमारी होगी उसको दूर करनेके वास्ते सूर्य्य देवताका आराधन दान और जप करवानेसे निवृत्त हो जावेगी फिकर मत कर खेती अच्छी होगी सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।४२६।। हुक्मी शकल ☰ नुस्रत् खारिज सूर्य्य देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल खेतीका है तू पूछता है कि सामनी खेती कैसी होगी" सो हे पूछनेवाले ! यह साल सामनीके हकमें कुछ नाकिश है सो कहीं तो सामनी हो जावेगी और कहीं खेत कोरे ही रह जायेंगे परंतु साढ़ी समय माफिक सारे ही होगी सो हे पूछनेवाले ! इस सालमें रद्द दस्त और पंसलीके दर्दकी बीमारी होगी जो बृहस्पति और सूर्य्यदेवताका आराधन दान पुण्य

और जप करवावेगा उसको किसी घातका क्लेश न रहेगा फिकर मत कर अल्लाताला अच्छा करेंगे इति प्रश्न ।।४२७।। हुक्मी शकल ⁚ नुसुद् दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल साढ़ीकी खेतीका है तू पूछता है कि इस सालमें साढीकी खेती कैसी होगी" सो हे पूछनेवाले! इस सालमें साढ़ीकी खेती बहुत अच्छी होगी और वर्षा भी बहुत अच्छी होगी फिकर मत कर। हे पूछनेवाले! इस साल वर्षा बहुत होगी संदेह मत कर और इस साल सब साख तो अच्छी होगी, परंतु बीमारी ज्यादे होगी और मरी भी किसी देशमें ज्यादे पड़ेगी तो अन्न सो बहुत होगा परंतु बीमारीके सबबसे कुछ आनंद लोगोंको नहीं होगा इस कारण मनुष्योंको विष्णुयज्ञ करवाना चाहिये, विष्णुयज्ञ करवानेसे बीमारी नहीं होगी और साढी अच्छी होगी सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।४२८।। हुक्मी शकल ⁝ अतबे खारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल साढ़ीकी खेतीका है तू पूछता है कि खेती कैसी होगी" सो हे पूछनेवाले! इस साल साढ़ी अच्छी होगी दो ग्रह सामान्य हैं एक तो शनि बिगड़ रहा है और सूर्य्य बिगड़ रहा है सो इस कारणसे साढ़ीकी खेती न होगी और इस सालमें बीमारी भी न होगी और राजाओंका पश्चिम दिशामें आपसमें विग्रह होगा सो विष्णुपूजनसे सब शांत होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।४२९।। हुक्मी शकल ⁚ नकी मुनकलीव मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल अन्नका है सो तू पूछता है कि इस साल अन्नका क्या भाव रहेगा अन्न तेज रहेगा या मंदा रहेगा" सो हे पूछनेवाले! इस सालमें सूर्य्य और मंगल दो ग्रह तो ऐसे पड़े थे कि अन्न ढूंढा ही पावे परंतु शनिदेवता और बृहस्पति दोनों ग्रह इस सालके प्रारंभसे अच्छे पड़े हैं सो शनि और बृहस्पति प्रथम तो दोनों ग्रह बलवान् हैं दूसरे बलवान् घरमें पड़े हैं और शुभग्रहों करके सलाह करते हैं सो इस सालमें अन्नका भाव मंदा रहेगा परंतु जिस वक्त सूर्य्य और मंगल अपने अंशमें अपनी गुफ्तगू करेंगे तब तेज दिखलावेंगे सो हे पूछनेवाले! तेरे दिन सामान्य हैं सो तुझको समझकर व्यापार करना और तुझसे न रहा जाय तो सूर्य्य और मंगलदेवताका दान और जप अपनी माफिक करवाना फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।४३०।। हुक्मी शकल ⁝ अतबेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल अन्नके भावका है तू पूछता है कि अन्न मंदा रहेगा या तेज रहेगा" सो हे पूछनेवाले! इस सालमें अन्न तेज रहेगा इस सालके प्रारंभमें बुध और राहु दोनों ऐसे पड़े थे कि अन्नको कुत्ते भी न खावें परंतु शुक्र और मंगल दोनों ऐसे बैठे हैं कि अन्नका समुद्र भी भर देवे तो एक दाना प्रातःकाल न पावे इससे इस साल अन्नका भाव तेज रहेगा परंतु बुध और राहु अपने अंशों करके जो गुफ्तगू करेंगे तो अन्न उस समयमें कुछ

मंदा रहेगा परंतु यह साल तेजीका है संदेह मत कर अल्लाताला अच्छा करेंगे इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।४३१।। हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा सावित बुधग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वस्त्रके भावका है तू पूछता है कि इस सालमें वस्त्रका क्या भाव रहेगा" सो हे पूछनेवाले ! इस सालमें वस्त्र मंदा रहेगा परंतु बृहस्पति और बुध ये दोनों ग्रह इस सालके बैठनेके वक्त ऐसे पड़े कि कपड़ा ढूंढा न मिले परंतु सूर्य्यदेवता और चंद्रमा दोनों ऐसे पड़े हैं कि वस्त्र रास्तेमें पड़ा हो तो भी कोई न पूछ सो कपड़ा मंदा रहेगा परंतु जिस वक्त बुध और बृहस्पति ये दोनों ग्रह अपने निज अंशोंमें गुफ्तगू करेंगे तब तो तेज दिखलाई देगा संदेह मत कर इस सालमें बृहस्पति और बुधका दान और जप करवानेवालोंको कपड़ेमें बहुत फायदा होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।४३२।। हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीव चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "हे पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वस्त्रके भावका है तू पूछता है कि कपड़ेका क्या भाव रहेगा" सो हे पूछनेवाले ! कपड़ा तेज रहेगा मंगल और राहु दोनों ग्रह इस सालके बैठनेके समयमें ऐसे पड़े थे कि कपड़ेको कोई हाथमें न पकड़े परंतु सूर्य्य और शुक्र ऐसे पड़े हैं कि कपड़ा टोहा भी न मिले इससे कपड़ा तेज रहेगा परंतु जिस वक्त मंगल और राहु अपने अंशोंमें गुफ्तगू करेंगे उस वक्त मंदा दिखला देंगे फिकर मत कर अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।४३३।। हुक्मी शकल ⁝ लहियन खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रसके भावका है तू पूछता है कि रसका क्या भाव रहेगा" सो हे पूछनेवाले ! रसका भाव मंदा रहेगा परंतु इस सालके बैठनेके समयमें सूर्य्य और चंद्रमा दोनों ऐसे बैठे थे कि रसका दर्शन भी न होने दें परंतु मंगल और शनिदेवताने कृपा की सो मंगल और शनि दोनों ऐसे पड़े हैं कि रसकी नदी चालावें इससे रसका भाव मंदा रहैगा परंतु जिस वक्त सूर्य्य और चंद्रमा अपने अंशोंमें गुफ्तगू करेंगे उस वक्त तो तेज दिखला देंगे संदेह मत कर अल्लाताला अच्छा करेंगे इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ४३४।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुल दाखिल सूर्य्य देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "हे पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रसके भावका है तू पूछता है कि रस मंदा रहेगा या तेज रहेगा" सो हे पूछनेवाले! रस तेज रहेगा मंगल और बुध दोनों ग्रह इस वर्षके बैठनेके समय ऐसे पड़े हैं कि रसकी नदी चलावे परंतु सूर्य्य और शनिदेवता दोनों इस सालमें ऐसे बैठे हैं कि समुद्रको भी सोष लेवें इससे रसका भाव तेज होगा परंतु मंगल और बुध जिस वक्त अब अपने अंशोंमें गुफ्तगू करेंगे उस वक्त मंदा दिखला देंगे फिकर मत कर तेज होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ४३५।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुल खारिज राहु ग्रहकी श्याम वर्ण है सो हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अमल (नशा)

के भावका है तू पूछता है कि अमलका भाव मन्दा रहेगा या तेज रहेगा" सो हे पूछनेवाले शख्स ! अमलका भाव मंदा रहेगा क्योंकि इस सालमें बृहस्पति और शुक्र यह दोनों ग्रह जिस वक्त यह साल प्रारंभ हुआ उस वक्त ऐसे बैठे हैं कि अमल (नशा) नयनों ही दीखे परंतु यह अमल शनि और राहुका भोजन है सो शनि और राहु ये दोनों अमलके भोजनसे विमुख हैं इससे अमल मंदा रहेगा परंतु बृहस्पति और शुक्र ये दोनों जिस वक्त अपने अंशोंमें गुपतगू करेंगे उस वक्त तो तेज दिखा देंगे परंतु इस सालमें मन्दा रहेगा संदेह मत कर हे पूछनेवाले ! तेरे दिन नाकिश हैं तू सुवर्णकी मंगलकी मूर्ति बनवाकर पूजन नेक ब्राह्मणसे करवा फिकर मत कर लाभ होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ४३६ ।। हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुध देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अमलके भावका है तू पूछता है कि अमल मन्दा रहेगा या तेज रहेगा" सो अमल तेज रहेगा परंतु इस सालके बैठनेके समय चंद्रमा और बुध ये दोनों ऐसे बैठे हैं कि अमलकी जहाज उतारें परंतु शनि और राहु ये दोनों इस सालमें ऐसे पड़े हैं कि केवल अमलका भोजन करते हैं इस कारणसे अमल तेज रहेगा परंतु चंद्रमा और बुध ये दोनों जिस वक्त अपने अंशोंमें गुफ्तगू करेंगे उस वक्त तो मन्दा दिखलाय देंगे इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ४३७।। हुक्मी शकल ⁝ फरहा मुनकलीव शुक्र देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यह है कि इस शहरमें आये मुझको बहुत दिन हुए परंतु लाभ विशेष नहीं हुआ सो इस शहरसे मुझको फायदा है या नहीं" सो हे पूछनेवाले इस शहरका और तेरा वर्ग नहीं मिलता है परंतु तु श्रीभगवतीका प्रसाद बोल और यथा शक्ति भगवतीका आराधन करवा फिकर मत कर तुझको लाभ बरजरूर होगा तेरा दिल भी लगेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ४३८।। हुक्मी शकल ⁝ उकला मुनकलीव शनि देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "हे पूछनेवाले शख्स ! तेरा यह सवाल है कि मुझको इस शहरसे फायदा है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! इस शहरसे तुझको फायदा है क्योंकि तू इससे ऋण मांगता है परंतु यह शहर तुझको पूजनीय है सो तू ११ मासे सोनेकी श्रीभगवतीकी मूर्ति बनवा कर योग्य ब्राह्मणसे उसका पूजन करवा और श्रीभगवतीके मंत्र बीजका सवा सात लक्ष जप करवा तुझको बहुत लाभ होगा फिकर मत कर इसी शहरसे तुझको बहुत लाभ होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।।४३९।। हुक्मी शकल ⁝ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पत्रका है तू पूछता है कि हमारे घरसे पत्र कब आवेगा तेरा दिल बहुत डोल रहा है और रात्रिमें निद्रा नहीं आती दूसरे या तीसरे दिन अपने घरमें चला जाता है सो तुझको फिकर ज्यादे है" सो हे पूछनेवाले ! अब तेरे दिन नाकिश हैं सो नाकिश दिनोंमें कुछ सन्देह होता है सो अब तेरे घरसे

कुशल पत्र आनेवाला है तू सन्देह मत कर इन दिनोंमें मंगलमूर्तिका आराधन रख और बलिदान कर संदेह न रहेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ४४०।। हुक्मी शकल ⚍ हुमरा सावित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पत्रके आनेका है तू पूछता है कि मेरे घरसे पत्र पहले आया था उसमें लिखा था कि घरमें कुछ बीमारी है फिर घरसे पत्र नहीं आया सो दिनरात संदेह दिलसे नहीं उतरता है" सो हे पूछनेवाले ! तेरे दिन निहायत नाकिश हैं सो नाकिश दिनोंमें पुण्य कर परंतु अब तेरे घरमें सब प्रसन्न हैं तेरा पत्र रास्तेमें हैआया ही चाहता है भगवती के मंत्रबीजको सुवर्णके पतरेमें लिखवा और प्राणप्रतिष्ठा करके षोड-शोपचार पूजन करवा और भगवतीके बीजमंत्रका जप सवा ५ लक्ष करवा तेरे घरमें आराम होगा और तेरा सन्देह दूर होगा और तुझको लाभ होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ४४१।। हुक्मी शकल ⚍ बयाज साबित चंद्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल हस्ती संबंधी है तू पूछता है कि मेरे दिलमें हस्ती लेनेकी है सो मुझको मिलेगा या नहीं और जो मिलेगा तो कैसा मिलेगा और हस्तीसे मुझको कैसी वफेदारी है" सो हे पूछनेवाले ! तेरे दिलमें तो ज्यादे दिनोंसे है परंतु अव्वल तो तेरी हिम्मत नहीं पड़ती और जब हिम्मत पड़ती है तो ऐसे मुसाहिबपर तसल्ली नहीं होती कि यह तो ठीक ठीक ले आवेगा और अबतक तेरा भाग्योदय भी हुआ परंतु हस्तीकी पीठपर चढ़नेका भाग्योदय नहीं हुआ है सो अब २ मास २१ दिन बाद तेरा हस्तीपर चढ़नेका भाग्योदय होगा और अब तुझको हस्ती बहुत अच्छा मिलेगा और बहुत वफेदारी होगी फिकर मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ४४२।। हुक्मी शकल ⚍ नुस्रतु खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल हस्ती संबंधी है तू पूछता है कि इस हस्तीसे मुझको लहना है या नहीं में इस हस्तीसे निहायत तकलीफ मान रहा हूं और मैं यह पूछता हूं कि यह हस्ती बिकेगा या नहीं मैंने इतनी तक दिलमें की है कि जो कुछ अबके इसका कोई दाम लगावेगा मैं उसको देदूंगा परंतु अब तक कोई सौदागर खरीदनेवाला नहीं आया अब मैं यह पूछता हूं कि इसका पाप मेरे गलेसे निकलेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अबतक तेरे दिन बड़े नाकिश थे परंतु अब ४ मास २१ दिन और नाकिश रहे हैं सो इन दिनोंबाद बिकेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।।४४३।। हुक्मी शकल ⚍ नुस्रतु दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल घोड़ा लेनेका है तू पूछता है कि मैं जैसा घोड़ा चाहता हूं वैसा मिलता नहीं और जाति बंधेजमें वैसा मिले भी तो चालाक नहीं मिलता और जो चालाक भी हो और श्यावे सिवक्के भी हो तो कोई न कोई भौंरीका या तिलकका ऐब पाता है सो ऐबको देख कर दिल सचावट नहीं देता सो जैसा

घोड़ा मैं चाहता हूं वैसा मिलेगा या नहीं और जैसा लेनेको दिल चाहता है वैसा मिलेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अबतक तेरे दिन सख्त थे सख्त दिनोंमें दिलका मनोरथ पूर्ण नहीं होता सो अब तुझको बहुत शुभदायक और बहुत चालाक और बहुत खुबसूरत घोड़ा मिलेगा और तेरा दिल बहुत खुश हो जावेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ४४४।। हुक्मी शकल ⁝ अतबे खारिज केतुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल घोड़ेका है तू पूछता है कि यह घोड़ा कब बिकेगा" सो हे पूछनेवाले ! यह घोड़ा तुझको नाकिश मुहूर्त्त और स्थिर लग्नमें मिला था सो तूने इसको बेचनेकी बहुत तदबीर की परंतु यह बिका नहीं सो तू अब यह पूछता है कि इसको खिला कर बहुत रकम बरबाद की और अब वसूल होनी मुशकिल है सो हे पूछनेवाले ! इस घोड़ेमें तुझको फायदा नहीं रहेगा परंतु अब तेरे नाकिश दिन गये और जगहसे अब तुझको लाभ होगा सन्देह मत कर अल्लाताला अच्छा करेंगे इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।४४५।। हुक्मी शकल ⁝ नकी मुनकलीव मंगल-देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल महिषी लेनेका है" सो तू यह पूछता है कि मैं बहुत फिरा परंतु महिषी मुझको जैसी चाहिये थी वैसीकी तजवीज नहीं लगी और जो कोई मेरी निगाहमें चढ़ी तो उसका मालिक बेचनेको नट गया और जिनके मालिक बेचनेको कहते हैं वे मेरी पसंद न आई सो मैं पूछता हूं कि मुझको महिषी मिलेगी या नहीं और मिलेगी तो कैसी मिलेगी" सो हे पूछनेवाले ! महिषी बहुत अच्छी तुझको मिलनी चाहती है तू फिकर मत कर अब तजबीज लगनेवाली है परंतु तेरे कुटुंबमें कुल देवताकी आराधना कम होगई है अब कुलदेवताको दूध दहीसे प्रसन्न रखना फिकर मत कर महिषी अच्छी मिलेगी इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ।।४४६।। हुक्मी शकल ⁝ अतबेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल महिषी बेचनेका है तू पूछता है कि मेरी महिषी बिकेगी या नहीं मैंने इसके बेचनेकी बहुत कोशिश की सो बिकी नहीं और मुझको निहायत तकलीफ हो रही है सो यह महिषी बिकेगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! इसका खूंटा बदल दे इस खूंटेको काढ़कर और दूसरी जगह गाड़ इस खूंटेके तले अस्थि है सो खूंटा बदलनेसे तुरंत बिक जायगी और तू फिकर मत कर तेरे नाकिश दिन हैं सो नाकिश दिनोंमें गुजरान कर बहुत नाकिश दिन गये अब ५ मास ३ दिन और नाकिश रहे हैं सो इन दिनों बाद तेरे सब बातका आनंद हो जावेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ४४७।। हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा सावित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल गऊके लेनेका है तू गऊके वास्ते बहुत फिरा परंतु तजबीज नहीं लगी सो हे पूछनेवाले ! जिसको तू देखता है वह तेरी पसंद नहीं आती और जो तेरी पसंद आती है उसका

मालिक नहीं बेचता सो बहुत तजबीज करी परंतु तजबीज नहीं लगी अब लगेगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तुझको दिनोंकी गरदिश थी इससे तेरी कुछ तजबीज नहीं लगी सो अब नाकिश दिन गये अब तेरे अच्छे दिन आये हैं सो अब तेरी गऊ बहुत अच्छी आवेगी फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ४४८।। हुक्मी शकल ⁝ तरीख सुनकलीब चंद्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल गऊके बेचनेका है तू पूछता है कि इस गऊके बेचनेकी तजबीज बहुत की सो बिकी नहीं और जिस दिनसे दिलमें यह किया था कि बिक जावे तो अच्छा परंतु बिकती नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब यह बिकी चाहती है तू इसके शिरमें दही और तेल शनिके रोज डाल बरजरूर बिकेगी अब तेरे नाकिश दिन गये फिकर मत कर अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ४४९।। हुक्मी शकल ⁝ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मकानके शुभाशुभका है तू पूछता है कि यह मकान मेरे पास है सो मेरे लिये शुभ है या नहीं इस मकानमें बधेवा नहीं है और कभी तो मनुष्योंको तकलीफ रहती है और कभी पशुओंको कभी रोजगारकी और मनुष्योंका बधेवा नहीं है जो यह मकान अशुभदायक होवे तो इस मकानको छोड़ दूं यह पूछता है" सो हे पूछनेवाले ! यह मकान तेरे लिये शुभदायक है परंतु तेरे कुटुंबमें पितृदोष है सो वह बे औलाद जवान अवस्थामें मरा है सो उसका मन विषय भोगोंसे नहीं भरा उसकी वासना बनी रही सो वह सब प्रकारसे कुटुंबको दुःख देता है सो उसके वास्ते श्रीमद्भागवत ७ दिन सुना और एक गऊ-दान करो और कपड़ोंकी जोड़ी देओ गयाजी या पिण्डारेमें श्राद्ध करवाओ तुम्हारी सब पीड़ा और क्लेश मिटेंगे दिलका फिक्र दूर होगा बधेवा सब बातोंमें होगा । फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ४५०।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मकानके शुभाशुभका है तू पूछता है कि जिस मकानमें मैं रहता हूं यह मकान मुझको शुभदायक है या नहीं इस मकानमें मेरे मनुष्योंका बधेवा होता नहीं सो यह मकान तुझको शुभदायक नहीं है क्योंकि इस मकानमें सबब यह है जब यह मकान बना तब इसमें एक गरीबकी जमीन मिली थी और देनेमें उसकी नाराजी थी परंतु तुमने छल और लोभ देकर उससे जमीन लेली परंतु पीछे वह बहुत दुःखी हुआ उसने बहुत श्वास भरे सो उसका दिल दुखानेसे तुम्हारे बंधेज नहीं है सो या तो इस मकानको छोड़ दे और या एक मकान कुटुंबी नेक ब्राह्मणको बनवा दे और इस मकानके वास्ते एक पुरश्चरण श्रीगायत्रीका करवा तेरे कुटुंबमें बंधेज होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। इति त्रयोदशस्थानफलं समाप्तम् ।। अथ पिण्ड ।। ४५१।। हुक्मीशकल ⁝ कबजुल खारिज राहुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले

शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरे पितामहको बीमारी है उससे निहायत तकलीफ हो रही है भूख नहीं लगती और जो कुछ जरासा भी खा लेता है तो बहुत तकलीफ देता है सो तू पूछता है कि यह कब अच्छा होगा" सो हे पूछनेवाले ! इसके तुमने कई इलाज करवाये परंतु एक भी काम न आया सो इसको दिन नाकिश हैं और यह कालके मुखमें आरहा है सो हे पूछनेवाले ! गौके पुण्यसे दुःख हटता है सो हो सके तो एक गोदान कर नहीं तो एक कलशमें घी भरके और जितनी तेरी ताकत हो उतना सुवर्ण गेरके नेक ब्राह्मणको दे इसको जलदी ही सुख होगा दान कर फिकर मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।।४५२।। हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुध देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरे पितामहको बीमारी है अनेक इलाज किये परंतु एक माफिक न आया ज्यों ज्यों इलाज करते हैं त्यों २ बीमारी बढती है सो मैं पूछता हूं कि इसको आराम कब होगा और किस दोषसे यह रोग है" सो हे पूछनेवाले ! तू तो आरामकी पूछता है और यह कालके मुखमें आरहा है क्योंकि प्रथम तो इसकी खुराक नहीं रही और जो कुछ भोजन करे तो पचता नहीं सो इसके दिन निहायत नाकिश आये हुए हैं तू इसके हाथसे पुण्य करवा और राधादामोदरकी सूवर्णकी मूर्ति बनवाकर नेक ब्राह्मणको दे और गौका दान दे फिकर मत कर पुण्य करनेसे सुख जलदी ही होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ४५३।। हुक्मी शकल ⋮ फरहा मुनकलीव शुक्रदेवताकी हैं हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरी पितामहीको बीमारी हैं अनेक इलाज किये परंतु कुछ आराम नहीं हुआ और अब दिनपर दिन बीमारी ज्यादा होती है सो पूछता हैं कि इसको आराम कब होगा और क्या दोष है" सो हे पूछनेवाले ! इसको बीमारी ज्यादा है प्रथम तो इससे भोजन नहीं किया जाता है और भोजन कर भी लेवे तो पचता नहीं सो हे पूछनेवाले! यह कालके मुखमें आरही है इसके हाथसे एक सहस्र विष्णुसहस्रनामके पाठका संकल्प करवाकर गऊदान करवा इससे जलदी इसको सुख होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।।४५४।। हुक्मी शकल ⋮ उकला मुनकलीव शनि देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरी पितामहीको बीमारी है प्रथम तो भोजनमें रुचि नहीं है और जो कुछ भोजन कर भी लेवे तो वह भोजन पचता नहीं है और कई इलाज किये परंतु कोई भी दुरुस्त न आया" सो हे पूछनेवाले ! इसके दिन निहायत नाकिश हैं इसके हाथसे एक कलश घीका भरकर फिर उसमें ५ तोला सुवर्ण डालकर नेक ब्राह्मणको दान कर इसको सुख होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ४५५।। हुक्मी शकल ⋮ अंकीश शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल

बीमारीका है तू पूछता है कि मेरे पिताको बीमारी है अनेक इलाज किये परंतु दिनोंकी गरदिश करके एक भी काम न आया सो तेरे पिताको बीमारी बहुत ज्यादा है और दिनपर दिन ज्यादे होती है जो तदबीर की उससे ज्यादे होती है सो यह कालके मुखमें आगया है ईश्वर बचावै परंतु इसके हाथसे एक तिलधेनुका संकल्प करवा और एक सहस्र विष्णुसहस्रनामके पाठका संकल्प करवा इसको आराम जल्दी होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ४५६।। हुक्मी शकल ⚏ हुमरा सावित मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू यह पूछता है कि मेरे पिताको बीमारी है इस बीमारीको दिन ज्यादे हुए और अब तक आराम नहीं हुआ है अनेक इलाज किये पर एक भी उसके काम न आया सो तू पूछता है कि इसको आराम कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! इसको अब १५ दिन नाक़िश रहे हैं सो इसके हाथसे नगदी नेक ब्राह्मणको दिवा और गौका संकल्प करवा आराम बरजरूर होगा फिकर मत कर इति प्रश्न पिण्ड ।।४५७।। हुक्मी शकल ⚏ बयाज सावित चंद्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरी माताको बीमारी है दिन ज्यादे हुए शरीरसे थक गई कभी कुछ आराम होता भी है तो फिर वैसी ही हो जाती है और जो इलाजें हकीमोंने किये उनसे कुछ लाभ नहीं हुआ जो इसके ग्रह सामान्य बताये उनका दान भी किया परंतु अबतक आराम नहीं हुआ" सो हे पूछनेवाले ! इसको सामान्य मारक हैं और विशेष आनेवाला है सो तू नवग्रहोंका दान और जप करवा इसका क्लेश दूर होगा फिकर मत कर इस मारकमें पुण्य सहाय होता है इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ४५८।। हुक्मी शकल ⚏ नुस्रुत् खारिज सूर्य्य देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तेरी माताके शरीरमें बीमारी है तू पूछता है कि कभी तो बीमारी बढ़ जाती है और कभी घट जाती है और कोई इलाज किये भी पर कुछ फायदा न हुआ सो यह क्या बीमारी है इसका निदान अच्छे अच्छे हकीमोंने किया परंतु अबतक पता नहीं लगा कि क्या बीमारी है" सो हे पूछनेवाले ! तुम्हारे पितृदोष है उसीसे यह बीमारी है कभी तो वायुकी और कभी पित्तकी देख पड़ती है और कभी कफकी कभी सन्निपातकी सो इसको पितृदोष है अब यह निहायत बीमारीने ग्रस ली है परंतु अब भी इसके हाथसे एक गऊका संकल्प और श्रीमद्भागवतके श्रवणका संकल्प और गयामें पिण्डका संकल्प करवा ईश्वरने चाहा तो अच्छी हो जायगी संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ४५९।। हुक्मी शकल ⚏ नुस्रुत् दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरामाती है कि "पूछनेवाले शख्स तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरे ताऊको निहायत सख्त बीमारी है उससे न तो भोजन किया जाता और जो कुछ भोजन कर भी लेवे तो हजम नहीं होता" सो हे पूछनेवाले !

इसके दिन निहायत नाकिश हैं कालके मुखमें आरहा है सो एक तो इसके हाथसे छायापात्र दान करवावो और नेक ब्राह्मणोंको रोकड़ी दान दिलावो सुख बरजरूर होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ।।३६०।। हुक्मी शकल ⁝ अतवेखारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरे ताऊको बीमारी है अनेक इलाज किये परंतु उसको कोई भी काम न आया उसको प्रथम तो क्षुधा नहीं लगती और जो किसी तरह भोजन भी किया तो कण्ठसे उतरता नहीं और हजम नहीं होता है जो कुछ दवा देओ तो अन्दर नहीं जाती और जो चली भी जावे तो गुण नहीं करती" सो तू पूछता है कि इसको आराम कब होगा । हे पूछनेवाले ! यह कालके मुखमें आ रहा है इसके हाथसे यमराज और महामृत्युञ्जयके मंत्रका संकल्प करवाकर नेक ब्राह्मणोंको दे और रोकड़ी भी नेक ब्राह्मणोंको दे इसको सुख होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ४६१।। हुक्मी शकल ⁝ नकी मंगल देवताकी मुनकलाब है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल ताईकी बीमारीका है तू पूछता है कि मेरी ताईको बहुत ज्यादे दिनोंसे बीमारी है सो आराम नहीं होता और अनेक इलाज कर लिये अब तक कुछ आराम हुआ नहीं" सो हे पूछनेवाले ! उसको मारक आरहा है परंतु चंद्रमाने बचाय रक्खी है सो उसके हाथसे ५ घीके कलश भरकर और एक २ तोला सुवर्ण डालकर नेक ब्राह्मणको दे और रुद्र जप करवा इसको आराम बरजरूर होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। ।।पिण्ड।।४६२।। हुक्मी शकल ⁝ अतवेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरी ताईको बीमारी है अच्छी नहीं होती उसका इलाज भी करवाया परंतु उसका मर्म किसी हकीमने नहीं पाया अब इसको आराम कब होगा और रोग किस दोषसे है" सो हे पूछनेवाले ! इसके ओपरी बीमारी है तुम्हारे कुटुंबमें पितृदोष है जिस करके मनुष्योंका इकलास नहीं रहता है और दिलमें संदेह रहता है सो हे पूछनेवाले ! इसके हाथसे श्रीमद्भागवतका संकल्प और गायत्रीके जपका संकल्प नेक ब्राह्मणोंको दे और पितरोंके वास्ते गया श्राद्ध या पिण्डारेके श्राद्धका संकल्प ले इसको आराम बरजरूर होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ४६३।। हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरे चचाको बीमारी बहुत दिनोंकी है अनेक इलाज किये परंतु कुछ आराम न हुआ अब आराम कब होगा" हे पूछनेवाले ! यह तो अब कालके मुखमें आ रहा है सो अब तू श्रीविष्णुभगवान्‌की २ तोला सुवर्णकी चतुर्भुजी मूर्ति बनवाकर षोडशोपचार पूजन कर उसे नेक ब्राह्मणको दे संदेह मत कर इसको सुख होगा और इसके हाथसे एक सहस्र विष्णुसहस्रनामके पाठका संकल्प करवा फिकर

मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।४६४।। हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीब चन्द्रमा-देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरे चाचाको ज्यादा बीमारी है प्रथम तो कुछ खाना नहीं खाया जाता और कुछ खा भी ले तो हजम नहीं होता कई इलाज किये पर कोई (इलाज) कार न आया अब पूछता है कि यह अच्छा कब होगा" सो हे पूछनेवाले शख्स ! इसको बीमारी ज्यादा है कालके मुखमें आ रहा है सो इसके हाथसे जमीनका दान कर और महामृत्युञ्जयके मंत्रका इस वर्षमें अनुष्ठान करा इसको सुख होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ४६५।। हुक्मी शकल ☱ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरी चाचीको बीमारी है अब तो शरीरसे भी थक गई और अन्न भी नहीं खाती और कई इलाज किये कोई भी कार न आया सो कब अच्छी होगी" सो हे पूछनेवाले ! तू संदेह मत कर अब तो या बीतली (होचुकी) परंतु ऐसा कहा करते हैं कि "जबतक श्वास तबतक आस" सो इसके हाथसे विष्णुसहस्रनामका आराधन और महामृत्युञ्जयके जपका इसी वक्त संकल्प करवा अच्छी होवेगी फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ४६६।। हुक्मी शकल ☱ कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरी चाचीको निहायत बीमारी है कंठसे कुछ (भोजनादि) उतरता नहीं और अनेक इलाज हकीमोंने किये परंतु दिनोंकी गरदिश करके कोईभी माफकत नहीं आया सो अब इसको आराम कब होगा" हे पूछनेवाले ! इसको ओपरी बीमारी है इस कारणसे कभी कुछ कभी कुछ दिखलाई पड़ता है, तू पितरोंकी आराधना कर पितरोंके वास्ते श्रीगायत्रीका आराधन करवा और कलश दान दे और पितरोंकी गया और पिण्डारा करवा इसको आराम बर जरूर होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।४६७।। हुक्मी शकल ☱ कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरे भाईको बीमारी ज्यादे है सब कुटुंबको निहायत फिकर हो रही है सो दिन पर दिन रोग बढ़ता जाता है और औषधी करें सो कोई भी कार नहीं करती इसको आराम कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! इसको निहायत सख्त बीमारी है इसको जन्मपत्रसे दशा भी नाकिश है सो तू महामृत्युञ्जयका जप और रुद्राभिषेक करवा पीपलके दरख्तमें काले तिलोंसे पानी डाल फिकर मत कर इसको सुख होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ४६८।। हुक्मी शकल ☰ जमात सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरे भाईको बीमारी ज्यादा है इलाज भी किया ग्रहोंका दान और अपनी ताकत माफिक पुण्यभी किया परंतु उसको आराम नहीं हुआ सो

अब उसको आराम कब होगा" हे पूछनेवाले ! उसको बीमारी ज्यादा है सो तू एक सहस्र विष्णुसहस्रनामके पाठोंका संकल्प करवा कर नेक ब्राह्मणोंसे यथाशक्ति पाठ करवा संदेह मत कर आराम होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ४६९।। हुक्मी शकल ⁝ फरहा मुनकलीव शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरे भाईकी औरतको निहायत बीमारी है दिन रात नींद नहीं आती और कुछ खाया भी नहीं जाता है और जो कुछ खावे भी तो पचता नहीं" सो हे पूछनेवाले ! इसके दिन निहायत नाकिश हैं सो तू इसके हाथसे नवग्रहोंके दान जप और एक कपिला गऊ तथा कुछ वित्तानुसार रोकड़ी नेक ब्राह्मणोंको दिवा इसको बरजरूर आराम होगा संदेह मत कर अल्लाताला अच्छी करेंगे इति प्रश्न ।।पिण्ड।।४७०।। हुक्मी शकल = उकला मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरे भाईकी औरतको अर्शसे बीमारी हैजो इलाज किया सो काम नहीं आया और अब दिन दिन बीमारी ज्यादे होती जाती है और हकीमोंको भी यथार्थ निश्चय नहीं हुआ कि कौन बीमारी है सो अब आराम कब होगा" सोहे पूछनेवाले ! अव्वल तो इसके निहायत नाकिश दिन हैं और दूसरे तुम्हारे कुटुंबमें पितृदोष है सो तू इसके हाथसे महामृत्युञ्जयके जपका संकल्प करवा और पितरोंके वास्ते गया श्राद्ध करना कबूलकर संदेह मतकर इसको बरजरूर आराम होगा फिकर मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ४७१।। हुक्मी शकल ≡ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है । पूछता है कि मेरे लड़केको बीमारी है सो उसकी बीमारीकी खबर न पड़ी कि क्या बीमारी है कभी तो दस्त लग जाते हैं और कभी रह करता है खाता कुछ नहीं और शरीरसे सूख रहा है" सो हे पूछनेवाले ! इसकी तालु कण्ठकी बीमारी है और कभी तो आराम हो जाता है सो हे पूछनेवाले ! तैंने दुर्गाकी यात्रा पहले मुकर्रर की थी सो तैंने नहीं की सो जबतक दुर्गाकी यात्रा न करेगा तबतक इसको आराम न होगा सो तू यात्राकी तजबीज कर संदेह मत कर यह करनेसे बरजरूर आराम देगा और ११ माशे सोना डाल कर घृत छाया दान करके योग्य ब्राह्मणको दे उसी समय आराम होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ४७२।। हुक्मी शकल ⁝ हुमर सावित चंद्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरे लड़केको ज्यादे दिनोंकी बीमारी है अनेक इलाज किये परंतु दिनोंकी गरदिश करके इलाज दुरुस्त न हुए और अब दिन ज्यादे बीमारी बढ़ती है सो तू पूछता है कि इस लड़केको आराम कब होगा" सो हे पूछनेवाले इस लड़केको अब दिन निहायत नाकिश सो तू इस लड़केके हाथसे एक चतुर्भुजी विष्णुभग-

वान्की मूर्ति बनवाकर उसका पूजन करा और महामृत्युञ्जयके मंत्रकाआराधन करवा इसको आराम होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ४७३।। हुक्मी शकल ⚍ बयाज सावित चंद्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरे नानाको बीमारी है सो उसको सख्त बीमारी है प्रथम तो उससे खाया नहीं जाता और जो कुछ खा लेवे तो हजम नहीं होता और अनेक इलाज करवाये परंतु एक भी इलाज दिनोंकी गरदिश करके काम न आया सो अब यह पूछता है कि इसको आराम कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! यह कालके मुखमें आरहा है इसको दिन निहायत नाकिश हैं परंतु श्रीमहामृत्युञ्जयका अनुष्ठान इसी वक्त जारी करवा और एक कलशमें घी भरके २ तोला सुवर्ण उसमें छोड़ और नेक ब्राह्मणको दे, संदेह मत कर इसको आराम बरजरूर होगा फिकर मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ४७४।। हुक्मी शकल ⚍ नुस्रुत्खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरे नानाको बहुत ज्यादे दिनोंसे बीमारी है सो उस बीमारीमें वह निहायत घबरा रहा है शरीरमें तमा न रही और जो इलाज किया सो कोई काम न आया" सो हे पूछनेवाले ! यह तेरा नाना तो कालके मुखमें आरहा है इसको बीमारी निहायत ज्यादा है सो हे पूछनेवाले ! तू इसके हाथसे एक सहस्र विष्णुसहस्रनामके पाठोंका संकल्प कराकर नेक ब्राह्मणोंको सुवर्ण दान दे यह करनेसे सुख होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ।।४७५।। हुक्मी शकल ⚍ नुस्रुत् दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरी नानीको बीमारी है सो उसको यह बीमारी कई दिनोंसे है और तो दिनपर दिन प्रथम तो भोजन थक गया और दूसरे शरीरमें ताकत न रही और अब कुछ बीमारी भी ज्यादे होती है सो अब आराम कब होगा" हे पूछनेवाले ! इसको सख्त बीमारी है इसको ईश्वरने धन बहुत दिया है इसके हाथसे एक पुरश्चरण गायत्रीका संकल्प करवा और कलश तथा जमीनका दान करवा इसके जीवको सुख होगा संदेह मत कर इति प्रश्न पिण्ड ।। ४७६।। हुक्मी शकल ⚍ अतबेखारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरी नानीको बीमारी है कब अच्छी होगी" हे पूछनेवाले ! वह तो अच्छी हो चुकी भुने हुए अन्नको जमावा चाहे और उसमें फिर जलकी परवस्ती करे तो वह क्या जमेगा कभी नहीं सो हे पूछनेवाले ! अब २१ दिन बाद तेरे नाकिश दिन आवेंगे इससे तू मंगलका दान और सवालक्ष जप करवा नहीं तो तेरे ऊपरजबर आफत आवेगी फिकर मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड ।। ४७७।। हुक्मी शकल ⚍ मुनकलीब मङ्गल देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू

पूछता है कि मेरे मामाको निहायत ज्यादे बीमारी है उसको आराम कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! तूने इलाज भी बहुत किये परंतु दिनोंकी गरदिश करके दुरुस्त न हुए सो तू इसके हाथसे सूर्य्यदेवता और शनिका दान और छायापात्रमें २१ तोला सूवर्ण गिरवाकर नेक ब्राह्मणको दे और महामृत्युंजयका जप अखंड करवा इसको आराम बरजरूर होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।४७८।। हुक्मी शकल ⁝ अतवेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरे मामाकी बीमारी है अब तो कुछ आराम है पर कभी ज्यादे हो जाती है और कोई इलाज करे तो उस वक्त किसी औषधिसे कुछ आराम हो जाता है पर फिर वैसी हो जाती है और आराम नहीं होता" सो हे पूछनेवाले ! तुम्हारे मामाके कुटुंबमें पितृदोष है जिस करके सुख नहीं रहता कभी किसी बातका क्लेश रहता ही है सो तू पितरोंका आराधन करवा और पितरोंका गयाश्राद्ध करवा अथवा पिण्डारा करवा श्रीमहाभारतकी पुस्तक नेक पढ़ेहुए ब्राह्मणको दे इससे आराम बरजरूर होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।४७९।। हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा सावित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल बीमारीका है तू यह पूछता है कि मेरी मामीको बीमारी है सो प्रथम तो भोजन खाती नहीं और जो कुछ खाती भी है तो हजम नहीं होता" सो हे पूछनेवाले ! इसके दिन निहायत नाकिश हैं सो तू शनि और बृहस्पतिका दान और जप करवा और ३ मासे सूवर्ण नेक ब्राह्मणको दे संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ४८०।। हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीव चंद्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरी मामीको बीमारी है सो उसको बीमारी ज्यादे दिनोंकी होगी इससे उसको अब तकलीफ ज्यादे है और शरीरसे निहायत हरारत हो रही है और कोई इलाज दिनोंकी गरदिश करके दुरुस्त न आया सो पूछता है कि कब अच्छी होगी" सो हे पूछनेवाले ! यह तो कालके दुखमें आ रही है परंतु इसके हाथसे एक सहस्र विष्णुसहस्रनामोंके पाठोंका संकल्प करवा और एक कलश तांबेका घीसे भरकरके और जितनी तेरी ताकत हो उतना सुवर्ण उसमें छोड़के नेक ब्राह्मणको दे फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ४८१।। हुक्मी शकल ⁝ लहियान खारिज बृहस्पति देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि एक मनुष्यको बीमारी सख्त है उससे भोजन भी नहीं किया जाता और जो कुछ भोजन कर लेवे तो पचता नहीं और शरीरसे भी निहायत थक गया है जो कुछ इलाज किये सो दिनोंकी गरदिश करके काम नहीं आये" सो हे पूछनेवाले ! इसको मङ्गलग्रह जन्मपत्रसे निहायत नाकिश है सो मङ्गल धरणीका पुत्र है इससे मकान बनवाकर किसी नेक ब्राह्मणको

दान करके दे फिकर मत कर इसको मङ्गलके कोपसे कभी कुछ कभी कुछ वर्षोंसे बीमारी चली आती है कभी पुण्यके फलसे अच्छी हो जाती है सो अब उक्त उपायकर इसको आराम बरजरूर होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ४८२।। हुक्मी शकल ⠶ कबजुल दाखिल सूर्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि एक मनुष्यको बीमारी है सो उसको ज्यादे बीमारी है अनेक इलाज किये परंतु माफिक नहीं आये और अब दिन पर दिन थकता जाता है" सो इसको शुक्र और राहु दो ग्रह निहायत नाकिश हैं इस मारकमें इसकी जिंदगी रहनी मुशकिल है सो इसके हाथसे शुक्र और राहुका दान और जप करवा तथा महामृत्युंजयका अखण्ड जप करवा इसको आराम होगा फिकर मत कर अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ।।पिण्ड।।४८३।। हुक्मी शकल ⠶ कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरे शत्रुको बीमारी है सो बीमारी ज्यादे दिनोंसे है परंतु ऐसा दुष्ट है कि मरता नहीं सो मैं पूछता हूं कि इस बीमारीमें यह मरेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! इसको बीमारी ज्यादे दिनों की है और इसका दिन भी निहायत नाकिश है परंतु इसका मारक नहीं आया है सो अब ७ दिन बाद आनेवाला है अब भी सामान्य मारक है सो तू शत्रु विनाशकारक घटाकर्ण मंत्रका जप इस प्रकारसे करवा फिर फौरन मौत होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ४८४।। हुक्मी शकल जमात ☰ सावित बुध देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा वाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरे शत्रुको बीमारी है वह मेरा बड़ा दाना दुश्मन है सो उसको सबर ज्यादे है मैंने उसके सङ्ग अनेकबार नालायकी की है परंतु उसने तब भी लायकी ही की है परंतु अब उसको बीमारी बहुत ज्यादा है सो मैं यह पूछता हूं कि बहुत अच्छा कब होगा या उसका शरीर ही पूरा होगा" सो हे पूछनेवाले ! जैसा तू कहता है वैसा ही है परंतु अब उसके दिन निहायत नाकिश हैं सो हे पूछनेवाले ! उसके हाथसे एक सहस्त्र विष्णुसहस्त्रनाम पाठका संकल्प करवा और गऊके दानका संकल्प करवा आराम होगा ज्यादे क्लेशमें पुण्य सहाय होता है फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।४८५।। हुक्मी शकल ⠶ फरहा मुनकलीव शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शत्रुके मरनेका है तू पूछता है कि मेरा शत्रु बहुत नालायक है और विना मतलब मुझको तकलीफ देता है सो यह दुष्ट कब मरेगा" सो हे पूछनेवाले ! इसको अभी मारक नहीं है परंतु तुझको निहायत तकलीफ देता हो तो सूर्य्यके दिन पीले आकके ७ पत्ते लाकर आककी ही पलासीसे इन पत्तोंपर उसका नाम लिख कर अग्निमें ७ दिन होम कर तेरे शत्रुको मारक होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।४८६।। हुक्मी शकल ⠶ तकला मुनकीव शनिग्रह की है

हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू किसी शत्रुकी बीमारीको चाहता है तू पूछता है कि मेरा शत्रु जबर है और बातबातमें मुझको दिक करता है सो तू चाहता है कि इसको बीमारी भी कुछ नहीं होती सो इसको बीमारी होगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! इसके ग्रह बहुत सख्त हैं इसको देखकर सब कांपते हैं सो तू मट्टीके बरतनकी ठेकरीपै शनिवारको उसका नाम केशर और आकके दूधसे लिखकर आंचमें दबा दे जितनी देर आंचमें ठेकरीको दबी हुई रखेगा उतनी देर शरीरमें अग्नि लगी रहेगी और बुखार चढ़ जावेगा और छोटेसे छोटा भी शत्रु उसको सिंह दिखाई देगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ४८७।। हुक्मी शकल ☰ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शत्रुके मारनेका है सो तू पूछता है कि मैं शत्रुसे निहायत दिक कर दिया हूं मुझको गलीमें भी नहीं चलने देता है सो मेरा दिल निहायत दिक होगया है अब मेरे दिलमें यह है कि मैं शत्रुको किसी तजबीजसे मरवाया चाहता हूं" सो हे पूछनेवाले ! शत्रुको किसीसे मरवावे मत अब तेरे दिन नाकिश हैं सो किसीसे मरवावेगा तो तू ही पकड़ा जावेगा तो तू अब नाम मत ले और ६ मास २१ दिन बाद इसको नाकिश दिन आवेंगे सो तब यह निहायत तकलीफ पावेगा और बहुत दिक होगा जिसको देखकर तू बहुत खुशी होवेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।४८८।। हुक्मी शकल ☰ हुमरा साबित मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसीके मारनेका है सो तू पूछता है कि हमरा शत्रु निहायत दुष्ट है मुझको गली चलते हुए भी बोली ताना मारता है सो तू सम्मुख नहीं हो सकता तेरे दिलमें निहायत गरदिश आरही है सो तेरे दिलमें यह है कि शत्रुको मार दूं" सो हे पूछनेवाले शख्स ! तू शत्रुको मत मार क्योंकि तेरे दिन अब निहायत नाकिश हैं जो तू अब शत्रुपर हाथ छोड़ेगा तो तेरा शत्रु तो नहीं मरेगा पर तेरे ऊपर राजकी निहायत खफगी होगी फिकर मत कर शत्रुविनाशिनी काली के मंत्रका आराधन करवा शत्रु नष्ट होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। इति चतुर्दशस्थानफलं समाप्तम् ।। अथ पञ्चदशस्थानफलम् ।। पिण्ड ।।४८९।। हुक्मी शकल ☰ बयाज साबित चंद्रमा-देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भाग्योदयका है तू पूछता है कि मेरा भाग्योदय कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! अब तेरे भाग्योदयमें कुछ देर नहीं है तू श्मशानका भस्म लेकर पहले तो गङ्गाजलसे शिवजीका स्नान करवा और पीछे श्मशानके भस्मका शिवजी को त्रिपुड़ तिलक २१ दिन चढ़ा तब तेरा भाग्योदय होगा संदेह मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ४९०।। हुक्मी शकल ☰ नुस्रुत् खारिज सूर्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भाग्योदयका है तू पूछता है कि मेरा भाग्योदय कब होगा मेरा कई दफे रोजगार लग

जाता है परंतु फिर दूर हो जाता है अब मेरा रोजगार फिर न छूटे ऐसा कब लगेगा" हे पूछनेवाले ! तेरे भाग्योदय हुए ३ वर्ष हुए परंतु तेरे जन्मपत्रमें एक तो सूर्य्य दूसरे शुक्र दो ग्रह माफिक हैं जब कहीं तेरा रोजगार लग जाता है उसमें प्रथम तेरा दिल नहीं लगता और कोई अफसर आकर कुछ कहे तो दिलको बर्दास्त नहीं होती उसी वक्त अफसरके सामने हो जाता है सो अफसरके सामने होनेसे या कोई और बेफायदा करनेसे लाभ नहीं होता सो अब तू सूर्य और शुक्रका आराधन करवा फिकर मत कर तेरा निरन्तर रोजगार हो जावेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ४९१।। हुक्मी शकल : नुस्रुत् दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमातीहै कि "पूछनेवाले ! तेरा सवाल भाईके भाग्योदयका है तू पूछता है कि मेरे भाईका भाग्योदय कब होगा" सो हे पूछ-नेवाले ! तेरे भाईका भाग्योदय ४ मास ५ दिन बाद होगा परंतु इसके हाथसे एक गऊका पूजन ११ दिन करवा इससे इसको लाभ अच्छा होगा क्योंकि इसको पहले जन्मका गऊका शाप है सो पूजन करनेसे इसको जल्दी ही लाभ होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ४९२।। हुक्मी शकल ⁝ अतबे खारिज केतुकी है हुक्म फर-माती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भाईके भाग्योदयका है तू पूछता है कि मेरे भाईका भाग्योदय कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! तू संदेह मत कर इसके भाग्योदयमें बहुत देर है शनि और मङ्गल दो ग्रह इसके जन्मपत्रमें सामान्य पड़े हैं सो उनका दान और पूजन और जप कर जब तक इन ग्रहोंको न पूजेगा तब तक इसका भाग्योदय नहीं होगा सो तू इन ग्रहोंका पूजन करवा इसका भाग्योदय होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ४९३।। हुक्मी शकल ⁝ नकी मुनकलीब मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भाग्योदयका है तू पूछता है कि मेरे पुत्रका भाग्योदय कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरे पुत्रका भाग्योदय होनेवाला है कुछ देर नहीं है तू अपने पुत्रके हाथसे शिवजीका गङ्गाजलसे स्नान करवा और चिता भस्मका चंदन २१ दिन चढ़वाय ऐसा करनेपर जल्दी ही भाग्योदय होगा इसके हाथसे यश भी ऐसे होंगे कि जो तुम्हारे कुटुंबमें अबतक किसीसे नहीं बन आये और इसके जन्मपत्रमें ग्रह भी बहुत उत्तम हैं सो तू संदेह मत कर संदेहके दिन गये अब उत्तम दिन तुझको और तेरे पुत्रको आये हैं फिकर मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।।४९४।। हुक्मी शकल ⁝ अतबेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भाग्योदयका है तू पूछता है कि मेरे पुत्रका भाग्योदय कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! इसके जन्मपत्रमें ग्रहोंने पञ्चम भवन बिगाड़ रखा है, बुद्धिका कारण पश्चिम भवन होता है और भाग्योदयका कारण बुद्धि होती है सो इसका बुद्धिस्थान बिगड़ रहा है प्रत्यक्षमें इसकी बुद्धि तीक्ष्ण नहीं है सो पंचम भवनमें जो माफिक ग्रह पड़े हैं और जो माफिक देखते हैं उनके जपका

संकल्प नेक ब्राह्मणको दे और तद्दशांश हवन तद्दशांश तर्पण तद्दशांश मार्जन तद्दशांश ब्राह्मण भोजन करवा और इसको ब्राह्मी बूटी और श्याम गऊका घृत खवाय इसकी बुद्धिकी चपलता और शरीरकी चेष्टा सुंदर होगी संदेह मत कर इसकी तकदीर ऐसा करनेसे जल्दीही खुलेगी फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।४९५।। हुक्मी शकल ⁝ इजातमा साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल चोरीका है तू पूछता है कि चोर कितने हैं और किस दिशाको गये हैं और मेरा धन मिलेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! चोर ४ थे वह तेरे धनको लेकर पूर्वको गये और तेरा धन छिपा दिया है अब वह तेरा धन चोरोंके घरमें भी नहीं रहा है सो अब तेरे दिन निहायत नाकिश हैं नाकिश दिनोंमें गुजरान कर तेरा धन नहीं मिलेगा और जो तुझसे न रहा जाय तो श्रीकालिकाका आराधन करवाकर इसपर उद्योग कर ऐसा करनेसे कुछ मिलेगा इति प्रश्न ।।पिण्ड।।४९६।। हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीव चंद्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीका है तू पूछता है कि मेरे धनको चोर लेगये प्रथम तो चोर कितने हैं और किस दिशामें गये हैं तथा मेरा धन मिलेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरा धन दक्षिण दिशाको गया है और कुछ धन छोड़ भी गये हैं और चोर ३ थे । हे पूछनेवाले ! तेरे दिन निहायत नाकिश हैं अब तू कोई उद्योग करेगा तो नहीं होगा सो अब तेरे १५ दिन और नाकिश रहे हैं सो तू नाकिश दिनोंके बाद उद्योग करना कुछ तुझको मिल जावेगा फिकर मत कर अच्छे दिनोंमें और भी लाभ होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड ।। ४९७।। हुक्मी शकल ⁝ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीका है तू पूछता है कि कितने चोर थे और किस दिशाको गये और मेरा धन मिलेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! चोर ५ थे और धन लेकर पश्चिमको गये और तेरा धन नहीं मिलेगा क्योंकि तुझको दिशाका सामान्य अन्तर है सो तेरा धन आता नहीं दीखता है तू उद्योग करेगा तो तेरा कुछ धन मिलेगा और जो तुझे सबर न हो तो तू गङ्गाजलसे शिवजीको स्नान करवा कर और चिता भस्मका त्रिपुण्ड्रतिलक शिवजीको कर २१ दिन ऐसा करनेसे कुछ धन मिलेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ४९८।। हुक्मी शकल ⁝ जमात कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीका है तू पूछता है कि मेरे धनको चोर लेगये हैं और किस दिशामें लेगये हैं मेरा धन मिलेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! चोर ५ थे वह उत्तर दिशाको धन लेगये और अब तेरे दिन नाकिश हैं सो तू जबर उद्योगकरऔर दुर्गाका आराधन रख पाठ करवा फिकर मत कर कुछ देरसे धन लगे धन आवेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ।।४९९।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुलखारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने-

वाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीका है पूछता है कि मुझको एक मनुष्यने भालदी है एक जगह एक साहूकारके मकानमें धन बताया है सो मेरा दिल चोरी करनेको है सो चोरी कब करूं और माल मेरे हाथ आवेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब तेरे दिन बहुत नाकिश हैं सो नाकिश दिनोंमें गुजरान कर अब धन तेरे हाथ नहीं लगेगा और जान जोखिममें पड़ेगी सो तू चोरी मत कर तुझको लाभ नहीं है और अब २५ दिन बाद तेरे दिन अच्छे आवेंगे सो तुझको और भी लाभ बहुत होगा संदेह मत कर श्रीभगवतीके बीजमंत्रका आराधन करवा सब बातका आनंद होगा इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ।।५००।। हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने· वाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीका है तू पूछता है कि मेरे दिलमें चोरी करनेकी है एक मनुष्यने कुछ धनकी एकके साज लाई है सो मेरा मन यह कहता है कि मैं चोरी करूं सो हे पूछनेवाले ! तू इस जगे चोरी मत कर क्योंकि तेरी चोरी जाहिर हो जायगी और राजासे तुझको बहुत जुर्माना होगा सो तू मत कर हे पूछनेवाले ! चोरीमें कोई जबर साहूकार हुआ नहीं सुना इससे तू चोरी मत कर तुझको बिगर चोरी ही फायदा होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। इति पञ्चदशस्थानफलं समाप्तम् ।। अथ षोडश-स्थानफलं प्रारभ्यते ।। पिण्ड ।।५०१।। हुक्मी शकल ⁝- फरहा मुनकलीव शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थ यात्राका है तू पूछता है कि मेरे दिलमें तीर्थ यात्रा करनेकी है परंतु बहुत दिन हुए हो नहीं सकती और मेरी तीर्थयात्रा होगी तो सुखसे होगी या दुःखसे" हे पूछनेवाले ! तेरी तीर्थ यात्रा अब होगी क्योंकि अब तेरा पुण्योदय हुआ है और रास्तेमें भूखे अपाहजोंको कुछ देता रहना जिस करके तंदुरुस्ती रहेगी और जो तुझपर हाथ डालेगा वह तेरे पुण्यके प्रतापसे जाहिर हो जावेगा सो तू फिकर मत कर तेरी तीर्थ यात्रा बहुत अच्छी होगी इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ५०२।। हुक्मी शकल =̣ उकला मुनकलीव शनि देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि मेरा मनोरथ तीर्थयात्राको बहुत दिनोंसे कर रहा है परंतु कुछ न कुछ विघ्न हो जाता है । गृहस्थका सबब जबर है और दिल भी धीरज नहीं धरता क्योंकि अबतक ऐसा कहीं जाना भी नहीं बना है" सो हे पूछनेवाले ! तीर्थयात्रा करनी कुछ सामान्य नहीं क्योंकि इस तीर्थयात्राके तुल्य और पुण्य नहीं होता है सो अबतक तैंने पक्का मनसूबा नहीं किया था अब पक्का मनसूबा किया है सो तू तीर्थयात्रा कर तेरी तीर्थयात्रा बहुत अच्छी होगी फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ५०३।। हुक्मी शकल ☰̣ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शक्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है सो तू पूछता है कि मेरा मनोरथ श्रीजगन्नाथजीकी यात्राका है बहुत दिनोंसे इच्छा करता हूं परंतु गृहसे निकास नहीं होता" सो हे पूछने-

वाले ! अब तक तेरा पुण्योदय पूर्व जन्मका नहीं हुआ था यह श्रीजगन्नाथजीके दर्शन पूर्वजन्मके पुण्योदय बिगर नहीं होता है सो अब तेरा पूर्वजन्मका पुण्योदय हुआ है सो अब तुझको श्रीजगन्नाथजीके दर्शन होवेंगे संदेह मत कर एक बार तो फिर भी जानेमें कोई दिनका अवरोध होगा परंतु अब ५ मास भीतर तेरी तीर्थयात्रा (श्री-जगन्नाथजीके दर्शन) होगी पुण्य ज्यादे करना कुशलता रहेगी फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ५०४।। हुक्मी शकल ☰ हुमरा साबित मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि जब मेरे मनमें श्रीजगन्नाथजीके दर्शनकी आई उसी वक्त कोई न कोई अवरोधहो जाता है दिलमें दर्शनोंकी लग रही है परंतु होने नहीं पाते" सो हे पूछनेवाले ! तेरा पहले और इस जन्मका ऐसा पुण्य नहीं कि जिस करके तुझको दर्शन होवें सो तू पुण्य कर तेरे श्रीजगन्नाथजीके दर्शनोंमें कुछ देर है संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।५०५।। हुक्मी शकल ☰ बयाज साबित चंद्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अपने शरीरके सुखका है, तू पूछता है कि मेरा दिल निहायत नाराज रहता है और मेरा दिल नहीं लगता है और घरके मनुष्य मेरी संमतिमें नहीं हैं और मुझको उनकी संमति अच्छी नहीं लगती और जो मैं किया चाहता हूं सो भी नहीं हो सकता सो मेरा मनोरथ यह है कि या तो मैं इस जगहसे चलाजाऊं या मेरा कार्य्य सब पृथक् होजावे और मेरा अब १० माससे रोजीना जब्त है मेरा हाथ भी शख्त है और घरमें दौलत बहुत है परंतु मेरी एक कौड़ी भी नहीं है सो मैं यह पूछता हूं कि मैं अपने हाथ माथे कब हो जाऊंगा" सो हे पूछनेवाले शख्स ! तेरे दिन अब निहायत नामाफिक हैं तू २ वर्ष ७ मास ११ दिनसे कैदसमान है और अब भी तेरे दिन निहायत नाकिश हैं सो ३ मास भीतर तू अपने हाथ माथे होजावेगा, परंतु संदेह तुझको ज्यादे बढ़ेगा इससे तू पितरोंके वास्ते नेक ब्राह्मणको एक सूवर्णकी मूर्ति ५ पलकी बनवा और पूजन करवाकर दे तुझको संतानका भी सुख होगा तुच्छ कार्यमें निगाह मत दे बड़ोंका यश देख संदेह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।।५०६।। हुक्मी शकल ☱ नुस्रुत् खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शीरसे जुदा होनेका है सो तू पूछता है कि हमारे घरमें जो मुरव्वी बन रहे हैं उनमें तो अक्ल बालककीसी भी नहीं है और घरमें दिन रात औरतोंका क्लेश रहता है और मरदोंके भी दिल फट रहे है अपना सब चाहते हैं सो मैं यह पूछता हूं कि इससे धनका भी नुकसान है और घरके क्लेशसे इज्जत भी बिघड़ती है जो निहायत शत्रु थे वे अब इस हालको देखकर बहुत खुशी होते हैं सो मैं यह पूछता हूं कि यह क्लेश कब मिटेगा और शीर जुदा कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! तुम्हारे पितृदोष है तू पितरोंके वास्ते गायत्रीके पुरश्चरण और गयाश्राद्ध करा फिर

यह क्लेश सब दूर होगा फिकर मत कर और शीर भी फौरन जुदा होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।५०७।। हुक्मीशकल ⁝ नुस्रुद्दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि मेरे दिलमें बहुत दिनोंसे बद्रीनारायणके दर्शनोंकी लग रही है परंतु अबतक जाना न बना जब मनोरथ करूं तब ही कोई विघ्न बीचमें आ पड़ता है सो अब यह पूछता हूं कि श्रीबद्रीनारायणके दर्शन मेरे प्रारब्धमें है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! ये श्रीबद्री नारायणके दर्शन कुछसामान्य नहीं हैं पूर्वजन्मका पूर्णभाग्योदय होवे तब इस उत्तराखण्डका दर्शन होता है और श्रीबद्रीनारायणका दर्शन तो बहुत ही पुण्योदय होवे तब होता है सो तुझको दर्शन अब होवेंगे उद्यम कर संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ।।५०८।। हुक्मी शकल ⁝ अतवेखारिज केतुदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि मैं अबबद्रीनारायण जानेका मनोरथ करता हूं सो मुझको श्रीबद्रीनारायणके दर्शन कुशलतासे होवेंगे या नहीं" सो पूछनेवाले ! तू दर्शनोंके वास्ते गमन कर तेरा पूर्वजन्मका पुण्य बहुत ज्यादे हैं हे संदेह मतकर तुझको दर्शन कुशलतासे होगा और बहुत आनंद होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।।५०९।। हुक्मी शकल ⁝ नकी मुनकलीव मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि मैं सेतु बंध रामेश्वरकी यात्रा किया चाहता हूं सो बहुत दिनोंसे मनोरथ करता हूं परंतु गृहस्थके सबबसे नहीं हो सकता सो अब मैं यह पूछता हूं कि मेरी सेतुबंध रामेश्वरकी यात्रा होगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरा पहले जन्मका बहुत पुण्य है परंतु अबतक उदय नहीं हुआ है अब ३ मास बाद उदय होनेवाला है सो अब (३ मास बाद) तुझको बरजरूर दर्शन होवेंगे सो तैने पुण्य खूब करना धनका यही फल है इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ५१०।। हुक्मी शकल ⁝ अतवे दाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि मेरा मनोरथ सेतुबंधरामेश्वरके दर्शन करनेका है कुशलतासे मुझको दर्शन होवेंगे या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरा पूर्व जन्मका पुण्य ज्यादे है सो अब उदय हुआ है इससे अब तुझको दर्शन बहुत कुशलतासे होवेंगे संदेह मत कर पुण्य करना पहले जन्मका किया तो अब पाया है अबका किया आगे पावेगा फिकर मत करइति प्रश्न।।पिण्ड।। ।।५११।। हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि मेरे मनमें द्वारकाजीकी यात्राकी बहुत दिनोंसे लग रही है परंतु गृहस्थके व्यापारकरके दर्शनोंके वास्ते गमन नहीं हो सकता सो अब मैं यह पूछता हूं कि मेरी श्रीद्वारिकाके दर्शनोंके वास्ते यात्रा होगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तू संदेह मत कर अब तेरी यात्रा होनेवाली

है सो अब तेरा पूर्वजन्मका पुण्योदय हुआ है अब ५ मास बाद तेरी यात्रा होगी पुण्य करना इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ५१२ ।। हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीब चंद्रमा-देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि मेरा मनोरथ द्वारिकाकी तीर्थयात्राका है सो यात्रा सूखसे होगी या नहीं" सोहे पूछनेवाले ! तेरी यात्रा बहुत आनंदसे होगी क्यों कि तैंने पहले जन्ममें पुण्य किया है उस पुण्यके प्रतापसे संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ५१३ ।। हुक्मी शकल ☰ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि मेरा मनोरथ पुष्करयात्राके वास्ते बहुत दिनोंसे है परंतु गृहस्थके व्यापार और मंदभाग्यता होनेसे पुष्करयात्रा नहीं होती सो मैं पूछता हूं कि श्रीपुष्करजीमें स्नान होगा या नहीं" हे पूछनेवाले ! तेरे दिलमें यथार्थ अब जची है अबतक तेरे पूर्वजन्मका पुण्योदय नहीं हुआ था सो अरे हुआ अब १ मासमें पुष्करस्नान होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।५१४।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुलदाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स!तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि मेरे दिलमें पुष्करजीके स्नानकरनेकी है पुष्करजीका स्नान होगा या नहीं और सूखसे होगा या दुःखसे" सो हे पूछनेवाले ! कार्तिक सुदि ११ एकादशीसे लेकर ५ दिन पंचभीष्म कहाते हैं सो इन ५ दिनोंमें पुष्करजीमें सब तीर्थ आते हैं सो पंचभीष्मोंमें पुष्करमें स्नानका यह फल है कि जैसा सब तीर्थोंमें किया सो तू स्नान कर तेरा पूर्वजन्मका पुण्य है तुझको सब बातका सुख रहेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।५१५।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुलखारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि मेरा मनोरथ श्रीगंगाजीके स्नानका बहुत दिनोंसे है परंतु मनोरथ सिद्ध नहीं होता सो मैं यह पूछता हूं कि मेरा स्नान श्रीगंगाजीमें होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! श्रीगंगाजीका स्नान कुछ कमती नहीं है जिसके स्नानकी देवता भी अभिलाषा करते हैं सो तेरा पूर्वजन्मका पुण्य ज्यादे है परंतु अबतक उदय नहीं हुआ है सो अब २ मास भीतर उदय होगा इसलिये तुझको सर्वपापमोचनी श्रीगंगाजीमें स्नान करावेगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।५१६।। हुक्मी शकल ।। ।। जमात सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल श्रीतीर्थयात्राका है सो तू यह पूछता है कि मेरा मनोरथ श्रीगङ्गाजीके स्नानका है सो स्नान होगा या नहीं और स्नान होगा तो सुखसे होगा या दुःखसे" सो हे पूछनेवाले ! तू सच पूछता है क्योंकि सर्वपाप मोचनी श्रीगंगाजीका स्नान पूर्वभाग्योदय बिगर नहीं होता है सो अब तेरा पूर्वभाग्योदय होता है संदेह मत कर स्नान जरूर होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।५१७।। ।। हुक्मी शकल

⁝ फरहा मुनकली शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि बहुत दिनोंसे मेरा मनोरथ प्रयागकी यात्राका है परंतु जाना नहीं बनता सो अब बनेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब तेरा स्नान बरजरूर बनेगा यद्यपि श्रीप्रयागका स्नान मंदभाग्योंको मुशकिल है परंतु तेरा पूर्वजन्मका पुण्य ज्यादे है अब स्नान होगा फिकर मत कर इति प्रश्न।।पिण्ड।।५१८।। हुक्मी शकल ⁝ उकला मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि मेरा मनोरथ प्रयागके स्नानका है सो स्नान होवेगा या नहीं और स्नान होवेगा तो सुखसे होवेगा या दुःखसे" हे पूछनेवाले ! तेरा भाग्योदय पूर्वजन्मका हुआ है सो तू स्त्रीको संगमें लेकर स्नानकर गंगा यमुना सरस्वतीका स्नान पूरे भाग्यसे होता है सो तू कर सुखसे होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ५१९।। हुक्मी शकल ⁝ अंकीश शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है सो तू पूछता है कि श्रीशिवपुरी काशीजीकी यात्राकी बहुत दिनोंसे मनमें लग रही है परंतु जब मनोरथ किया तब पार न पड़ा सो अब यह पूछता हूं कि मेरी श्रीविश्वनाथपुरीकी यात्रा होगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! विश्वनाथपुरीका दर्शन पूर्ण प्रारब्धीको ही होता है सो अब तेरा पूर्वजन्मका भाग्योदय हुआ है सो अब जल्दी ही काशीजीका वास होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ५२०।। हुक्मी शकल ⁝ हुमरा साबित मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है "हे पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि मेरा मनोरथ काशीजीमें विश्वनाथके दर्शनकरनेका है सो दर्शन होंगे या नहीं और जो होंगे तो सुखसे होंगे या दुःखसे" सो हे पूछनेवाले ! तेरा पूर्वजन्मके पुण्यका उदय अब हुआ है सो अब तुझको विश्वनाथपुरीके दर्शन होंगे और बहुत आनंद रहेगा सन्देह मत कर यह दर्शन पूर्ण पूर्वजन्मके तप विना नहीं होते है सो फिकर मत कर दर्शन जल्दी ही होंगे सुख रहेगा इति प्रश्न।।पिण्ड।।५२१।। हुक्मी शकल ⁝ वयाज साबित चंद्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि मेरा मनोरथ बहुत दिनोंसे है कि ब्रह्मपुत्र तीर्थकी यात्रा करूं परंतु जब मनोरथ करता हूं उसी वक्त कोई विघ्न होजाता है" सो हे पूछनेवाले ! जो तदबीर करता हैं वह नहीं लगती सो अब तेरा पूर्व जन्मके पुण्यका उदय हुआ है सो अब १ मास ७ दिन बाद तेरी ब्रह्मपुत्रकी यात्रा होगी परंतु अब तेरे दिन जरा नाफिश हैं इसी कारणसे तेरा दिल भी बिगड़ा रहता है सो तू श्रीगती भगवती मंगलमूर्तिका आराधन कर और दुर्गापाठ करवा बलिदान दे तेरे व्यापारमें लाभ भी बहुत होगा और तीर्थयात्रा भी होगी और फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ५२२।। हुक्मी शकल ⁝ नुस्रुत् खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म

फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि मेरा मनोरथ अब ब्रह्मपुत्र तीर्थकी यात्रा करनेका है सो इस यात्रामें किसी प्रकारका क्लेश तो न होवेगा और शरीरको सुख होगा यह पूछता है" सो हे पूछनेवाले ! पूर्वजन्मके पुण्यका उदय अब हुआ है तो तू यात्रा कर तुझको किसी बातका फिकर न होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ५२३ ।। हुक्मी शकल ⁞ नुस्नुत्दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि मेरे मनमें बहुत दिनोंसे गयाजीकी यात्रा करनेकी है" सो हे पूछनेवाले शख्स ! तेरा मनोरथ तो बहुत दिनोंसे है परंतु गृहस्थके व्यापार करके जाना नहीं हुआ सो हे पूछनेवाले ! अबतक तेरे दिन निहायत नाकिश थे परंतु अब १५ दिन बाद तेरे दिन अच्छे आनेवाले है सो संदेह मत कर अबतेरे पितरोंका गया श्राद्ध होगा और अब तेरे सब बातका आनन्द होगा फिकर मत कर अब तेरे पितर प्रसन्न हैं गया पितरोंकी करवा अब होगी फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ५२४ ।। हुक्मी शकल ⁞ अतवेखारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि मेरे कुटुंबमें प्रथम तो उज्वल संतान नहीं होती और होती है तो जीती नहीं सो मेरा मनोरथ गयाश्राद्ध करवानेका है सो यात्रा किस विधि करूं और करनेके पीछे मुझको संतानका सुख होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! प्रथम तो श्रीगायत्रीका एक पुरश्चरण सवालक्ष नेक ब्राह्मणोंसे करवा और श्रीमद्भागवतका श्रवण कर और तद्दशांश हवन, तर्पण, मार्जन, ब्राह्मणभोजन बहुत प्रीतिसे कर और जो तीर्थ रास्तेमें आवे उस तीर्थमें श्राद्ध कर और आश्विनमें या माघमें ४५ श्राद्ध श्रीगयामें करवा फिर तेरे संतानका सुख होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।५२५।। हुक्मी शकल ⁞ नकी मुनकलीव मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि मेरे मनमें श्रीअयोध्याजी जानेकी बहुत दिनसे है परंतु जाना बनता नहीं जब मनोरथ करता हूं तब कोई ऐसा विघ्न होता है कि जाना नहीं बनता सो अब मैं यह पूछता हूं कि मेरा जाना बनेगा या नहीं और जाना बनेगा तो कब होवेगा" सो हे पूछनेवाले ! अब तक तेरा पूर्वजन्मका पुण्योदय नहीं हुआ है अब ३ मास ११ दिन बाद पुण्योदय होगा सो इस अवधि बाद तेरा कार्य्य बनेगा पुण्य करना इति प्रश्न।। ।।पिण्ड।।५२६।। हुक्मी शकल ⁞ अतवेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि मेरा मनोरथ श्रीअयोध्याजीकी यात्रा करनेका है सो यह पूछता है कि यह यात्रा अब होगी या नहीं और होगी तो सुखसे होगी या दुःखसे" सो हे पूछनेवाले ! अब तेरी यात्रा होगी संदेह मतकर और बहुत आनंदसे होगी तेरा तप जबर है तू पहले जन्ममें पूर्व दिशामें

श्रीदामानाम ब्राह्मण था और श्रीरघुनाथजीकी तेरे भक्ति भी बहुत थी सो तेरे ऊपर रघुनाथजी प्रसन्न हुए और कहने लगे कि हे पुत्र ! वर मांग सो तैंने रघुनाथजीकी भक्ति ही मांगी इस कारणसे तेरी इस जन्ममें भक्ति ज्यादा है सो तू फिकर मत कर तेरी तीर्थयात्रा अच्छी होगी इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।५२७।। हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा साबित देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि बहुत दिनोंसे मेरा मनोरथ मथुराजीकी यात्राका है परंतु जब मनोरथ करता हूं उस वक्त कोई ऐसा काम आता है कि जाना नहीं बनता सो अब यह पूछता है कि मेरा जाना बनेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब तक तो पूर्वजन्मका पुण्योदय तेरा नहीं हुआ है परंतु अब ५ मास २१ दिनमें तेरा पुण्योदय होगा सो तब तेरा जाना बनेगा संदेह मत कर यह श्रीमथुराजीकी यात्रा बहुत उत्तम है जो वहांका भंगी हो उसको भी स्वर्ग मिलता है फिकर मत कर तेरी यात्रा बरजरूर होगी इति प्रश्न ।।पिण्ड।।५२८।। हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीब चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है मेरा मनोरथ मथुराकी यात्राका है सो यात्रा होगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तू सन्देह मत कर अब तेरी मथुरा यात्रा होगी अब तेरा पूर्व जन्मका पुण्योदय हुआ चाहता है यह यात्रा पुण्योदय बिगर नहीं हुआ करती और पूर्वजन्ममें तू मध्यदेशमें वैश्य था सो श्रीकृष्णका निहायत भक्त था और जो श्रीकृष्णके चरित्र थे सो तू रातदिन चिन्तवन रक्खा करता था सो जिस वक्त तेरा शरीर पूरा हुआ उस वक्त तू स्वर्गको नहीं गया तैंने श्रीकृष्णजीकी भक्ति ही वरी सो हे पूछनेवाले ! अब तुझको सब दर्शन होंगे फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।५२९।। हुक्मी शकल ⁝ लहियान खारिज बृहस्पति देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि मेरा मनोरथ श्रीयमुनाके स्नान करनेका है सो जब मनोरथ करता हूं उसी वक्त कोई अवरोध हो जाता है सो मैं पूछता हूं कि मेरा स्नान होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! श्रीयमुनाजीका स्नान कुछ सामान्य नहीं है जो यमुनामें स्नान करके दान किया करते हैं वे धर्मराजकी यातना नहीं भोगते क्योंकि यह धर्मराजकी बहन है और अब तेरा पूर्वजन्मका पुण्योदय हुआ है सो अब १ मास ५ दिन बाद तुझको दर्शन होंगे संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ५३०।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुलदाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है सो त पूछता है कि मेरा मनोरथ श्रीयमुनाजीके स्नानका है सो स्नान होगा या नहीं और होगा तो सुख से होगा या दुःखसे" सो हे पूछनेवाले ! यमुनाजीमें तेरा स्नान होने वाला है परंतु अब तेरे दिन निहायत नाकिश हैं सो १७ दिन बाद तुझको बीमारी

होगी उसकी तदबीर करना सो तुझको जन्मपत्रसे सामान्य मारक है सो प्रथम जितनी तेरी ताकत हो उतना नवग्रहों का दान और जप करवाना आराम जरूर होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ५३१।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुल-खारिज राहुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थ-यात्राका है सो तू पूछता है कि मेरा मनोरथ पिण्डारे तीर्थमें जानेका बहुत दिनोंसे था परंतु जब जानेकी तजबीज करता हूं उस वक्त कोई विघ्न हो जाता है" सो हे पूछनेवाले ! तुझको तकलीफ पितृदोषसे है और तेरे कुटुंबमें बधेवा भी नहीं है और हे पूछनेवाले ! अबतक तेरे दिन भी निहायत नाकिश थे और अब दिन तुझको सामान्य हैं न तो बुरे और न अच्छे सो अब उद्योग कर अब तेरा पिण्डारे जाना होगा और तेरा मनोरथ सब सिद्ध होगा सो तू पहले तो जितनी तेरी ताकत होय उतना श्रीगायत्रीका जप करवा और पीछे भागवतका श्रवण कर और पीछे श्रीपिण्डारे-श्वरतीर्थमें पितरोंका श्राद्ध करवा सब बातका आनंद होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ५३२।। हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है सो तू पूछता है कि मेरे दिलमें पिंडारेमें पित्रीश्वरोंका श्राद्ध करवानेका है सो श्राद्ध होगा या नहीं और जो होगा तो मेरा मनोरथ सिद्ध होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब तेरे दिन निहायत नाकिश हैं परंतु अब १० दिन बाद तेरे दिन अच्छे आवेंगे सो अच्छे दिनोंमें पिंडारेश्वर तीर्थमें तेरे पित्रीश्वरोंका श्राद्ध होगा संदेह मत कर तेरा सब मनोरथ सिद्ध होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।५३३।। हुक्मी शकल ⁝ फरहा मुनकलीब शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल कुरुक्षेत्र-यात्राका है तू यह पूछता है कि मेरा मनोरथ कुरुक्षेत्रकी यात्राका बहुत दिनोंसे है सो इस कुरुक्षेत्रमें जब मनोरथ करूं उसी वक्त कोई विघ्न हो जाता है सो अब जाना होवेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले तेरी यात्रा अब होगी क्योंकि श्रीकुरुक्षेत्रका स्नान और दान पूर्णकर्म बिगर नहीं हुआ करता सो अब तेरा पहले जन्मका पुण्योदय हुआ है सो हे पूछनेवाले ! पहले जन्मका अजाब दूर हुआ और अब तेरा पहले जन्मका पुण्यउदय हुआ है अब कुरुक्षेत्र यात्रा होगी फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।५३४।। हुक्मी शकल ⁝ उकला मुनकलीब शनिदेवताकी है हुक्म फर-माती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि मेरा मनोरथ श्रीकुरुक्षेत्र यात्राका है सो कुरुक्षेत्र यात्रा होगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरी कुरुक्षेत्र यात्रा अब होगी तेरी यात्रामें अब कुछ देर नहीं है क्योंकि तेरा पहले जन्मका पुण्य उदय हुआ है तू पहले जन्ममें दक्षिणदेशमें हरिभक्त नाम करके ब्राह्मण था सो तैंने भगवान्‌की भक्ति बहुत की और निर्वत होनेसे तुझसे दान नहीं बना और

दानके करनेकी अभिलाषा बहुत रही तेरी ऐसी भक्तिको देखकर भगवान् प्रसन्न हुए सो यह वर दिया कि तेरे हाथसे दान अगले जन्ममें कुरुक्षेत्रमें होगा उस वरदानका अब समय आरहा है सो अब स्नान दान होवेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ।।५३५।। हुक्मी शकल ☷ अकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल देवताके दर्शनका है तू पूछता है कि देवताके दर्शनोंकी बहुत दिलमें लग रही है सो जब २ मनोरथ करता हूं सिद्ध नहीं होता कुछ न कुछ विघ्न होजाता है सो अब मुझको देवदर्शन होंगे या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अबतक तेरे पूर्वजन्मका पुण्योदय नहीं हुआ था परंतु अब १५ दिन बाद तेरा पूर्वजन्मका पुण्योदय होगा सो तुझको बरजरूर दर्शन होंगे फिकर मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ।।५३६।। हुक्मी शकल ☷ हुमरा साबित मंगल देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल देवताके दर्शनका है तू पूछता है कि मेरा मनोरथ देवताके दर्शनका है" सो हे पूछनेवाले ! तेरा पूर्वजन्मका पुण्योदय हो रहा है इसीसे तेरे दिलपर देवताके दर्शनकी धारणा हुई है सो अब कुछ क्लेश तो तेरे शरीरको होगा परंतु देव दर्शन तुझको बहुत अच्छी तरहसे होंगे संदेह मत कर ईश्वर सब आनंद करेंगे इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ५३७।। हुक्मी शकल ☷ बयाज साबित चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल स्वर्ग या नरकका है सो पूछता है कि मेरा शरीर पूरा हुए पीछे मैं स्वर्गको जाऊंगा या नरकको" सो हे पूछनेवाले ! तू स्वर्गको जायगा संदेह मत कर क्योंकि जैसा तुझसे जवान अवस्थामें पाप बना था वैसा पुण्य भी बना है और जब तुझसे पाप हुआ तब तुझको विशेष ज्ञान नहीं था और अब तो तू बहुत पछताता है और जो तैने पुण्य किया सो नरक और पापकी भीतिसे किया परंतु अब वे पाप जब तेरे दिलमें आते हैं तब तेरा दिल बहुत घबराता है सो तू पुण्य कर जीवोंपर दया रख दिलमें सबर रख अपनी ताकत माफिक शय्यादान जमीनका दान और गौदान कर संदेह मत कर ईश्वरका भजन कर तू स्वर्गको जावेगा फिकर मत कर भजन कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ५३८ ।। हुक्मी शकल ☷ नुस्रुत् खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल इस शरीरकी गतिका है तू पूछता है कि मेरा यह जीव स्वर्गको जावेगा या नरकको" सो हे पूछनेवाले ! ये शरीर भी यदि स्वर्गको जावेंगे तो नरकको कौन शरीर जावेंगे सो जन्म लिये पीछे तेरे हाथसे या दिलसे या जबान से किसीका भला नहीं हुआ शरीर दिल और वाणीसे तुझसे बुरा बहुतोंका हुआ है सो तू नरकको जावैगा और हे पूछनेवाले! पहले जन्मका भी तेरा पुण्य नहीं है सो तू पहले जन्ममें दक्षिण दिशामें चांडाल था सो एक तेरे दिलपै दया आगई थी कि तैने जीव हिंसा नहीं करी उस दयाके कारणसे तू द्विजन्मा हुआ है परंतु अब तेरे दया पुण्य नहीं रहा सो

हे पूछनेवाले ! जो तू स्वर्ग चाहे तो तीर्थ दान जप कर नहीं तो रौरव नरक तेरे वास्ते तैयार है और जो तैंने कुछ पुण्य किया है सो ऐहलौकिक फलके वास्ते किया है परलोकके वास्ते कुछ नहीं किया सो पुण्य कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ५३९।। हुक्मी शकल ⁚ नुस्रतुद्दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संतानका है सो तू पूछता है कि मुझको संतानका सुख नहीं हुआ एक विवाह पहले करवाया था फिर उस औरतसे सुख नहीं हुआ फिर उसकी इजाजत लेकर उसके जीते ही और विवाह करवाया सो उसके भी संतनाका सुख न हुआ सो अब यह पूछता हूं कि मेरे औरस संतानका सुख है या नहीं" सो तेरे पहले जन्मका अजाब है पहले जन्ममें पूर्वमें क्षत्रीके घर तेरा जन्म हुआ था सो तू ग्रामका सरदार था और दूसरे किसी मनुष्यकी नहीं चलने देता था अपनी बातको ऊपर रखता था पाप पुण्यको नहीं गिनता था सो तेरे एक लड़का हुआ था सो परवस्त हुआ जब वह तुझे बरजने लगा कि तू पापके काम क्यों करता है सो तैंने उसका कहा न माना और क्रोधमें आकर वह लड़का तैंने ग्रामसे निकाल दिया सो उस वक्त तो उसकी औरत उसके संग न गई फिर लौटकर वह लड़का आया नहीं वह संन्यासी होगया सो उसकी औरत अपने पातिव्रतधर्ममें तत्पर रही उस औरतको भी तुमने बहुत तकलीफ दी सो उसने तुझको शाप दे दिया था कि तुझको दूसरे जन्ममें सन्तानका सुख न होगा और तेरी औरत तुझको निहायत तकलीफ देगी सो हे पूछनेवाले ! तू एक लड़का और एक औरतकी सुवर्णकी मूर्ति बनवा और पूजन करके शय्यामें बैठा वह शय्या सब वस्तु जेवर समेत नेक ब्राह्मणको दे संतान सुख होगा फिकर मत कर इति प्रश्न।। पिण्ड ।। ५४०।। हुक्मी शकल ⁝ अतवेखारिज केतुग्रहकी है हुक्म फरमाती है "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संतानका है तू पूछता है कि पहले मेरी औरतसे संतानका सुख न हुआ फिर उसी औरतकी इजाजत लेकर और औरत विवाही सो उससे भी संतानका सुख न हुआ सो अब यह पूछता है कि मुझको संतानका सुख होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तुझको औरस पुत्रका सुख नहीं होगा और गोदका भी तब होगा कि जब ७ पल सुवर्णकी मूर्ति बनवाकर रेशमी वस्त्र सहित संकल्प करके नेक ब्राह्मणको दे तेरा पहले जन्मका शाप दूर होगा गोदका सुख होगा फिकर मत कर और जो तू औरस पुत्रका ही सुख चाहे तो एक बहुत अच्छा मकान बनवाकर सब वस्तु समेत कुटुंबी नेक ब्राह्मणको दे तेरे संतान होगी इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ।।५४१।। हुक्मी शकल ⁖ नकी मुनकलीव मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल ब्रह्माके दर्शनका है सो तू पूछता है कि मुझको ब्रह्माका दर्शन होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! ब्रह्माका दर्शन होना बहुत मुश्किल हैं सो तुझको दर्शन न होगा क्योंकि दर्शन ज्ञान तथा भक्तिसे होते हैं सो तुझको ज्ञान नहीं है यह

पूर्वजन्मका शाप है सो पहले पहले जन्ममें तू शूद्र था तब बाल्य अवस्थामें तैंने कुछ द्विजकी टहल की और जब समर्थ हुआ किसीको भी नहीं मानता भया सो तेरा पिता शाप देता भया कि रे दुष्ट ! तू नास्तिक हो सो उस जन्ममें तो शापकी भीतिसे तैंने नास्तिकपना नहीं किया अब फल हुआ है सो तेरेको रौरव नरक तैयार है अब भी कुछ बचाव चाहै तो दान भक्ति कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ५४२।। हुक्मी शकल ⁝ अतवेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "हे पूछनेवाले ! तेरा सवाल ब्रह्मदर्शनका है सो पूछता है कि "मुझको ब्रह्मदर्शन होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! जैसा तुझको अब ज्ञान है वैसा,ही सदा रख चित्तको मत चलने दे सब जीवोंमें एक ब्रह्म समझ तुझको बरजरूर दर्शन होगा तेरे पाप तो क्षीण हो गये हैं परंतु कभी दिल उलटता है सो इसको रोक फिकर मत कर तुझको अब दर्शन होनेवाले हैं इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ५४३।। हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मोक्षका है तू पूछता है कि मेरा मोक्ष होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! मोक्षको तो जितने सामान्य ज्ञात हैं वे सब ही चाहत हैं परंतु कर्म बिगर नष्ट हुए मोक्ष नहीं होता है सो हे पूछनेवाले ! इन कर्मोंको देखें तो तेरे लिये उत्तम नरकमें भी संदेह है अधम महारौरव नरकमें जावेगा सो मोक्षकी पीड़ा देख पुण्यदान कर जिससे भक्ति होवे भक्तिसे यज्ञादिक होते हैं यज्ञादिकोंसे ज्ञान होता है जिससे भक्ति है सो पैडी २ चढ़ तैंने वृथा मनुष्योंका अनादर किया है सो पहले किया अब पाया और अब किया आगे पावेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ५४४।। हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुन-कलीव चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल ब्रह्मदर्शनसे मोक्षका है तू पूछता है कि मेरा मोक्ष होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरा मोक्ष हो रहा है तू जीवन्मुक्त है तेरा प्रथम तो पहले जन्मका ही कर्म अच्छा था परंतु इस जन्ममें तरुणावस्थामें कुछ निन्दित कर्म बनआया सो अब संन्यासके लेनेसे सब वस्तुके त्यागनेसे दूर हुआ सो तेरा मोक्ष होवेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।।५४५।। हुक्मी शकल ⁝ लहियान खारिज बृहस्पतिदेवताकी है हुक्म फर-माती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल देवमंदिरका है तू पूछता है कि देव सत्य है या मिथ्या है" सो हे पूछनेवाले ! देवता तो सत्य है परंतु अब मनुष्य बिगर पानीका कांच है सो बिगरपानीके कांचमें मुख देखा चाहे सो तो प्रत्यक्ष है परंतु दीखता नहीं सो जिस मनुष्यके भजन तपस्यारूपी पानी है उनको दीखते हैं वह किसीसे कहते नहीं सो देवता।तो सत्यही है इति प्रश्न ।। पिण्ड । ५४६।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धर्म का है सो तू पूछता है कि मेरे मनमें यह सन्देह है कि मुसलमान तो और धर्म मानते

हैं और ब्राह्मण और धर्म मानते हैं इसी प्रकारसे शास्त्रोंमें भी बहुत धर्म दिखाये हैं सो कौनसा धर्म सत्य है" सो हे पूछनेवाले ! जो शास्त्रमें कहे हैं वेही धर्म सत्य श्रीमनुजी और याज्ञवल्क्यजी जो धर्म कह गये सो सत्य हैं इन्होंने ब्राह्मणसे लेकर चांडाल पर्य्यन्त सबके धर्म कहे हैं सो सत्य हैं संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ५४७।। हुक्मी शकल ⠿ कबजुलखारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "हे पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल परीक्षाका है तू पूछता है कि यह प्रश्न शास्त्र सत्य है या नहीं और तुझको किसीका निश्चय भी नहीं है सो तू ऐसा प्रश्न करता है जो पावे नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरा प्रश्न न मिलेगा क्योंकि तेरे दिलमें शक है प्रश्नकब मिलता है कि प्रथम तो अपने दिलको साफ करे पीछे अपने कुछ देवताकी आराधना करे फिर अपनी श्रद्धा माफिक धन लेकर प्रश्नका चिन्तवन करता हुआ प्रश्न कहनेवालेके पास जावे फिर कहनेवालेको देवताकी तुल्य माने और बहुत दिल साफ होकर पूछ तब मिलता है सो फिर करना फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ५४८।। हुक्मी शकल ☰ जमात सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल परीक्षाका है तू यह पूछता है कि मेरा प्रश्न बतलाया जायगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले! सब वस्तुमें विश्वास कारण है सो तुझको पक्का विश्वास नहीं हुआ पक्के विश्वास बिगर प्रश्न नहीं मिलता है इनमें तो विश्वास ही कारण है तेरा प्रश्न गुप्त नहीं प्रसिद्ध है और मतलबका भी है अविश्वासके कारणसे नहीं कहा तुम्हारा अविश्वास ही मुख्य प्रश्न है सो विश्वास करके अपने मकानसे विचारके फिर कर प्रश्न बरजरूर मिलेगा इति प्रश्न पिण्ड ।। ५४९।। हुक्मी शकल ⠿ फरहा सुनलीव शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल संतानका है तू पूछता है कि मुझे संतानका सुख नहीं हुआ और शास्त्रोक्त विधिसे तजबीज भी बहुत की और जो जिसने बतलाया सो भी किया" सो हे पूछनेवाले ! तैने सन्तानके वास्ते यत्न किया और धन लगाया परंतु एक तो तू शुद्ध नहीं रहा और औरतोंसे संग किया और तेरी औरतके बीमारी रही और विश्वास भी कम रहा सो विश्वास करिके और जितेन्द्रिय रहकर केवल एक अपनी औरतसे संग कर जो तजबीज पहलेकी है वही कर फिर तेरे संतान बरजरूर इसी औरतके होवेगी फिकर मत कर इति प्रश्न ।।इति षोडशस्थानं समाप्तम्।।इति चतुर्थपरिच्छेदः।। इति रमलगुलजारस्य पूर्वार्द्धः समाप्तः।। ।। अथ रमलगुलजारस्योत्तरार्द्धः प्रारभ्यते ।। अथ संकीर्णप्रश्नाः ।।पिण्ड।। ।।५५०।। ☰ "इसका प्रश्न यह है हमारा भाग्योदय होगा या नहीं" इस आदमीका भाग्योदय पूर्व दिशाके व्यापारसे होगा इसको पहले दिनोंकी गरदिश बहुत रही मित्र भी दुशमन हो गए दिनोंकी गरदिशसे जो काम किया उसहीमें नुकसान हुआ अब फायदा व्यापारहीसे होगा पूर्वसे भाग्योदय अच्छा होगा परंतु श्रीसूर्य्यनारायणका

आराधन रखना आदित्यहृदयका ५१००० पाठ करवाना यथाशक्ति सूर्य्यका व्रत कर २१ दिन पीछे भाग्योदय अच्छा होगा २ वर्ष ४ मास पीछे कुछ लाभ होगा धन भाग्योदय एक वर्ष पश्चात् होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ५५१।। ⁝ प्रश्न "कौन दिशासे लाभ है" इसको पूर्व दक्षिणसे लाभ होगा श्वेत काली वस्तुके व्यापार-फायदा होगा परंतु शिवार्चन करना पक्षप्रदोषका व्रत करना सवालक्ष शिवार्चन करवाना तथा षडक्षरी मंत्रका जप करवाना तिससे लाभ होगा कुछ विस्मय नहीं होगा मास ५ पीछे फायदा अच्छा होगा इति प्रश्न पिण्ड ।।५५२।। ⁝ "प्रश्न सफेद वस्तुका व्यापार किया है" सो कुछ मध्यम फायदा होगा कुछ धनकी प्राप्ति होगी नहीं इसको प्राप्ति व्यापारसे सुफेदसे लहना तो अच्छा है परंतु दिन साधारण हैं इससे प्राप्ति मध्यम होगी १२० दिन पश्चात् प्राप्ति अच्छी होगी मंगलकाव्रत करना शिवार्चन करना उससे प्राप्ति अच्छी होगी इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।५५३।। ≡ "प्रश्न काली वस्तुसे लाभका है" दक्षिणदिशामें प्राप्ति होगी काली वस्तुके व्यापारसे पहले इसको नुकसान जियादा रहा चित्तको उद्वेग रहा दिनोंकी गरदिश बहुत है अगर श्रीजीकी कृपासे बच गया तो अब फायदा अच्छा होगा परंतु कालीजीके ५१ पाठ करवाना व्रत गणेश ४ चौथका कराना काली वस्तुसे लाभ होगा दक्षिग दिशामें १७९ दिन पश्चात् और वर्षके पश्चात् बहुत लाभ होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।५५४।। ⁝ प्रश्न इसका यह है कि "इसने व्यापारके वास्ते गुमास्ता भेजा है" सो सफेद वस्तु और रक्तवस्तुसे फायदा होगा दिन उसको अच्छे हैं फायदा अच्छा होगा परंतु श्रीसूर्य्यका पुण्य रखना आदित्यहृदयके ५१ पाठ करना ११ व्रत करनेसे ६५ दिनके बाद प्राप्ति अच्छी होगी इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।५५५।। ⁝ प्रश्न इसका यह है कि "हमारे घरमें एक शख्सको बीमारी है सो उस शख्सको आंखोंकी बीमारी है कुछ रातको कम दीखता है" सो इसको पहले जन्मका अजाब है इस शख्सने पूर्व जन्ममें कुछ पाप किया था उसकी शान्तिके लिये एक १ काली गऊ अच्छे सुपात्र ब्राह्मणको दे कपड़े पहिनाय २२५ ब्राह्मण भोजन करा दान दे श्रीकालीजीके १५१ पाठ करानेसे भला होगा श्रीभगवती अच्छा करेगी इति प्रश्न ।।पिण्ड ।।५५६।। ≡ प्रश्न इसका यह है कि "हम दिशावर पूर्वमें दूकान करेंगे फायदा होगा कि नहीं" इस शख्सको पूर्व दिशासे फायदा है दूकानसे लाभ होगा अपने नामसे व्यापार विशेष श्वेतवस्तुका और पीली वस्तुका कर लाभ अच्छा होगा विशुद्ध हो कर श्रीभवानीजी की आराधना रखनी प्रत्येक व्यतीपातमें ब्राह्मण भोजन कराना यथाशक्ति दुर्गा ८ अष्टमीका व्रत करना एक वर्ष पीछे श्रीजीकी कृपासे फायदा अच्छा होगा। निर्विघ्न-तासे एक वर्षबाद दूकानपर जियादा काम चलेगा लाम बहुत होगा इति प्रश्न ।।पिण्ड ।।५५७।। ≡ प्रश्न इसका यह है कि "हम दक्षिणमें जायंगे या दूकान (रोज-

गार) दक्षिणमें करेंगे सो फायदा होगा या नहीं" इसको फायदा अच्छा होगा काली वस्तुके व्यापार करनेसे विशेष फायदा होगा अबतक दिननाकिश थे जब ही जानेका कुछ विचार किया तभी कुछ विघ्न हो गया दिनोंकी गर्दिशसे खरच जियादे और प्राप्ति स्वल्प हुई अब दक्षिणमें फायदा अच्छा होगा चित्त प्रसन्न रखना बृहस्पतिका पूजन और ५१००० जप कराना तथा अमावस्याको ब्राह्मणभोजन कराना यथाशक्ति पक्षप्रदोषका व्रत करना एक वर्ष पीछे फायदा अच्छा होगा श्रीजीकी कृपासे ५ मास १० दिन पश्चात् विशेष लाभ होगा इति प्रश्न ।।पिण्ड ।।५५८।। ⁝ प्रश्न इस मनुष्यका यह है कि "हमको लाभ कब होगा हमको कितने दिन नाकिश और हैं" इस मनुष्यने दिनोंकी गरदिशमें जो तजबीज करी उसहीमें घाटा (नुकसान) रहा जिससे मित्रता थी उससे शत्रुता होगई इसको किसीसे यश नहीं रहा अब श्रीभवानीजीकी कृपासे लाभ व्यापारमें सुफेद वस्तुके लेने देनेसे परंतु श्रीमहादेवजीका पूजन कराना चतुर्दशीव्रत करना अमावस्याको ब्राह्मणोंकी कन्या जिमानी यथारुचि ब्राह्मण १ जिमावना त्र्यम्बक मंत्र जप २१००० इसके बाद लाभमें कुछ विघ्न नहीं होगा अब तेरे ५ मास ९ दिन और मध्यम हैं परंतु विशेष तजबीज करनेसे लाभ अच्छा होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ५९।। ⁝ प्रश्न इस मनुष्यका यह है कि "हमारी पूर्वमें दूकान है रोजगारमें फायदा कब होगा" सो इस मनुष्यको पहले नुकसान रहा दिन नाकिश है जो व्यापार किया उसहीमें नुकसान रहा क्योंकि दिन इसके बहुत नाकिश थे श्रीजीकी कृपासे तन्दुरुस्ती रही यही गनीमतकी बात है सो अब इसको पूर्वसे लहना होगा फायदा अच्छा होगा सुफेद वस्तुके देनेसे ४ मास १० दिन पश्चात् व्यापार दुकानपर अच्छा चलेगा धन बढ़ेगा परंतु ५१ दुर्गा पाठ कराना अष्टमीका व्रत करना नवमीको एक कन्याको भोजन कराना पश्चात् आप भोजन करना एक वर्ष पश्चात् लाभ विशेष होगा। पूर्वसे फायदा अच्छा है फिकर मत कर दिलमें विश्वास रख इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।५६०।। ⁝ प्रश्न लाभका है इस मनुष्यको पहले वर्षमें लाभ अच्छा हुआ अबके वर्षमें नुकसान है कोई तदबीर करै उसमें नुकसान रहे यह वर्ष इसको साधारण है जो व्यापार करे उसमें चिन्ता लगी रहे सो लाभ होगा ३ मास २० दिन पश्चात् सुफेद रक्तवस्तुके लेने देनेसे लाभ होगा परंतु गणेश ४ का व्रत करना ब्राह्मणको भोजन कराय आप करना "सर्वाबाधाविनिर्मुक्तः" इस मंत्रका संपुट देकर चण्डी पाठ करना दिन ५१ तथा ३१ फिर फायदा अच्छा होगा चित्त प्रसन्न रहेगा व्यापारमें फायदा होगा इस ही ग्रामसे अथवा पूर्वसे फिकर मत कर अगले वर्षमें व्यापारसे धन बढ़ेगा इति प्रश्न पिण्ड ।। ५६१।। ⁝ "प्रश्न गमन में लाभका है" इस मनुष्यने पहले दक्षिणमें यात्रा की उस यात्रामें कुछ फायदा नहीं हुआ शरीरमें भी खेद रहा चित्त नहीं लगा क्योंकि दिन इसको साधारण थे अब

इसको पूर्वसे किसी मनुष्यके द्वारा फायदा होगा सो मनुष्य उज्वल है गौर रक्तवर्ण है मध्य अवस्था है उसके द्वारा व्यापारसे फायदा अच्छा होगा परंतु श्रीकालीका इष्ट रखना अष्टमीका व्रत करना नवमी के रोज १ ब्राह्मणको भोजन करवाकर आप भोजन करना ५१ दुर्गापाठ तथा १ वर्ष तक पूजा करवाना पश्चात् पूर्वसे फायदा रहेगा १२३ दिन बाद लाभ अच्छा होगा दिन श्रेष्ठ आवेंगे लाभ विशेष होगा दश पांच दिनमें किंचित् अरिष्ट होगा पर कुछ फिकर नहीं करना इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ।।५६२।। ⁝ "प्रश्न यात्रा लाभका है" इस मनुष्यने प्रथम यात्रा पूर्वदिशाकी करी कुछ फायदा हुआ नहीं जो कुछ तजबीज करी उसहीमें नुकसान रहा कुछ उम्मेद नहीं हुई चित्त नहीं लगा शरीरमें अडचन किंचित् रही अन्न हजम कम हुआ दिन उसके माफिक नहीं थे श्रीजीकी कृपासे अब दक्षिणमें यात्रा करना व्यापारमें लाभ अच्छा होगा श्वेत और काली वस्तुके लेन देनमें लाभ होगा और एक मनुष्यकी मार्फत तजबीज बनेगी मनुष्य मध्य अवस्थाका है क्षत्री वर्ण है उसके सकाशसे लाभ दक्षिणमें होगा परंतु शिवार्चन कराना प्रदोषव्रत करना एक वर्ष पश्चात् लाभ अच्छा होगा चिन्ता मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ५६३।। ⁝ "प्रश्न लाभका है इस मनुष्यने गुमास्ता भेजा है श्वेतवस्तुके व्यापारमें खरीद करना" सो तुमको दिन मध्यम हैं सो लाभ भी मध्यम है १३६ दिन बाद फायदा होगा मंगलका पूजन करना २१०० जप ७ व्रत मंगलके रोज ब्राह्मण भोजन यथाशक्ति कराना पश्चात् लाभ होगा रुईका व्यापार करना लाभ अच्छा होगा कुछ नुकसान नहीं होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।५६४।। ⁝ प्रश्न "राज्यका है इस आदमीको राज्यसे प्राप्ति है इस पर मेहरवानी अंतःकरणसे रहती थी परंतु शत्रु उत्पत्ति होकर लाभमें विघ्न हो गया है" तुमको दिन नाकिश हैं शत्रु प्रबल है सो श्रीचण्डीके पाठ ५१ कराना शत्रुजययंत्र बांधना मंगलका व्रत करना पश्चात् लाभ होगा १०९ दिन तुमको नाकिश हैं लाभ स्वल्प है पश्चात् राज्यसे लाभ अच्छा होगा शत्रुका नाश होगा श्रीजीकी कृपासे सब बात बनेगी इति प्रश्न पिण्ड ।।५६५।। ⁝ प्रश्न "राज्यका काम हाथ आवेगा या कुछ ढीलसे" तदबीर की गई परंतु दिनोंकी गरदिशसे हुई नहीं दिन नाकिश हैं और राज्यमें दुष्मन उठ रहे हैं तुम्हारी न्यूनता कहते हैं १२९ दिन पश्चात् राज्यसे काम मिलैगा लाभ होगा परंतु 'सर्वाबाधाप्रशमनं' इस मंत्रका संपुट देकर ५१ पाठ कराना तथा शत्रुञ्जय मंत्रका पूजन करना व्यतीपातके दिन यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन कराना एक वर्ष पश्चात् राज्यसे पूर्ण लाभ होगा काम बनेगा काम साधनको एक वर्ष चण्डी पूजनकर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ।।५६६।। ⁝ प्रश्न इसका यह है कि "राज्यसे भय हो रहा है सो मध्यम होगा या विशेष" इस आदमीके दिन नाकिश हैं अच्छी करता है परंतु दिनोंकी गरदिशसे उलटी पड़ती है दुश्मनोंकी उत्पत्तिहो रही है

शत्रु प्रबल है उपाय "राज्ञा क्रुद्धेन चाज्ञप्तो" इस मंत्रसे संपुट देकर श्रीचंडीके ५१ पाठ कराना अष्टमीका व्रत करना पश्चात भयका नाश होगा ५१ तथा ३१ दिन भीतर कार्य्य होगा द्रव्यका अधिक व्यय नहीं होगा दंड भी स्वल्प होगा श्रीजीकी कृपासे सर्व शत्रुओंका नाश होगा चिंता नहीं करना श्रीभवानीजी तेरे पक्षपर हैं सो द्रव्य विशेष खर्च नहीं होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ५६७ ।। ⚍ प्रश्न इसका यह है कि "हम राज्यमें अरजी पेश करेंगे तो जीतेंगे या नहीं" इस आदमीके शत्रु प्रबल हैं दिन रात छलछिद्र करते हैं और विचारते हैं दुश्मन पक्के हैं परंतु श्रीभवानीजीकी कृपासे अरजी पेश कर तू जीतेगा द्रव्यका तो खर्च पड़ेगा परंतु परिणाममें जीतेगा आपदुद्धारका पाठ ३१ तथा ५१ दिन कराना इतवारको सिन्दूर और फुलेल बटुकको चढ़ाना काले कुत्तेको चपातियां खिलाना और प्रति दिन १ ब्राह्मणके लड़के कुमारको भोजन कराना पश्चात् तुम्हारे शत्रुका नाश होगा फिकर मत कर श्रीभैरवजीकी कृपासे दुश्मनका भय दूर होगा तुम जीतोगे अच्छे दिनमें अरजी पेश करो इति प्रश्न ।। ।। पिण्ड ।। ५६८ ।। ☰ प्रश्न "जमीनका है" इसकी जमीनपर दुश्मन दावा करता है और दुश्मन छल छिद्री है परंतु श्रीभवानीकी कृपासे जमीन मिलेगी दिन तुमको अच्छे हैं शत्रुका भय दूर होगा परंतु श्रीदुर्गापाठ हनुमान स्तोत्रका पाठ ५१ दिन करवाना एक ब्राह्मणकी कन्याका पूजन कराना भोजन कराना ५१ तथा ७१ दिन भीतर कार्य्य होगा १ मनुष्यका मांह कर मनुष्यका मध्यवर्ण है मध्य जाति है उससे कार्य्य श्रेष्ठ होगा जमीनमें भी फायदा देवैगी इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ५६९ ।। ⚍ प्रश्न "जमीन मोल लूंगा उससे फायदा होगा कि नहीं" इस मनुष्यको इस जमीनसे फायदा होगा जमीन लेनी हवेली मंदिर निर्विघ्नतासे होगा जमीन ले उसमें अग्निकोण है कच्ची हांडीमें सुवर्णकी सर्पिणी सिन्दूर लगा कर रक्तवस्तुमें लपेटकर हांडीमें धरकर अग्निकोणमें गाड दे तब उस घरमें खुशी रहेगी अपमृत्यु नहीं होगा मनुष्यका बंधेज होगा ईर्षा लड़ाई महामारी चौराहा मसान लाग लपेट उस मकानमें कुछ नहीं होगा खुशवक्ती रहेगी जमीन निर्विघ्नतासे फायदा देगी इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ५७० ।। ⚍ प्रश्न मकानका है इस मकानमें भय मालूम होगा इस वास्ते दुर्गापाठ श्रीगायत्रीका जप २१ दिन कराना पश्चात हवन कराना ब्राह्मण भोजन यथाशक्ति कराना पश्चात् मकानसे फायदा होगा इस मकानके लिये पीछे ५१ मास पश्चात् अकस्माद्धनकी प्राप्ति होगी खुशवक्ती रहेगी इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ५७१ ।। ☰ प्रश्न स्थानका है यह मकान शुभदायक नहीं है मकान सर्पिणीके फणपर है नेष्ट है इस मकानमें प्रवेश नहीं करना दुःख देनेवाला है यह मकान अपने स्वामीको मध्यम है इस मकानमें सवालक्ष गायत्री जप चंडीपाठ करा पश्चात् हवन कराना ब्राह्मणभोजन यथाशक्ति दे बाद मकान शुभदायक होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ५७२ ।। ☰ प्रश्न "हुआ

मंदिर बनवानेका है" यह मनुष्य कुआ मंदिर बनाया चाहता है सो श्रीभगवतीकी कृपासे निर्विघ्नतासे होगा कुआ में जल मिष्ट निकलेगा जमीनमें दश हाथपर किंचित् पहाड़ निकलेगा पर १२ हाथमें मंदिर श्रेष्ठ होगा किसी बातका विघ्न नहीं होगा तुझको लाभ थोड़े दिनोंमें अच्छा होगा उमेद कर दिलमें फिकर मत कर इति प्रश्न ।। ।।पिण्ड ।।५७३।। ☰ प्रश्न "राज्यलाभका है" इस आदमीका झगड़ा राज्यमें बहुत दिनसे है दिन बहुत नाकिश हैं झगड़ेसे बरबाद होगया दिनोंकी गरदिशसे जो तदबीर करता है उसहीमें उलटी पडती है शत्रु प्रबल है छलछिद्री है परंतु भवानीजीकी कृपासे तुम जीतोगे "सर्वाबाधाप्रशमनं" इस मंत्रका संपुट देकर ५१ दुर्गापाठ करानापीपलमें जल चढ़ाना शत्रुंजय मंत्र बांधना १२० दिन भीतर तुम फते पाओगे शत्रुकी हानि होगी इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ५७४।। ⁝ "प्रश्न फायदेका है" इस मनुष्यसे लहना कम है यश नहीं जिस आदमीसे मित्रता करता है दिनोंकी गरदिशसे उससे कुछ लाभ नहीं होता अब इसमें लहना होगा मित्रता बढ़ेगी १४२ दिन बाद लाभ होगा श्रीशिवजीका इष्ट रखना पक्षप्रदोषका व्रत करना ब्राह्मणको भोजन कराना २१ दिन ५ माला त्र्यंबकमंत्र जप पश्चात् फायदा होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड।।५७५।। ⁝ "प्रश्न लाभका है" सो इस शख्स (सेठ) से फायदा होगा तुम्हारे हाथसे व्यापार या दूकानमें उनफेद होगी तुमको भी लाभ है बेशक गमन कर दिन तुमको बहुत अच्छे हैं ७२ दिनके बाद और अच्छे आवेंगे लाभ होगा सूर्य्यनारायणका २१ व्रत करना आदित्यहृदयका पाठ ५१ कराना पश्चात् लाभ होगा फिकर मत कर श्रीजी सहाय करेंगी इति प्रश्न।। पिण्ड।। ५७६।। ⁝ "प्रश्न लाभका है व्यापारसे इस मनुष्यको शरीरसे फायदा होगा शीरमें व्यापार करनेसे लाभ है शीरीको और तुमको दिन अच्छे हैं परंतु गोपालसहस्रनामका पाठ करावना गणेश ४ का व्रत कराना एक ब्राह्मणको भोजन कराकर आप भोजन करना लाभ होगा चित्तमें प्रसन्न होके साझीसे मिलकर श्रीजीका ध्यान कर व्यापार कर तेरेको फायदा होगा दिन १२० पश्चात् अकस्मात् प्राप्ति होगी इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ५७७ ।। ⁝ "प्रश्नपत्रीके आगमनका है" विदेशमें इसके प्यारे लोग खुशी हैं चिठ्ठी इसकी आई थी बहुत दिन हुए इससे कुछ चित्तको उद्वेग है वह शरीरसे खुशी है आनंदमें है लाभ है १२-१३ दिन भीतर चिट्ठी जरूर आवेगी फिकर मत कर चिट्ठी जरूर आवैगी इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ।।५७८।। ⁝ प्रश्न इसका "विदेशका है" विदेशमें उसके शरीरमें बीमारी हुई शरीर कृश है चित्तको उद्वेग है दिन माफिक है परंतु श्रीभवानीजी सहाय है अब खुशी है शरीरसे आनंद है परंतु मङ्गलका और शुक्रका जप और दान करा देना ३१ दिन बाद बहुत अच्छे आवैंगे शरीरसे अच्छे होगा लाभ होगा फिकर मतकर अब ४ दिनसे खुशीसे हैं इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ५७९।। ⁝ प्रश्न "विदेशको है" इसका नजदीकी

दोस्त विदेशमें गया है उसको लाभ अच्छा होगा ९० दिन उसको और मध्यम हैं पश्चात् अकस्मात् लाभ अच्छा होगा उसको पहले दिन माफक थे श्रीजीकी कृपासे विदेशमें लाभ अच्छा होगा खुशी रहेगी परंतु श्रीशिवजीका व्रत कर विधिसे पूजन करना ब्राह्मणोंको आमान्न देना पश्चात् खुशी रहेगा दिन दिन लाभ अच्छा होगा इतिप्रश्न ।।पिण्ड।।५८०।। "प्रश्न विदेशका है" इसका मनुष्य विदेशमें है सो खर्च भेजा नहीं इसके खर्च आये बहुत दिन हुए अब खर्च जरूर भेजेगा उसके चित्तमें याद है खर्च भेजेगा फिकर मत कर दिन तुमको साधारण हैं सो जब ही खरच भेजनेको करता है तभी कोई दिनोंकी गरदिशसे अकस्मात् विघ्न होजाता है अब खर्ची १५ तथा २०दिन भीतर आवेगी श्रीजीका ध्यान रख खुशवक्ती होगी इति प्रश्न।।पिण्ड।। ।।५८१।। ⚏ "प्रश्न करजका है" इस आदमीको करजा बहुत हो रहा है दिन दिन बढ़ रहा है इसका रोजगार माफिक है कई तजबीज करता है परंतु दिनोंकी गरदिशसे लाभ अच्छा होता नहीं अब १२० दिनके बाद लाभ होगा विदेशसे अपना हर्वासे फिकर मत कर करज तेरा दूर होगा लाभ अच्छा होगा सूर्य्यका आराधन कर सब काम फते होंगे इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ५८२।। ⚏ प्रश्न संतानका है इस शख्सको अब तक संतान हुई नहीं संतान अवरोध है पहले जन्मका इस औरतका अजाब है इस औरतने पहले जन्ममें बालहत्या की थी उस अजाबसे अबतक संतान नहीं हुई उपाय इसका यह है कि एक सूवर्णका लड़का बनवा कर यथाशक्ति ५१ दिनउसकी पूजा कर संतानगोपालका पाठ करा शतचंडीका पाठ करा तथा अष्टमीका व्रत करना नवमीके दिन कन्याको भोजन कराना उसको रक्तवस्त्र पहराना इस प्रकार १ वर्ष तक सूर्य्यका व्रत करना जिस दिन व्रत संपूर्ण हो उस नवमीके रोज ब्राह्मणको भोजन कराना नव ९ कन्या जिमावनी सब कन्याओंको वस्त्र देना १ बटुक को देना इस रीतिसे उपाय करनेसे पूर्व जन्मका अजाब दूर होगा संतानका सुख निश्चय होगा पुत्र औरतके पेटसे होंगे जीवेंगे फिकर मत कर औलादका सुख होगा कुछ देर नहीं इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ५८३।। ⚏ प्रश्न संतानका है इस मनुष्यको उज्वल प्रसूतका सुख हुआ नहीं कन्याका तो सुख है कन्या बार २ जन्मती हैं इस मनुष्यकी औरतको पहले जन्मका अजाब है इस औरतके पहले जन्ममें कन्या बहुत हुई पश्चात् पुत्रकी इच्छा करके कन्यासे द्वेष चित्तमें रक्खा और १ कन्याकी हत्या हुई जिससे पहले जन्मका अजाब है पुत्रसुख विलम्बसे होगा, उपाय एक गोदान अमावस्याके रोज कर सब सामग्री समेत गौ सुफेद और सूर्यका व्रत करना संतान-गोपालका ५१००० मंत्र जप और दुर्गापाठ संपुट कर इतने बाद संतानका सुख होगा पहले जन्मकी हत्या दूर होगी औलाद सुख इसी औरतके पेटसे होगाकुछ विलम्ब नहीं है और गोदके पुत्रका योग नहीं है इसके उदरसे पुत्रसुख होगा दीर्घ आयु होगी

इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ५८४।। ☰ प्रश्न संतानका है इस मनुष्यके औलाद होती है पर जीति नहीं सो पहले जन्मके अजाबसे मृतवत्सा हो गई है यह मनुष्यपहले जन्ममें क्षत्री था घोड़ेपर सवार होकर चहल कदमी करता था वहां रास्तेमें एकलड़का घोड़ेकी पेटमें आकर मर गया जिसके शापसे इस जन्ममें पुत्रका सुख विलम्बसे होगा उपाय सवालक्ष शिवार्चन और सुवर्णकी दुर्गाकी मूर्ति बनवानी यथा शक्तिपश्चात् षोड-शोपचार पूजन करके ओं ह्रीं श्रीं क्लीं अतिदेवता बालकसुखदायिनी पूर्वजन्मपापं हन हन पुत्रसुखं कुरु कुरु स्वाहा' इस मंत्रसे शतचण्डी पाठ संपुटित करना "कुमारी-पूजनं पश्चात् हवनं ब्रह्मकुलभोजनं यथाशक्ति विधाय दार्घजीविसन्तानजन्म स्यात् ततः शिवार्चनमृत्युञ्जयपाठाः कार्य्याः पश्चात् सन्ततिर्दीर्घजीविनी भविष्यति" इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ५८५।। ⚋ प्रश्न संतानका है इस मनुष्यके संतानहोकर फिर बंध्यायाग हो गया सो पहले जन्मकी औरतका अजाब है पहले जन्ममें इस औरतने अपने खाविन्दको बहुत दुःख दिया इसका खाविन्द रोगी था उसकी टहल बन्दगी किंचित् नहीं की और कभी मालिकका नाम नहीं जाना कुटुंब अष्ट प्रहर पोषण किया कभी १ घड़ी राम नाम नहीं लिया इससे स्त्रीके पूर्व जन्मके दोषसेसंतानका सुख विलम्बसे होगा उपाय आदित्य हृदयका पाठ ५१ दिन, चंडीका पाठ संपुटित सूर्य्य का और अष्टमीका व्रत एक वर्ष करना पश्चात् संतानका सुख होगा इस ही स्त्रीके उदरसे संतान (पुत्र) का जन्म होगा और आयु दीर्घ होगी संतान जन्मके पश्चात् आशीर्वाचन २१००० रुद्रीपाठ कराना पश्चात् कुछअरिष्ट नहीं होगा फिकर मत कर संतान होगी कुछ विलंब नहीं इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।५८६।। "प्रश्न इसके संतानका है" इसके संतानका सुख इस औरतसे नहीं होगा इस औरतको वंध्य योग है इस स्त्रीके संतानका योग बडी मुशकिलसे होगा द्वितीय स्त्रीके संतान योग होगा दूसरा विवाह करनेके पीछे चंडी पाठ ५१ कराना "कुमारीपूजनमष्टमीव्रतं रविव्रतं वर्षमेकं कारयित्वा पश्चात् द्वितीय स्त्रीसकाशात् पुत्रसन्ततिः सुखं च भविष्यतीति" प्रश्नः ।। पिण्ड ।। ५८७।। ☰ "प्रश्न संतानका है" संतानका जन्म नहीं होगा इसही स्त्रीसे कुछ विलंब नहीं है गोद तथा दत्तपुत्रका तेरे भाग्यमें सुख नहीं है सो गोद किसीका पुत्र मतले नुकसान होगा इस स्त्रीके हाथसे एक वर्ष सगर्भा गऊका पूजन करा पश्चात् गौके वत्सी जन्मै उसीमें वत्सका मुख है सुवर्ण देकर स्त्रीके हाथ संकल्प करा दे कराके दान दे इसके पहले जन्मका अजाब है इसने गऊके अगाड़ीसे उठाकर अपने घरकी पालना की सो प्रायश्चित है श्रीचंडीका संपुट पाठ कराओ संतान होगी सुख होगा फिकर मत कर इति ।। पिण्ड।। ५८८।। ☰ "प्रश्न संतानका है" इस मनुष्यको औरस पुत्रका सुख नहीं है दश प्रकारके पुत्रोंमें दत्तपुत्रका सुख होगा तुम बेशक किसीके पुत्रको गोद लो फायदा होगा मित्रता बढ़ेगी तेरी अंत अवस्थामें

टहल करैगा तू फिकर मत कर श्रीजी सहायता करैंगी इति प्रश्न ।।पिण्ड।।५८९।। प्रश्न सगाई इस मनुष्यकी अबतक नहीं हुई प्रथम सगाई आई परंतु दुश्मनके प्रपंचसे अबतक संबंध नहीं हुआ तथा दिनोंकी गरदशिसे अब सगाई होगी पूर्वकी दिशाकी तथा उत्तरकी एक आवमी द्रोहकी है परंतु "पत्नी मनोरमां देहि" इस मंत्रका संपुट देकर दुर्गाका पाठ कराना २१ तथा ५१ दिन ९० तथा १२० दिन भीतर वटवृक्षका पूजन करना जरूर सगाई होगी विलंब नहीं है दिनोंकी गरदिशसे मनुष्यके ध्यानमें आवै नहीं दुश्मन उकाय देते हैं परंतु सगाई होगी फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।५९०।। "प्रश्न स्त्री की प्राप्तिका है" इस शख्सकी पहली शादी होकर औरत मर गई अब दूसरी शादी होगी दक्षिणमें तथा पश्चिममें गौरवर्ण की स्त्री प्राप्त होगी १ मनुष्यका माहकर उस मनुष्यकी मध्य अवस्था है मध्यवर्ण है ऐसा मनुष्यका माहकर द्वितीय होगी कुछ द्रव्य भी खर्च होगा परंतु विवाह निश्चय होगा फिकर कुछ मत कर ९० दिन भीतर स्त्री प्राप्ति होगी परंतु५१संपुट दुर्गापाठ करना पक्ष प्रदोषका व्रत करना पश्चात् विवाह होगा कुछ विलंब नहीं हैश्रीभगवती आनद करेगी इति ।। पिण्ड।। ५९१।। "प्रश्न पुनःसंबंधका है" इसमनुष्यकी तीसरी स्त्रीका योग है कुछ ढील है स्त्री होकर मर गई परंतु तृतीयस्त्रीका सुखहै दिन १ तथा प्रहर १२० भीतर पश्चिम तथा उत्तरसे प्राप्ति होगी कुछ द्रव्य खर्च होगा परिणाममें तीसरी स्त्रीका सुख है" श्रीभवानीजीका इष्ट रख सब बात अच्छी होयगी इति ।। पिण्ड।। ५९२।। इस मनुष्यकी स्त्रीसे बने नहीं अन्तःकरणमें नाड़िया विरुद्ध हैं सो अष्टप्रहर घरमें कुछ बने नहीं श्रीशिवजीका पूजन करना पक्ष प्रदोषका व्रत करना पश्चात् स्त्रीसे मिलाप होगा घरमें कुछ विघ्न न होगा शांति रख घरका कलह मिट जायगा इति ।। पिण्ड।।५९३।। प्रश्न चोरीका है इस मनुष्यके चोरी नहीं हुई घरमें ही मिल जायगी तदबीर कर चोरी कहीं गई नहीं शांतिसे पूछो मिल जायगी फिकर मत कर इति ।।पिण्ड ।।५९४।। प्रश्न चोरीका है इस मनुष्यके घरमें चोरी हुई चोर घरभेदू है पुरुष है मध्यजाति है मध्य अवस्था है चोरी मिल जायगी कुछ ढीलसे वस्तु ग्रामके बाहर गई नहीं मिल जायगी पूर्वदिशामें उस वस्तुमें साझी है २ तथा ३ धनकी चोरी हुई दिनोंकी गरदिशसे दिन तुमको माफिक हैं चोरी आवेगी कुछ दरास फिकर मत कर चोरी मिल जायगी श्री चण्डीका ध्यान रख मिल जायगी इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ५९५।। प्रश्न चोरीका है इस मनुष्यकी कुछ वस्तु तथा रकम लेकर मनुष्य दक्षिणमें भाग गया पीछे पश्चिममें जायगा इस मनुष्यको दिनोंकी गरदिश है जो तदबीर करता है उसमें बने नहीं परंतु आकर्षणका मंत्र प्रयोग करावनेसे वस्तु आ जायगी चोरी मिल जायगी चोरीमें साझी ३ हैं परंतु परिणाममें रकम आजायगी फिकर मतकर श्रीजी सहायता करेंगी इति प्रश्न ।।पिण्ड।।५९६।।

⁝ "प्रश्न पशुकी चोरीका है" इस मनुष्यके पशुकी चोरी हुई सो दिनोंकी गरदिशसे मध्यजातिका श्यामवर्ण छोटी कद ऐसा शख्स दक्षिणमें तथा पश्चिममें ले गया सो वह मिल जायगी तदबीर कर श्रीभगवतीका ध्यान कर तेरा पशु आजायगा ५७ दिन तुमको और नामाफिक हैं फिकर मतकर चोरी आ जायगी श्रीजीसहायता करेंगी इति प्रश्न ।।पिण्ड ।। ५९७।। ☰ "इस मनुष्यकी वस्तु तथा वस्त्र किसीने उठालई" १ पुरुष अपनी जातिका है परंतु देवेगा नहीं क्योंकि दिन नाकिश हैं ४७ दिनके बाद अच्छे आवेंगे चोर पक्का है घने दिनमें मालूम होजायगा इति प्रश्न ।।पिण्ड।।५९८।। ☰ प्रश्न रोगीका है "इस मनुष्यके प्रश्नमें किसीके तप जाड़ा आवै है रोज तथा इकतरेसे" सो इसको दिन माफिक हैं १५ दिनसे खेद ज्यादा है सो मङ्गलका दान और महामृत्युञ्जयका जप १५ दिन कराना सूर्यका ११ व्रत करना पश्चात् इसको आराम हो जायगा दिन इसको २१ और माफिक हैं परंतु औषध कर श्रीभवानीजी सहायता करेंगी तप जाडा चला जायगा कुछ देर नहीं है इति प्रश्न ।।पिण्ड।।५९९।। ☰ "इस मनुष्यका प्रश्न रोगीका है" उसको रोग आतशी गरमीका है कुछ अतिसारका अंश है बहुत दिनसे बीमारी है सो दिन इसको बहुतनाकिश हैं जो दिनोंकी गरदिशसे दवाई करे उससे ही घना होगा सो श्रीचंडीके ३१ पाठ कराना व्यतीपातके दिन छायापात्र और मंगलका जप और दान कराना ९० दिन और माफिक हैं परंतु श्रीदुर्गाका ध्यान रख तुझको आराम होयगा खुश रहना कुछ देरनहीं है फिकर मत कर इति।। पिण्ड ।।६००।। ☰ प्रश्न रोगीका "प्रश्न इसका यह है कि इस बालकको रोग है जो ऊपर लिखा" सो लडका इसका दिन दिन सूखता है पहली तथा नई पेटमें बीमारी है कोई तदबीर करे है सो लगेनहीं नन्दनीया योगिनीकी पेट में है ९० दिन इसको बहुत नाकिश हैं परंतु मंगल तथा शनैश्चरके रोज अर्द्धरात्रिमें पूजा नन्दनीके नीचे घर ५१ चण्डीपाठ करा मंगलका दान तथा २१०० महामृत्युञ्जयका जप कराना पश्चात् शरीरमें आनंद होगा फिकर मत कर श्रीजी सहायता करेंगी परिणाम कुशल है उपाय कराना सो तुम्हारे लड़केको दिनपर दिन आराम होगा आयु बहुत है श्रीशिवजीकी कृपासे अच्छा होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड।।६०१।। ☰ इस मनुष्यको संग्रहणी रोग है अन्न हजम नहीं होता चित्त उदास रहता है पेटकी बीमारी है बहुत दिनोंसे जो तदवीर करता है उसहीमें नुकसान होता है दिन इसको नाकिश हैं ४२ दिन श्रीशिवार्चन करना पक्षप्रदोषका व्रत करना मंगल शुक्रका दान करना जप करा देना श्रीदुर्गाकी कृपासे परिणाम कुशल है फिकर मत कर आराम होगा इति प्रश्न ।।पिण्ड।।६०२।। ☰ इस मनुष्यपर किसी शख्सने जादू टोना कर रक्खा है चित्तमें भ्रमता है रोग दिन दिन बढ़ता है सो इसको दिन बहुत नाकिश हैं उपाय ५१ दुर्गापाठ संपुट करा कुमारी पूजन पश्चात् दान व्यतीपातकेदिन

कर फिर आराम होगा ११ दिन बाद आराम होगा खुशी रहेगा।श्रीभवानीजीकी कृपासे परिणाम कुशल है फिकर मत कर आराम होगा कुछ देर नहीं इति ।।पिण्ड।। ।।६०३।। ☰ इस मनुष्यको बवासीरका रोग है मस्सा दुख देता है इसको अग्निसे उत्पन्न रोग बहुत दिनोंसे है कभी तो रोग घट जाता है कि नहीं दिनोंमें बढ़ जाता है दिन नामाफिक हैं उपाय शिवार्चन करना त्र्यंबकमंत्र जपना ३१ दिन रविवारका व्रत करना ११ के दिन आमान्न ब्राह्मणोंको देना पश्चात् आराम होगा १२० दिन इसको नामाफिक हैं श्रीसूर्य्यकी कृपासे परिणाम कुशल है रोग जावेगा फिकर मत कर औषध कर इति । पिण्ड ।।६०४।। ☰ प्रश्न रोगीका है इस मनुष्यके बादीका रोग है बादी प्रबल है शरीरमें गरमीकी तासीर है सो रोग दुख देवे है इसके३३ दिन नाकिश हैं उपाय–सूर्य्यका ११ व्रत आदित्यहृदयके पाठ ३१ मंगलके रोज दानकरना पश्चात् श्रीभवानीजीकी कृपा और उपायसे आराम होगा फिकर मत कर कुछ देर नहीं इति ।। पिण्ड ।।६०५।। ☰ "प्रश्न रोगीका है इस मनुष्यको मूत्रकृच्छ्र धातुक्षीणहैं दिन २ बढ़ता है शरीर छीजैहै इसके शरीरमें चेतना नहीं गरमीकी उत्पत्ति इसके ज्यादा है" सो ४५ दिन बाद औषध कर आराम होगा श्रीशिवजीका ध्यान कर प्रक्ष प्रदोषका व्रत कर पश्चात् श्रीशिवजीकी कृपासे आराम होगा कुछ फिकर मत कर श्रीशिवजी सहायता करेंगे इति।।पिण्ड ।।६०६।। ☰ "इसका प्रश्न कैदका है" इसके मनुष्य कैदमें हैं उसको दिनोंकी गरदिश बहुत है जो तदबीर की उसीमें नुकसान रहे इसके दुश्मन प्रबल हैं दिनोंके फेरसे राज्यकी क्रूरदृष्टि है इसका उपाय चंडीपाठ कराना कौमारीकी पूजा करनी भौमदान करना इतने उपायोंसे कैदसे मनुष्य छूट जायगा द्रव्यका खरच पडकर यह मनुष्य छूट जायगा तदबीर कर श्री भगवतीकी कृपासे छूट जायगा कुछ देर नहीं इति ।।पिण्ड।। ६०७।। ।।प्रश्न लाभका है ये मनुष्य लेखा करनेको जायंगे लेखा इनका दुरुस्त होगा कुछ विघ्न नहीं होगा परंतु कुछ दिनोंमें लाभ होगा अब इनको दिन नामाफिक हैं श्रीहनुमानजीका ध्यान करना प्रसन्न रहना लाभ होगा फिकर मत कर इति ।। पिण्ड ।। ६०८।। ☰ प्रश्न यात्राका है इस मनुष्यकी यात्रा होगी कुछ देर नहीं यात्रासे लाभ होगा इस मनुष्यके चित्तमें यात्राकी बहुत दिनोंसे है परंतु जाना नहीं होता अब यात्रा होगी कुछ देर नहीं है लाभ तुझको अच्छा होगा बेशक गमन कर श्रीभवानीजीका ध्यान रख उनकी कृपासे लाभ होगा कुछ फिकर मत कर इति ।। पिण्ड ।। ६०९।। ☰ प्रश्न संतानका है इस मनुष्यकी औलाद होके मर गई पश्चात् कुछ हुआ नहीं है इसके प्रबंध योग है पहले जन्ममें इस मनुष्यके हाथसे बालहत्या हुई जिससे १ संतान होकर मर गया पीछे नहीं हुआ उपाय एक गऊ अमावस्याके दिन दान कर व्यतीपातके रोज अन्नका संकल्प कर यथाशक्ति संपुटित दुर्गापाठ ५१ दिन कराना अष्टमी का

व्रत एक वर्ष करना पश्चात् पूर्व जन्मकी हत्या दूर होगी संतानका सुख होगा फिकर मत कर कुछ देर नहीं परंतु उपाय कर तेरे संतानका सुख होगा बरजरूर इति पिण्ड ॥६१०॥ ।... प्रश्न यात्राका है इस मनुष्यको पूर्वसे लाभ होगा इसको २० दिनके बाद अच्छे आवेंगे फायदा पूर्वसे होगा बेशक गमन कर श्रीभगवती तुम्हारी सहायता करेगी फायदा होगा एक वर्ष सूर्य्यव्रत करनेसे लाभमें विघ्न नहीं होगा शरीर खुश रहेगा बेशक यात्रा कर पूर्वसे फायदा होगा इति ॥ पिण्ड ॥६११॥ ⁝ इस मनुष्य को यात्रासे लाभ है उत्तर दिशासे अच्छा फायदा होगा तेरी यात्रा उत्तम होगी दिन बहुत अच्छे हैं लाभ अच्छा होगा बेशक गमन कर उत्तरमें फायदा होगा परंतु शिवजीका पूजन करना चतुर्दशीका व्रत करना अमावास्याके दिन ब्राह्मणको आमान्न देना पश्चात् लाभमें कुछ विघ्न नहीं होगा शरीर प्रसन्न रहेगा फिकर मतकर तुझको लाभ अच्छा होगा इति ॥पिण्ड॥ ६१२॥ ⁝ प्रश्न यात्राका है इस मनुष्यको दक्षिणकी यात्रासे फायदा होगा इसके दिन बहुत अच्छे हैं ३१ दिनके बाद अकस्मात् लाभ होगा परंतु मंगलका व्रत और दान करना शिवजीका पूजन करनेसे लाभ है कुछ विघ्न नहीं होगा बेशक गमन कर तुझे दक्षिणसे लाभ है इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥६१३॥ ☰ प्रश्न लाभका है इस मनुष्यको इस सालमें अन्नसे कुछ मध्यम फायदा होगा अति उग्र लाभ नहीं है परंतु लाभ होगा बेशक व्यापार कर तेरे दिन अच्छे हैं परंतु अमावस्याको एक ब्राह्मणको भोजन कराना श्रीशिवजीका पूजन कर तुझको अच्छा लाभ होगा श्रीभवानीजी तेरी सहायक हैं तू निस्सन्देह कर तुझको फायदा होगा इति ॥ पिण्ड ॥६१४॥ ⁝ प्रश्न लाभका है व्यापार करनेसे इसको फायदा होगा रक्तवस्तुसे लाभ होगा इसके दिन बहुत अच्छे हैं व्यापार कर तुझको फायदा होगा परंतु श्रीभगवतीका ध्यान रखनेसे लाभमें कुछ विघ्न नहीं होगा बेशक व्यापार कर तुझको फायदा अच्छा होगा इनि ॥ पिण्ड ॥ ६१५ ॥ ⁝ प्रश्न यात्राका है तुम्हारी यह प्रथम यात्रा है सो कर तुझको फायदा होगा दिन तुमको बहुत श्रेष्ठ है बेशक यात्रा कर तुमको लाभ होगा परंतु श्रीहनुमानजीका ध्यान रख सूर्य्यका व्रत कर तुझको यात्रासे लाभ होगा इति पिण्ड ॥ ६१६॥ ☰ प्रश्न लाभका है हे मनुष्य ! दूसरी वा तीसरी यात्रासे तुझको लाभ होगा दिन तुमको बहुत अच्छे हैं तुम बेशक गमन करना तुझको यात्रासे लाभ होगा तुम बेशक गमन करो फायदा होगा परंतु शनैश्चरका ध्यान रखना सूर्य्यका पूजन कर तुझको लाभ होगा फिकर मत कर इति ॥ पिण्ड ॥६१७॥ प्रश्न ⁝ लाभका है इस मनुष्यको ४२ दिन बाद लाभ होगा परंतु पक्षप्रदोषका व्रत कर शिवजीका पूजन करनेसे फायदा होगा बेशक नौकरी कर तुझको लाभ होगा इति॥ पिण्ड ॥६१८॥ ⁝ प्रश्न उत्सवका प्रारंभ करनेका है सो निर्विघ्नतासे होगा इस उत्सवमें सुख होगा किसी बातका विघ्न

नहीं होगा दिन तो बहुत श्रेष्ठ हैं बेशक उत्सवका प्रारंभ कर तेरा कार्य निर्विघ्न होगा प्रथम गणेश पूजन कर और व्रतकरके काम करो इति पिण्ड ।।६१९।। ⚍ प्रश्न झगड़ेका है मनुष्यका आपसमें काम बनेगा कोई एक शख्स बहकाता है परंतु दिन तुम्हारे अच्छे हैं सो आपसमें ही तुम्हारा झगडा निपट जावेगा फिकर मत कर श्रीभवानीजी फतेह करेंगी इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ६२०।। ⚍ इस मनुष्यके घर या कुटुंबमें मृत्यु बहुत हुई पूर्वमुख मकान होनेसे प्रेतका दोष है दिन इसके नाकिश बहुत हैं गृहमें रुदन होता है सो ग्रहोंकी दृष्टि क्रूर हैं दिनोंके गरदिश बहुत है उत्सवमें बहुत विघ्न होता है सो जमीन यावनी हैं यवनको जिद कर रक्खा है यह मकान बने पीछे, या २ वर्ष भीतर अनेक मौत हो गई हैं जबतक इस मकानको नहीं छोड़ोगे तबतक सुख नहीं पावोगे जो नहीं ही छोड़ो तब तो एक मकान बनवाकर नेक ब्राह्मणको दो उससे सब दोष दूर होजायगा इस मकानमें अमावस्याको एक श्वेत गोदान १०१ चंडीपाठ सवालक्ष गायत्रीका जप कराना कुमारी कन्या ९ कुमार लड़का पांचोंको भोजन कराय वस्त्र पहराय देना पश्चात् पूर्वमुख मकानका प्रायश्चित्त दूर होगा और गृहमें खुशवक्ती होगी किसी बातका विघ्न नहीं होगा अब ५९ दिन बाद अच्छे दिन अवेंगे फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ६२१।। ⚌ प्रश्न विद्याका है इस मनुष्यको विद्या आवेगी अपने कारसे फायदा होगा इसकी बुद्धि जरा मंद है सो वाक्वादिनी सरस्वतीका पूजन कर तुझको विद्या बहुत श्रेष्ठ आवेगी विद्यामें फुरती होगी एक वर्ष बाद बुद्धिकी चमतकारी होगी विद्या आवेगी इति ।। पिण्ड ।। ६२२।। प्रश्न लाभका है इस मनुष्यको पशुओंसे लहना अच्छा है लाभ होगा दिन तुमको श्रेष्ठ हैं बेशक खरीदकर तुझको लाभ अच्छा है पशुओंके क्रयविक्रयसे लाभ होगा परंतु श्रीगणेशजीका व्रतकर चतुर्दशीको शिवजीका पूजन कर तुझको लाभ अच्छा होगा इति।। पिण्ड ।।६२३।। ⚍ प्रश्न लाभका है तुमको वस्त्रके व्यापारसे फायदा होगा दिन तुम्हारे अच्छे हैं बेशक व्यापार करो तुझको वस्त्रोंसे लाभ है परंतु मंगलका पूजन करो तुमको ९० दिन बाद अकस्मात् लाभ है फिकर मतकर श्रीभवानीजी सहायक हैं लाभ होगा इति ।।पिण्ड।। ६२४।। ⚍ प्रश्न स्त्री प्राप्तिका है तुझको स्त्री मिलेगी दूसरी स्त्रीसे फायदा है स्त्री लहनी होगी संतानका सुख होगा श्रीभवानीजी सहाय है इति ।। पिण्ड ।।६२५।। ⚍ शकल नकी मंगलकी है इस आदमीका सवाल है कि "राज्यकी मेहरवानकी होगी और कुछ उनफेद होगी या नहीं" जबाब इस मनुष्यको दिन दुरुस्त हैं राज्यसे फायदा अच्छा होगा राजाके दीवान व कामदारोंकी मेहरबानी रहेगी इस आदमीके दुश्मन बहुत हैं रात्रि दिन छलछिद्र विचारते हैं परंतु तेरे पर श्रीभगवतीकी कृपा है सर्व दुश्मन पैमाल होवेंगे तुमको बहादुरी मिलेगी राजाकी मेहरवानी विशेष होगी धन

मिलेगा नेकनामी मिलेगी परंतु श्रीचण्डीपाठ ५१ कराना मंगलकी पूजा करनी २१ या ३ दिन पश्चात् सब दुशमनोंका नाश होगा राज्यसे धन मिलेगा फिकर मतकर श्रीजी सहाय हैं इति ।। पिण्ड ।। ६२६ ।। ☰ शकल अंकीश शनैश्चरकी है इसका सवाल यह है कि "राज्यसे कुछ उनफेद हुई अब विशेष होगी या नहीं" जबाब इस आदमीको राज्यसे उनफेद अच्छी होगी इज्जत बढ़ेगी परंतु दुश्मन प्रबल हैं छल-छिद्र विचार रहे हैं सो सूर्य्यका पूजन कर श्रीचण्डी पाठ कराना पश्चात् सर्व शत्रुओंकर नाश होगा श्रीभगवती सहाय हैं राज्यके कामदारोंसे दीवान मुसद्दियोंसे मित्रता बढ़ेगी वह पक्ष पर रहेंगे धन इज्जत राज्यसे बढ़ेगी सर्व शत्रु पैमाल होगा फिकर मत कर श्रीभवानी सहाय हैं राज्यसे उनफेद अबके विशेष होगी इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ।।६२७।। हुक्मी शकल ☰ कबजुल दाखिल सूरजकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरी मुराद किसमत उदय होनेकी है" इसकी किसमत खुलैगी अपने देशमें ही व्यापारमें किसी शख्सका माहकर सौदा होकर फायदा होगा मगर दिन ते` माफिक हैं किसमत खुलनेकी तदबीर लगाता है फायदा होगा परंतु तेरे दिनोंकी गरदिशसे तदबीर दुरुस्त नहीं होती सो तदबीर करते रहना शनिश्चरके रोज मलीदा करके काले कुत्तेको खिला शनैश्चरजीकी कांडीका २२१००० जप ब्राह्मणसे करा जांटके दरख्तमें पानी गेर पीछे तेरी किसमत खुलेगी श्वेत और काली चीजके लेन देनमें फायदा होगा दो वर्ष १० महीने बाद तुझको कुछधन मिलेगा १ वर्ष ८ महीना बाद तेरी किसमत खुलेगी दिन ज्यादे होगी फिकर मतकर इलाही अच्छा करेगा ।।पिण्ड ।।६२८।। ☰ हुक्मी शकल अतबे खारिज केतुकी है फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल दूर देश जानेका है" अव्वल तू रोजगारके वास्ते पूर्वदेशमें गया मगर रोजगार कुछ हुआ नहीं क्योंकि दिनोंकी गरदिश है वहां का दाना पानी नहोनेसे तेरा दिल वहां लगा नहीं देहमें कुछ बीमारी रही अनाज हजम हुआ नहीं सो तू रबिवारके रोज ब्राह्मणोंके ५, ५ लड़कोंको जिमादे भैरूंका यकीन रख तेरे दिन दुरुस्त हो जावेंगे ९० रोज बाद तेरा रोजगार अच्छा लगेगा १ शख्स तेरा दोस्त होगा उससे फायदा होगा और तेरा जाना पूर्वदेशमें फिर होगा उससे धन लाभ होगा और तन्दुरुस्ती रहेगी फिकर मत कर अगली सालमें तेरी इज्जत बढ़ेगी रोजगार ज्यादा होगा इति ।। पिण्ड ।। ६२९ ।। हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसमत खुलनेका है" सो इस शख्सकी तकदीर परदेशमें खुलेगी अपना पेशा कर २ सौदा कर फायदा होगा परंतु दिन तेरे माफिक हैं दिन खुलनेकी तदबीर लगाता है मगर दिनोंकी गरदिशसे दिशसे तदबीर दुरुस्त नहीं होती सो तदबीर कर मंगलके रोज मलीदा करके जितनी तेरी ताकत हो उतने ब्राह्मणोंको खिला व फुलेल सिन्दूर हनुमानजीको लगा श्री-

हनुमानका पाठ किसी ब्राह्मणसे करा आकीदा श्रीहनुमान्‌का रख दो महीने २९ रोजबाद १ जातिबिरादरी शख्ससे तेरी दोस्ती होकर फायदा होगा कुछ धन मिलेगा १ वर्ष ९ महीना बाद तेरी तकदीर दूर देशमें खुलेगी खेत व काली चीजके लेनदेनमें और तेरी जाति बिरादरीके एक शख्ससे तेरा मिलाप होकर तेरी तकदीर खुलेगी सौदामें फायदा होगा दिन २ ज्यादा इज्जत बढ़ेगी मगर ज्येष्ठके महीने उजाडमें गरीब फकीरको पानी पिला धर्म की नियत रख तेरी तकदीर ज्यादा खुलेगी धनका खजाना आखिरमें ज्यादा २ होगा फिकर मत कर इलाही अच्छा करेगा इति ।। पिण्ड ।। ६३० ।। ☰ हुक्मी शकल लह्यान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल दूरदेश जानेका है" अव्वल तू दक्षिणमें गया रोजगार तेरा कम लगा तेरे दिलमें जैसी रोजगारकी उम्मेद थी दिनोंकी गरदिशसे वैसा हुआ नहीं दिन तेरे माफिक हैं रोगारकी तदबीर लगाता है मगर लगती नहीं सो तदबीर कर २१ दिन दुर्गापाठ किसी ब्राह्मणसे करवा अष्टमी के दिन ५ लड़कियोंकोजिमा कपड़े दे तेरा दक्षिणमें ही रोजगार अच्छा लगेगा बेशक गमन कर साड़ेचार महीने बाद तुझको धन मिलेगा तेरी जातके एक शख्ससे दोस्ती होकर रोजगार अच्छा लगेगा सो दक्षिण दिशाका जाना दुरुस्त है तेरी इज्जत बढ़ेगी फायदा होगा तन्दुरुस्ती रहेगी कुरंदा अच्छा करेगा इति ।। पिण्ड ।। ६३१ ।। ☰ हुक्मी शकल ! हुमरा मुनकलीव मंगलकी है हुक्म देती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तकदीर खुलनेका है" तेरी किसमत अच्छी खुलेगी नौकरीपेशा कर तेरे दिन दुरुस्त हैं मालिककी तेरेपर परवस्ती ज्यादा रहेगी इनाम मिलेगा तेरा दुशमन १ शख्स है सो पैमाल होजावेगा और तेरे हाथसे जर पैदा होगी मगर तुझको यश नहीं सो गणेश ५ का व्रत कर आकीदा गणेशका रख तेरा रोजगार अच्छा बनेगा मालिककी परवरिश ज्यादे होगी इज्जत तेरी बढ़ेगी फिकर मत कर ५ महीने ३ दिन बाद रोज-गार में धन मिलेगा इति ।।पिण्ड।। ६३२ ।। ☰ हुक्मी शकल उष्कतेलवर्गरज आफतापकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा प्रश्न रोजगारके लिये दूर देश जानेका है" सो तू बेशक गमन कर तुझको फायदा होगा रोजगार अच्छा लगेगा और कोई शख्स तेरा दोस्त है उसकी मारफत रोजगार लगेगा चार महीने और १३ दिनमें तुझको धन मिलेगा कुछ दिलमें खुशी होगी मगर शिवचौदशका व्रत कर श्रीशिवजीका पूजन ब्राह्मणसे करवा १ रोटी कुत्तेको दे, तुझ को फायदा होगा और अब जरा बीमारी होगी ११ या १५ दिन पश्चात् आराम होगा तन्-दुरुस्ती रहेगा दिन २ रोजगार अच्छा लगेगा फिकर मत कर अगली सालमें इज्जत बढ़ेगी इति ।। पिण्ड ।। ६३३ ।। ☰ हुक्मी शकल उकला मुनकलीव शनिश्चरकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल दूरदेश जानेका है" तू

पहले भी रोजगारके वास्ते गया था सो तेरा रोजगार अच्छा लगेगा दिलमें खुश रहे क्योंकि दिन तेरे दुरुस्त हैं सो अबतू बेशक गमनकर तुझको फायदा होगा तन्दुरुस्ती रहेगी मगर मंगलके रोज मलीदा कर फकीरको खिला मंगलका जप ब्राह्मणसे ३१००० करा और धर्मकी नियत रख तुझको ६ महीने बाद फायदा रहेगा और तेरे दिलमें खुशी होगी धन मिलेगा इज्जत बढेगी फिकर मत कर अगली सालमें ज्यादा फायदा होगा इलाही तेरे पक्षपर है तेरा जाना दुरुस्त है इति ।। पिण्ड ।।६३४।। ⁝ हुक्मी शकल इज्जतमा बुधकी है हुक्म फरमाती है कि ''पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल दूरदेश जानेका है'' तू पहले भी गयाथा परदेशमें तेरा रोजगार नहीं लगा दिनोंकी गरदिशसे जो तदबीर करी उसमें भी नुकसान रहा प्यारे भी दुशमन हो गये तेरा दिल वहां लगा नहीं अब तू बेशक गमन कर दो महीने १० दिन बाद तुझको धन मिलेगा खुशी होगी मगर पक्ष प्रदोषका व्रत कर इतवारके रोज ५ कन्या मलीदासे जिमाव आदमका आकीदा रख तेरी तन्दुरुस्ती रहेगी रोजगार अच्छा लगेगा फिकर मत कर अगली सालमें इज्जत ज्यादा बढ़ेगी तेरा जाना दुरुस्त है इति ।। पिण्ड ।। ६३५।। ⁚ हुक्मी शकल मुनकलीब है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स तेरा सवाल रोजगारके वास्ते दूरदेश जानेका है" सो पहले रोजगारके वास्ते तू पूर्व देशमें गया मगर दिनोंकी गरदिशसे रोजगार तेरा वहां लगा नहीं जो तदबीर रोजगारकी करी उसमें ही नुकसान रहा दिल तेरा कुंद रहा किसीसे फायदा हुआ नहीं अब तू दक्षिणमें जो कोई शख्स तेरा दोस्त है उसकी मारफत तेरा रोजगार अच्छा लगेगा मगर शनिश्चरका पूजन करा डकोतको दान दे कुत्तोंको रोटी खिला धर्मकी नीयत रख तुझको फायदा होगा दो महिना २० रोज बाद तुझको खुशी रहेगी धन मिलेगा फिकर मत कर तेरा जाना दक्षिणमें दुरुस्त है दक्षिणमें तेरी मांगत है धन इज्जत अगले सालमें ज्यादा होगी तन्दुरुस्ती रहेगी इति ।। पिण्ड ।। ६३६।। ⩧ हुक्मी शकल कबजुलखारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल कहीं परदेश जानेका है" सो पहले भी रोजगारके वास्ते दक्षिणमें गया मगर रोजगार कम लगा दिनोंकी गरादिशसे जो तदबीर करी उसमें ही नुकसान रहा दिन तुझको माफिक है मगर सोम प्रदोषका व्रत कर और सोमवारके रोज हलवा करके जितनी तेरी ताकत होय उतने गरीब अपाहजोंको खिला आदम बाबाका आकीदा रख तुझको फायदा होगा अब तू पूर्वदेशमें जा तुझको धन मिलेगा पूर्व दिशावरमें तेरी मांगत है चार महीने २७ दिन बाद तुझको फायदा होगा इज्जत बढ़ेगी दिलमें खुशी होगी फिकर मत कर अगले सालमें रोजगार दिन २ ज्यादा होगा अब तेरा जाना पूर्वमें दुरुस्त है तन्दुरुस्ती रहेगी इति ।। पिण्ड ।। ६३७ ।। हुक्मी शकल ☰ जमात सावित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स !

तेरा सवाल यह है कि परदेशमें जाऊं दूकानसे फायदा होगा कि नहीं" पहले तेरा रोजगार अच्छा हुआ दिन दुरुस्त थे अब प्राय: वर्ष रोजसे दिन नाकिश हैं जो तदबीर रोजगारकी करता है उसीमें नुकसान होता है फायदेकी कुछ सूरत देखो नहीं सो तू शनिश्चरके रोज दालके चिलके (पूड़े) करा डकोतको खिला और ५१ दुर्गापाठ किसी ब्राह्मणसे करा फकीरको खिला धर्मकी नीयत रख चार महीने बाद तेरी दूकानमें फायदा होगा कुछ धन मिलेगा और अगले साल दूकानमें सुफेद सौदाक लेनदेनसे फायदा होगा कुछ धन बढ़ेगा इज्जत बढ़ेगी दुर्गाजीका आकीदा रख इलाही दिन २ इज्जत ज्यादा करेगा इति ।।पिण्ड।।६३८।। ≡ हुक्मीशकल हुमरा सावित मंगलकी है सो हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यह है कि अव्वल दूकान कहीं करेंगे तो फायदा होवेगा" सो इस सख्सके नाम दूकानमें अच्छा नहीं और किसीके नाम फायदा होगा सो तू अच्छी सायतमें दूकान कर दिन तेरे दुरुस्त हैं सुफेद लाल चीजमें तुझे फायदा होगा इज्जत तेरी दिन २ ज्यादा होगी मगर शिवार्चन तू किसी ब्राह्मणसे करा और १ साल पक्षप्रदोषका व्रत कर तेरी दूकानमें फायदा होगा और तू निश्चय करके मान अगले सालमें सौदामें फायदा होगा धन ज्यादा बढ़ेगा और एक शख्ससे तेरी दोस्ती होकर तुझको नफा होगा मगर आदम बाबाका आकीदा रख धर्मकी नीयत रख इलाही अच्छा करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ६३९।। ≡ हुंक्मी शकल बयाज साबित चंद्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रोजगारका है" सो तूने दूकान कहीं करी मगर उस दूकानमें अबतक रोजगार नहीं हुआ अगरचे रोजगार की तदबीर बहुतसी की मगर कुछ नफा दूकानमें नहीं हुआ सो शायद दूकान दुरुस्त नहीं है और दिन तेरे नाकिश हैं सो तदबीर कर आदित्यहृदयका पाठ किसी ब्राह्मणसे करा इतवारके रोज खीरसे ७ ब्राह्मण जिमा श्रीसूर्य्यका रोज पूजनकर विनती कर तुझको फायदा होगा चार महीने १७ दिन बाद तेरे दिन दुरुस्त होयंगे दूकानमें फायदा होगा इज्जत ज्यादा होगी मगर सूर्यकी हरवक्त पूजा कर फायदा होगा इति प्रश्न ।।पिण्ड ।। ६४०।। ≡ हुक्मी शकल खारिज सूर्य्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रोजगारका है" तू दूकान कर तेरे नामसे फायदा होगा सुर्ख सुफेद वस्तु लेने देनेमें फायदा है मगर चार महीने बाद दूकान चलेगी सीरमें नफा होगा कुछ दिलमें खुशी होगी पीपलके दरख्तमें पानी गेर रोज अमावस्याके रोज कुंवारा ब्राह्मणको जिमा और दूध पिला तुझको फायदा होगा तेरे दिन दुरुस्त हैं २ शख्स तेरी जातके हैं उनकी दोस्ती या साहदारी होनेसे दूकानमें फायदा ज्यादा होगा अगले तीन या ५ साल धन बढ़ेगा सौदा खुदा अच्छा करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ६४१।। ≡ हुक्मी शकल नुस्रुत्‌दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा

सवाल रोजगारका है सवाल दो शख्सोंका है" तेरा रोजगार अच्छा लगेगा मगर एक शख्स और है उसकी शीरसे व्यापार कर तुझको फायदा होगा तेरा सब सोफियाना निबहेगा साझियोंसे फायदा है तुम्हारा साझी कोई दगादार नहीं होगा सो तू शीर मिलाकर दूकान कर तुझको नफा होगा ६७ रोजबाद तेरे दिलमें खुशवक्ती होगी कुछ धन मिलेगा मगर शुक्रका दान दे मलीदा करके ब्राह्मणको खिला व धर्ममें नीयत रख तुझको धन मिलेगा इज्जत बढ़ेगी अगले सालमें सुफेद चीजसे ज्यादा फायदा होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।६४२।। ⁝ हुक्मी शकल अतवेखारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यह है कि मैं साझी मिलाकर करता हूं मुझको फायदा होगा या नहीं" जबाब इस शख्सके शीरी भी दुरुस्त हैं ईमानदार हैं सौदामें नफा होगा मगर शीरियोंसे मिलकर कोई सौदा कर तुझको फायदा होगा दिन अब ५ रोजसे तुझको दुरुस्त आये हैं पहले दिन तेरे नाकिश थे और शारियोंके भी दिन दुरुस्त हैं ईमान कायम हैं सो तू हिम्मत करके बिसमिल्ला मनाके सौदा कर फायदा होगा मगर तू बुधकी रोज शामके वक्त राहुका दान डकोतने दे जप माला शनिश्चरकी किसी ब्राह्मणसे करा तेरे सौदामें नफा होगा और १३० रोज बाद सौदामें नफा होगा धन मिलेगा फिकर मतकर अल्ला अगलीसालमें इज्जत बढ़ावेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड।।६४३।। ⁝ हुक्मी शकल मुनकलीव नकी मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रोजगारमें धन मिलनेका है" जबाब इस शख्सको नाजके सौदामें फायदा होगा पहले भी इसको नाजके व्यापारमें फायदा रहा और अबकी सालमें नाजके व्यापारसे फायदा होगा मगर थोड़े तेरे दिन नाकिश हैं सो तदबीर कर मङ्गलके रोज हनूमानको फुलेल व सिंदूर लगा मलीदा करके ब्राह्मणको खिला कुछ पूजा दुर्गाकी कर वृक्षमें पानी गेर तुझको फायदा होगा ९० रोज बाद तुझको सौदामें नफा होगा धन बढ़ेगा और अगलेसालमें तुझको नाजके लेनदेनमें फायदा ज्यादा होगा इज्जत बढ़ेगी मगर तू धर्मकी नीयत रख कुत्तेको रोटी गेर या खरको दलीया खिला तुझको फायदा होगा धन दौलत इलाही ज्यादा करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ६४४।। ⁝ हुक्मी शकल अतवेदाखिल जुमाली है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धन मिलनेका है" जवाब इस शख्सको नाजके सौदामें नफा होगा नाजके लेन देनमें पहली सालमें इसको नुकसान रहा अबके सालमें नाजके व्यापारमें फायदा होगा मगर कुछ थोडा और इसके दिन जरा नाकिश हैं मगर तीन महीने १९ दिन बाद तुझको फायदा होगा तदबीर कर चन्द्रमाका दान दे पूर्णमासीके रोज तस्मै करके ब्राह्मणको खिला जितनी तेरी ताकत हो उतनेको चांदीकी तसबीर दान दे फिर तुझको फायदा होगा तेरी उमरमें तुझको फायदा नहीं हुआ मगर किसमत तेरो अच्छी है अगली ३ साल बाद तेरी तकदीर

खुलेगी सुफेद सुर्ख चीजके लेन देनमें धन मिलेगा इज्जत बढ़ेगी मगर धर्मकी नीयत रख रोज धन बढ़ेगा इलाही पक्षपर है इति प्रश्न पिण्ड ।।६४५।। ⁝ हुक्मी शकल इज्जतमा साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रोजगारमें धन मिलनेका है" जबाब इस शख्सको सफेद वस्तुके लेन देनसे फायदा होगा तेरे पहले दिन नाकिश थे जो तदबीर करी मगर फायदेकी वस्तु कम रही अब ७ रोजसे दिन आये हैं सो तुझको रोजगारमें फायदा होगा मगर तू अब ९ ब्राह्मणोंको चांदके रोज चावल खिला सुफेद कपड़ेमें ९ (चावलोंके लिये डाल २) दक्षिणा दे चांदनी आठेको सालभर कर तुझको फायदा होगा तकदीर तेरी अभी नहीं खुली ३ या ४ साल बाद तेरी तकदीर खुलेगी मगर इस सालमें भी फायदा थोड़ा होगा मगर अगाढ़ी सालोंमें नफा ज्यादा रहेगा फिकर मत कर अल्लाताला तेरी मुराद पूरी करेगा इज्जत बढ़ेगी धन दौलत दिन दिन ज्यादा होगी इति प्रश्न पिण्ड ।। ६४६।। ⁝ हुक्मी शकल मनकलीब चांदकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रोजगारमें धन मिलनेका है" जवाब इसके सुफेद वस्तुके लेन देनमें फायदा होगा पहले भी इस शख्सके सौदामें फायदा रहा अबके सालमें भी सुफेदके सौदामें नफा होगा मगर कुछ थोड़ा इसके दिन दुरुस्त हैं जो तदबीर करेगा उसमें ही फायदा होगा मगर तू जुमेरातको आदमबाबाकी पूजाकर जितनी तेरी ताकत हो चूनेके लड्डू ब्राह्मणको खिला शिव चौदशका सालभर व्रत कर तुझको फायदा होगा दिन २ ज्यादा इज्जत बढ़ेगी फिकर मत कर अगली सालमें अल्लाताला तेरी मुराद पूरी करेगा मगर धर्मकी नियत रख इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ६४७।। हुक्मी शकल लह्यान ⁝ खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धन मिलनेका है" सो तू अपना पेशा कर धन मिलेगा अब तक तेरे दिन नाकिश थे जो तदबीर की उसमें कुछ मुराद पूरी नहीं हुई तेरे यार भी दिनोंकी गरदिशसे दुश्मन हो गये अब १५ दिन बाद तू अपना पेशाकर तुमको फायदा होगा कुछ धन मिलेगा मगर शनिश्चरके रोज मलीदा डाकोतको खिलाना शनिश्चरकी तसबीर दान कर जांटके दरखतमें पानी गेर काले कुत्ते को रोटी गेर तेरी किसमत १० महीने और १४ दिन बाद खुलेगी फिकर मत कर अगली सालमें अल्लाताला तेरी मुराद पूरी करैगा मगर तदबीर प्रति दिन ज्यादा कर इति ।। पिण्ड ।। ६४८।। ⁝ हुक्मी शकल कबजल दाखिल सूर्य्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धन मिलनेका है" सो तुझको दिनोंकी गरदिश ज्यादा है तदबीर धन मिलनेकी करता है मगर धन नहीं मिलता और जो किसी शख्ससे प्यार करता है तो दिनोंकी गरदिशसे दुश्मन दीखता है किसी शख्ससे फायदा नहीं होता सो दिन तेरे नाकिश हैं मगर तदबीर हमेशा करनी चाहिये सुबेके वक्त पीपलके दरख्तमें

पानी गेर कुत्तेको चपातियां खिला सालभर पक्षप्रदोषका व्रत कर इतने बाद तेरे दिन फिरेंगे तेरे पेशासे प्रथम दो साल कम धन मिलेगा मगर ३ साल बाद तेरी तकदीर खुलेगी अपना पेशा कर कोई १ शख्स माह (साक्षी) कर धनदौलत तेरे ज्यादा होगी मगर नाकिश दिनोंमें गुजरान देवीका आकीदा रख अल्लाताला तेरी मुराद हासिल करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।६४९।। ≟ हुक्मी शकल कबजल खारीज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स तेरा सवाल धन मिलनेको है" इस शख्सके दिन दुरुस्त हैं सो धन मिलेगा मगर कुछ थोड़ा परंतु ४ महीने १७ दिन बाद तुझको गुमास्तासे धन मिलेगा तेरे गुमास्ताकी नीयत दुरुस्त है सो इसके हाथसे फायदा रहेगा मगर तू सूरजका आकीदा रख दतिके रोज खीरसे ब्राह्मणको खिला सुर्ख कपड़ा दक्षिणा दे २ वर्ष ६ महीने १३ दिन सुबेके वक्त हाथ जोड़के सूर्य्यके अगाड़ी विनती कर तुझको फायदा होगा तकदीर ३ साल बाद तेरी मुराद हासिल करेगी इति प्रश्न ।।पिण्ड ।। ६५०।। ≡ हुक्मी शकल लह्यान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल दुश्मनके भयका है" जवाब इस शख्सका दुश्मन कहीं बादशाहको अरजी पेश करने गया है मगर कुछ सुनाई नहीं होगी और इस शख्सके दिन दुरुस्त हैं पहले दिन बहुत नाकिश गये जो तदबीर की उसीमें नुकसान रहा अब १७ रोजसे दिन दुरुस्त आये हैं सो दुश्मन तेरा पैमाल हो जावेगा मगर आदम बाबाका आकीदा रख तुझको फायदा होगा तू फिकर मत कर तेरे पक्ष पर बादशाह है तेरे दुश्मनका नाश होगा चार महीने ३ रोज बाद दुश्मन पैमाल होगा इलाही पक्षमें है इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ६५१।। ☰ हुक्मी शकल जमात साबि बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल दुश्मनका है" जवाब इस शख्सके दुश्मन राजमें झगड़ा करते हैं दुश्मन अबल हैं छल छिद्री ज्यादा हैं रातदिन तकरार करते हैं सो राजमें तू जीतेगा मगर दिन तेरे नाकिश हैं सो तदबीर कर संपुट देकर दुर्गापाठ किसी ब्राह्मणसे करा कुछ भैरवका आकीदा रख रोज मलीदा करके कुंवारे लड़के ७ वा ९ जिमा तेरे दुश्मन पैमाल होजावेंगे ३१ दिन बाद राजमें कुछ मिलाप होगा दुश्मन तेरे पैमाल होजावेंगे फिकर मत कर राज तेरी पक्षपै हो जावेगा दुश्मनोंका पैमाल निश्चय होगा दुश्मन तेरे पैरों पड़ेंगे इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ।।६५२।। ≓ हुक्मी शकल उकला मनकलीव शनिश्चरकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल दुश्मनका है" सो तू अरजी पेश कर अदालतमें जीतेगा मगर दिन तेरे नाकिश हैं दुश्मन तेरा जोरवाला है रातदिन तकरार करता है मगर तदबीर कर मंगलका व्रत कर दुर्गापाठ २१ वा ५१ किसी ब्राह्मणसे करा दुश्मनका संपुट देकर धर्म की नियत रख दुश्मन तेरा पैमाल होजावेगा मगर एक दफे किसी शख्सको पाकर दुश्मन तेरा जोरपाके तुझको नीचा दिखलावेगा

आखिरमें तू जीतेगा मगर कुछ धन दौलत खरच पड़ेगा बादशाह तेरे पक्ष पर है फिकर मत कर इलाही तेरी मुराद पूरी करेगा और तू अरजी अव्वल पेशकर राजमें तू जीतेगा दुश्मन तेरा पैमाल होजावेगा फिकर मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।६५३।। ⚏ हुक्मी शकल कब्जुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल दुश्मनके झगड़ेका है" सो इसके साथ झगडा बहुत दिनोंका है दुश्मन जोरवाला है यह शख्स राजमें झगडा करके दिनोंकी गरदिशसे बरबाद होगा दिन इसको बहुत नाकिश हैं सो तदबीर कर ५१ दुर्गापाठ संपुट देकर किसी ब्राह्मणसे करा मंगलकी पूजाकर हरवक्त हाथ जोड़ कर विनती कर तू आखिरमें जीतेगा मगर १ महीना बाद तेरे दिन दुरुस्त आवेंगे तू १ दफे दुश्मनका जोर खाकर दुःख पावेगा मगर अब राजाका एक शख्स तेरी तरफ होगा सो निश्चय करके मान तू जीतेगा दुश्मन तेरा खारिज होकर पैमाल होजावेगा फिकर मत कर इलाही तेरी पक्षमें है तेरी मुराद हासिल होगी इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ६५४।। हुक्मी शकल जमात ☰ साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल दुश्मनके झगड़ेका है सो तू अपील करेगा मुनाफा लेकर और जगे मगर दुश्मन तेरा जोरवाला है रातदिन तकरार करता है दिन तेरे नाकिश हैं जो तदबीर करता है दिनोंकी गरदिश करके उसमें ही हानि उठाता है मगर तू बटुकका पाठ किसी ब्राह्मणसे करा काले कुत्तेको रोटियें गेर धर्मकी नीयत रख आखिरमें तू जीतेगा मगर कुछ धन तेरा खरच पड़ेगा बादशाह तेरे पक्षपर होगा दुश्मन तेरा बहुत जोरसे हार खावेगा मगर अपील तू बेशक पेश कर तू जीतेगा फिकर मत कर इलाही तेरी मुराद पूरी करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ६५५।। ⚍ हुक्मी शकल फरहा मुनकलीव शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल दुश्मनका है" सो तेरा दुश्मन अरजी पेश नहीं करेगा तुझको डरपाता है सो तू डरपे मत अव्वल तो अरजी नहीं देगा जो अरजी देगा तो बिलफौर खारिज होकर खिलाफ खावेगा तू जीतेगा दिन तेरे जरा नाकिश है सो तू दिन गुजरान कर इलाही अच्छा करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।६५६।। ⚎ हुक्मी शकल उकला मुनकलीव शनिश्चरकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजभावका है सो तू अरजी पेश मत कर तेरा कार्य्य विना अरजी पेश किये दुरुस्त होगा ५ दिनसे दिन दुरुस्त आये सो तू अव्वल अरजी पेश मत कर तू जीतेगा दुश्मन पंमाल होगा अल्लाताला तेरी बिगर अरजी मुराद पूरी करेगा फिकर मत कर इति प्रश्न।। पिण्ड ।। ६५७।। ☱ हुक्मी शकल अंकीश दाखिल शनिश्चरकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल करजाकी अरजी देनेका है" सो तू बेशक अरजी पेशकर करजा तुरत मिलेगा मगर राजमें कुछ धन तेराखरच पड़ेगा तेरा करज खरच समेत सब मिलेगा

राजा तेरे पक्षपर रहेगा तू जीतेगा सूदसमेत धन तेरा मिलेगा फिकर मत कर इलाही मुराद पूरी करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ६५८।। ≡ हुक्मी शकल हुमरा साबित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल करजेकी आमदनीका है" सो तुझको धन मिलेगा मगर थोड़ा और कुछके दिनोंकी देरीसे क्योंकि तेरे दिन बहुत दिनोंसे नाशिक हैं मगर गुजरान कर तेरा करजा सब मिलेगा मगर राजमें मुकद्दमा न गेर अरजी मत कर १ महीना १९ दिन बाद दिन दुरुस्त आवेंगे फिकर मतकर इलाही अच्छा करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ६५९।। हुक्मी शकल ≡ बयाज साबित चंद्रमाकी है हुक्म फरमाती है "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल करजाकी आमदनीका है" सो तेरे दिन नाकिश हैं तदबीर तो करता है मगर दिनोंकी गरदिशसे चलती नहीं तेरा मुकद्दमा राजमें बहुत दिनोंसे है मगर फैसला होकर मुकद्दमा साबित हुआ नहीं इस मुकद्दमासे तू बरबाद होगया अब दो महीने ५ दिन बाद दिन तेरे दुरुस्त आवेंगे करजा तेरा सब मिल जायगा एक शख्स मध्यजाति गौरवर्णका तेरी तरफमें होकर मुकद्दमाका फैसला बिल फौर करेगा तेरा कुछ धन राजमें खरच पड़ेगा मगर तेरा करजा सूदसमेत सब मिलेगा मगर देरसे फिकर मत कर अब २० दिन बाद राजमें तेरी सुनाई होगी अल्ला तेरी मुराद हासिल करेगा दुश्मन पैमाल होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ६६०।। हुक्मी शकल ≡ नस्रतुलखारिज आफताफकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजसे धनकी आमदनीका है सो तुझको धन मिलेगा कुछ देर नहीं है अब ५ रोजसे दिन दुरुस्त आये हैं सो तेरा धन सब मिलेगा फिकर मत कर दुश्मन तेरा पैमाल होजावेगा अल्लाताला तेरी मुराद हासिल करेगा कुछ देर नहीं राजा तेरे पक्षपर है इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ।।६६१।। हुक्मी शकल = नुस्रतुत्दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल जमीनके झगड़ेका है सो दुश्मन तेरा जोरवाला है दिन तेरे नाकिश हैं सो तदबीर कर आपदुद्धार बटुकका पाठ किसी ब्राह्मणसे करा मङ्गलकी पूजा करनी मलीदा करके मङ्गलके रोज ९ ब्राह्मणोंको गेहूंके आटा के पदार्थ खिला टका २ दक्षिणा दे अब २५ रोज बाद तेरे दिन दुरुस्त आवेंगे तेरी जमीनका फैसला बिलफौर होगा दुश्मन तेरा पैमाल होगा जमीन तेरी मिलेगी मुकद्दमा जीतेगा अंदेशा मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ६६२।। हुक्मी शकल ≡ अतवे खारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल जमीनका है सो जमीन राजसे तुझको मिलेगी मगर कुछ देरीसे और उस जमीनसे तुझको फायदा होगा इज्जत ज्यादा बढ़ेगी मगर सूर्य्यकी पूजा कर हर वक्त हस्त जोड़के विनती कर धर्मकी नीयत रख जमीन तुझको मिलेगी दो महीने १२ दिन बाद तेरे दिन दुरुस्त आवेंगे तेरी मुराद अल्लाताला अच्छा करेगा मगर एक दुश्मन तेरा

राज्यमें है सो पैमाल हो जावेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड॥ ६६३॥ ⁝ नकीमुनकलीव मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि हे "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल जमीनका है" तेरा झगड़ा राजमें बहुत दिनसे है तू झगड़े और दिनोंकी गरदिशसे बरबाद हो गया मदद तेरी बंद है अब ३२ रोज बाद तेरी तामील जारी होगी दुश्मन तेरा पैमाल हो जावेगा मगर कुछ धन तेरा खरच होगा राजाका एक शख्स तेरी तरफ मजबूत है मुराद हासिल करेगा इति प्रश्न ॥पिण्ड॥६६४॥ हुक्मी शकल ⁝ अतबे दाखिल शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल जमीनसे फायदेका है" सो इस जमीनसे तुझको फायदा होवेगा मन्दिर हवेली निर्विघ्नतासे होगी मगर तू धर्मकी नियत रख फकीरोंको दलिया खिला इलाही मुराद तेरी हासिल करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥६६५॥ हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजकी नौकरीका है सो तेरी राजमें नौकरी होगी मगर कुछ देरीसे और नाकिश दिन गये अब १५ दिन बाद दुरुस्त आवेंगे और तुझको राजसे फायदा है मगर राजमें तेरा दुश्मन जोरवाला है सो सूर्य्यकी पूजा कर धर्मकी नियत रख तेरा दुश्मन पैमाल होगा रोजी तेरी राजसे अच्छी होगी फिकर मतकर इलाही अगले सालमें कुछ मुरातवा बढ़ावेगा इति प्रश्न ॥पिण्ड॥६६६॥ ⁝ हुक्मी शकल तरीख मुनकलीव चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल जमीनसे फायदाका है सो इस जमीन हवेली और मंदिरसे तुझको फायदा नहीं होगा यह जमीन बरबादी चाहती है जमीनका लेना और वास करना तुझको अच्छा नहीं सो जमीन मत ले इसमें वास मत कर अल्लाताला जमीन मज्जैत हवेली और दिलावेगा अंदेशा मत कर ये जमीन अच्छी नहीं इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥६६७॥ हुक्मी शकल ⁝ लह्यान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजमें मुरातवा ज्यादाका है सो इस शख्सका मुरातवा ज्यादा होगा राजाकी मेहरबानगी है इसको नेकनामी मिलेगी इसके दिन दुरुस्त हैं एक शख्स तेरा दुश्मन राजपूत है मगर दफे होवेगा अगली सालमें तेरा मुरातवा ज्यादा होगा धन इज्जत बढ़ेगी मगर धर्मकी नियत रख उजाडमें प्यासोंको पानी पिला चार महीने १० दिन बाद तेरा मुरातवा अल्लाताला बढावेगा तन्दुरुस्ती रहेगी इति प्रश्न ॥ पिण्ड॥ ६६८॥ हुक्मी शकल ⁝ कबजुल दाखिल सूरजकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजका काम हाथ लेनेका है" सो इस शख्सको पहले राज्यमें उनफेद अच्छी हुई राजाकी मिहरवानी रही अब कोई रोज बाद दुश्मनोंने जोर पाकर इस शख्सको दूर कर दिया दिन इसके नाकिश हैं जो तदबीर करता है दिनोंकी गरदिश करके उसमें ही कुछ फायदा नहीं होता सो ३१ दिन दुर्गापाठ किसी ब्राह्मणसे करा दशमीका व्रत कर अमावसके रोज

हलवा ब्राह्मणोंको यथाशक्ति खिला धर्मकी नीयत रख तीन महीने १९ दिन बाद तेरे दिन दुरुस्त आवेंगे सब मुराद तेरी अल्लाताला अच्छा करेगा और एक शख्स तेरा दुश्मन जोरवाला है पर ३ महीने १९ दिन बाद दुश्मन पैमाल हो जावेगा अंदेशा मत कर इलाही मुराद हासिल करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ६६९ ।। हुक्मी शकल ⁘ नकी मुनकलीव मङ्गलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि एक शख्सको बीमारी ज्यादा है कई इलाज किये परंतु दिनोंकी गरदिश करके कोई भी इलाज दुरुस्त न आया अब दिनोंकी गरदिश कितनी रही है और इसको आराम कब होगा" सो हे पूछनेवाले! इसको दिन २ बीमारी ज्यादा होगी इसको सामान्य मारक है यह कालके मुखमें आ रहा है सो प्रथम तो इसको भोजनमें रुचि नहीं होती और कुछ रुचि होवे तो भोजन किया न जाय और कर लेवे तो पचे नहीं तदबीर कर एक कलसा तांबेका घीका भरवाय सुवर्ण मासे ११ गेरके दे आराम होगा इति ।।पिण्ड।। ६७०।। हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजभावका है" सो तू बेशक राजाको सवाल दे तेरा सवाल दुरुस्त बढैगा दुश्मन तेरे बहुत हैं राजाके कानमें दिन रात तेरी तरफका जिकर करते हैं सो भगवतीका अकीदा रख धर्मकी नियत रख तेरे दुश्मन सब पैमाल हो जावेंगे राजकी परवस्ती रहेगी धन इज्जत ज्यादा बढैगी फिकर मतकर नेकनामी मिलेगी इलाही पक्षमें है इति प्रश्न ।। पिण्ड।।६७१।। हुक्मी शकल फरहा ⁘ मुनकलीब शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजके भयका है सो तुझको दिन नाकिश हैं राजसे थोडा भय होगा क्योंकि दुश्मन तेरा जोरवाला है रात दिन तक्दीरी करता है मगर दुर्गापाठ किसी ब्राह्मणसे करा मंगलकी पूजा कर तेरा दुश्मन पैमाल होजावेगा २७ दिन और तुझको नाकिश है पश्चात् भय दूर होगा राजमें धन कुछ तेरा खरच पड़ेगा अंदेशा मत कर इलाही अच्छा करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ६७२।। हुक्मी शकल ⁘ उक्ला मुनकलीब शनिश्चरकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजकी दहशतका है" सो तुझको राजकी दशहत होगी तेरे ऊपर जुर्माना होगा तुझको दिन माफिक हैं दुश्मन तेरा फरेबी है मगर तदबीर कर शनिश्चरकी पूजा कर आपदुद्धारका पाठ किसी ब्राह्मणसे करा कुत्तेको रोटी गेर धर्मकी नीयत रख तेरे २१ दिन और नाकिश हैं बाद दुश्मन तेरे सब पैमाल होजावेंगे अंदेशा मत कर अल्लाताला करेगा तो जुर्माना भी कम होगा मगर मिहनत कर राज तेरा दुश्मन है मगर एक शख्स मध्यवर्णका तेरी तरफ है तुझको चाहता है उससे दोस्ती कर तेरा काम बिलफौर होगा राजकी दहशत दूर होगी फिकर मत कर अल्लाताला तेरा अंदेशा दूर करेगा इति प्रश्न ।।पिण्ड।।

।।६७३।। ☰ हुक्मी शकल अंकीश दाखिल शनिश्चरकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल कैदमेंसे छूटनेका है सो उस शख्सको दिन नाकिश हैं जो तदबीर करता है वही दुरुस्त नहीं होती मगर फिर तदबीर कर दुर्गापाठ संपुट देकर किसी ब्राह्मणसे करा सूर्य्यकी पूजा कर हर वक्त हाथ जोड़कर विनती कर वो शख्स ! कैदसे छूटेगा मगर ३१ दिन उसके और नाकिश हैं बाद दिनोंकी गरा-देशके दुश्मन सब पैमाल होवेंगे कैदसे छूट जायगा मगर धनका खरच बरजरूर पड़ेगा अंदेशा मत कर इलाही अच्छा करेगा एक शख्स गौरवर्णका तेरा दोस्त है उससे जोर पाकर वह शख्स कैदसे जल्दी छूटेगा मगर आकीदा सूर्यका रख अल्ला-ताला मुराद तेरी हासिल करेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।६७४।। हुक्मी शकल ☰ हुमरा सावित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजाका कामदार आवेगा हमको फलदारी होगी या नहीं यह है" सो इस शख्सको कामदारोंसे फलदारी है इस कामदारसे फायदा होगा पाराना बढ़ेगा दिन तेरे दुरुस्त हैं दुश्मन तेरा पैमाल होगा मगर मंगलकी पूजा कर इस कामदारसे तेरेको फलदारी अच्छी होगी फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ६७५।। हुक्मी शकल बयाज ☰ सावित चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल कैदसे छूटनेका है" वह शख्स कैदसे नहीं छूटेगा अभी देरी है उसके दिन नाकिश हैं राजके सब आदमी दुश्मन हैं इससे मुकदमा बरबाद होगया तेरे दुश्मन फरेबी हैं सो तदबीर कर कैदसे छूटनेमें देरी है अंदेशा मत कर छूट जायगा इति प्रश्न ।।पिण्ड।।६७६।। हुक्मी शकल ☰ नुस्रतुल खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल कुआमें हजत बनानेका हैं" सो तेरे सवालका काम दुरुस्त होगा कुछ फिसाद नहीं होगा तेरे दिन दुरुस्त हैं मगर इतने तामील जारी रहे भैरूं हनुमान् वा काली की पूजा कर दलिहा फकीरोंको खिला अल्लाताला तेरी मुराद हासिल करेगा तुझको सदरहमत है इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ६७७ ।। हुक्मी शकल ☰ नुस्रतुल दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बाग बगीचा तालाव बनवानेका है सो तेरे अच्छे काममें कुछ फिसाद नहीं होगा तेरी नीयत दुरुस्त है तेरी सब मुराद पूरी होंगी दुश्मन तेरे सब पैमाल होजावेंगे दिन तेरे दुरुस्त हैं तकदीर तेरी अच्छी है ३ मास बाद और ज्यादा तकदीर खुलेगी मगर धर्मकी नीयत रख फकीरोंको दलिया खिला अल्लाताला तेरी मुराद सब हासिल करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ६७८।। हुक्मी शकल ☰ अतवेखा-खारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल करजा दूर होनेका है" तेरा करजा दूर होगा मगर खरच ज्यादा है आमदनी कम है दिन तेरे नाकिश हैं ५ महीने ५ दिन बाद दुरुस्त आवेंगे करज तेरा सब दूर होगा २, ३ साल

बाद तकदीर तेरी खुलेगी धन मिलेगा इलाही मुराद तेरी हासिल करेगा इति प्रश्न ।।पिण्ड।।६७९।। हुक्मी शकल ⁘ नकी मुनकलीव मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धनकी आमदनीका है" सो तू लेखा कर परमेश्वरकी मेहरबानी तुझ पर पूरी रही है धन भी बहुत दिया है संतोष रख नेकनामी होगी धन बहुत मिलेगा दिल ठीक रख तुम्हारा मुरातवा बढ़ेगा लेखा तेरा होजावेगा कुछ दिन पीछे लेखा हिसाब दुरुस्त होगा मगर ४२ दिन तेरे और नाकिश हैं सो मंगल की पूजा कर धर्मकी नीयत रख इस करजामें भी तुझको कुछ धन मिलेगा मगर थोड़ा; और १ साल बाद करजा तेरा सब आजायगा फिकर मत कर इलाही मुराद हासिल करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।६८०।। हुक्मी शकल ⁘ अतबे दाखिल शुक्की है हुक्म फरमाती है कि "पूंछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औलादके होनेका है सो तेरे औलाद अबतक हुई नहीं हमल भी तेरी स्त्रीको नहीं रहा तेरे हमल बंधयोग है पूर्व जन्ममें तैंने अजाब बहुत किया तिस अजाब करके इस पैदाइशमें तेरे हमल भी नहीं रहा सो तू अमावसके रोज दूध देनेवाले गाय और कुछ उसके साथ धन किसी ब्राह्मण को दे और हलवा करके ५१ अथवा ३१ ब्राह्मणोंको खिला चावलोंकी दक्षिणा दे और साल भर सूर्य्यकी पूजा कर और सूर्य्यका व्रत कर तेरा पहले जन्मका अजाब दूर होगा तेरी औरतका कुछ गुनाह नहीं तेरी गुनाहसे इतनी देरी हुई अब ९ महीने १३ दिन बाद फरजन्द होनेकी तजबीज लगेगी हमल औरतके रहेगा सूरजका आकीदा रख धर्मकी नीयत रख अल्लाताला करेगा तो १ वा २ साल भीतर तेरे फरजन्द होगा फिकर मत कर १ फरजन्द १ छोकरी जिन्दा रहेंगे इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ६८१।। हुक्मी शकल ⁘ लह्यान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औलाद होनेका है" सो तेरे फरजन्द छोकरी आज तक हुई नहीं तेरी औरतको हमल तो रह जाता है मगर ठहरता नहीं सो तेरे पहले जन्मका अजाब है और तेरी औरतकी भी गुना है सो तू तदबीर कर सोमवती अमावस्याके रोज गोरी या लाल गायकी पूजा करके ब्राह्मणको दे सवालाख फूल चढाकर आदम बाबाकी पूजाकर यथाशक्ति १०० अथवा ५० ब्राह्मणोंको हलवा खिला प्रीति करके पितरोंकी गया श्राद्ध कर साल भर १४ का व्रत कर जब तेरा अजाब दूर होगा अंदेशा मत कर इसी औरतके हमल ठहरेगा फरजन्द होगा मगर ढीले है सो तू आदम बाबाको हरवक्त हाथ जोड़के विनती कर धर्मकी नीयत रख तेरे अगली साल बाद हमल ठहरेगा इलाही फरजन्द देगा अंदेशा मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ६८२।। हुक्मी कशल ⁘ कबजुल दाखिल सूर्य्यकी है हुक्मी फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औलाद होनेका है" सो अबतक फरजन्द छोकरी हुई नहीं तेरी औरतका पूर्व जन्मका अजाब है सो इस औरतके

फरजन्द छोकरी नहीं होगी क्योंकि तेरे औगुन दूर होनेके नहीं सो तू और शादीकर उस औरतके फरजन्द छोकरी होगी हमल बिलफौर ठहरेगा मगर संतानगोपालका संपुट पाठ किसी ब्राह्मणसे करा साल भर पक्षप्रदोषका व्रत कर चन्द्रग्रहणमें १ मन गेहूं टका ।।१३।। किन्हीं २५ ब्राह्मणोंको दे कुत्तेको चपातियां खिला धर्मकी नीयत रख तेरी दूसरी औरतके फरजन्द होगा अल्लाताला जिन्दा रखेगा फिकर मतकर इति प्रश्न ।। पिण्डा ।। ६८३।। हुक्मी शकल कबजुलखारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औलाद होनेका है सो तेरे १ फरजन्द होकर फिर बंद होगई हमल भी न रहा और कोई तदबीरसे हमल रहा सो ठहरा नहीं सो तेरे अगले जन्मका अजाब (गुना) है सो तदबीर कर सवालाख त्र्यंबक मंत्र किसी ब्राह्मणसे जपवा बाद १५ सेर वा एक मन गेहूं सुर्ख कपड़ा ५।। गज टका २६।। किसी ब्राह्मणको दे आगे लिखे जानेवाले यंत्रको ६२ मासे सुवर्णका बनवाकर किसी ब्राह्मणको दे अथवा किसी ब्राह्मणद्वारा नित्य सहस्रशीर्षा मंत्रसे पूजन करवा हमल रहेगा यथा श्रद्धासे ब्राह्मण भोजन करवा

२	९	४	२	७	६	६	१	८
७	५	३	९	५	१	७	५	३
६	१	८	४	३	८	२	९	४

यह सुवर्णका । यह चांदीका । यह तांबेका ।

रक्तचंदन सब भूषण ब्राह्मणको दे पीपलके दरख्तमें पानी गेर सालभर सूरजका व्रत कर तब तेरा अजाब दूर होगा फिकर मतकर फिर इसी औरतके हमल ठहरेगा फरजन्द होगा अंदेशा मतकर १ अथवा २ साल भीतर अल्लाताला करेगा फरजन्द जरूर होगा फिकर मतकर इलाही जिन्दा रखेगा ।। इति प्रश्न ।।पिण्ड ।। ६८४।। हुक्मी शकल जमात साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "हे पूछनेवाले ! तेरा सवाल औलादका है" सो तेरे छोकरी होकर बंद होगयी हमल भी न रहा और किसी तदबीरसे हमल रहा मगर ठहरा नहीं सो तेरे पहले जन्मका अजाब (गुना) है सो तदबीर कर अमावसके रोज सुबेके वक्त सुफेद गायकी पूजा करके अच्छे गरीब ब्राह्मणको यथाशक्ति दे और सालभर पीपलमें पानी दूध मिलाकर गेर एक छोकराको अमावसके रोज कच्चा दूध पिला सालभर चौदशका व्रत कर तब अजाब दूर होके हमल बिलफौर ठहरेगा इसी औरतके फरजन्द होगा अंदेशा मत कर २ साल भीतर तेरे फरजन्द होगा मगर धर्मकी नीयत रख कीडियोंको दलिया गेर अल्लाताला फरजन्द तुझको देगा जिंदा रहेगा ।। पिण्ड।।६८५।। हुक्मी शकल फरहा मुनकलीब शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औलादका है" सो तेरे एक औलाद होकर मर गई फिर कुछ हुआ नहीं हमल भी न

रहा हमल रहा भी तो ठहरा नहीं सो तेरे पहिले पैदायशका अजाब (गुना) है तो तदबीर कर संतानगोपालका किसी ब्राह्मणसे अनुष्ठान करवा मंगलका दान दे सूर्य्यग्रहणमें १ मन गेहूं खांड १० सेर घी ५ सेर सुर्ख कपड़ा ५ गज किसी भूखे ब्राह्मणको दे १ सालभर आदमबाबा का आकीदा रख और पूजन कर सो पक्षप्रदोषका व्रत कर अमावस सोमवारके रोज खीरपकाके शक्तिके अनुसार किसी ब्राह्मणको खिला बाद अजाब दूर होगा २ सालके भीतर फरजन्द होगा मगर धर्मकी नीयत रख हमेशः सुबेके वक्त कुत्तेको चपातियां गेर अन्देशा मत कर अल्ला तुझको फरजन्द देवेगा फिकर मत कर इलाही अच्छा करेगा इति प्रश्न पिण्ड ।।६८६।। हुक्मी शकल उकला ⁞ मुनकलाब शनिश्चरकी है हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औलादका है सो तेरे छोकरी हुई फरजन्दका सुख हुआ नहीं आजतक फरजन्दका दुःख है सो तेरे पहले जन्मका अजाब है बडा गुनाह है सो तदबीर कर सूर्य्यकी पूजा कर किसी ब्राह्मणसे आदित्यहृदयका पाठ करा अमावस रविवारके दिन सुबेके वक्त बछड़ेवाली पीली गायको सब असबाब समेत मयदस्तूर किसी ब्राह्मणको दे जिस दिन होम हो उस दिन सब देवताओंको फातियां दे और ब्राह्मणोंको शक्तिके अनुसार हलवा खिला और सालभर सूर्य्यका व्रत कर हर वक्त सूर्य्यके अगाड़ी हाथ जोडके विनती कर तेरा अजाव दूर होगा गुना माफ होगी बाद फरजन्द इसी औरतके दोसाल बाद होगा अंदेशा मतकर मगर तेरे पापसे छोकरी तेरे कलाममें ज्यादा लिखी है मगर फरजन्द इलाही बरजरूर देगा इति ।।पिंड ।। ६८७।। हुक्मी शकल अंकीश ⁞ शनैश्चरकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औलाद होनेका है" सो तेरी सन्तान हुई मगर जीति नहीं तेरी स्त्रीको मसानका रोग है मृतवत्सा रोग है सो तेरे पहले जन्मका अजाब है साबित गुना है मगर तदबीर कर गर्भिणी सुफेद गायकी ९ महीने तक पूजा कर जिस वक्त वह गाय ब्यावे उस वक्त बछिया बछाके मुखमें सोना गेरके उसको दान दे १०१ दुर्गापाठ संपुट देकर किसी ब्राह्मणसे करा होम करवा हलवा बनवा करके ब्राह्मणको यथाशक्ति खिला और सालभर आठैंका व्रत नवमीके रोज ब्राह्मणकी छोकरीको हलवा खिला कपड़ा स्वर्ण दे तब अजाब तेरा दूर होगा और औलाद तेरी जीवेगी इस हीऔरत के अब तेरे फरजन्द होगा इसही दिनसे आदमबाबाकी ५ साल भर पूजन और रुद्री का पाठकर धर्मकी नीयत रख कुत्तेको चपातियां सुवहकी वक्त खिला अल्लाताला तेरी औलादको जिन्दा रक्खेगा अंदेशा मत कर तेरे कलाममें २ फरजन्द और छोकरी १ लिखी है इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।६८८।। हुक्मी शकल ⁞ हुमरा साबित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स तेरा सवाल औलादकाहै" सो होनेकी नहीं शायद हो भी जावे तो मरेगी जीनेकी नहीं सो तेरे औरतके अगले जन्मकी

गुना है ज्यादा अजाब है सो माफ होनेका नहीं कुछ तदबीर कर कोई छोकरा मोल ले भाई बंधुका वा दोस्तका जो मिले उससे तुझको फायदा होगा मगर धर्मकी नीयत रख आदमबाबाकी पूजा कर हरवक्त हाथ जोड़के मिहनत कर पक्षप्रदोषके दोनों व्रत कर दूसरे दिन किसी ब्राह्मणको सीधा देना और सब रोज हरवक्त कुत्तेको रोटी खिला तब पीछे तेरे छोकरे पर कोई आपत्ति नहीं आवेगी और उस छोकरेसे तुझको फायदा होगा अंदेशा मत कर इलाही जिन्दा रक्खेगा इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ।।६८९।। हुक्मी शकल ⚍ बयाज साबित चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शक्स ! तेरा सवाल औलादका है" सो तेरी औरतको हमल है उस हमलमें इलाही फरजन्द देगा मगर तेरी औरतके दिन नाकिश हैं सो मंगलका दान दे पूजा और जप किसी ब्राह्मणसे करा धर्मकी नीयत रख अल्लाताला तुझको फरजंद देगा अंदेशा मत कर इलाही तेरा फरजन्द जिन्दा रक्खेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।६९०।। हुक्मी शकल ⚍ नुस्रुत् खारिज सूर्य्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औलादका है" सो तेरे अब तक औलादका सुख नहीं हुआ तेरे दिन नाकिश हैं पहले जन्मका अजाब है सुफेद गाय बछड़ेको मा सब सामग्री समेत तू अमावसके दिन नेक ब्राह्मणको दे सूर्य्यकी पूजा कर अल्लाताला तुझको बरजरूर औलाद देगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।६९१।। हुक्मी शकल ⚍ लह्यान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसीके अंदेशे का है" उस शख्सने किसी मुल्कमें गये बाद जानेका कभी ब्यौरा भी नहीं दिया उस शख्सको दिनोंकी गरदिश ज्यादा है मुल्क मुल्कमें फिरता है मगर कुछ फायदा नहीं हुआ रोजगार उसका लग जाता है मगर ठहरता नहीं दिनोंकी गरदिश करके १० महीने और नाकिश है बाद अच्छे आवेंगे रोजगार भी लग जावेगा मगर तू अंदेशा मत कर उसकी तंदुरुस्ती है मिजाज अच्छा है तेरे पास ब्यौरा जल्दी आवेगा मगर खुशवक्तीके १ बरस और ९ महीने बाकी हैं बाद उस शख्सको धन मिलेगा और कुछ मुरातबा बढ़ेगा मगर तू धर्मकी नीयत रख अल्लाताला उस शक्सको बेग ही मिलेगा तू अंदेशा मत कर उस शख्सके हाथका खत जरूर आवेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ६९२ ।। हुक्मी शकल ⚍ कबजुल दाखिल सूर्य्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल है कि किसी शख्सके खत आये बहुत रोज हुए सो वह कैसा है" सो उस शख्सकी तकदीर अच्छी नहीं चितको अंदेशा है उसके दिन नाकिश हैं रोजगार भी उस शख्सका इन दिनोंमें कम है १ महीने बाद दिन अच्छे आवेंगे रोजगार भी कुछ ज्यादा होगा तुमको खत बरजरूर आवेगा कुछ देरी नहीं है उसने १ खत भेजा मगर आया नहीं तू अंदेशा मत कर उस शख्सकी तन्दुरुस्ती है मिजाज भी अच्छा है मगर उस शख्सको कहला भेजो चौथका

व्रत करै सालभर सूर्यका जप और दान दे इतनेमें इलाज करेगा तो दिन पर दिन रोजगार ज्यादा होगा इति प्रश्न ।।पिण्ड ।।६९३।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुल खारिज राहुकी हे हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स। ! तेरा सवाल किसी शख्सके खत आनेका है" सो उस शख्सका खत बरजरूर आवेगा तू अंदेशा मत कर उसका मिजाज अच्छा है तन्दुरुस्ती है सो तेरे पास खत ५ या ७ दिन भीतर खुशवक्तीका बरजरूर आवेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ६९४ ।। हुक्मी शकल ⁝ जमात साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी शख्सके किसी मुल्कमें बीमारीका है" सो उस शख्सको बीमारी ज्यादा है और उसके दिन नाकिश हैं मगर तदबीर कर मंगलका जप और दान किसी ब्राह्मणको दे इसको १५ दिन नाकिश और हैं मगर अब २ रोज से उसको आराम है तू अंदेशा मत कर अल्लाताला अच्छा करेगा तो तन्दुरुस्ती रहेगी खत बरजरूर अच्छा आवेगा इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ६९५।। हुक्मी शकल ⁝ मुनकलीब शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल है कि "कोई शख्स किसी मुल्कमें गया है सो उस शख्सको लाभ होगा कि नहीं" उस शख्सके ३ महीने १० दिन और नाकिश हैं बाद रोजगार लगेगा लाभ होगा मगर उस शख्सको जरा बीमारी पानीकी होगी सो कुछ अंदेशा नहीं १५ दिन अथवा २० दिन रहेगी सो कुछ फिकर मत कर लाभ उसको अच्छा होगा अच्छे दिन उसकी यात्रा हुई है सो खुशवक्ती होगी धन मिलेगा अंदेशा मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ६९६।। हुक्मी शकल उकला ⁝ मुनकली शनिश्चरकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स तेरा सवाल है कि किसी मुल्कमें कोई शख्स है खरच कब भेजेगा" उसका रोजगार अच्छा है खुशवक्ती है खत तुम्हारे पास बरजरूर भेजेगा खरच भी भेजेगा मगर कुछ ढील है तू अंदेशा मत कर रोजगार २ महीने १० दिन बाद उसका अच्छा लगेगा खरच तुझको बरजरूर भेजेगा उस शख्सको भी तेरी तरफका अंदेशा है सो खरच जरूर भेजेगा इति प्रश्न पिण्ड ।।६९७।। हुक्मी शकलः अंकीश ⁝ दाखिल शनैश्चरकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले वह शख्स ! तेरा सवाल किसी शख्सके अंदेशेका है" सो वह शख्स तुझको बिगर कहे गया तुझको मालूम भी नहीं सो तू अंदेशा मत कर वह शख्स खुशी है तुझको पता जल्दी लगेगा उसके दिन नाकिश हैं दिनोंकी गरदिश करके वह शख्स इस वक्त छायामें बैठा है मिजाज अच्छा है तू अंदेशा मत कर अल्लाताला उस शख्ससे तुझको जल्दी मिलावेगा इति प्रश्न ।। पिंड ।। ६९८।। हुक्मी शकल ⁝ हुमरा साबित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी शख्सके आनेका है" सो वह शख्स बरजरूर आवेगा मगर दिल देस शख्स का कुंद है मिजाज तो अच्छा है इन दिनोंमें उसको लाभ अच्छा है दिन उस शख्सके दुरुस्त

हैं उस शख्सके भी मनमें आनेकी जल्दी है सो इलाही उसको जल्दीसे लावेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।६९९।। हुक्मी शकल ☷ बयाज साबित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी मुल्कसे खत आनेका है" सो खत बरजरूर आवेगा रास्तेमें हैं इस वक्त वह खत रवाने हो रहा है उस खतमें कुछ धन दौलत भी है मगर तेरी मुरादसे कम है सो खत व दौलत तेरे पास बरजरूर आवेगा ५ या ७ रोज भीतर खत आवेगा अन्देशा मत कर इलाही तेरी मुराद हासिल करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७००।। हुक्मी शकल ☷ नस्नुतुल-खारिज सूर्य्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी शख्सके आनेका है" सो वह शख्स जल्दी आवेगा उसको तेरी तरफ का अन्देशा बहुत है वह शख्स इस वक्त रास्तेमें चल रहा है उसका मिजाज अच्छा है सो तेरे पास १० या १५ रोज भीतर बरजरूर आवेगा फिकर मत कर खुशी रह पैदा कुनंदा मुराद हासिल करेगा इति प्रश्न पिंड ।।७०१।। हुक्मी शकल ☷ लह्यान बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शादीका है" सो इसकी अबतक शादी हुई नहीं दिन इसके नाकिश हैं सगाईकी तदबीर बहुत की मगर दिनोंकी गर-दिशसे सगाई नहीं हुई औरत इसके कलाम में बरजरूर लिखी है धन खरच होगी मगर कुछ देरी है और येइलाज कर मंगलके रोज मलीदा करके ब्राह्मणको खिला पक्षप्रदोषका व्रत कर दुर्गापाठ किसी ब्राह्मणसे करा हमेशः सुबहके वक्त बड़के दरख्तमें पानी गेर धर्मकी नीयत रख तेरी शादी बरजरूर होगी एक शख्स मध्य सूरत उमर ४० वर्षके भीतर है उसके मार्फत पूर्व पश्चिमकी औरत मिलेगी औरत गोरा बदन खूबसूरत मिलेगी कुछ देरी नहीं है ७२ दिन बाद तेरे दिन दुरुस्त आवेंगे ब्राह्मणसे करा सूर्यका व्रत कर तुझको औरत मिलेगी उत्तर या पूर्व दिशाकी आवेगी गोरा बदन खूबसूरत मगर दो महीने १२ दिन इसके और सख्त हैं बाद दिन अच्छे आवेंगे एक आदमी मध्यवर्णका है उससे मिलाप करके औरत मिलेगी अन्देशा मत कर औरत तुझको जल्दी मिलेगी सबर रख इलाही तेरी मुराद हासिल करेगा धर्मकी नीयत रख इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७०३।। हुक्मी शकल ☷ कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औरतका है" सो इसकी दो शादी होकर फौत हो गई अब तीसरी औरतका योग है सो मिलेगी मगर तदबीर कर तेरी तीसरी औरत तकदीरमें बरजरूर लिखी है परंतु दिन तेरे नाकिश हैं कई तदबीर की मगर दिनोंकी गरदिश करके तदबीर खाई नहीं सो दुर्गाका पाठ किसी नेक ब्राह्मणसे करा मंगलका व्रत कर धर्मकी नीयत रख औरत तुझको जल्दी मिलेगी ३५ दिन और तुझको नामाफिक हैं बाद अच्छे आवेंगे सो औरत तुझको पूर्व उत्तर देशकी मिलेगी अंदेशा मत कर मगर तेरा धन खरच पड़ेगा एक

शख्ससे मिलाप होकर गौरवर्णकी खूबसूरत औरत मिलेगी इलाही जिंदी रक्खेगा इस औरतसे तुझको फलेदारी है फिकर मत कर पैदाकुरन्दा तेरी मुराद पूरी करेगा सबर रख औरतके मिलनेमें कुछ देरी नहीं इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७०४।। हुक्मी शकल ⁝ जमात साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औरतका है" सो औरत तुझको मिलेगी घर बना देगी उससे सुख होगा मगर धन दौलत तेरा खरच पड़ेगा कई तदबीर की मगर दिनोंकी गरदिश करके तदबीर ठीक नहीं हुई सो बृहस्पतिका दान दे पूजा कर प्रदोषका व्रत कर अमावसके रोज बारह ब्राह्मणोंको हलवा कर खिला धर्मकी नीयत रख ६३ दिन बाद तुझको अच्छे दिन आवेंगे अन्देशा मत कर इलाही अच्छा करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७०५।। हुक्मी शकल ⁝ फरहा मुनकलीव शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औरतका है" सो तेरी औरत जिन्दी है मगर उस औरतके ऊपर दूसरी औरतका सवाल है सो तुझको मिलेगी कुछ धन खरच पड़ेगा दुश्मन सब पैमाल हो जावेंगे परंतु कुछ दिनोंके बाद औरत बरजरूर मिलेगी तू अंदेशा मत कर दूसरी औरतसे फायदा होगा उसके औलाद होगी इलाही मुराद हासिल करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७०६।। हुक्मी शकल ⁝ उकला मुनकलीव शनिश्चरकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औरतका है" सो सगाई इसकी हो गयी मगर सगाई होनेके बाद फरेब लाता है दिनोंकी गरदिश करके दोस्त भी दुरुस्त हो गये सो तदबीर कर दुर्गापाठ संपुट देकर किसी ब्राह्मणसे करा अंतके दिन १० सेर गेहूं सुर्ख कपड़ा ५ हाथ सुर्ख चन्दन टका १३ किसी भूखे ब्राह्मणको दे सूर्य्यका आकीदा रख हरवक्त हाथ जोड़ सूर्य्यका व्रत कर तेरी मुराद पूरी होगी दुश्मन तेरे सब पैमाल हो जावेंगे ३६ दिन बाद तेरे दिन दुरुस्त आवेंगे औरत मिलेगी सगाईवालेका कुछ फरेब नहीं चलेगा औरत बरजरूर मिलेगी अंदेशा मत कर इस औरतसे तुझको फलेदारी होगी औलाद तेरी होगी नाम चलेगा सबर रख कुछ देर नहीं पैदाकुरन्दा सब तेरी मुराद हासिल करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७०७।। हुक्मी शकल ⁝ अंकीश दाखिल शनिश्चरकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सगाईका है" इस शख्सकी सगाईकी तदबीर लगी जहांतहां जिकर चला और कोई शख्स आके करार कर गये मगर इसकी सगाई अब तक हुई नहीं दिन इसके नाकिश है एक दुश्मन जालसाज है सो आदमबाबाकी पूजा कर पक्षप्रदोषका व्रत कर सूर्यका दान दे ४२ रोज बाद तेरे दिन दुरुस्त आवेंगे उत्तर वा पूर्वकी सगाई इसकी बरजरूर आवेगी मगर कुछ धन खरच पड़ेगा सगाई होनेसे कुछ देर नहीं अंदेशा मतकर अल्लाताला तेरी मुराद हासिल करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७०८।। हुक्मी शकल : ⁝ हुमरा साबित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल

औरतका है" सो इसकी सगाई करके राजमें नालिश करी है और दुश्मन इसके ज्यादा हैं दिन इसके नाकिश हैं मगर ३५ दिन बाद दुरुस्त आवेंगे सो सब दुश्मन पैमाल हो जावेंगे राजमें तू जीतेगा अंदेशा मत कर इलाही मुराद हासिल करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ७०९ ।। हुक्मी शकल ⁝ बयाज साबित चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल छोकरेकी सगाईका है" सो उस शख्सकी सगाई होगी कुछ देरी नहीं और उसकी तकदीर अच्छी है इसकी सगाई धनवाले इज्जतदारके साथ होगी तुझको धन मिलेगा इज्जत ज्यादा बढ़ेगी मगर एक शख्स दुश्मन है शिकायत हरवक्त करता है मगर तेरी तकदीर अच्छी है दुश्मन सब पैमाल हो जावेंगे सगाई अच्छे खानदानीके घर होगी तेरे दिन दुरुस्त हैं पैदा-कुरन्दा तेरी सब मुराद हासिल करेगा अन्देशा मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड ।।७१०।। हुक्मी शकल ⁝ नुस्रतुलखारिज सूर्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी औरतसे मिलापका है" सो उस औरतसे तेरा मिलाप होगा बर-जरूर अंदेशा मत कर उस औरतसे तुझको फलदारी भी है तुझको वह औरत दुश्मनकी शिकायत करके कम चाहती है ३७ रोज तुझको और नाकिश हैं बाद अच्छे आवेंगे औरतका मिलाप बरजरूर होगा कर्मका आकीदा रख औरत मिलेगी इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७११।। हुक्मी शकल ⁝ नुस्रतुल दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले ! तेरा सवाल बीमारीका है सो उस शख्सको तप है दिन उसके नाकिश हैं तपकी बीमारी ज्यादा है आतिशका रोग है और इलाज भी कई करे मगर दिनोंकी गरदिश करके दुरुस्त नहीं आये सो तदबीर कर जुमाके रोज चावल पकाके अच्छे ब्राह्मणको खिला टका २ चावल कोरा सुफेद कपड़ा दक्षिणा दे घी कटोरामें डालके सोना डालके छाया देखकर अच्छे हाफिजको दे मंगलके दान दे आदमबाबाका आकीदा रख उसके हाथसे कुत्तोंको चपातियाँ खिला धर्मकी नीयत रख आराम उसको बरजरूर होगा मगर ११ दिन उसको और नाकिश हैं बाद आराम बरजरूर होगा अंदेशा मत कर उसकी तंदुरुस्ती रहेगी उमर ज्यादा है और मंगल के रोज चौराहामें बार बजे सहनक दे हकीमोंसे इलाज पैदाकुरंदा इलाही उसको आराम जलदी करेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७१२।। हुक्मी शकल ⁝ अतबे खारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है सो उसको ज्वर है बीमारी बहुत है उसका बदन सूख गया पैरोंमें फुटनी रहती है अनाज हजम नहीं होता हमेशह अच्छी चीज खानेको रूह चलती है मगर खाया नहीं जाता अब ज्वर मांसमें है दिन उसके नाकिश हैं कई इलाज किये मगर दिनोंकी गरदिश करके इलाज दुरुस्त नहीं हुए सो तदबीर कर दुर्गापाठ मृत्युञ्जयका जप किसी नेक ब्राह्मणसे करा अमावसके रोज ५ सुफेद गाय दूध देनेवाली सब

असबाब समेत किसी ब्राह्मणको दे ५१ या जितनी तेरी ताकत हो इतने ब्राह्मणोंको हलवा खिला और ११ अपाहज मंगतोंका हलवा खिला टका २ दक्षिणा दे हमेश: सुबेके वक्त सूर्यके आगे हाथ जोड़के मिन्नत कर धर्मकी नीयत रख उसको आराम बरजरूर होगा तंदुरुस्ती रहेगी उमर ज्यादा है २५ या ४० रोज बाद आराम होगा अंदेशा मत कर इलाही अच्छा करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७१३।। हुक्मी शकल ÷ नकी मुनकलीव मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है सो उस शख्सको बीमारी बहुत रोजसे है संग्रहणीकी बीमारी है पतले दस्त ज्यादे होते हैं कभी उस शख्सके रद्द होती हैं अनाज हजम नहीं होता दिन इसके नाकिश हैं कई इलाज किये मगर दिनोंकी गरदिश करके इलाज दुरुस्त नहीं आये अब ६२ रोज और नाकिश हैं मगर तदबीर कर मंगलके रोज सवा मन गेहूं भूखे अपाहिजोंको बांट लाल गाय दूध देनेवाली सब असबाब समेत किसी नेक ब्राह्मणको दे शनिश्चरका दान डकोतको दे फकीरोंको दलिया खिला घी कटोरीमें डालके सोना गेरके उसकी छाया दिखलायके अच्छे ब्राह्मणको दे धर्मकी नीयत रख ५१ दुर्गापाठ करा तब उसको आराम बरजरूर होगा फिकर मत कर उसकी उमर ज्यादा है तन्दुरुस्ती रहेगी अब २० या ३१ दिन बाद आराम होगा बरजरूर आतश सब दूर होगी बदन अच्छा जल्दी होगा फिकर मत कर इलाज कर दवाई लगेगी और पैदाकुरंदा इलाही तेरी मुराद हासिल करेगा अंदेशा मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७१४।। हुक्मी शकल ∴ अतबे दाखिल शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसीकी बीमारीका है" उसको कई रोजसे तप कंठमें अवरोधकी बीमारी है उसके बदनमें गरमी आतश ज्यादा है कुछ पेटमें भी गाढ़ है दस्त खुलकर नहीं होता अब १० या १५ रोजसे बीमारी ज्यादा है दिन उसके नाकिश हैं कई इलाज किये मगर दिनोंकी गरदिश करके इलाज दुरुस्त नहीं आये सो मंगलकी पूजा कर मलीदा करिके अच्छे ब्राह्मणको खिला गेहूं भूखे अपाहिजोंको बांट महामृत्युंजय मंत्रका जप करा कुत्तोंको चपातियाँ गेर सूर्यका व्रत कर हर वक्त हाथ जोड़के मिन्नत कर उस शख्सको बरजरूर आराम होगा उसकी उमर ज्यादा है तन्दुरुस्ती रहेगी घबरावे मत मगर धर्मकी नीयत रख अल्लाताला आराम बरजरूर करेगा अंदेशा मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७१५।। हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसीकी बीमारीका है सो उसको बीमारी तप जाड़ाकी है अनाजपर रूह करता है मगर हजम नहीं होता उसका बदन सूख गया दिन उसके नाकिश हैं इलाज भी कई किये मगर दिनोंकी गरदिश करके इलाज दुरुस्त आये नहीं सो तदबीर कर बृहस्पतिकी पूजा कर और दान दे नुकती दाने लड्डू करके ब्राह्मणको

खिला चना किन्ही अपाहिजोंको बांट तेल चपातियोंमें डालके कुत्तोंको खिला धर्मकी नीयत रख उसका आराम बरजरूर होगा उस शख्सकी उमर ज्यादा है तन्दुरुस्ती रहेगी मगर मंगलके रोज आधी रातके वक्त चावल पकाके सैहनकमें डालक शबरतका प्याला सुर्ख कपड़ा चौराहेमें धर और हकीमसे इलाज करा आराम उसको जल्दी होगा अंदेशा मत कर इलाही अच्छा करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७१६।। हुक्मी शकल ⁝⁝ तरीख चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है उस शख्सको बीमारी तप जाडाकी है इकंतरे आता है पानीका दाह ज्यादा है उसके तनके अन्दर आतश ज्यादा है बदनकी ताकत कम है अनाज भाता नहीं दिन इसके नाकिश हैं कई इलाज किये मगर दिनोंकी गरदिश करक इलाज दुरुस्त आये नहीं सो तदबीर कर बुधके रोज रातके वक्त केतुका दान दे डकौतको मलीदा खिला ७ बावले अपाहिजोंको हलवा खिला भैरवका पाठ ११ दिन किसी नेक ब्राह्मणसे करा बटुकका अकीदा रख हरवक्त हाथ जोडके मिन्नत कर छाया देखकर घीकी कटोरी सोना सहित किसी अच्छे ब्राह्मणको दे धर्मकी नीयत रख कुत्तोंको चपातियां गेर १० या १५ रोज और नाकिश हैं बाद आराम जरूर होगा अंदेशा मत कर उमर उसकी ज्यादा है तन्दुरुस्ती हैं आराम जल्दी होगा फिकर मत कर इलाही अच्छा करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७१७।। हुक्मी शकल ⁝ लह्यान खरिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है उसको तप तीसरे दिन आता है तृतीयक ज्वर है दो दिन तो दुरुस्त रहता है तीसरे दिन बीमारी ज्यादा होती है किसी चीजका परहेज रखता नहीं सो उसको बीमारी ज्यादा है वदनमें गरमी अनाजपर रूह कम है फुटनी रहती है दिन उसके नाकिश हैं कई इलाज किये मगर दिनोंकी गरदिश करके इलाज दुरुस्त नहीं आये सो तदबीर कर रविवारको सूर्यका दान दे सूर्यकी पूजा कर हरवक्त हाथ जोड़के मिन्नत कर यथाशक्ति तस्मै करके ब्राह्मणको खिला आदित्यहृदयके ५१ पाठ किसी नेक ब्राह्मणसे करा धर्मकी नियत रख उसको ३५ दिन बाद दिन दुरुस्त आवेंगे आराम उसको पहले ही होगा बरजरूर अंदेशा मत कर उमर उसकी ज्यादा है तन्दुरुस्ती होगी इलाज कर पैदा कुरंदा उसको अच्छा बरजरूर करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७१८।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुल दाखिल सूर्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है" सो उस शख्सको बीमारी तपकी है इकतरा आता है गफलती रहती है वदनमें आतिश है १० दिनसे नाकिश दिन आये हैं सो मंगलका दान कर हनुमान्की पूजा कर घीका चिराग बाल मंगलका व्रत कर छायादान दे फकीरको गेहूंका दलिया खिला धर्मकी नियत रख १० रोज बाद दिन दुरुस्त

आवेंगे फिकर मत कर आराम जलदी होगा इलाज कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७१९।। हुक्मी शकल ⠿ कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है" सो उसको दिन रात तप रहता हैं वदनमें आतश हैं उच्चाट देहमें रहता है पानीकी चाह और दाह है दिन उसके नाकिश हैं १० रोज बाद दुरुस्त आवेंगे आराम बरजरूर होवेगा अंदेशा मत कर शुक्रका दान दे अमावसके रोज ब्राह्मणको हलवा खिला कुत्तोंको चपातियां गेर आराम जल्दी होगा फिकर मत कर इलाही अच्छा करेगा इति प्रश्न ।।७२०।। हुक्मी शकल ।।।। जमात साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल हैजेकी बीमारीका है" सो उस शख्सके दिन ज्यादा नाकिश हैं कालके मुखमें है मगर रविवारके दिन सोना मूंगा मोती फलमें गेरके अन्न मिष्टान्न किसी ब्राह्मणको दे दुर्गाका पाठ करा १ मन गेहूं घृत १५ सेरका संकल्पकर बांट चौराहेमे छिड़काकर दिन ४ उसको और नाकिश हैं मगर आराम हो जावेगा उसके वदनमें आतिश ज्यादा हैं उच्चाट है पानीकी दाह है मगर फिकर मत कर ४ या ६ पहर पीछे दाह मिट जायगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७२१।। हुक्मी शकल ⠿ मुनकलीव शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है उसको बीमारी बादीकी है वदन दुखता है कई दफे दरद कहीं २ हो जाता है वायुका जोर है" सो उसके दिन नाकिश आये बहुत रोज हुए मगर दिन अब १४७ और नाकिश हैं बृहस्पतिकी पूजा कर दान दे २५००९ जप करा इतवारके रोज गेहूं, गुड़, चंदन, तेल, मूंगा, मोती, किसी भूखेको दे आराम होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ।।७२२।। हुक्मी शकल ⠿ उकला मुनकलीव शनिश्चरकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल लड़केकी बीमारीका है" सो उसको बीमारी ज्यादा है वदन लड़केका सूख गया गफलत है आतिश गरमीकी है दिन उसके नाकिश ज्यादा हैं कालके मुखमें आ गया है मगर १० मासा सुवर्ण घृत १ सेर कांसीके पात्रमें रखके सुबेके वक्त दान दे सीरासे ब्राह्मणको भोजन करा घृत डालके मूंगा १ मोती १ कुछ सोना दक्षिणा दे दुर्गापाठका संकल्प कर आराम उसको बरजरूर होगा १० या १५ दिन और नाकिश है पीछे आराम हो जावेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७२३।। हुक्मी शकल ⠿ मुनकलीव शनिश्चरकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औरतकी बीमारीका है" सो उस औरतके दिन नाकिश हैं बीमारी ज्यादा है इलाज दिनोंकी गरदिश करके दुरुस्त नहीं होता वदन कुश है आतिश ज्यादा है अन्न भाता नहीं बदपरहेजी भी की है दिनोंकी गरदिश करके मगर शनिश्चरका दान कर शिवजीकी पूजा कर गेहूं घृत बांट उस औरतके २१ या ३१ दिन बाद आराम होगा फिकर मत कर उमर ज्यादा है आराम होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७२४।।

हुक्मी शकल ☷ अंकीश दाखिल शनिश्चरकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धातुक्षीणताकी बीमारीका है" सो इसको आतिशकी बीमारी है धातुक्षीण कई रोजसे है वदनमें इसके ताकत नहीं सो मंगलकी पूजा कर श्रीहनुमान्-जीके मंदिरमें घीका चिराग जला पक्षप्रदोषका व्रत कर १ साल भर पीछे आराम होगा १ साल और नाकिश है बाद आराम बरजरूर होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७२५।। हुक्मी शकल ☷ हुमरा साबित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है" सो उस शख्सको बीमारी लकवाकी है लकवा उस शख्सको मार गया वदनमें कुछ ताकत नहीं रही इलाज कर इलाज दुरुस्त आवेगा ३१ दिन और नाकिश हैं मगर लकवा उसके और दफे भी आवेगा आराम हो जावेगा मगर सूर्य्यकी पूजा कर हरवक्त हाथ जोड़के मिन्नत कर आराम बरजरूर होगा फिकर मत कर उमर ज्यादा है इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७२६।। हुक्मी शकल ☷ अतवेदाखिल शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल दुश्मनसे जीतनेका है" सो तेरा झगड़ा मुफास्सिल हो गया था मगर दिनोंकी गरदिश करके दुश्मन उत्पन्न हो गया तेरे दिन नाकिश हैं डेढ़ वर्षसे मैलका सिंह हो जाता है दिनोंकी गरदिश करके दोस्त भी दुश्मन हो गया मगर तू ३१ दुर्गा पाठ किसी ब्राह्मणसे करा मङ्गलकी पूजा कर अब ५६ रोज तुझको और नाकिश हैं बाद दुश्मन पैमाल हो जावेगा तेरी मुराद हासिल होगी राजका भी तेरा मनोरथ हो जावेगा मगर धन खरच जरूर होगा आखिरमें तू जीतेगा फिकर मत कर ४ महीने बाद तुझको धन मिलेगा सौदामें दिन अच्छे आवेंगे खुशवक्ती होगी अब तू राजमें अरजी पेश कर दुश्मनका नाश होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७२७।। हुक्मी शकल ☷ जमात साबित बुध देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रोजगारका है" सो तुझको ३ वर्ष ९ माससे दिन नाकिश हैं दिनोंकी गरदिश करके सब द्रव्यका नाश हो गया धन मिलनेकी कई तदबीर की मगर नुकसान रहा धन नहीं मिला और आदमियोंसे क्षीण हो गया घरमें मौत ज्यादा हुई धनका नुकसान रहा तू दिनोंको गरदिश करके बरबाद हो गया जिससे दोस्ती करता है वह दुश्मनी करता है आखिरमें तुझको यश नहीं मगर तू शिवजीकी पूजा कर श्रीसूर्य्यका पाठ कर हर दफे हाथ जोड़कर मिन्नत कर अच्छा होगा २ वर्ष बाद तेरे दिन दुरुस्त आवेंगे रोजगार भी अच्छा होगा तेरे दुश्मन सब पैमाल हो जावेंगे तुझको धन मिलेगा आखिर उम्रमें मुरातबा बढ़ेगा फिकर मत कर नाकिश दिनोंमें गुजरान कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७२८।। हुक्मी शकल ☷ हुमरा साबित मङ्गलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औरतका है" सो ये औरत तेरी बरजरूर फौत होगी मगर और शादी हो जावेगी जल्दी उस औरतसे तुझको खुशवक्ती होगी मगर

कई दिन बाद; और इस औरतका चलन स्वभाव अच्छा नहीं तुझको कम चाहती है इन दिनोंमें तेरे दिन मध्यम हैं जिगरी चिन्ता है मगर चिन्ता मत कर तुझको दूसरी औरतका योग है दूसरी औरत खूबसूरत व गोरा वदन है तुझको मिलेगी उससे तेरी मुराद हासिल होगी औरत दक्षिण दिशाकी है उस औरतसे फलेदारी है औलाद भी अच्छी होगी मगर तू सूरजका आकीदा रख तुझको फायदा है औलादका सुख है फिकर मत कर इलाही तेरी मुराद पूरी करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७२९।। हुक्मी शकल ☰ बयाज चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी आदमीसे फलेदारीका है" सो आदमी तेरा दोस्त है उससे लाभ दिन दिन ज्यादा होगा तेरे दिन दुरुस्त हैं मगर उस शख्ससे फायदा कम है दोस्ती ज्यादा है वैसी तुझको फलेदारी नहीं तुझको चार महीने बाद इसही दोस्तीसे लाभ है मगर १ शख्स तेरा दुश्मन है उसने कई दफे शिकायत की है मगर उस दुश्मनकी कुछ चलेगी नहीं तेरा उसका पहली पैदायशका प्याराना है मगर तू शनिश्चरके रोज काले कुत्तोंको तेल मिलाके चपातियां खिला मीठा दलिया अपाहिजोंको खिला तेरी उसकी दोस्ती ज्यादा बढ़ेगी लाभ अच्छा होगा आखिरमें इज्जत बढ़ेगी फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७३०।। हुक्मी शकल ☰ नुस्रतुल खारिज आफताबकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल नेत्रोंकी बीमारीका है" सो उस शख्सको जलकी बीमारी है हरवक्त आंखोंमेंसे पानी निकलता है यह बीमारी उसके कई दिनोंसे है अगले जन्मकी गुना है पहले जन्ममें वह ब्राह्मण था सो एक बालककी आंख इसने फोड़ डाली थी अब इस गुनाहकी तदबीर कर २ नेत्र सोनेके बनवाके व्यतीपातके रोज दान दे सूर्यका व्रत और आदित्यहृदयका पाठ बरस तक करा हरवक्त हाथ जोड़के मिन्नत कर कई दिनों बाद गुनाह माफ होगी १ बरस ३ महीना और नाकिश हैं कई इलाज किये मगर दिनोंकी गरदिश करके इलाज दुरुस्त नहीं होता सूर्यका पूजन करा आखिरमें नेत्र अच्छे हो जावेंगे हे पूछनेवाले ! तुम्हारे कुटुम्बमें बे औलाद मनुष्य मरा है सो उसका अंश माफिक है जहां गया है वहीं विष हो जाता है सो उसकी गयाजी अथवा पिण्डार करवा नहीं तो मनुष्यों और पशुओंपर हाथ गेरैगा सो तू तजबीज कर अच्छे होजायंगे जरा पानी तो पड़ेगा जोत जावेगी नहीं मगर धर्मकी नीयत रख आँखे इस शख्सकी बरजरूर अच्छी होवेंगी फिकर मत कर इलाही अच्छा करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७३१।। हुक्मी शकल ☰ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है" सो उस शख्सको सूजाककी बीमारी है पेशाब बहुत चीस (जलन) मारकर होती है इन्द्रिय रुक जाता है सो बीमारी बहुत है कई इलाज तैने किये मगर उस सुजाकमें आराम नहीं हुआ जड़ टूटी नहीं सो अगले जन्मका अजाब है यह शख्स पहले पैदायशमें वेश्यागामी था

और १ ब्राह्मणी रांडसे सीनाजोरी करके खराब हुआ उस अजाबसे सूजाककी बीमारी हुई मगर कई दिनोंके बाद जड-टूट जावेगी क्योंकि दिनोंकी गरदिश है ७ अथवा १० बरस बीमारी रहेगी पीछे कोई हकीमसे दवाई लेकर उसकी बीमारी जावेगी इलाज दुरुस्त होगा मगर ब्राह्मणीको व्यतीपातके रोज ब्रह्म आभूषण दान दे पैदा कुरंदाका आकीदा रख बीमारी चली जावेगी नाकिश दिनोंमें गुजरान कर इलाही अच्छा करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७३२।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुल दाखिल सूर्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारी का है" इस शख्सको सांसकी बीमारी है दम बहुत उठता है दुःख बहुत होता है अन्न हजम नहीं होता कफ सामान्य पड़ता है सो इस शख्सके पहली पैदायशकी गुनाह है सो इसने अपनी औरत मार डाली सो स्त्रीहत्या इसको बहुत दुःख देती है सो कालके घरमें बैठा है बचना मुशकिल है मगर तदबीर कर किसी नेक ब्राह्मणसे ७ दिन कथा सुन गऊदान दे ब्राह्मणोंको कपड़ा पहिना ब्रह्म भोजन करवा चार महीने दो दिन बाद तुझे आराम होगा शिवजीका व्रत कर हरवक्त ध्यान रख तेरे आराम बरजरूर होगा फिकर मत कर इलाही अच्छा करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७३३।। हुक्मी शकल ⁝ लह्यान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है" उस शख्सको घूबेकी बीमारी है शिरमें हरवक्त दर्द रहता है उसको कई दिनोंसे बीमारी है अगले जन्मका गुनाह है पहले ब्राह्मण था इसने एक कन्याके संग भोग किया उस गुनाकी तदबीर कर व्यतीपातके रोज कन्याको जिमा आदित्य हृदयका पाठ ५१ दिन करा हरवक्त सूर्यको हाथ जोड़ गुना साफ होगी मगर कई दिनोंके बाद तेरे दिन दुरुस्त आवेंगे १ बरस ३ महीना और नाकिश हैं इलाज किये मगर दिनोंकी गरदिश करके इलाज दुरुस्त नहीं होता सूर्यका पूजन करा घुवेमें आराम होगा कुछ आंखोंकी जोत कम रहेगी मगर धर्मकी नीयत रख इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७३४।। हुक्मी शकल ⁝ नुस्रतुलखारिज आफताबकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है" उस शख्सकी बीमारी दस्तकी है सो दस्त बहुत टूटके होते हैं राध और खून गिरता है सो उस शख्सको उठने तककी शक्ति नहीं है इलाज भी किये परंतु दिनोंकी गरदिश करके दुरुस्त नहीं आये विष्णुसहस्रनामके २१ पाठ करा शिवजीके मन्दिरमें चिराग कर इलाही आराम करेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७३५।। हुक्मी शकल ⁝ जमात साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रोगका है" उस शख्सको मृगीका रोग है मुखमें फेन आता है अचेत हो जाता है चित्तपर कुछ फुर्ती नहीं होती गफलत रहती है इसके पहले जन्मकी गुनाह है उसका दोस्त क्षत्री था उसको इस शख्सने दगाकर मारा सो गुना है तदबीर भाद्रपदके महीनेमें अमावसके

रोज घोड़ेका दान दे ब्राह्मणसे दुर्गापाठ सम्पुट ६१ दिन तक करा तुझको आराम होगा फिकर मत कर इलाही आराम करेगा धर्मकी नीयत रख इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ।।७३६।। हुक्मी शकल ⁝ हुमरा साबित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजमें इजाराका है" सो राजमें इजारामें लाभ सामान्य होगा क्योंकि चार महीने तीन दिन तेरे नामाफिक हैं तेरा रोजगार इतने दिन बाद होगा इज्जत बढ़ेगी धन मिलेगा मगर पहले तदबीर कर दुर्गापाठ ५१ या ३१ दिन करा धर्मकी नीयत रख इतवारके रोज काले कुत्तेको दलिया खिला शनिश्चरका दान दे सोम प्रदोषका व्रत कर और भी जिस दिन व्रत कर उसी दिन ब्राह्मणको मलीदा खिला अल्लाताला तेरी मुराद हासिल करेगा खुशवक्ती रहेगी इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ।।७३७।। हुक्मी शकल ⁝ अंकीशदाखिल शनिश्चरकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजसे दुरुस्त होनेका है" सो दिन बहुत नाकिश हैं तैंने कई तजबीज की मगर दिनोंकी गरदिशसे काम दुरुस्त नहीं आया परंतु अब २७ दिन बाद तुम्हारा बनाव अपने घरमें होगा मगर तदबीर कर आपदुद्धारका पाठ २१ दिन तक कराना तेरे काम आदमबाबा दुरुस्त करेगा फिकर मत कर इति प्रश्न पिण्ड ।।७३८।। हुक्मी शकल ⁝ फरहा मुनकलीव शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल घोड़ा लेनेका है" सो घोड़ा लेनेमें फायदा नहीं होगा तेरे दिन नाकिश हैं सो तुझको लाभ नहीं होगा मगर ५७ दिन बाद दिन दुरुस्त आवेंगे सो तेरा रोजगार हो जावेगा सूर्य्यके ३१ व्रत कर अल्लाताला तुझको लाभमें रक्खेगा अब तू इस तरहसे गुजरान कर फिकर मत कर इति प्रश्न पिण्ड ।।७३९।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुल खारिज सूर्य्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है" सो गरमीकी बीमारी है बदनमें फुनसी और फोड़ा बहुत होते हैं गरमीका रोग ज्यादा है दिन नाकिश हैं कालके मुखमें आरहा है सो तजवीज कर मङ्गलके रोज किसी नेक ब्राह्मणको मंगलका दान दे और मंगलका अनुष्ठान और सूर्य्यका व्रत ११० कर तुझको आराम होगा पैदा कुरन्दाका आकीदा रख इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७४०।। हुक्मी शकल ⁝ तरीख चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भैंस लेनेका है सो इस शख्सको फायदा होगा अब इसके दिन दुरुस्त हैं सो बेशक ले लाभ होगा मगर एक तजबीज करके लाना जिस रोज उसके दूधकी खीर पकाना किसी भूखेको खिला देना अल्ला तुझको फायदा देगा खुशी होगी कुछ विघ्न नहीं होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ७४१ ।। हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल गऊ लेनेका है" सो गऊके लेनेमें फायदा रहेगा अब तक दिनतेरे नाकिश थे अब कुछ दिनके बाद दुरुस्त आवेंगे सो कुछ विघ्न नहीं होगा इलाही तेरी खुश-

वक्ती करेगा बेशक गऊ ले कुछ चिन्ता न कर लाभ होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ।।७४२।। हुक्मी शकल ⁝= उकला मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल देवताके आराधनका है सो तू यह पूछता है कि मुझको देवताके आराधनमें फायदा है या नहीं" सो देव आराधनमें फायदा बहुत है परंतु पुष्यनक्षत्रमें गुरुवारके दिन और रात्रिमें आरंभ करना शुद्ध दिनमें चैत्र श्रावण मार्गशिरको टाल देना सिद्ध होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ।।७४३।। हुक्म शकल ⁝ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल ऋणविमुक्तिका है सो तू यह पूछता है कि ऋणविमुक्ति कब होगी" सो ऋण अब ही दूर होनेका नहीं मंगलका आराधन करना ताम्रपात्रमें षट्कोण यंत्र लिखके विधिपूर्वक रक्तपुष्पोंसे पूजन करना ऋण दूर होगा जलदी सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ७४४।। हुक्मी शकल ⁝ हुमरा सावित मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पुत्र गोद लेनेका है" सो तूने पुत्र गोद लेनेका जतन किया सो ठीक है परंतु इस पुत्रके लेनेमें फायदा नहीं पाओगे क्योंकि इसका और तुम्हारी औरतका वैरभाव है सो और बालकको लेना जरा ढीलमें फायदा होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ।। ७४५।। हुक्मी शकल ⁝ बयाज सावित चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू यह पूछता है कि यह औषधि कैसी है" सो इस औषधिमें फायदा है देते ही आराम होगा परंतु सुफेद कपड़ा तन्दुल चांदी कपूर मिश्री सोमवारको पण्डितको दे जितनी तेरी ताकत हो उतना रोकडीधन दे देते ही ३ दिन बाद आराम होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७४६।। हुक्मी शकल ⁝ नुस्रुत् खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शिकारका है तू पूछता है शिकार मिलेगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! शिकार इस वक्त जलदी हाथ लगेगी और खूब तर माल मिलेगा नगरकी उत्तर तर्फ जाना पीछेको नहीं देखना शिकार बरजरूर मिलेगी फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ७४७।। हुक्मी शकल ⁝ नुस्रुद्दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पर औरतके संगका है तू पूछता है कि पर औरतसे संग होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरा पर औरतसे संग होगा दो मास बाद तुम्हारे हाथ बेशक लगेगी जो कभी दैवयोगसे दूर हो जायगा तो पश्चात् बहुत परिताप होगा सन्देह मत कर इन व्रतोंके यही उद्यापन हुआ करते है इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ७४८।। हुक्मी शकल ⁝ अतबे खारिज केतुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल नौकाका है सो तू यह पूछता है कि नौका कब आवेगी" तुम्हारा प्रश्न श्रेष्ठ है नौका जल्दी ही आवेगी और जरफूनण

आवेगी तीन ३ योजनपर ठहर रही है दिलजमई रख कुछ धर्म कबूल करना जल्दी ही आवेगी संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ७४९।। हुक्मी शकल नकीमुनककीव मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल खतके आनेका है" सो हे पूछनेवाले ! खत जल्दी ही आवेगा जरफूनण भी आवेगा दिलजमई रख घबराना नहीं राजी रहना खत जल्दी ही आवेगा आठ पहर भीतर, सन्देह मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड।।७५०।। हुक्मी शकल अतवेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वर्षाका है" अब वर्षा ३ दिन भीतर वर्षेगी आई समझना देर नहीं है उत्तरकी तरफसे रात्रिमें वर्षा आवेगी परंतु पुण्य करना नहीं तो अबके आषाढ़में बहुत वर्षा आवेगी ३८ दिन तक झड़ी रहेगी नुकसान होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ७५१।। हुक्मी शकल इज्जतमा सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल देवताके आराधनका है" सो तूने जो देवताके आराधनकी विचारी है उसमें प्रसन्न न होगा तुझको अपने कुलदेवताका पूजन करना ठीक है यही सब फल देगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ७५२।। हुक्मी शकल तरीख मुनकलीव चन्द्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल करजाके दूर होनेका है तू यह पूछता है कि यह करजा कब दूर होगा" सो एक वर्ष तक दूधमें काले तिल शहद मिलाके ऐतवारको छोड़कर पीपलमें डाल तेरा ऋण विमोचन होगा और ऋण विमोचनका पाठ करवा करजा जल्दी ही दूर होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ७५३।। हुक्मी शकल लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पुत्र गोद लेनेका है" सो पुत्र गोद लेनेमें तुझको फायदा बहुत है क्योंकि तुम्हारे जन्मपत्रमें सन्तान नहीं लिखी है क्योंकि तुम्हारे पितर नहीं होने देते सो गोदके पुत्रका भी सुख तब होने देंगे जब उनकी शांति करवावेगा और श्रीशिवजीकी भक्ति करना गोद लेनेसे फायदा होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ७५४।। हुक्मी शकल कबजुलदाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है" सो इस औषधिके लेनेमें फायदा नहीं है भूलके मत लेना सूर्य्यका पाठ २० दिन तक करवा १५ दिनमें निश्चय आराम होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ।।७५५।। हुक्मी शकल कबजुलखारिज राहुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शिकारका है" पर शिकार नहीं मिलेगा बहुत क्लेश होगा १ दिनकी ढीलसे मिलेगा शिकार भारी मिलेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।।७५६।। हुक्मी शकल जमात सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल परस्त्रीसे गमन करनेका है" सो पर औरतसे

गमन होगा २ दिनकी देर है शनैश्चरके दिन अर्द्धरात्रिमें कन्याका काता हुआ सूत उस औरतके बाम पग तलेकी मिट्टी लेकर इतवारके दिन उस औरतके मस्तकपर डाल स्त्री वश होगी सन्देह मत कर यही कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७५७।। हुक्मी शकल ⁝ फरहा मुनकलीव शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल नौकाके आनेका है तू यह पूछता है कि हमारी नौका कब आवेगी" सो तुम्हारी नौकामें कुछ बखेड़ा पड़ गया रविके रोज तुमने कुछ पुण्य बिचारा था पर किया नहीं सो करनेसे नौका आवेगी और तेरी नौकाके आनेमें देर है १० दिनमें आवेगी अब क्या है माल मिलेगा श्रीदुर्गापाठ करवाना सो फिकर मत कर नौका पुण्यसे ही चला करती है इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७५८।। हुक्मी शकल ⁝ उकला मुनकलीब शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संवत्का है तू यह पूछता है कि इसमें काल होगा या समा" सो आपने काल समाकी पूछी समा मध्यम है परंतु पशुजाति सुखी रहेगी वर्षा ज्यादा होगी तडित् भय ज्यादा होगा राज प्रजा सुखी रहेंगे श्रावण और माघ मास भर अन्न मन्दा होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।।७५९।। हुक्मी शकल ⁝ अंकीश दाखिल शनि देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वर्षाका है" सो अबही वर्षामें देर है इस जगह पुण्य नहीं है सो वर्षा होगी परंतु अब ही २५ तथा ३० दिनकी ढील है सो पीछे वर्षा बहुत होगी और पुण्य करनेसे जल्दी होगी फिकर मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।।७६०।। हुक्मी शकल ⁝ हुमरा मंगल देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल देवताके आराधनका है तू यह पूछता है कि देवताके आराधनमें फायदा है या नहीं" सो तुझको देवताके आराधनमें फायदा नहीं यह बात नहीं है देवताको आराधना करनेसे फल जरूर मिलता है जिस देवताकी तुमने दिलमें विचारी है कुछ उपाय करनेसे वही तुमको फल देगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।।७६१।। हुक्मी शकल ⁝ बयाज सावित चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल करजाका है तू यह पूछता है कि मेरा करजा कब दूर होगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरा करजा अब ही दूर होगा अब दिन अच्छे आये हैं पहिले दिन नामाफिक थे अब ६ माससे अच्छे आये हैं सो करजा दूर होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७६२।। हुक्मी शकल ⁝ नुस्रतुत्खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पुत्र गोद लेनेका है तू यह पूछता है कि पुत्र गोद लेनेमें फायदा है या नहीं" सो गोदके पुत्रमें फायदा है परंतु २ महीने व्यतीपातके दिन ब्राह्मणोंको जिमा घृतका दान करना २।। वर्षमें अच्छा फल पावेगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७६३।। हुक्मी शकल ⁝ नुस्रुद्दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल

बीमारीका है" सो हे पूछनेवाले ! इस औषधिके सेवनमें फायदा है परंतु हकीम नामाफिक है बीमारी ज्यादा है महामृत्युञ्जयका जप करवाना जल्दी आराम होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७६४।। हुक्मी शकल ⋮ अतवे खारिज केतु ग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल है कि शिकार मिलेगी या नहीं" सो इस वक्त शिकार मिलेगी परंतु दूर मिलेगी जलकी तृषा आपको ज्यादा लगेगी ५।। घटी रहेगी सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७६५।। हुक्मी शकल ⋮ नकी मुनकलीव शुक्र देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औरतके संगका है" सो तैने जो औरतके सङ्गकी विचारी सो कार्य्य सिद्ध होगा परंतु दोष बहुत है इसे दूर ही रहना इसका और तेरा एक गोत्र है विना गोत्रकी २।। मास बाद आपसे आवेगी फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७६६।। हुक्मी शकल ⋮ अतवे दाखिल शुक्र देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसीसे दोस्तीका है" सो इसकी आपने दोस्तीकी पूछी सो दोस्ती आपकी खूब होगी दोस्त मिलेगा परंतु अन्तमें वैर ज्यादा होगा इसमें सन्देह नहीं फिर १५ दिनमें एक बार मिलेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७६७।। हुक्मी शकल ⋮ इज्जतमा साबित बुध देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संवत्का है तू यह पूछता है कि काल पड़ेगा या समा होगा" सो काल पड़नेका नहीं मध्यम संवत् होगा भाद्रपदमें अन्नका भाव तेज होवेगा ४।५।८ इन राशियोंको फायदा रहेगा २१ दिन तेज रहेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७६८।। हुक्मी शकल ⋮ तरीख मुनकलीव चंद्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वर्षाका है तू यह पूछता है कि वर्षा कब होगी" सो तीसरे दिन २।। पहर जल वर्षेगा अमृत वर्षेगा सभी जिनस पैदा होगी वर्षा जल्दी होगी संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।६६९।। हुक्मी शकल ⋮ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल देवताका है तू यह पूछता है कि मुझको देवताके आराधनमें फायदा है या नहीं" सो आपने देवताके पूजनकी विचारी सो आपको देवतासे फायदा नहीं चित्तमें इस देवताकी बहुत दिनोंसे है पर अब दूसरेकी आराधना कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७७०।। हुक्मी शकल ⋮ कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल करजा दूर होनेका है" सो हे पूछनेवाले ! तेरा करजा थोड़ा रह गया है वह भी उतरा जान परंतु शनैश्चरका जप ३।। मास कर शनिके दिन ब्राह्मण जिमाना चाहिये ४ मास भीतर करजा दूर होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७७१।। हुक्मी शकल ⋮ कबजुल खारिज राहुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पुत्र गोद लेनेका है" सो आपको इस पुत्रमें फायदा होगा पहले सवा लक्ष

महादेवके लिङ्ग बनवाकर पूजन कर फिर लेना पहले लेनेसे दिल न मिलेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७७२।। हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुध देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है कि इस औषधिके सेवनमें फायदा होगा या नहीं" सो इस औषधिके लेनेसे ही बादी ज्यादा होगी फिर बाई आवेगी सो औषधि नहीं लेना और ठहरके करना फिर आराम होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७७३।। हुक्मी शकल ⁞ फरहा मुनकलीब शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शिकारका है सो तू यह पूछता है कि शिकार मिलेगा या नहीं" आपको शिकार जातेही मिलेगी श्याम मृग मिलेगा फिर उसके आप गेर देवेंगे कुछ देर ठहरके गेरोगे संदेह मत करो इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ।।७७४।। हुक्मी शकल ⁞ उकला मुनकलीब शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मालके खरीदनेका है सो तू यह पूछता है कि इस वस्तुके खरीदनेमें मुझे फायदा है या नहीं" सो इस वस्तुके खरीदनेमें तुझको फायदा है और इस वक्त तुझको अन्नका व्यापार फलदायी है घबराना नहीं तेज जलदी होगा श्रीदुर्गाका आराधन करवा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७७५।। हुक्मी शकल ⁞ अंकीश दाखिल शनिदेवत की है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल जबर चिन्ताका है तू यह पूछता है कि मेरी चिन्ता मिटेगी या नहीं" सो अब तुम्हारी चिन्ता २ मास बाद मिटेगी पिछले दिनोंमें ऐसी चिन्ता रही सो अब दूर होगी शनिश्चरके दिन काले कुत्तेको उड़दकी बड़ी तेलमें बनाकर १ वर्ष तक गेरना सब संदेह दूर होगा फिकर मत कर इति प्रश्न।। पिण्ड।।७७६।। हुक्मी शकल ⁞ हुमरा साबित मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसीसे दोस्तीका है" सो इस दोस्तीमें फायदा नहीं अन्तर साफ नहीं इस कारणसे दोस्ती रहती न्हीं सो पीछे पछतावेगा सो दोस्तीकी सलाह कुछ दिनोंकी ढीलसे करना संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७७७।। हुक्मी शकल ⁞ बयाज साबित चन्द्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संवत्का है तू यह पूछता है कि अबके काल पड़ेगा या समा होगा" सो अबके काल पड़ेगा अन्न थोड़ा होगा भाव मध्यम रहेगा बालकोंको पीड़ा माताका उठाव ज्यादा होगा कोई दिन तकलीफ रहेगी सो बालकोंके हाथसे छायापात्र करवाना संवत् अच्छा रहेगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७७८।। हुक्मी शकल ⁞ नुस्रुतुल्खारिज सूर्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वर्षाका है तू यह पूछत है कि वर्षा कब होगी" सो हे पूछनेवाले ! इस प्रश्नमें वर्षाकी ढील है क्योंकि ग्रहोंका योग अब हीन है सो अब कई दिनोंके बाद ग्रहोंका योग आनेवाला है सो जल्दी ही आवेगा फिकर मत कर इति प्रश्न।। पिण्ड।।७७९।। हुक्मी शकल ⁞

नुस्रुत् दाखिल गुरुदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल देवताके आराधनका है तू पूछता है कि मुझको देवताके आराधनमें फायदा है या नहीं" सो तुझको देव आराधनमें फायदा है परंतु दुर्गाका आराधन पुष्य नक्षत्रमें रात्रिको कराना जल्दी ही उत्तम लाभ होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ।।७८०।। हुक्मी शकल ⁝ अतवे खारिज केतुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल करजाके दूर होनेका है तू यह पूछता है कि मेरा करजा दूर होगा या नहीं" सो अब तेरा ऋण दूर होगा परंतु कुछ पुण्य कर ऋण जल्दी ही दूर होगा अब दिन अच्छे आये हैं संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७८१।। हुक्मी शकल ⁝ नकीमुनकलीव मंगल देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पुत्र गोद लेनेका है तू यह पूछता है कि इस पुत्रके गोद लेनेमें फायदा है या नहीं" सो आपको इस पुत्रके गोद लेनेमें ही फायदा है तुम्हारा इसका वर्ग मिलता है, परंतु मंगलका जप एक महीना करना सब आनंद रहेगा फिकर मत कर इति प्रश्न।। पिण्ड ।।७८२।। हुक्मी शकल ⁝ अतवे दाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल गुप्त चिन्ताका है तू यह पूछता है कि मेरे मनमें गुप्त चिन्ता है सो मिटेगी या नहीं" सो तुम्हारे मनमें जो चिन्ता है सो मिटी चाहती है परंतु कुलदेवताका आराधन कर तुम्हारे ऊपर बड़ा जाल आया था परंतु धुल गया सो शिवजीका पूजन कर जितनी तेरी ताकत हो उतना दुर्गापाठ कराओ तेरी चिन्ता मिटेगी फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७८३।। हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी मनुष्यसे दोस्तीका है सो तू यह पूछता है कि इसकी दोस्तीमें मुझको कैसा फायदा है" सो इस उत्तम दोस्तीमें बड़ा फायदा है दोस्ती करना जो तू चाहेगा सो ही तुझको देगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७८४।। हुक्मी शकल ⁝ तेरी मुनकलीव चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संवत्का है तू यह पूछता है कि इस साल समा होगा या काल" सो हे पूछनेवाले ! जो तैंने काल समाकी पूछी सो समा होगा घास ज्यादा होगी प्रजा आनंद करेगी और एक महीना तेज होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ७८५।। हुक्मी शकल ⁝ लहियान खारिज बृहस्पति देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वर्षाका है तू यह पूछता है कि वर्षा कब होगी" सो हे पूछनेवाले ! इस प्रश्नसे वर्षा जल्दी होगी और बहुत ेगी २५ दिन अंदर नदी नाले चलेंगे सो फिकर मतकर वर्षा अच्छी होवेगी इति प्रश्न ।।पिण्ड।।७८६।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल देवताके आराधनका है सो तू यह पूछता है कि मेरा भाग्योदय देवताके आराधन

से होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तुझको देवताके आराधनमें फायदा नहीं है तू विष्णुसहस्रनामका पाठ कर या करवा इससे तेरा भाग्य खुलेगा दौलत मिलेगी उत्तर दिशासे फायदा जल्दी होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ७८७।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुल खारिज राहुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल करजाका है तू यह पूछता है कि मेरा करजा दूर कब होगा" सो तेरे करजा उतरनेमें देर है तुझको करजेका भय रहता है सो तू सूर्य्यके पाठ करवा सब करजा दूर होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७८८।। हुक्मी शकल ⁝ जमात सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पुत्र गोद लेनेका है तू यह पूछता है कि इस पुत्रके गोद लेनेमें मुझको कैसा सुख रहेगा" हे पूछनेवाले ! इस पुत्रके गोद लेनेमें तुझको बहुत क्लेश रहेगा सो अपने गोत्रका लेना अपनी ताकत माफिक श्रीभगवतीका आराधन करवा बहुत फायदा होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ७८९।। हुक्मी शकल ⁝ फरहा मुनकली शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू यह पूछता है कि इस औषधिके लेनेमें मुझको फायदा है या नहीं सो इस औषधिके लेनेसे तुरंत आराम होगा शरीरमें श्रद्धा होगी परंतु इस वर्षमें ग्रह कष्टकारी है सो ब्राह्मण भोजन करवा इसके हाथसे अमावसको घृत लवण दान कर महामृत्युञ्जयका जप करवा आराम बरजरूर होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ७९०।। हुक्मी शकल ⁝ उकला मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संतानका है तू यह पूछता है कि मुझको औरस पुत्रका सुख है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरे भाग्यमें संतानका सुख है परंतु कालान्तरमें होगा ३ तीन जीवेंगे पहली कन्या हुई है गोपाल बीज मंत्रका जप करवा फिर पुत्र होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।।७९१।। हुक्मी शकल ⁝ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी मालके खरीदनेका है सो यह पूछता है कि इस मालके खरीदनेमें मुझे फायदा रहेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! इस जिनसके लेनेमें फायदा न रहेगा अगाड़ी मन्दा नजर आता है सो जल्दी मन्दा होकर तेज होगा किसीसे कहना नहीं कहोगे तो पछताओगे इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ७९२।। हुक्मी शकल ⁝ हुमरा सावित मंगल देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल दिलकी चिन्ताका है सो तू यह पूछता है कि मेरे दिलकी चिन्ता दूर होगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरे मनकी चिन्ता अब दूर हुई चाहती है चिन्ता शरीर तुल्य मनुष्यकी है सो भगवतीका आराधन करवा चिंता उदासी ११ दिन भीतर दूर होगी इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ७९३।। हुक्मी शकल ⁝ बयाज सावित चन्द्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले

शख्स ! तेरा सवाल दोस्तीका है सो तू यह पूछता है कि मुझको इस दोस्तीमें फायदा होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! इस दोस्तीमें तुझको फायदा नहीं है उलटा कुछ हरजा रहेगा इसकी दोस्ती न करना नहीं तो पछतावेगा औरसे करना ठहरके कई दिनोंमें सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ७९४।। हुक्मी शकल नुस्रुतखारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मुकद्दमाका है तू यह पूछता है कि मुकद्दमामें जीतूंगा या हारूंगा" सो आपको मुकद्दमेमें फते है डरना नहीं शत्रुमें कुछ तत्त्व नहीं है सो काम आपका हुआ देर नहीं है शनिग्रहका दान और जप करा १ वर्ष और ५ मास भीतर फते होगी इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ७९५।। हुक्मी शकल नुस्रुद्दाखिल बृहस्पति देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सन्तानका है सो तू यह पूछता है कि मुझको औरस पुत्रका सुख है या नहीं" हे पूछनेवाले ! तेरे पुत्र होगा परंतु दुर्गाका आराधन करवा देवताओंमें भक्ति रख और पीपलको नित्य सींच आदित्यका व्रतकरना पुत्रकी रक्षा करनी सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।७९६।। हुक्मी शकल अतवेखारिज केतुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी चीजको लेनेका है तू पूछता है कि मुझे इस वस्तुके लेनेमें फायदा है या नहीं" सो इस चीजके लेनेमें फायदा है श्रीदुर्गाका आराधन करनेसे फायदा होगा परंतु कुछ दिन ठहरके लेना फायदा होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ७९७।। हुक्मी शकल नकी मुनकलीव मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शरीरकी चिन्ताका है सो तू पूछता है कि मेरे दिलकी चिंता मिटेगी या नहीं" सो तेरे दिलकी चिन्ता अब ही दूर न होगी परंतु जब विदेशमें जाओगे तब दूर होगी ७ मास और नाकिश है पीछे दूर होगी सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।।७९८।। हुक्मीशकल अतवेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल दोस्तीका है तू यह पूछता है कि तुझको दोस्तीमें फायदा होगा या नहीं" सो इस दोस्तीमें दोनोंको फायदा है इसवास्ते दोस्ती करनी मुनासिब है और तुझको लाभ बहुत होगा रोजी कदर खुलेंगे अब एक वर्षमें होगी इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ।।७९९।। हुक्मी शकल इज्जतमा साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संवत्का है तू यह पूछता है कि अबका संवत् कैसा होगा" सो अबका संवत् मध्यम है पीड़ा ज्यादा होगी रोग पीड़ाका जोर दो मास रहेगा पीछे अच्छा रहेगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ८००।। हुक्मी शकल तरीख मुनकलीव चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वर्षाका है तू यह पूछता है कि वर्षा कब होगी" सो हे पूछनेवाले ! वर्षा आई चाहती है देर मत समझना आंधीके साथ ३ दिन भीतर आवेगी सन्देह

मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ७८०१।। हुक्मी शकल ☰ लहियान खारिज बृहस्पति की है हुक्म फरमाती हैं कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल देवताके आराधनका हैं तू यह पूछता है कि मुझे देवताके आराधनमें फायदा है या नहीं सो आपको देवताके आराधनमें फायदा है परंतु क्षुद्रदेवता फायदा देगा शिव विष्णुरूप सब देवतामें हैं सो उपासना कर २ वर्षमें सिद्ध होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ८०२।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुल दाखिल सूर्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संवत्का है सो तू पूछता है कि अबके संवत् अच्छा होगा या काल होगा" सो अबके लम्वत् होगा ६ घडी बाद मन्दा रहेगा और एक मास पीछे रस धातुकी तेजी रहेगी सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ८०३।। हुक्मी शकल ⁝ कब-जुलखारिज राहुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वर्षाका है सो तू यह पूछता है कि वर्षा कब होगी" सो वर्षामें देर नहीं है आई जान परंतु भारी वर्षामें देर है सन्देह मत कर २१ दिन बाद जबर वर्षा होवेगी इति प्रश्न पिण्ड ।।८०४।। हुक्मी शकल ।। ।। जमात साबित बुधदेवताकी हैं हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल देवताके आराधनका है तू यह पूछता हैं कि मुझको देवताके आराधनसे फायदा है या नहीं" सो तुझको देवताके आराधनसे फायदा ज्यादा है उनमें भी श्रीशिव तथा विष्णुसे फायदा है २१ दिन पीछे प्रसन्न होंगे सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ८०५।। हुक्मी शकल ..।. फरहा मुनकलीव शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल करजाके दूर होनेका है तू पूछता है कि मेरा करजा दूर होगा या नहीं" करजा बहुत दिनोंका है सो शतचण्डी करा जिससे करजा दूर होगा मनमें धीरज रख इसमें सन्देह नहीं इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ८०६।। हुक्मीशकल ⁝ उकला मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल लाभका है सो तू यह पूछता है कि मुझको लाभ कब होगा ।" सो आपने लाभका प्रश्न किया सो इस प्रश्नसे जो लाभ हैं उससे ज्यादा होगा निर्विघ्नतासे लाभ होगा परंतु सूर्य्य तुझको नाकिश हैं ताकत माफिक आदित्य हृदयका पाठ करा लाभ होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ।।८०७।। हुक्मी शकल ☰ दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने-वाले शख्स ! तेरा सवाल हठ का है तू पूछता है कि मैंने एक हठ पकड़ ली है सो काम बनेगा या नहीं" सो आपकी हठ टूटती दीखे है सो कुल देवताका धर्म कबूल कर रह जायगा ६ मास तक दुर्गाका आराधन करवा काम बन जायगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ८०८।। हुक्मी शकल ☰ हुमरा साबित मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सन्तानका है तू यह पूछता है कि सन्तान का सुख रहेगा या नहीं" सो तुम्हारे सन्तानका सुख अच्छा रहेगा

परंतु तेरे जन्म पत्रमें ग्रह सामान्य हैं इस वास्ते कष्ट रहता है सो शिव मंत्रका जप करवा पुत्रका सुख होगा इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ८०९।। हुक्मी शकल ।।.।। व्याज सावित चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मालके खरीदनेका है तू यह पूछता है कि इस मालके खरीदनेमें मुझे फायदा है या नहीं" सो इस मालके खरीदनेमें तुझको फायदा है परंतु ढीलमें होगा कुछ ब्राह्मण भोजन करवा इससे तुझको फायदा होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ८१०।। हुक्मी शकल ⁝ नुस्रुतखारिज सूर्य्य देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शरीरमें चिन्ताका है तू यह पूछता है कि मेरी चिन्ता कब दूर होगी" सो हे पूछनेवाले ! चिन्ता तुम्हारी दूर हुई चाहती है घबराना नहीं नाकिश दिन गये अब दिन अच्छे आते हैं सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ८११।। हुक्मी शकल ।।.. नुस्रुददाखिल बृहस्पति देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल दोस्तीका है तू यह पूछता है कि मुझको इस दोस्तीमें फायदा होगा या नहीं" सो इस दोस्तीमें तुझको फायदा नहीं दोस्तीमें खराबी होगी वगैरह है दोस्ती न करना करोगे तो पछताओगे फिकर मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ।।८१२।। हुक्मी शकल ⁝ अतबे खारिज केतुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि पूछने वाले शख्स ! तेरा सवाल संवत्का है तू यह पूछता है कि अबके संवत् कैसा होगा" सो हे पूछनेवाले ! अबके संवत् अच्छा होगा आनंद रहेगा एक मासमें चौपाये तेज रहेंगे सन्देह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड ।। ८१३।। हुक्मी शकल ⁝ नकी मुनकलीब मङ्गल देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वर्षाका है तू यह पूछता है कि वर्षा कब होगी" सो हे पूछनेवाले वर्षा ढीलमें होगी पुण्य करो पीछे वर्षा बहुत होगी सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।।८१४।। हुक्मी शकल ⁝ अतवेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीका है सो तू यह पूछता है कि मेरा माल चोरी गया है सो मिलेगा या नहीं" सो तुम्हारी चोरी आनेकी नहीं चोर दुष्ट है श्याम सूरत है क्रोधी है जवान है इस वक्त किसीसे झगड़ता है २६ वर्षका है सो तेरी चोरी न मिलेगी सन्देह मत कर ईश्वर और देगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ८१५।। हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल लाभका है सो तू यह पूछता है कि मुझको लाभ होगा या नहीं" सो तुझको लाभ नहीं होगा और जो होवेगा तो बहुत परिश्रमसे थोड़ा लाभ होवेगा अब तुमको १४ दिन तक लाभकी सूरत नहीं सो पुण्य करनेसे लाभ होवेगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ८१६।। हुक्मी शकल ⁝ तारीख मुनकलीब चन्द्रमादेवताकी हैं हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मुकद्दमेका है तू यह पूछता है कि मुकद्दमा जीतूंगा या

नहीं'' सो हे पूछनेवाले ! इस मुकद्दमामें फते पावोगे शत्रुको मारोगे तुम्हारी फते होगी डरना नहीं मति रखना कुछ दुर्गाका आराधन करवा तू जीतेगा संदेह मतकर इति प्रश्न ।।पिण्ड।।८१७।। हुक्मी शकल लह्यान खारिज बृहस्पति देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संतानका है तू यह पूछता है कि मेरी संतान होगी या नहीं सो तेरी सन्तान सन्तानगोपालका अनुष्ठान करवानेसे होगी पहले जन्ममें तैंने सोना चुराया था सो उस पापसे कन्या होती हैं परंतु पुण्य करनेसे पुत्र सुख होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ८१८।। हुक्मी शकल कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी वस्तुके लेनेका है तू यह पूछता है कि इस वस्तुके लेनेसे मुझको लाभ होगा या नहीं'' सो इस वस्तुको तू मत खरीद इस वस्तुमें तुझको लाभ नहीं है यह वस्तु तैंने पहले भी खरीदी थी सो सामान्य लाभ रहा था और वस्तु खरीद कुछ ठहरके, फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।।८१९।। हुक्मी शकल कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल गुप्त चिन्ताका है तू यह पूछता है कि मेरी यह चिंता मिटेगी या नहीं'' सो हे पूछनेवाले तेरी ! चिन्ता मिटी चाहती है फते होगी दिल अपना प्रसन्न रख अब दिन अच्छे आये हैं कुछ मालकी खबर चाहते हो सो तीन दिनमें चिन्ता दूर होगी सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ।।९२०।। हुक्मी शकल जमात सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल दोस्तीका है सो तू पूछता है कि इस दोस्तीमें मेरेको फायदा है या नहीं'' सो हे पूछनेवाले ! इस दोस्तीमें तुझको बहुत फायदा होगा ज्यादा लाभ होगा तुम्हारा दास योग मिलता है और मनोरथ पूर्ण जल्दी होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ८२१।। हुक्मी शकल फरहा मुनकलीव शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि „पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संवत्का है तू यह पूछता है कि संवत् कैसा होगा'' सो हे पूछनेवाले ! यह संवत् मध्यम होगा और बालकी पीड़ा होगी नदी नाले चलेंगे और भादवामें अन्नका भाव तेज रहेगा फिकर मत कर अल्लाताला अच्छा करेगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।।८२२।। हुक्मी शकल उकला मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्मी फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल इमारत बनानेका है सो यह पूछता है कि मेरी इमारत अब बनेगी या नहीं सो हे पूछनेवाले ! तेरी इमारत अभी नहीं बनेगी १ वर्ष पीछे बनेगी तुझको सुख होगा अभी दिन नाकिश हैं मंगलका जप करवा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ।।८२३।। हुक्मी शकल अंकीस दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीका है तू यह पूछता है कि मेरा माल आवेगा या नहीं'' सो इस चोरीका धन कुछ नहीं मिलेगा तेरी वस्तु पश्चिमकी तरफ बहुत

दूर गई है सो पुण्य करनेसे कुछ आय जायगी सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। ८२४।। हुक्मी शकल ⁞ हुमरा सावित मङ्गलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल लाभका है तू यह पूछता है कि मुझको लाभ होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब तुझको लाभ ज्यादा होगा राजी रह लाभ अच्छा होगा फते तुम्हारी जल्दी ही होगी और सब आनंद होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ।।८२५।। हुक्मी शकल ⁞ बयाज सावित चन्द्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मुकद्दमाका है तू यह पूछता है कि इस मुकद्दमेमें मैं जीतूंगा या शत्रु जीतेगा" सो हे पूछनेवाले इस मुकद्दमामें जल्दी नहीं करना देरसे मुकद्दमा होगा फते तुम्हारी रहेगी सन्देह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।।८२६।। हुक्मी शकल ⁞ नुस्रुद् खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सन्तान होनेका है तू यह पूछता है कि मेरे पुत्र होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरे पुत्र होगा शनिदेवताका जप और पूजन करना शनिकी शांति करा अमावसके दिन घृत नूण दान कर पुत्रसुख होगा पुण्य कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ।।८२७।। हुक्मी शकल ⁞ नुस्रुत दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मालके खरीदनेका है सो तू यह पूछता है कि मुझे इस मालके खरीदनेमें लाभ है या नहीं" सो इसके खरीदनेमें लाभ है परंतु कम है और ढीलमें है सो दुर्गाका आराधन करनेसे ज्यादा लाभ होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ।।८२८।। हुक्मी शकल ⁞ अतबे खारिज शुक्र देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल गुप्तचिन्ताका है तू यह पूछता है कि मेरी चिन्ता कब दूर होगी" सो हे पूछनेवाले ! तेरी चिन्ता अभी दूर नहीं होगी चिन्ता भारी है कुछ पाताल या आस्मानकी खबर चाहता है सो पुण्य कर मनोरथ सिद्ध होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड।।८२९।। हुक्मी शकल ⁞ नकी मुनकलीव मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसीसे दोस्तीका है तू यह पूछता है कि मुझको इस दोस्तीमें फायदा है कि या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! इस दोस्ती करनेमें लाभ नहीं क्योंकि अगले जन्ममें इसके साथ तेरा बैर था इससे तुझको दोस्तीमें फायदा नहीं होगा कुछ दिनोंकी ढील देकर और किसीसे दोस्ती करना सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ८३०।। हुक्मी शकल ⁞ अतबेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रोजगारका है तू यह पूछता है कि मेरा रोजगार कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! अभी तेरे दिन नाकिश हैं इनमें ऐसा ही रोजगार रहेगा कुछ दिन गये रोजगार बंधेगा सन्देह मत कर इति प्रश्न । पिण्ड।।८३१।।हुक्मी शकल ⁞ इज्जतमा सावित बुधदेवताकी हैहुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मकान बनानेका है तू यह पूछता है कि मेरा मकान

बनेगा या नहीं सो हे पूछनेवाले ! अब ही मकान न बनेगा तेरे शत्रु ज्यादे हैं कुछ ढील लगेगी २ वर्ष बाद तेरा मकान बनेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ।।८३२।। हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीव चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीका है तू यह पूछता है कि मेरी चोरी लगेगी या नहीं" सो अब चोरीका पता ७ दिनमें लगेगा कुछ खर्च पड़ेगा कुछ पुण्य करो धन मिलेगा इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ८३३।। हुक्मी शकल ⁝ लहियान खारिज बृहस्पति देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल कोई काम करनेका है" सो तुझको इस काममें ज्यादे लाभ होगा परंतु धर्म करना जितना पुण्य करेगा उतना लाभ ज्यादा होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ८३४।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मुकद्दमेका है सो तू यह पूछता है कि मैं इस मुकद्दमाको जीतूंगा या हारूंगा" सो हे पूछनेवाले ! अब तेरे दिन नाकिश हैं मुकद्दमा वही जीतता है और तू जीता चाहे तो श्रीदुर्गाके महामंत्रका आराधन करवा सन्देह मत कर तू जीतेगा इति प्रश्न ।।पिण्ड।।८३५।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पुत्रके सुखका है तू यह पूछता है कि मुझको पुत्रसुख होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तुझको पुत्रका सुख नहीं है सो तू सन्तानगोपालके महामंत्रका जप करवा सन्तान सुख होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ।।८३६।। हुक्मी शकल ⁝ जमात साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मालके लेनेका है तू यह पूछता है कि इस मालके लेनेमें मुझको फायदा है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! इस जिनसके लेनेमें फायदा है परंतु लक्ष्मीके मंत्रका आराधन करवा और किसीका सीर भी करना लाभ होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ८३७।। हुक्मी शकल ⁝ फरहा मुनकलीव शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शरीरमें चिन्ताका है तू यह पूछता है कि चिन्ता कब मिटेगी" सो हे पूछनेवाले ! तेरी चिन्ता अब दूर होनेकी नहीं यह घरकी चिन्ता है बहुत क्लेश है सो शनिवारको पीपलके दरख्तका पूजन कर चिन्ता दूर होगी फिकर मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ८३८।। हुक्मी शकल ⁝ उकला मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यह है कि मेरी मूकप्रश्नमें श्रद्धा नहीं है सो सत्य है या मिथ्या।" सो तू गुप्त चिन्तन करके परीक्षा करता है सो सब सत्य है भाव ही कारण है इति प्रश्न ।।पिण्ड।।८३९।। हुक्मी शकल ⁝ अंकीश शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संबंधका है सो तू यह पूछता है कि इसका संबंध कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! इसका संबंध जलदी होगा परंतु इसके ग्रह बिगड़

रहे हैं सो दुर्गाका आराधन करवा २१ दिन तक, पैगंबरकी मिहरबानगीसे जलदी ही काम होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ८४०।। हुक्मी शकल हुमरा सावित मंगल देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रोजगारका है सो तू यह पूछता है कि मेरा ज्यादे रोजगार कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! अब तो रोजगार मंदा है तेरे जन्मपत्रमें दशा नेष्ट है दिन अच्छे आये रोजगार खूब होगा परंतु श्रीबीजमंत्रका जप कराना फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ८४१।। हुक्मी शकल बयाज साबित चन्द्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि है "पूछनेवाले शख्स तेरा सवाल मकानका है तू यह पूछता है कि मुझको मकानका सुख कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! अभी तुझको मकानका सुख होनेमें देर है तेरे दिन अभी नाकिश हैं १ संवत् बाद होगा मंगलका जप करवा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ।।८४२।। हुक्मी शकल नुस्रुद् खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीका है तू यह पूछता है कि मेरी चोरी मिलेगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पूरा होगा तेरी चोरी १७ दिन अन्दर मिलेगी परंतु श्रीजीका आराधन रख संदेह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।।८४३।। हुक्मी शकल नुस्रुद् दाखिल बृहस्पति देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने वाले शख्स ! तेरा सवाल लाभका है तू यह पूछता है कि मुझको लाभ होगा या नहीं सो पूछनेवाले अब दो मास अन्दर तुझको लाभ होगा व्यापारेश लग्नेशका संबंध है सो लाभ अच्छा होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ८४४।। हुक्मी शकल अतवेखारिज केतुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मुकद्दमाका है तू यह पूछता है कि इस मुकदमा में मुझको लाभ होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! इस मुकद्दमासे तुझको लाभ नहीं है क्योंकि अभी तेरे ३१ दिन नाकिश हैं सो अच्छे दिन आनेपर दुर्गाजीका आराधना करना आधि फते होगी इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।८४५।। हुक्मी शकल नकी मुनकलीब मंगल देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सन्तानका है तू पूछता है कि पुत्रका सुख होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! सन्तानगोपालके बीजमंत्रके आराधनसे औरस सन्तानका सुख होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।८४६।। हुक्मी शकल अतवेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वस्तुके खरीदनेका है तू पूछता है कि इस वस्तुके खरीदनेमें फायदा होगा या नहीं" सो इस वस्तुके लेनेमें फायदा कम है तू एक वर्षतक नाकिश दिनोंमें गुजरान कर पीछे लाभ होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ८४७।। हुक्मी शकल इज्जतमा सावित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विवाहका है तू यह पूछता है कि इसका विवाह कब होगा" सो विवाह होनेवाला है

कुलदेवताका पूजन करना संगमेश्वरीके बीजमंत्रका आराधन करवा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ८४८।। हुक्मी शकल ⁞ तरीख मुनकलीव चंद्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संबंधका है तू यह पूछता है कि यह संबंध मुझको कैसा है सो हे पूछनेवाले ! यह संबंध तकलीफ देनेवाला है इसके हाथसे मंगलके जपका संकल्प करा एक वर्ष ७ दिन अन्दर अच्छे घरके संबंध होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ८४९।। हुक्मी शकल ⁞ लहियान खारिज बृहस्पति देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रोजगारका है तू यह पूछता है कि मेरा रोजगार कब होगा" सो तेरा रोजगार जल्दी ही होगी थोड़ी देर है बहुत रोजगार होगा श्रीजीका आराधन रखना इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ८५०।। हुक्मी शकल ⁞ कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने-वाले शख्स ! तेरा सवाल मकान बनवानेका है तू यह पूछता है कि मेरा मकान बनेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरे १ वर्ष तक दिन नाकिश हैं सो १ वर्ष बाद बनेगा मंगलका आराधन करा तेरा मकान होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ८५१।। हुक्मी शकल ⁞ कबजुल खारिज राहुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने-वाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीके मालका है तू यह पूछता है कि मेरा माल हाथमें आवेगा या नहीं" सो तेरा कुछेक माल कुछ अर्समें हाथमें आवेगा तेरे पड़ोसीने चोरी कराई है सन्देह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ८५२।। हुक्मी शकल ⁞ जमात साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल लाभका है सो तू यह पूछता है कि मुझको लाभ होगा या नहीं" सो अब तेरे दिन बहुत अच्छे हैं लाभ बहुत ज्यादा होगा परंतु सूर्य्यदेवताका जप करवाना लाभ होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।८५३।। हुक्मी शकल ⁞ फरहा मुनकलीव शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मुकद्दमाका है तू यह पूछता है कि इस मुकद्दमामें मुझको लाभ होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! इस मुकद्दमासे तुझको लाभ अधिक है परिश्रम भी पडेगा ६ वा ८ दिनकी देरी है सन्देह मत कर पुण्य कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।८५४।। हुक्मी शकल ⁞ उकला मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पुत्रके सुखका है तू यह पूछता है कि मेरा पुत्र होता है फिर जीता नहीं सो मुझको पुत्रका सुख होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तुझको पुत्रका सुख होगा शिवजीका अभिषेक करवाना तेरा दान लगा नहीं सो फिर कर करके मत पछता दो वर्ष अंदर सुख होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।८५५।। हुक्मी शकल ⁞ अंकीश शनि देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यात्राका है तू यह पूछता है कि मेरी यात्रा कब होगी" सो हे पूछनेवाले ! तुमने यात्राकी विचारी सो होगी नहीं

और कदाचित होगी तो लाभ नहीं होगा श्रीशिवजीके आराधनसे एक वर्ष बाद यात्रा और लाभ होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।८५६।। हुक्मी शकल ⁝ हुमरा साबित मंगल देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विवाहका है तू यह पूछता है कि विवाह कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरा विवाह अब होनेवाला है अबही तेरे दिन अच्छे आये हैं सो ३ मास अन्दर होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।८५७।। हुक्मी शकल ⁝ बयाज साबित चन्द्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संबंधका है तू यह पूछता है कि इसका संबंध कब होगा" सो इसके संबंधमें ७ मासकी देर है सो इसके जन्मपत्रमें ग्रह सामान्य हैं उनकी शांति करवा और दुर्गापाठ करवा तब संबंध होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।८५८।। हुक्मी शकल ⁝ नुस्रतुल्खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रोजगारका है तू यह पूछता है कि मेरा रोजगार होता नहीं जो रोजगार करूं उसीमें फायदा नहीं है" सो अब तेरे दिन शख्त हैं ३ मास बाद अच्छे आवेंगे जीव लाभ होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।८५९।। हुक्मी शकल ⁝ नुस्रतुद्दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मकानके बनानेका है तू यह पूछता है मेरा मकान कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरा मकान ६ मास बाद होगा पुण्य कराना दिन नाकिश हैं फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।८६०।। हुक्मी शकल ⁝ अतबे खारिज केतुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीका है तू पूछता है कि मेरा चोरीका माल मिलेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरा माल ज्यादे गया और पश्चिम दिशामें गया है सो ७ दिन बाद तेरा माल आधा मिलेगा सन्देह मत कर महाकालीके बीजमंत्रका आराधन करवा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।८६१।। हुक्मी शकल ⁝ नकी मुनकलीब मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल लाभका है तू यह पूछता है कि इस कार्य्यमें लाभ होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! इस कार्य्यमें तुझको लाभ होगा और जिससे बतलाये हो उसीमें तुम्हारा राशिवर्ग मिलता है सो अब लाभ होगा ९ मास तेरे अच्छे हैं सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।८६२।। हुक्मी शकल ⁝ अतबे दाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मुकद्दमाका है तू यह पूछता है कि मैं मुकद्दमा जीतूंगा या हारूंगा ?" सो हे पूछनेवाले तू मुकद्दमा जीतेगा उत्तम जाति तेरी तरफ होगा सन्देह मत कर दुर्गाका आराधन रख इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।८६३।। हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शीरमें कार्य्य करनेका है तू यह पूछता है कि मुझको इस शीरमें फायदा है या नहीं" सो हे

पूछनेवाले ! साझेमें बहुत लाभ और आनंद होगा ३ वर्ष पीछे बहुत लाभ होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।८६४।। हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीव चन्द्रमा-देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी देशको जानेका है तू यह पूछता है कि विदेशको जाना कब होगा लाभ कैसा होगा" सो तुझको अब २५ दिन नाकिश हैं सो ठहर कर जाना लाभ बहुत अच्छा होगा श्रीभग-वतीके बीजमंत्रका आराधन करवा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड ।।८६५।। हुक्मी शकल ⁝ लहियानखारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विवाहका है तू यह पूछता है कि मेरा मनोरथ विवाहका है सो कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरा विवाह दो वर्ष अन्दर होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।८६६।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संबंधका है तू यह पूछता है कि संबंध कब होगा ?" सो हे पूछनेवाले ! संबंध होनेवाला है सो तू संबंधेश्वरीके मंत्रका आराधन करवा सन्देह मत कर इति प्रश्न।। पिण्ड।।८६७।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुल खारिज राहुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रोजीके दर खुलनेका है सो तू यह पूछता है कि मुझको दौलत कब मिलेगी ?" सो हे पूछनेवाले ! सब वस्तुका आनंद हुआ जान तुझको अब ही दौलत मिलनेवाली है परंतु मंगलका जप करवा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।८६८।। हुक्मी शकल ।। ।। जमात साबित बुध देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मकानके बनानेका है।" सो हे पूछनेवाले ! अब मकानके बनानेमें पैसा बहुत लगेगा जरा धीरज रखो ७ मास बाद कम पैसा लगेगा मकान भी बेफायदा रहेगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।८६९।। हुक्मी शकल ⁝ फरहा मुनकलीव शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीका है तू पूछता है कि मेरी चोरी हुई है मैं यह पूछता हूं कि मेरा धन आवेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरा माल ज्यादे गया है चरलग्नमें गया है सो नहीं आवेगा सन्देह मत कर ईश्वर और देगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।८७०।। हुक्मी शकल ⁝ उकला मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी कार्य्यका है सो तू यह पूछता है कि इस कार्य्यमें मुझको लाभ होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तुमने जो काम विचारा है सो अच्छी तरह होगा उसमें लाभ होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।८७१।। हुक्मी शकल ⁝ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल खेतीके बोनेका है तू यह पूछता है कि मुझको खेतीसे लाभ होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तुझको उत्तर पश्चिमकी तरफ खेती करनेसे लाभ होगा सन्देह मत कर

इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।८७२।। हुक्मी शकल ☱ हुमरा सावित मङ्गलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शीरमें रोजगार करनेका है तू यह पूछता है कि इस शीर (साझा) में मुझको फायदा होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! इस शीरमें तुझको फायदा नहीं है खराब होगा शीर नहीं करना न्यारा कार कर फायदा होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ८७३ ।। हुक्मी शकल ☰ बयाज सावित चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यात्राका है तू यह पूछता है कि यात्रा अब होगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब ही यात्रा न करना अभी यात्रा करनेमें लाभ नहीं होगा २१ दिन पीछे यात्रा कर लाभ बरजरूर होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।८७४।। हुक्मी शकल ⁝ नुस्रतुलखारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विवाह सगाईका है तू यह पूछता है कि विवाह सगाई होवेगी या नहीं" हे पूछनेवाले! अब तेरे दिन नाकिश हैं सो अब तेरा विवाह सगाई होनेका नहीं १ वर्ष बाद विवाह होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ।।८७५।। हुक्मी शकल ⁝ नुस्रुत् दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संबंधका है तू यह पूछता है कि संबंध कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! संबंध हुआ जान परंतु ५१ दिन दुर्गाका आराधन करवा तेरा संबंध बरजरूर होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।८७६।। हुक्मी शकल ⁝ अतवेखारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रोजगारका है तू पूछता है कि मेरा रोजगार कब होगा" हे पूछनेवाले ! तेरे रोजगार में अब ही देर है तुझको सूर्य्यदेवता नामाफिक हैं सो सूर्य्यका व्रत और जप करवा ७ मास बाद रोजगार अच्छा होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ।।८७७।। हुक्मी शकल ⁝ नकी मुनकलीब मङ्गलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मकान इमारत बनवानेका है तू यह पूछता है कि मकान (इमारत) बनेगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरा मकान अब ही हुआ चाहता है संदेह मत कर वास्तुपूजन करवा इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ८७८।। हुक्मी शकल ⁝ अतवेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीका है तू यह पूछता है कि मेरी वस्तु चोरी गई है या घरमें भूल गया" सो हे पूछनेवाले ! तेरी वस्तु चोरी नहीं गई घरमें देखो ऊंची जगह धरी मिलेगी सन्देह मत कर इति प्रश्न पिण्ड ।। ८७९।। हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवालबीमारीका है सो तू यह पूछता है कि बीमारी कब अच्छी होगी " सो हे पूछनेवाले ! तुम्हारी बीमारी दूर होनेमें है सो रोग दूर होगा शनिदेवताका जप सवा लक्ष करवा आराम होगा इति प्रश्न ।।पिण्ड।।८८०।। हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीब चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती

है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल खेतीका है तू यह पूछता है कि मुझको खेतीमें कैसा लाभ है" अबके खेतीमें लाभ होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।।८८१।। हुक्मी शकल लहियान खारिज बृहस्पति देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शीर (साझा) का है तू यह पूछता है कि मुझको इस शीरमें फायदा होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तुझको इस शीरमें फायदा नहीं है सो सन्देह मत कर अभी लाभ होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ८८२।। हुक्मी शकल कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यात्राका है सो तू यह पूछता है कि मुझको यात्रामें लाभ है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब तेरे दिन नाकिश हैं सो अब ही यात्रा न करना ३१ दिन बाद करना लाभ बरजरूर होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ८८३।। हुक्मी शकल कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स तेरा सवाल विवाहका है तू यह पूछता है कि मेरा विवाह होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरा विवाह होनेवाला है परंतु तेरे सूर्य्य नामाफिक हैं सो सूर्य्यकी मूर्ति बनवा करके पूजन करवा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ८८४ ।। हुक्मी शकल जमात सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संबंधका है तू यह पूछता है कि यह संबंध होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरा संबंध होगा राहुग्रहका जप करवा संदेह मतकर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ८८५।। हुक्मी शकल ..।. फरहा मुनकलीब शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रोजगारका है तू यह पूछता है कि मेरा रोजगार कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! अभी दिन तेरे नाकिश हैं २८ दिन बाद तेरा रोजगार होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।८८६।। हुक्मी शकल उकला मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मकान (इमारत) का है सो तू यह पूछता है कि मकान अब बनेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरी इमारत अब ही होगी श्रीभगवतीके बीजमंत्रका आराधन करवा संदेह मतकर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ८८७।। हुक्मी शकल अंकीश दाखिल शनि देवताकी है हुक्म फरमाती है "पूछनेवाला शख्स ! तेरा सवाल शत्रुसे भयका है तू पूछता है कि मेरा शत्रु निहायत खोटा मनुष्य है उस शत्रुका नाश कब होगा" सो तू सूर्य्यगायत्रीका आराधन करवा सन्देह मत कर शत्रु दूर होगा इति प्रश्न पिण्ड ।।८८८।। हुक्मी शकल हुमरा सावित मंगल देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू यह पूछता है कि यह बीमारी दूर कब होगी" सो सूर्य्य देवताका जप करवा महामृत्युञ्जयका जप करवा १४ दिन बाद आराम होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ८८९।। हुक्मी शकल बयाज साबित चन्द्रमा

देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल खेतीका है तू यह पूछता है कि मुझको खेतीमें लाभ है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तुझको खेतीमें बहुत लाभ होगा मङ्गलका जप करवा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ८९०।। हुक्मी शकल ⁝ नुस्रुत् खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शीरमें रोजगार करनेका है तू यह पूछता है कि शीरमें फायदा होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब तेरे दिन नाकिश हैं सो उसके शीरमें लाभ कम होगा हिम्मत करके अकेला कर श्रीसूर्य्यका जप करवा २० दिन बाद लाभ होगा इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ८९१।। हुक्मी शकल ⁝ नुस्रुत् दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यात्राका है तू यह पूछता है कि यात्रा होगी या नहीं और होगी तो लाभ होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब तेरे १५ दिन सामान्य हैं सो मङ्गलका जप करवानेसे यात्रा होगी सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ८९२ ।। हुक्मी शकल ⁝ अतवे खारिज केतुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विवाहका है तू यह पूछता है कि मेरा विवाह कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरा विवाह देरमें होगा कुल देवताका पूजन कर फिकर मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।।८९३।। हुक्मी शकल ⁝ नकी मुनकलीव मङ्गल देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संबंधका है तू यह पूछता है कि इसकी सगाई कब होगी" सो हे पूछनेवाले ! अब इसके दिन अच्छे आये हैं सो अब संबंध होगा ६ मास बाद केतुग्रहका जप करवा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ८९४।। हुक्मी शकल ⁝ अतवेदाखिल शुक्र देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रोजगारका है तू यह पूछता है कि मेरा रोजगार किस दिशामें होगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरा रोजगार दक्षिण दिशामें लगेगा दक्षिण दिशासे तुझको बहुत लाभ है सब आनंद होवैंगे शांभवीके मंत्रका जप करवा फिकर मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ८९५।। हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमासावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवालेशख्स ! तेरा सवाल सवारीका है तू यह पूछता है कि सवारीके लेनेकी मेरे दिलमें है सो यह सवारी मिलेगी या नहीं सो हे पूछनेवाले ! तेरे दिन अभी समान है सो ३ मास ११ दिन बाद लेना फल होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ८९६।। हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीव चन्द्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शत्रुके जीतनेका है सो तू यह पूछता है कि शत्रुको मैं जीतूंगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! शत्रुके ग्रह आज दिन तेज है तेरे दिन नाकिश हैं तू शुक्र देवताका जप जितनी तेरी ताकत हो उतना करवा तू शत्रुको जीतेगा सन्देह मत कर इति प्रश्न।।पिण्ड।। ।।८९७।। हुक्मी शकल ⁝ लहियान खारिज बृहस्पति देवताकी है हुक्म फरमाती

है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू यह पूछता है कि आराम कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! शिवजीका पूजन और जप करवा ७ दिनमें आराम होगा इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ८९८।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल लाभका है तू यह पूछता है कि मुझको खेतीमें लाभ ज्यादा है या व्यवहारमें " सो हे पूछनेवाले तुझको खेतीमें लाभ कम है १९ दिन बाद व्यापारमें लाभ होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ।।८९९।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शीरमें रोजगार करनेका है सो तू यह पूछता है कि शीरमें फायदा होगा या नहीं" सो हे "पूछनेवाले ! शीरमें तुझको फायदा नहीं है तू अकेला कार्य्य कर फायदा होगा परंतु दुर्गापाठ करवा इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ९००।। हुक्मी शकल ⁝ जमात साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स तेरा सवाल यात्राका है तू यह पूछता है कि मेरी यात्रा होवेगी या नहीं"सो हे पूछनेवाले! अब तेरी यात्रा होगी सन्देह मत कर लाभ बहुत होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।।९०१।। हुक्मी शकल ⁝ फरहा मुनकलीव शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स तेरा सवाल किसी कार्य्यका है तू पूछता है कि मेरा कार्य्य कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरे कार्य्यमें देर नहीं है तेरे दिन अच्छे हैं सो सन्देह मतकर तेरा कार्य्य होगा । इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ९०२।। हुक्मी शकल ⁝ उकला मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संबंधका है तू यह पूछता है संबंध कब होगा" सो तू सन्देह मत कर अब दिन अच्छे आये हैं सो संबंध हुआ चाहता है कुलदेवता और सूर्यका पूजन कर शनि मंगलका दान कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।।९०३।। हुक्मी शकल ⁝ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल कैदसे छूटनेका है तू यह पूछता है कि एक मनुष्य कैदमें पड़ा है सो कब छूटेगा" सो हे पूछनेवाले उसके दिन निहायत नाकिश थे परंतु अब दुर्गाके बीजमंत्रका आराधन करवा संदेह मतकर इति प्रश्न ।।पिण्ड।।९०४।। हुक्मी शकल ⁝ हुमरा साबित मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सवारी लेनेका है" सो तू सवारी ले सवारीके लेनेमें तुझको बहुत फायदा होगा अब तेरे दिन बहुत अच्छे हैं संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ९०५ ।। हुक्मी शकल ⁝ बयाज साबित चंद्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल शत्रुके विषयमें है तू शत्रुको दिक किया चाहता है" सो हे पूछनेवाले ! शत्रुसे भय मत मान अब तेरे दिन बहुत अच्छे हैं सो तू फतह करेगा परंतु श्रीदुर्गाका आराधन कर इति प्रश्न पिण्ड ।।९०६।। हुक्मी शकल ⁝ नुस्रुत् खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि

"पूछनेवाले शख्स तेरा सवाल बीमारीका है तू यह पूछता है कि यह रोग कब दूर होगा" सो तू महामृत्युंजयका जप करवा और शनिदेवताका जप करवा आराम होवेगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।।९०७।। हुक्मी शकल ⁝ नुस्रुद्दाखिल बृहस्पति देवताकी है हुक्म फरमाती हैं कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल खेतीका हैं तू यह पूछता है कि अबके खेतीमें फायदा होगा कि नहीं" सो पश्चिम दिशामें बोना सन्देह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।।९०८।। हुक्मी शकल ⁝ अतवेखारिज केतुदेवताकी है हुक्म फरमाती हैं कि "पूछनेवाले ! तेरा सवाल लाभका है तू यह पूछता है कि मुझे शीरमें लाभ होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तू शीर कर तुझको लाभ बहुत होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।।९०९।। हुक्मी शकल ⁝ नकीमुनकलीव मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यात्राका है तू यह पूछता है कि मेरी यात्रा होगी वा नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब तेरे दिन नाकिश हैं सो यात्रा न होगी और लाभ भी न होगा ७ मास तक पीछे लाभ होगा श्रीदुर्गाका आराधन कर सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ९१० ।। हुक्मी शकल ⁝ अतवेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती हैं कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विवाहका है तू यह पूछता है कि मेरा विवाह कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरा विवाह अभी नहीं होगा तेरे दिन नाकिश हैं जिस जगह तेरा संबंध है उस जगह कुछ दिल फिर रहा है सो तू मंगलका जप करवा सन्देह मत कर एक वर्ष बाद विवाह होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ९११।। हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा सावित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल गर्भका है तू यह पूछता है कि औरतके गर्भ है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! औरतके ३ मासका गर्भ है तू बृहस्पतिका जप करवा और पीपलमें जल डाल पूरा होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।।९१२।। हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीव चन्द्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बंदीके छूटनेका है सो तू यह पूछता है कि बंदी कब छूटेगा" सो हे पूछनेवाले ! बंदीके दिन निहायत नाकिश हैं वह न छूटेगा परंतु श्रीदुर्गाका आराधन करवा इससे ईश्वरने चाहा तो छूट जायगा इति प्रश्न पिण्ड ।।९१३।। हुक्मी शकल ⁝ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सवारीके लेनेका है तू यह पूछता है कि मुझे सवारी लेनेमें फायदा है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तुझे सवारी लेनेमें फायदा है परंतु २९ दिन बाद लेना फायदा होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ९१४।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शत्रुके विषयका है सो तू यह पूछता है कि शत्रु कब दफा होगा" सो तेरा शत्रु दफा होनेवाला है तू सन्देह मत कर फते करेगा सूर्य्यका आराधन कर इति प्रश्न

।।पिण्ड।। ९१५।। हुक्मी शकल ⚍ कबजुल खारिज राहुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू यह पूछता है कि यह बीमारी कब दूर होगी" सो हे पूछनेवाले ! अब १६ दिन और नाकिश है सो तुझको आराम होगा पहली शांति करवा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ९१६।। हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल खेतीसे लाभका है तू यह पूछता है कि इस सालमें मुझको लाभ कैसा है" सो हे पूछनेवाले ! इस वर्षके ग्रह तेरे लिये नाकिश हैं सो अबके खेतीमें लाभ मध्यम होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ९१७।। हुक्मी शकल ⚍ फरहा मुनकलीब शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शीरमें व्यापारका है" सो हे पूछनेवाले ! शीरमें फायदा नहीं है तेरे शीरवालेके दिन नाकिश हैं सो कोई दिन ठहरके व्यापार करना लाभ होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।।९१८।। हुक्मी शकल ⚌ उकला मुनकलीब शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यात्राका है तू यह पूछता है कि मेरी यात्रा होगी कि नहीं और यात्रा होगी तो लाभ होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब ही तेरी यात्रा न होगी और विदेशमें तेरा दिल भी नही लगेगा सो तू १०८ दुर्गापाठ करवा लाभ बहुत होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ९१९।। हुक्मी शकल ☰ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विद्याका है सो तू यह पूछता है कि इस विद्यामें मुझको फायदा है या नहीं" सो हे पूछनेवाले! इस विद्यामें तुझको फायदा नहीं है और जो निहायत श्रम करेगा तो कुछ आवेगी फलेदारी न होगी इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ९२०।। हुक्मी शकल ☰ हुक्म साबित मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल गर्भका है तू यह पूछता है कि यह गर्भ बधेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तुम्हारे पितृदोष है सो इसके गर्भ न बधेगा सो तू पितरोंका गया श्राद्ध या पिंडारका श्राद्ध करवा सन्तान सुख होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ९२१ ।। हुक्मी शकल ☰ बयाज साबित चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बंदीके छूटनेका है तू यह पूछता है कि यह बंदी छूटेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! इस बंदीके दिन निहायत नाकिश हैं सो श्रीभगवतीके बीजमंत्रका आराधन करवा और पीपल तथा वटमें जल डाल छूटेगा इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ९२२।। हुक्मी शकल ⚌ नुस्रुत्खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सवारीके लेनेका है तू यह पूछता है कि सवारी लें या नहीं" सो हे पूछनेवाले! तुझको सवारीसे फायदा नहीं है सो पहले तुझको सवारीमें फायदा न रहा सो अब ६ मास बाद लेना फायदा होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।९२३।। हुक्मी

शकल ⁞ नुस्रतुद्दाखिल बृहस्पतिदेवताकी है हुक्म फरमाती हैं कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल शत्रुके विषयका है तू यह पूछता है कि शत्रु मेरे ऊपर जाल करता है सो मुझको हरावेगा या उसको मैं हराऊंगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरा शत्रु निहायत बदमाश है सो उससे टल रहना जो उसको जीता चाहे तो श्रीशिवजीका आराधन कर संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।।९२४।। हुक्मी शकल ⁝ अतवेखारिज केतुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू यह पूछता है कि इस रोगीको आराम कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! अब ६ दिन और नाकिश रहे हैं परंतु महामृत्युजयके मंत्रका जप करवा आराम होगा संदेह मत कर इतिप्रश्न ।।पिण्ड।।९२५।। हुक्मी शकल ⁞ नकी मुनकलीव मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने वाले शख्स ! तेरा सवाल लाभका है तू यह पूछता है कि मुझको खेतीमें लाभ कैसा होगा" सो पूछनेवाले अबके तुझे खेतीमें कम लाभ है और व्यवहारमें लाभ होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।।९२६।। हुक्मी शकल ⁞ अतवेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शीरका है तू यह पूछता है कि शीरमें लाभ होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! शीरमें तुमको ७ मास पीछे लाभ बहुत होगा परंतु भगवतीका पाठ करवा बहुत लाभ होगा इति प्रश्न ।।पिण्ड।।९२७।। हुक्मी शकल ⁞ इज्जतमा सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शरीरकी आयुका है सो तू यह पूछता है कि मेरी आयु कितनी है और आगे कैसी गुजरेगी" सो हे पूछनेवाले ! इस शरीरकी आयु ज्यादा है और आगे अच्छी गुजरेगी परंतु विष्णुसहस्रनामका पाठ करा सब आनंद रहेगा इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ९२८।। हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीव चन्द्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विद्याका है सो तू यह पूछता है कि विद्या आवेगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! विद्या आनेकी नहीं तेरा पंचम भवन बिगड़ रहा है सो ग्रहकी शांति करवा कुछ आवेगी सन्देह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ९२९।। हुक्मी शकल ⁞ लहियान खारिज बृहस्पति देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल गर्भका है तू यह पूछता है कि इस औरतके गर्भ है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! गर्भ तो है परंतु विटोक होरही है सो देवदोष है तू कुलदेवताका आराधन करवा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।।९३०।। हुक्मी शकल ⁞ कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बंदीके छूटनेका है तू यह पूछता है कि बंदी छूटेगा या नहीं" सो अब बंदीके दिन अच्छे आये हें दुर्गाकी शतचंडी करवा बरजरूर छूटेगा इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ९३१।। हुक्मी शकल ⁞ कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सवारीके लेनेका है सो तू यह पूछता है कि

सवारीके लेनेमें मुझे फायदा है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तुझको सवारीके लेनेमें फायदा नहीं है इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ९३२।। हुक्मी शकल ≡ बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शत्रुके भयका है तू यह पूछता है कि शत्रु दूर कैसे होगा सो तेरे ग्रह जबर है तू भगवतीका आराधन करवा तेरा शत्रु भागेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।।९३३।। हुक्मी शकल ≡ फरहा मुनकलीव शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है सो तू यह पूछता है कि इस बीमारीमें आराम कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! अब दिन अच्छे आये हैं सूर्य्यका जप करवा २१ दिन बाद अच्छा होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ९३४।। हुक्मी शकल ≡ उकला मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "हे पूछनेवाले ! तेरा सवाल खेतीका है तू यह पूछता है कि अबकी खेतीमें मुझको लाभ कैसा होगा" सो हे पूछनेवाले ! तुझको खेतीमें अबके लाभ अच्छा है परंतु कुल देवताका आराधन कर फिकर मतकर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ।।९३५।। हुक्मी शकल ≡ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धर्म करनेका है तू पूछता है कि मुझसे धर्म अब बनेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब तो तुझसे धर्म बनता दीखता नहीं अब तेरे दिन नाकिश हैं फिर बनेगा इति प्रश्न ।।पिण्ड ।। ९३६।। हुक्मी शकल ≡ हुमरा सावित मङ्गल देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल आयुका है सो तू यह पूछता है कि मेरी आयु कितनी है" सो हे पूछनेवाले ! तेरी आयु ७३ वर्ष की है अच्छी गुजरेगी सन्देह मतकर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ।९३७।। हुक्मी शकल ≡ बयाज सावित चन्द्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने-वाले शख्स ! तेरा सवाल विद्याका है यह पूछता है कि मुझको विद्या आवेगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरे जन्मपत्रमें पञ्चम भवन बिगड़ रहा है सो तुझको विद्या न आवेगी वृथा काल क्यों खोता है इति प्रश्न ।।पिण्ड।।९३८।। हुक्मी शकल ≡ नुस्रुत् खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल गर्भका है तू यह पूछता है कि इस औरतके गर्भ है सो पूरा होता नहीं" सो हे पूछनेवाले ! पहले जन्मका अजाब है इससे सन्तानगोपालके बीजमंत्रका सवालक्ष दक्षिणा समेत संकल्प दे पूरा होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ९३९।। हुक्मी शकल ≡ नुस्रुत् दाखिल बृहस्पति देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बन्दी छूटनेका है सो तू पूछता है कि यह बन्दी कब छूटेगा" सो इसको ७२ दिन और नाकिश है वाद छूटेगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ९४०।। हुक्मी शकल ≡ अतबे खारिज केतुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सवारीका है तू यह पूछता है कि इस सवारीमें मुझको फायदा

है या नहीं" सो हे "पूछनेवाले ! अब दिन सख्त हैं सो तु सवारी मत ले लेना ही हो तो ६ मास बाद लेना इति प्रश्न ।।पिण्ड ।। ९४१।। हुक्मी शकल ⁝ नकी मुनकलीव मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शत्रुके जीतनेका है तू यह पूछता है कि शत्रुसे भय लगता है शत्रु जीतेगा या मैं जीतूंगा" सो हे पूछनेवाले ! घबरावे मत श्रीदुर्गाके बीजमंत्रका आराधन करवा तेरा शत्रु हारेगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ९४२।। हुक्मी शकल ⁝ अतबे दाखिल शुक्र देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू यह पूछता है कि यह रोगी कब अच्छा होगा" सो हे पूछनेवाले ! इसको आराम हुआ चाहता है इसके हाथसे नवग्रहोंके जपका संकल्प करवा आराम बरजरूर होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ९४३।। हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भाग्योदयका है तू यह पूछता है कि मेरा भाग्योदय कब होगा" सो "हे पूछनेवाले ! तेरे भाग्योदय होनेमें ३ वर्षकी देरी है सो शिवार्चन करवा अच्छा भाग्योदय होगा सन्देह मतकर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ।।९४४।। हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीब सोमदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धर्म करनेका है तू यह पूछता है कि यह धर्म होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब तेरे दिन बहुत अच्छे हैं सो धर्म कर तेरा यश और स्वर्ग फल होगा सन्देह मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ९४५।। हुक्मी शकल ⁝ लहियान खारिज बृहस्पतिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल आयुका है तू पूछता है कि मेरी आयु कितनी है" सो हे पूछनेवाले ! तेरी आयु पूर्ण है परंतु मंगलकी तांबेकी मूर्ति बनवाकर पूजनकरवा इसी सालमें तुझको कष्ट है सो दूर होगा इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ९४६।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुल दाखिल सूर्य्य देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विद्याका है तू यह पूछता है कि इस विद्याके पढ़नेमें मुझको कैसा फायदा है" सो हे पूछनेवाले ! इस विद्यामें तुझको फायदा नहीं है और विद्या पढ़ना फिकर मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ९४७।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल गर्भका है तू यह पूछता है कि गर्भ पूरा होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! गर्भ न होगा इसके पितृदोष है सो पितरोंके वास्ते सवालक्ष गायत्रीका जप करवा सन्तान सुख होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ९४८।। हुक्मी शकल ⁝ जमात सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बंदीकी मोक्षका है तू यह पूछता है कि बंदी कब छूटेगा" सो हे पूछनेवाले ! अब ३ मास और नाकिश है सो सूर्यका आराधन करवा नाकिश दिनों बाद छूटेगा इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ९४९।। हुक्मी शकल ⁝ फरहा मुनकलीब शुक्रदेवताकी है हुक्म

फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सवारीका है तू यह पूछता है कि मुझको इस सवारीमें फायदा है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! इस सवारीमें तुझको बहुत लाभ है संदेह मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ९५०।। हुक्मी शकल उकला शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शत्रुके भयका है" सो हे पूछनेवाले ! शत्रुसे टलते रहना शत्रु तेरा नाना है और शत्रुनिवर्त्तक मंत्रका जप करवा तेरा शत्रु दूर होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ९५१।। हुक्मी शकल अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजकार्य्यका है तू यह पूछता है कि मेरा राजकार्य्य कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! श्रीमहाभगवतीके बीजमंत्रका जप सवा ५ लक्ष करवा तेरा राजकार्य्य होगा फिकर मतकर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ९५२।। हुक्मी शकल हुमरा साबित बुध देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भाग्योदयका है तू वह पूछता है कि भाग्योदय कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! भाग्योदय ३।। वर्ष बाद होगा परंतु दुर्गा का आराधन रख सन्देह मतकर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ९५३।। हुक्मी शकल बयाज साबित चन्द्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धर्मका है तू यह पूछता है कि मुझसे धर्म बनेगा या नहीं और बनेगा तो फल कैसा होगा" सो तेरे दिन अब बहुत अच्छे हैं सो धर्म कर यश दुरुस्त होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।! पिण्ड ।।९५४।। हुक्मी शकल नुसुद्खारिज सूर्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल आयुका है तू पूछता है कि आयु कितनी है" हे पूछनेवाले ! आयु तो ज्यादा है परंतु शरीरमें तकलीफ रहती है सो इससे बृहस्पतिका दान करवा शरीरमें सुख होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। ।। पिण्ड ।।९५५।। हुक्मी शकल नुस्रुत्दाखिल बृहस्पति देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विद्याका है तू यह पूछता है कि मुझे विद्यामें लाभ है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तुझको विद्या मुश्किलसे आवेगी और विद्यासे तुझको धन भी नहीं, सो उद्यम कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।९५६।। हुक्मी शकल अतवेखारिज केतुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल गर्भका है" सो हे पूछनेवाले ! तैंने जो गर्भका सवाल किया सो सूर्य्यकी आराधनासे गर्भ रहेगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।९५७।। हुक्मी शकल नकी मुनकलीब मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बन्दी मोक्षका है तू यह पूछता है कि बंदी कब छूटेगा" सो हे पूछनेवाले ! अब बंदीके दिन अच्छे आये हैं सो अब छूटेगा परंतु श्रीभगवतीका आराधन करवा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।९५८।। हुक्मी शकल अतबे दाखिल शुक्रदेवताकी

है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सवारीके लेनेका है तू यह पूछता है कि मुझको सवारीसे लाभ होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तुझको सवारीसे लाभ नहीं है सो तू और जगह दिलको लगा सन्देह मत कर तेरी तकदीर ज्यादा है इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।९५९।। हुक्मी शकल ⚍ इज्जतमा साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वस्तुके बेचनेका है तू यह पूछता है कि इस वस्तुके बेचनेमें मुझको फायदा है या नहीं" हे पूछनेवाले ! इस वस्तुके बेचनेसे तुझको फायदा है सो बेच दे रखना नहीं इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।९६०।। हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीब चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राज्यमें नौकरी करके कोई कार्य्य करनेका है तू यह पूछता है कि राज्यमें मेरा कार्य्य होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरे दिन अब अच्छे आये हैं सो दुर्गापाठ करवा तेरा मनोरथ पूरा होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।९६१।। हुक्मी शकल ☰ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भाग्योदयका है तू यह पूछता है कि भाग्योदय कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! १ वर्ष ५ मास अन्दर भाग्योदय होगा परंतु रुद्राभिषेक श्रावणमें करा लाभ अच्छा होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।९६२।। हुक्मी शकल ⚎ कबजुल दाखिल सूर्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धर्मका है तू यह पूछता है कि मेरा धर्म बनेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब तेरे दिन अच्छे हैं उद्यम कर तेरा धर्म बहुत अच्छा होगा देर मत कर यश बहुत अच्छा होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।९६३।। हुक्मी शकल ⚍ कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल आयुका है सो तू यह पूछता है कि मेरी आयु कितनी है" सो हे पूछनेवाले ! तेरी आयु तो बहुत ज्यादा है परंतु तेरे शरीरमें बीमारी रहती है सो शरीरका सुख नहीं अभी दिन २१ वर्षतक नाकिश हैं शिवार्चना करनेसे सुख होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।९६४।। हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विद्याके आनेका है तू यह पूछता है कि मुझको विद्या आवेगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तुझको विद्या खूब आवेगी और इस विद्यासे तुझको लाभ बहुत होगा परंतु श्रीगंगाजीका आराधन कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।९६५।। हुक्मी शकल ⚍ फरहा मुनकलीब शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल गर्भका है सो तू यह पूछता है कि इस औरतके गर्भ है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! इस औरतके डेढ मासके समीपका गर्भ है पूरा होना चाहिये सूर्य्यदेवताका पूजन करनेसे अच्छा होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।९६६।। हुक्मी शकल ⚍ उकला मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा

सवाल बन्दी मोक्षका है तू यह पूछता है कि बन्दी मोक्ष होवेगा या नहीं और होगा तो कब" सो हे पूछनेवाले! बन्दी मोक्ष २३ दिनमें होगा परंतु शत दुर्गापाठका संकल्प दक्षिणा समेत किसी ब्राह्मणको दे बन्दी मोक्ष होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न।। पिण्ड।। ।।९६७।। हुक्मी शकल ☰ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल मिलापका है तू यह पूछता है कि इस शख्ससे मिलाप होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले! तेरा मिलाप अब होनेवाला है और तुझको लाभ भी होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न।। पिण्ड।।९६८।। हुक्मी शकल ☰ हुमरा साबित मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल किसी वस्तुके बेचनेका है तू यह पूछता है कि इस वस्तुके बेचनेमें फायदा है या नहीं" सो हे पूछनेवाले! इस वस्तुके बेचनेमें फायदा है इस वस्तुको बेचना सन्देह मत कर इति प्रश्न।। पिण्ड।।९६९।। हुक्मी शकल ☰ बयाज साबित चन्द्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल राज कार्य्य (नौकरी) का है तू यह पूछता है कि मेरा यह कार्य्य होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले! तेरा कार्य्य ४।। मास बाद होगा श्रीदुर्गाका आराधन कर सन्देह मत कर इति प्रश्न।। पिण्ड ।।९७०।। हुक्मी शकल ☰ नुस्रतु खारिज सूर्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सावाल भाग्योदयका है तू यह पूछता है कि भाग्योदय कब होगा" सो हे पूछनेवाले! भाग्योदय होनेमें २ वर्ष ५ मास २१ दिनकी देर है पीछे होगा शिवार्चन करवा सन्देह मत कर इति प्रश्न।। पिण्ड ।।९७१।। हुक्मी शकल ☰ नुस्रतु दाखिल बृहस्पति देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल किसी घरके कार्यका है तू यह पूछता है कि यह कार्य्य मेरा होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले! नाकिश दिन गये अब अच्छे आये हैं सो तेरा कार्य्य होनेवाला है सूर्य्यदेवताका आराधन कर सन्देह मत कर इति प्रश्न।। पिण्ड।।९७२।। हुक्मी शकल ☰ अतवेखारिज केतुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल आयुका है तू यह पूछता है कि आयु कितनी है" सो हे पूछनेवाले! आयु ज्यादा है परंतु १।७।१४।२२।। ये वर्ष नामाफिक हैं सो ग्रहोंकी शांति करवा आनंद रहेगा सन्देह मत कर इति प्रश्न।। पिण्ड ।।९७३।। हुक्मी शकल ☰ नकी मुनकलीव मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल विवाहका है तू यह पूछता है कि मेरा विवाह होगा या नहीं और होगा तो सफल होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले! अब तेरे ९ मास ७ दिन और नाकिश रहे हैं बाद तेरा विवाह होगा और सुफल होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न।। पिण्ड ।।९७४।। हुक्मी शकल ☰ अतवे दाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा

सवाल गर्भका है तू यह पूछता है कि इस औरतके गर्भ नहीं रहता सो गर्भ रहेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! पहिले तो गर्भ रह जाता है परंतु कोई दिन बाद फिर नहीं रहता सो हे पूछनेवाले ! इसके जन्मपत्रमें ग्रह बिगड़ रहे हैं ग्रहोंकी शांति करवा गर्भ रहेगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।९७५।। हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यह है कि हमारे कुटुंबमें निहायत तकलीफ रहती है यह क्या दोष है" सो हे पूछनेवाले ! तेरे पितृदोष है तू श्रीमद्भागवतका श्रवण कर और पितरोंकी गया करवा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।९७६।। हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीब चन्द्रमा-देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मिलापका है तू यह पूछता है कि मेरा मिलाप होगा या नहीं और होगा तो फल कैसा होगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरा मिलाप होनेका नहीं और जो होगा तो अंत दरजे खराब होगा तेरे७मास नाकिश हैं पीछे करना संदेह मतकर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ९७७।। हुक्मी शकल ⁝ लहियान खारिज बृहस्पति देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल व्यापारका है तू यह पूछता है कि इस मालके बेचनेमें मुझे फायदा है या नहीं" सो पूछनेवाले ! यह माल अब २१ दिनमें कुछ तेज होगा तभी बेचना जल्दी मत कर अब बेचनेमें फायदा नहीं है इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ९७८।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजकाम अर्थात् नौकरीका है तू यह पूछता है कि मेरा यह काम होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरा स्थान बदला चाहता है तू सूर्य्यदेवताका आराधन कर लाभ अच्छा होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ९७९।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भाग्योदय होनेका है तू यह पूछता है कि भाग्योदय कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरे भाग्योदय होनेमें १ वर्षकी देर है सो तू मंगल देवताका जप एक वर्षकी दक्षिणा समेत नेक ब्राह्मणको दे अच्छा भाग्योदय होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ।।९८०।। हुक्मी शकल ⁝ जमात साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धर्मका है तू यह पूछता है कि मेरा मनोरथ बहुत दिनोंसे धर्म करनेका है परंतु होने नहीं पाता सो होगा या नहीं और होगा तो कैसा होगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरा धर्म अब ३१ दिन बाद होगा और यश बहुत अच्छा

होवेगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।।९८१।। हुक्मी शकल ⁞ फरहा मुनकलीव शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल आयुका है तू पूछता है कि मेरी आयु कितनी है" सो हे पूछनेवाले तेरी आयु ज्यादा है परंतु तुझको कष्ट रहता है सो मंगलकी मूर्त्ति तांबेकी चांदीके पात्रमें रखके नेक ब्राह्मणसे पूजन करवा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ९८२।। हुक्मी शकल ⁞ उकला मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विद्याका है तू यह पूछता है कि विद्या पढ़ना चाहता हूं विद्यासे लाभ है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तू विद्या पढ़ तुझको बहुत लाभ होगा परंतु तेरे जन्मपत्रमें बृहस्पति नामाफिक पड़ा है सो उसका जप और दान करवा संदेह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ।।९८३।। हुक्मी शकल ⁞ दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पत्रके आनेका है तू यह पूछता है कि खत कब आवेगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरे खतके आनेमें देर है परंतु खत अवश्य करके आवेगा और कुशलपत्र पावेगा संदेह मत कर अब तेरे दिन नाकिश हैं नाकिश दिन करके तेरे दिलमें संदेह रहता है मंगलका जप करवा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ९८४।। हुक्मी शकल ⁞ हुमरा साबित मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल यह है कि यह तकलीफ किस कारणसे है" सो हे पूछनेवाले ! यह तकलीफ देवदोषसे है सो तुम्हारे यह देवताका कोप है पहले तो देवताकी ध्यावना की और कुशलता हुई अब याद भी नहीं करते हो सो अब देवताकी यात्रा कर कुत्तोंको चपातियां गेर सन्देह मत कर बहाल होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ९८५।। हुक्मी शकल ⁞ बयाज साबित चन्द्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मिलापका है" हे पूछनेवाले ! तेरा मिलाप होगा परंतु एक तेरे दिलमें भय गेरता है सो तेरी दोस्तीको नहीं सहता है अब दिन अच्छे आये तेरा मिलाप होगा सन्देह मतकर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ९८६ ।। हुक्मी शकल ⁞ नुस्रुत् खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी वस्तुके बेचनेका है तू यह पूछता है कि इस वस्तुके बेचनेमें फायदा है या नहीं" हे पूछनेवाले ! अब तो इस वस्तुके बेचनेमें फायदा है परंतु फिर ११ मास पीछे फायदा इसी वस्तुमें रहेगा बिचले दिनोंमें फायदा नहीं है सो सन्देह मत कर इसको बेच डाल इति प्रश्न ।।पिण्ड।।९८७।। हुक्मी शकल ⁞ नुस्रुत् दाखिल बृहस्पति देवताकी है हुक्म फरमाती

है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजकार्य्यका है तू यह पूछता है कि मेरा राज-कार्य्य होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरा राजकार्य्य कई दफे होनेवाला हो जाता है परंतु फिर उसका नाम कोई नहीं लेता सो तेरे दिन नेष्ट है सो सूर्य्य और शुक्रका जप करवा दान दे तेरा राजकार्य्य होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। ।।९८८।। हुक्मी शकल ⋮ अतवेखारिज केतुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने वाले शख्स ! तेरा सवाल भाग्योदयका है तू यह पूछता है कि मेरा भाग्योदय कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरा भाग्योदय होगा परंतु तेरे जन्मपत्रमें सूर्य्य ग्रह सामान्य है सो उसका आराधन करवा आरामके साथ तुझको लाभ बहुत होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड।।९८९।। हुक्मी शकल ⋮ नकी मङ्गलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल गृहके कृत्यका है" तू यह पूछता है कि "यह कृत्य मुझसे होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरे घरके कृत्यमें अब ही एक वर्ष २ मास ७ दिनकी देर है जो निहायत उद्यम करे और पीपलमें जल गेरे तो कुछ पहले भी होजावे सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ९९०।। हुक्मी शकल ⋮ अतबे दाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल आयुका है तू यह पूछता है कि मेरी आयु कितनी है" सो हे पूछनेवाले ! तेरी आयु मध्यम है ४२ वर्षकी है पहले दिन तेरे नाकिश गये अब अच्छे आये हैं सब आनंद होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।९९१।। हुक्मी शकल ⋮ इज्जतमा सावित बुध-देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल नौकाके आनेका है तू यह पूछता है कि नौका आई चाहती थी परंतु आई नहीं सो क्यो देर हुई है और कब आवेगी "सो हे पूछनेवाले ! तेरी नौका आई चाहती है उसके आनेमें कुछ देर नहीं है सन्देह मत कर तेरी नौका बहुत कुशलतासे आती है परंतु तेरे दिन अब सामान्य हैं तू सूर्य्यदेवताके बीजमंत्रका जप करवा दिलका संदेह दूर होगा इति प्रश्न ।।पिण्ड।।९९२।। हुक्मी शकल ⋮ तरीख मुनकलीब चन्द्रमा देवताकी है हुक्म फर-माती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल खतके आनेका है तू यह पूछता है कि खत कब आवेगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरा खत आया चाहता है ५ दिन अन्दर आवेगा और कुशलताके सब समाचार सहित आवेगा सन्देह मत कर अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ९९३।। हुक्मी शकल ⋮ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल कुटुंबकी तकलीफ का

है तू यह पूछता है कि मेरे कुटुंबको किस दोषसे तकलीफ रहती है" सो हे पूछनेवाले ! तेरे दुर्गाका और पितरोंका दोष है सो दोनों दोष बराबर हैं सो दुर्गापाठका संकल्प दक्षिणा समेत नेक ब्राह्मणको दे और अमावसके दिन पितरोंके वास्ते गोदान दे वस्त्र दे यथाशक्ति ब्राह्मणभोजन करवा सुख होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड।। १९४।। हुक्मी शकल .।.। कब्जुल दाखिल सूर्य्य देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मिलापका है तू यह पूछता है कि मेरा मिलाप होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरा मिलाप नहीं होगा क्योंकि मिलाप होनेमें तुझको फायदा नहीं सो न करना अब तेरे दिन नाकिश हैं सो नाकिश दिनोंमें गुजरान कर सन्देह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।।१९५।। हुक्मी शकल ∸ कबजुल खारिज राहुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी मालके बेचनेका है यह पूछता है कि इस मालके बेचनेमें फायदा है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! इस मालको अब बेच दे नहीं तो साफ गिर जायगा अब तेरे दिन नाकिश आये हैं सो २ वर्ष तक नाकिश हैं शनिके मंत्रका जप करवा लाभ कुछ नाकिश दिनोंमें भी होगा इति प्रश्न ।।पिण्ड।।१९६।। हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजकार्य्यका है तू यह पूछता है कि मेरी राज्यमें रोजी होगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले शख्स ! तेरी राज्यमें रोजी होगी परंतु अब ५ मास ११ दिन तेरे नाकिश हैं सो मंगलमूर्तिका आराधन करवा इन दिनों बाद तेरी रोजी लगेगी सन्देह मतकर इति प्रश्न ।।पिण्ड।।१९७।। हुक्मी शकल ∹ फरहा मुनकलीब शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भाग्योदयका है तू यह पूछता है कि भाग्योदय कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरा भाग्योदय अबसे आगे २ वर्षमें होगा परंतु सूर्य्यदेवताका जप करवा दो वर्ष भीतर आजीवन होगा सन्देह मतकर तेरी तकदीर अच्छी है इति प्रश्न ।। पिण्ड।। ।।१९८।। हुक्मी शकल .।।. उकला मुनकलीब शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धर्मका है तू यह पूछता है कि यह धर्म होने में आवेगा या नहीं" और होनेमें आवेगा तो यश कैसा होगा, सो हे पूछनेवाले ! सन्देह मतकर अब यह धर्म होनेमें आवेगा और तेरा यश बहुत होगा अब तेरे दिन बहुत श्रेष्ठ हैं सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१९९।। हुक्मी शकल ☰ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अन्य औरतसे

गमन करनेका है" सो हे पूछनेवाले ! अन्य औरतसे गमन न करना अब तेरे दिन नाकिश हैं सो गमन करेगा तो धर्म और जाति न रहेगी सो न करना सन्देह मत कर ईश्वर सब अच्छा करेंगे इति प्रश्न ।।पिण्ड।।१०००।। हुक्मी शकल ⁝ हुमरा सावित मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल नवकाका है तू यह पूछता है कि मेरी नवका कब आवेगी" सो हे पूछनेवाले तेरी नवका और माल और मनुष्य सब आनंद हैं तेरी नवका आनेवाली है जलके अवरोधसे नवकाको देर लगी है सो सन्देह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।।१००१।। हुक्मी शकल ⁝ बयाज सावित चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पत्रके आनेका है तू यह पूछता है कि मेरा पत्र कब आवेगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरे पत्रके आनेमें कुछ देर नहीं परंतु अब तेरे दिन नाकिश हैं सो इस कारणसे दिल बिगड़ा रहता है सो तू मङ्गलदेवताका आराधन करवा सन्देह दूर होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। १००२।। हुक्मी शकल ⁝ नुस्रुत्खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यह है कि हमारे कौन दोष हैं" सो पूछनेवाले ! तू सब जानता है तेरे पितृदोष है सो तू अमावसके दिन ब्राह्मण जिमा और पितरोंका गया श्राद्ध या पिण्डारा करवा तुझे सब सुख होगा सन्देह मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१००३।। हुक्मी शकल ⁝ नुस्रुद्दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी वस्तुके बेचनेका है तू यह पूछता है कि मुझको इसके बेचनेमें फायदा है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! इस मालको बरजरूर बेचना चाहिये क्योंकि तेरे वर्ष फलमें ग्रह सामान्य हैं संदेह मतकर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। १००४।। हुक्मी शकल ⁝ अतवेखारिज केतुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स तेरा सवाल मिलापका है तू यह पूछता है कि इस मनुष्यका और मेरा पहले बहुत मिलाप था परंतु किसीने दिलमें शक डालकर मिलाप दूर किया अब मैं यह पूछता हूं कि मेरा मिलाप होगा या नहीं और होगा तो फायदा होवेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब ३१ दिन और नाकिश रहे हैं पीछे मिलाप होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। १००५।। हुक्मी शकल ⁝ नकी मुनकलीव मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी वस्तुके बेचनेका है तू यह पूछता है कि मुझे इस वस्तुके बेचनेमें फायदा है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब इस वस्तुके बेचनेमें फायदा नहीं है सो तू

१।। मास बाद बेच फायदा होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड।। १००६ ।। हुक्मी शकल ⁝ अतवेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राज्य संबंधी कार्य्यका है तू यह पूछता है कि राज्य संबंधी कार्य्य मुझको मिलेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरे अब दिन नाकिश हैं सो तू सूर्य्य देवताकी ३ पल की मूर्ति बनवा किसी नेक ब्राह्मणसे पूजा करवा तेरा कार्य्य फते होगा संदेह मत कर इति प्रश्न पिण्ड ।। १००७।। हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भाग्योदयका है तू यह पूछता है कि मेरा भाग्योदय कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरा भाग्योदय होनेवाला है परंतु मंगलदेवताका जप अब अपनी ताकत माफिक करवा संकल्प दक्षिणा समेत दे तेरा भाग्योदय बहुत अच्छा होगा ५ मास बाद । इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१००८।। हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीव चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शीरमें कार्य्य करनेका है तू यह पूछताहै कि मेरा शीरमें कार्य्य होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब तेरे दिन निहायत अच्छे आये हैं परंतु इन दिनोंमें जो कार्य्य करेगा उसी कार्य्यमें फायदा रहेगा परंतु श्रीकाली का आराधन रखना सन्देह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।।१००९।। हुक्मी शकल ⁝ लहियान खारिज बृहस्पति देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औरतसे गमन करनेका है तू यह पूछता है कि मेरा औरतसे संग होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरे सप्तम भवनको पापग्रह देखता है सो तेरा औरतसे गमन तो होगा परंतु पीछे निहायत पछतावेगा तुझको परलोककी भीति होगी सन्देह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।।१०१०।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल नौकाके आनेका है तू यह पूछता है कि हमारा जहाज कब आवेगा" हे पूछनेवाले ! तेरे जहाज में कुछ बखेड़ा पड़ गया है सो अब १५ दिनके अंदर आवेगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१०११।। हुक्मी शकल ⁝ कबजुल खारिज राहुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पत्रके आनेका [है तू पूछता है कि मेरा पत्र कब आवेगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरे पत्रके आनेमें देर है सो अगले पक्षमें आवेगा और तेरे दिन अब सामान्य हैं जिससे तेरा दिल बिगड़ा रहता है सो शुक्रदेवताका जप करवा तेरे दिलका फिकर दूर होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न

।।पिण्ड।। १०१२।। हुक्मी शकल ≡ जमात सावित बुध देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "हे पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बालककी बीमारीका है तू यह पूछता है कि इस बालकको क्या बीमारी है बहुत इलाज किये परंतु एक भी काम न आया अब यह पूछता है कि इस बालकको आराम कब होगा" सो हे पूछनेवाले यह कालके मुखमें आरहा है इसके ऊपर पीलियाकी बीमारी है सो चौराहे पर शहनक दे महामृत्युञ्जयका जप करवा आराम होगा सन्देह मतकर इति प्रश्न ।।१०१३।। हुक्मी शकल ≡ फरहा मुनकलीव शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने-वाले शख्स ! तेरा सवाल किसीसे मिलापका है तू यह पूछता है कि मेरा मिलाप कब होगा सो हे पूछनेवाले ! अब ही तेरे ७ मास ५ दिन और नाकिश हैं सो नाकिश दिनों बाद तेरा मेल होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न पिण्ड ।। १०१४।। ≡ उकला मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वस्तुके बेचनेका है तू यह पूछता है कि यह वस्तु बिकेगी या नहीं इसके बेचनेकी बहुत तजबीज करता हूं परंतु बिकती नहीं" सो हे पूछनेवाले १ तेरे ११ मास २ दिन नाकिश हैं इससे नहीं बिकती है और स्थिर लग्नमें तुझे प्राप्त हुई है सो नाकिश दिनों बाद बिकेगी सन्देह मत कर इति प्रश्न ।।पिण्ड।। १०१५।। हुक्मी शकल ≡ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजकार्य्यसे बदली करवानेका है तू यह पूछता है कि मेरा दिल इस जगह नहीं लगता सो बदली कब होगी" सन्देह मत कर सूर्य्यदेवताका जप और कान करवा तेरी बदली होगी और रोजी बढ़ेगी फिकर मत कर इति प्रश्न पिण्ड ।।१०१६।। हुक्मी शकल ≡ हुमरा सावित मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू यह पूछता है कि यह बीमारी कब अच्छी होगी मैंने इस बीमारीके बहुत इलाज किये परंतु फायदा नहीं हुआ सो अब कब होगा" हे पूछनेवाले ! व्यतीपातके दिन छायापात्र और राधादामोदरकी मूर्ति बनवाकर योग्य ब्राह्मणको दे आराम बरजरूर होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ।।१०१७।। हुक्मी शकल ≡ बयाज सावित चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शिकारका है तू यह पूछता है कि मुझे शिकार मिलेगी या नहीं" हे पूछनेवाले ! तुझे शिकार नहीं मिलेगा खेद बहुत पावेगा और देर बहुत हो जावेगी फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१०१८।। हुक्मी शकल ≡

नुस्रुत् खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल औरतसे गमन करनेका है पर तू कुछ दिलमें घबराता है" सो हे पूछनेवाले! तुझको वह औरत भी चाहती है सो तू मेल कर तुझे बहुत फायदा होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१०१९।। हुक्मी शकल =: नुस्रुत्दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल जहाजके आनेका है" सो पूछनेवाले! जहाजके आनेमें देर है कुछ माल बीज गया है जिस करके देर लगी है सन्देह मत कर दुर्गाका आराधन करवा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१०२०।। हुक्मी शकल :– अतबेखारिज केतुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल पत्र और द्रव्यके आनेका है सो तू पूछता है कि पत्र कब आवेगा" सो हे पूछनेवाले! तेरा पत्र आया चाहता है तू सन्देह मत कर द्रव्य भी आवेगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।। ।।१०२१।। हुक्मी शकल –: नकी मुनकलीव मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल बीमारीका है तू यह पूछता है कि यह बीमारी कब जावेगी इलाज बहुत किया परंतु कोई भी काम न आया सो अब यह पूछता है कि यह बीमारी कब जावेगी" सो हे पूछनेवाले! तेरे यहां देवदोष है सो सर्वदेव मंत्रका जप करवा और उड़दोंकी बलि दे आराम बरजरूर होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१०२२।। हुक्मी शकल –: अतबे दाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल मिलापका है सो तू यह पूछता है कि बहुत तजबीज की परंतु इस शख्ससे मिलाप न हुवा" सो हे पूछनेवाले शख्स! अब तेरे दिन अच्छे आये हैं पहले तेरे दिन नाकिश थे सो अब मिलाप हुआ जान संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१०२३।। हुक्मी शकल =: इज्जतमा सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल मकान इमारतके बेचनेका है तू यह पूछता है कि मकान इमारतें बेचा चाहता हूं सो बिकेंगी या नहीं और बिकेगी तो मुझको फायदा है या बिगर बिकीमें फायदा है" सो हे पूछनेवाले! प्रथम तो मकान इमारत मत बेच तेरे नाकिश दिन गये १ वर्ष ३ मास और नाकिश रहे हैं फिर सब आनंद होंगे परंतु दुर्गाका आराधन रखना सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१०२४।। हुक्मी

शकल ⋮ तरीख मुनकलीव चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल ऋणकी विमुक्तिका है तू यह पूछता है कि ऋण दूर कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरा करजा अब ही दूर होनेका नहीं क्योंकि तेरे ११ वर्षसे नाकिश दिन आये हैं और ३ वर्ष २ मास ७ दिन बाकी रहे हैं सो इन दिनों बाद दूर होगा मंगलका पूजन करना इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१०२५।। हुक्मी शकल ≡ लहियान खारिज बृहस्पति देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पुत्रके गोद लेनेका है तू यह पूछता है कि मैं पुत्र गोद लूंगा इस पुत्रसे मुझको फायदा है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! यह जो तैंने पुत्र गोद लेनेकी विचारी है सो इस लड़केके ग्रह सामान्य हैं सो बृहस्पतिका पूर्ण आराधन करवा कर फिर लेना फलेदारी होगी संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१०२६।। हुक्मी शकल ≡ कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी हैं हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू यह पूछता है कि यह बीमारी क्या है इसका भेद नहीं पाया जो इलाज किया सो कार न आया सो अब यह पूछता हूं कि इसको आराम होगा या नहीं और होगा तो कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! इसके दिन नाकिश हैं कालके मुखमें आ रहा है परंतु महामृत्युंजयका अखंड जप करवा आराम होगा इति प्रश्न ।। ।। पिण्ड ।।१०२७।। हुक्मी शकल ≡ कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शिकारका है तू यह पूछता है कि शिकार मिलेगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब तुझको शिकार नहीं मिलेगी और निहायत तकलीफ पावोगे सो इस वक्त न जाना एक मुहूर्त्त पीछे जाना शिकार मिलेगी सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१०२८।। हुक्मी शकल ≡ जमात सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अन्य औरतसे गमन करनेका है तू यह पूछता है कि इस वक्त मेरा मेल होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! इस वक्त तेरा मेल न होगा संदेह मत कर फिर होगा परंतु संगमेश्वरीका आराधन करवाना इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१०२९।। हुक्मी शकल ≡ फरहा मुनकलीब शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल खतके आनेका है तू पूछता है

कि मेरे दिलमें खतकी बहुत लग रही है सो दिलमें-रात्रि दिन तकलीफ रहती है और उस जगह मुकद्दमा लग रहा है उसकी खबर चाहता है" सो हे पूछनेवाले ! तेरा मुकद्दमा फते होगा और तेरे पास खत आया चाहता है तू सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१०३०।। हुक्मी शकल ≑ उकला मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यह है कि हमारे कुटुंबमें प्रथम तो एकता नहीं है और दूसरे कोई किसी हालसे तंग है कोई किसी हालसे यह क्या है" सो हे पूछनेवाले ! तेरे पितृदोष है सो पितरोंके वास्ते गया श्राद्ध या पिण्डारा करवा अच्छा होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१०३१।। हुक्मी शकल ⩦ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मुकद्दमाका है तू यह पूछता है कि यह मुकद्दमा मैं जीतूंगा या शत्रु जीतेगा वा दोनोंका मिलाप हो जावेगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरा झगड़ा जमीनका है तेरी जमीन जल आवाद शत्रुने दबा ली है सो शत्रु बहुत बलवान है और राजके कारदार भी उसकी तरफ हैं और तेरा रुपैया खर्च हुआ है परंतु तेरे दिन निहायत नाकिश हैं सो जान परंतु श्रीसत्यनारायणका व्रत और कथा कबूल और नेक ब्राह्मणसे कालीके बीजमंत्रका सवा लक्ष जप करवा फिर तू अदालत जीतेगा तेरा शत्रु नीचा पड़ेगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१०३२।। हुक्मी शकल ≡ हुमरा सावित मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल कर्जा दूर होनेका है तू यह पूछता है कि मुझे करजा ज्यादा है मेरे रोजगारमें टोटा रहा था सो यह मेरा करजा किसी तजबीजसे दूर होगा ! और फिर भी मेरा वैसा ही समय होगा" सो हे पूछनेवाले ! अब तेरे दिन सामान्य हैं सो पूंजी रख दिवाला मत कर लोगोंका धन दे जो तेरे पास बहुत है और फिर शनिदेवताके बीजमंत्रका आराधन करवा और व्यापार कर फिर बहुत लाभ होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१०३३।। हुक्मी शकल ≡ बयाज सावित चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पुत्र गोद लेनेका है तू यह पूछता है कि इस पुत्रके गोद लेनेमें मुझे फायदा है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! इस पुत्रके गोद लेनेमें फायदा नहीं है क्योंकि इसके

जन्मपत्रमें ग्रह मन्द पड़े हैं सो और लड़का ले ३ मास बाद वह लड़का फलदायक होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१०३४।। हुक्मी शकल नुस्रुद्खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल बीमारीका है तू यह पूछता है कि यह बीमारी कब दूर होगी" सो हे पूछनेवाले ! यह कुछ बीमारी नहीं है यह कालकी निशानी है तैंने बहुत इलाज किये परंतु फायदा न हुआ सो हे पूछनेवाले ! महामृत्युञ्जयका जप करवा सन्देह मत कर पुण्य कर आनंद होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१०३५।। हुक्मी शकल नुस्रुद्दाखिल बृहस्पति-देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शिकारका है तू यह पूछता है कि मैं शिकारको जाता हूं मुझको शिकार मिलेगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तुझको शिकार नहीं मिलेगी और वर्षा आवेगी वर्षामें बहुत क्लेश पावेगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१०३६।। हुक्मी शकल अतबेखारिज केतुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अन्य औरतसे गमन करनेका है तू यह पूछता है कि उस औरतसे संग होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब तेरे दिन नाकिश हैं सो संग न होगा और जो तू करेगा तो तेरे ऊपर कलंक लगेगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१०३७।। हुक्मी शकल नकी मुनकलीव मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल जहाजका है सो तू यह पूछता है कि मेरा जहाज कहाँ अटका है" सो हे पूछनेवाले! तेरा जहाज आया चाहता है परंतु तेरे दिन निहायत खराब हैं इससे दिल बिगड़ा रहता है सो शक्त्यनुसार मंगलकी पूजा करवा सब आनंद होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१०३८।। हुक्मी शकल अतबेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पत्रके आनेका है तू यह पूछता है कि मेरा पत्र कब आवेगा" सो हे पूछनेवाले ! अब तेरे दिन बहुत दुरुस्त हैं सो तेरा पत्र भी आवेगा और लाभ होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१०३९।। हुक्मी शकल इज्जतमा साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यह है कि मैं निहायत तकलीफ

पाता हूं सो क्या कारण है" हे पूछनेवाले ! तेरे पितृदोष है सो पितरोंकी मूर्ति बनवा सब आनंद होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१०४०।। हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीव चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चक्रवर्ती होनेका है तू यह पूछता है कि मेरा संपूर्ण पृथ्वीमें राज्य होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! राज्य जप तप दानसे होता है सो अपने कर्म देख और ये कर्म कर तब होगा इति प्रश्न ।। पिण्ड ।।१०४१।। हुक्मी शकल ⁝ हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल स्वर्गके राज्यका है तू यह पूछता है कि स्वर्गका राज्य मुझको मिलेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! यज्ञ दान जप तप कर मिलेगा इन कर्मोंसे क्या है शुभ कर इति प्रश्न ।। इति रमलगुलजारस्योत्तरार्द्धे संकीर्ण प्रश्नाः समाप्ताः ।

इति यवनाचार्य्यविरचितः पण्डितबीरबलेन नागरीभाषयाऽनुवादितो रमलगुलजारः समाप्तः ।

रमलगुजार समाप्त

मुद्रक एवं प्रकाशकः
खेमराज श्रीकृष्णदास,
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

पुस्तकें मिलने के स्थान

१) खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
खेतवाडी, मुंबई - ४०० ००४.

२) खेमराज श्रीकृष्णदास,
६६, हडपसर इण्डस्ट्रिअल इस्टेट
पुणे - ४११ ०१३.

३) गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
व बुक डिपो,
अहिल्याबाई चौक, कल्याण
(जि. ठाणे - महाराष्ट्र)

४) खेमराज श्रीकृष्णदास,
चौक - वाराणसी (उ.प्र.)

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०- २६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूनां छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHIRKRISHNADASS